सत्यमेव जयते

भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक

का

मार्च 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रतिवेदन

सामान्य, सामाजिक एवं आर्थिक प्रक्षेत्र

बिहार सरकार

2014 का प्रतिवेदन संख्या–4

भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक
का
मार्च 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रतिवेदन

सामान्य, सामाजिक एवं आर्थिक प्रक्षेत्र

बिहार सरकार

वर्ष 2014 का प्रतिवेदन संख्या–4

विषय सूची

वर्णन	संदर्भ	
	कंडिका	पृष्ठ / अभियुक्तियाँ
प्राक्कथन		vii
विहंगावलोकन		ix
अध्याय-I		
प्रस्तावना		
बजट की रूपरेखा	**1.1**	1
राज्य सरकार के संसाधनों के अनुप्रयोग	**1.2**	1
सतत बचतें	**1.3**	2
राज्य कार्यान्वयन अभिकरणों को सीधे स्थानांतरित निधियाँ	**1.4**	2
भारत सरकार से प्राप्त सहायक अनुदान	**1.5**	2
लेखापरीक्षा का आयोजना एवं संचालन	**1.6**	3
निरीक्षण प्रतिवेदनों के प्रति सरकार की उदासीनता	**1.7**	3
महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा टिप्पणियों (प्रारूप कंडिकाओं / समीक्षाओं) के प्रति सरकार की प्रतिक्रिया	**1.8**	4
लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर कृत–कार्रवाई	**1.9**	5
लेखापरीक्षा के परिणामस्वरूप वसूली	**1.10**	6
राज्य विधान सभा में स्वायत्त निकायों के लिए पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण की स्थिति	**1.11**	6
अध्याय-II		
निष्पादन लेखापरीक्षा		
पर्यावरण एवं वन विभाग		
बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद की कार्यप्रणाली	**2.1**	7
समाज कल्याण विभाग		
राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (रा.गाँ.कि.स.यो.)–सबला का कार्यान्वयन	**2.2**	26
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग		
पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालयों की कार्यप्रणाली	**2.3**	41

वर्णन	संदर्भ	
	कंडिका	पृष्ठ / अभियुक्तियाँ
लोक स्वास्थ्य एवं अभियंत्रण विभाग		
बिहार में संपूर्ण स्वच्छता अभियान / निर्मल भारत अभियान का कार्यान्वयन	**2.4**	52
पथ निर्माण विभाग		
बिहार में राज्य उच्चपथों का निर्माण एवं अनुरक्षण	**2.5**	69
गृह विभाग		
'क्राईम एण्ड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क और सिस्टम' पर दीर्घ कंडिका	**2.6**	86
नगर विकास एवं आवास विभाग		
'पटना नगर निगम–ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा भवन प्लानों की स्वीकृति' पर दीर्घ कंडिका	**2.7**	95
अध्याय-III		
अनुपालन लेखापरीक्षा		
सामान्य प्रक्षेत्र		
योजना एवं विकास विभाग		
सोलर स्ट्रीट लाईट के अधिष्ठापन पर आधिक्य व्यय	**3.1**	105
सामाजिक प्रक्षेत्र		
स्वास्थ्य विभाग		
कपटपूर्ण भुगतान	**3.2**	106
दवाओं के अनियमित क्रय पर अधिक भुगतान	**3.3**	107
दवाओं के क्रय में अनियमितताएँ	**3.4**	108
शिक्षा विभाग		
सर्व शिक्षा अभियान निधि का गबन	**3.5**	110
लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग		
सरकार को हानि	**3.6**	112
नगर विकास एवं आवास विभाग		
निष्क्रिय व्यय	**3.7**	114

वर्णन		संदर्भ	
		कंडिका	पृष्ठ / अभियुक्तियाँ
आर्थिक प्रक्षेत्र			
जल संसाधन विभाग			
सरकारी राशि का दुर्विनियोजन		**3.8**	115
रॉयल्टी की कम कटौती के कारण सरकार को हानि		**3.9**	116
अधिक भुगतान		**3.10**	117
व्यर्थ व्यय		**3.11**	118
पथ निर्माण विभाग			
जोखिम एवं लागत राशि की अवसूली के कारण राजकीय राजकोष पर अतिरिक्त भार		**3.12**	119
निष्क्रिय संयत्र एवं उपकरण पर निष्फल व्यय		**3.13**	121
उद्योग विभाग			
जोखिम एवं लागत राशि आरोपित नहीं करने के कारण अतिरिक्त दायित्व का सृजन		**3.14**	122
परिशिष्ट			
1.1	लंबित निरीक्षण प्रतिवेदनों / कंडिकाओं को दर्शाती विवरणी	**1.7**	125
1.2	लंबित निरीक्षण प्रतिवेदनों के कंडिकाओं का विभिन्न प्रकारों के अनियमिताओं को दर्शाती विवरणी	**1.7**	126
1.3	राज्य विधानमंडल में स्वायत्त निकायों के पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की प्रस्तुतीकरण की स्थिति को दर्शाती विवरणी	**1.11**	127
2.1.1	ब्याज की हानि दर्शाने वाली विवरणी	**2.1.7**	128
2.1.2	जल खपत के प्रतिवेदनों के विलम्ब से प्रस्तुत करने की विवरणी	**2.1.8.1**	129
2.1.3	जल उपकर के निर्धारण मे विलम्ब की विवरणी	**2.1.8.1**	130
2.1.4	जल उपकर की बकाए की वसूली नहीं किए जाने की विवरणी	**2.1.8.2**	131
2.1.5	सहमति निर्गत करने में विलम्ब की विवरणी	**2.1.9.2**	132
2.1.6	वर्ष 2009–14 के दौरान राज्य के नगरपालिका प्राधिकरण द्वारा अनुपालन मानदंडों के पालन की स्थिति की विवरणी	**2.1.12.1**	134
2.1.7	केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना मे उपलब्ध उपकरणों की सूची दर्शाती हुई विवरणी	**2.1.15.2**	135

वर्णन		संदर्भ	
		कंडिका	पृष्ठ / अभियुक्तियाँ
2.1.8	जल / अपशिष्ट जल के विश्लेषण के लिए आवश्यक उपकरणों की सूची	**2.1.15.2**	136
2.1.9	बि.रा.प्र.नि.प. के स्वीकृत बल एवं कार्यरत बल की स्थिति	**2.1.17**	140
2.2.1	वर्ष 2011–14 के दौरान अधिक आयु की बालिकाओं को टीएचआर दिए जाने से संबंधित विवरणी	**2.2.6.2**	141
2.2.2	वर्ष 2011–14 के दौरान 11 से 14 वर्ष के आयुवर्ग की विद्यालय जानेवाली बालिकाओं को टीएचआर दिए जाने सें संबंधित विवरणी	**2.2.6.2**	142
2.2.3	वर्ष 2013–14 के दौरान बा.वि.प.पदाधिकारियों को आवश्यकता से अधिक निधि का आवंटन	**2.2.7**	143
2.3.1	बिहार के संग्रहालयों की सूची की विवरणी	**2.3.2**	144
2.3.2	संरक्षित स्मारकों एवं पुरातात्विक स्थलों की विवरणी (नमूना जाँचित)	**2.3.5**	145
2.3.3	वर्ष 2009–14 के दौरान बजट प्रावधान, व्यय एवं बचत की विवरणी	**2.3.6**	146
2.3.4	वर्ष 2009–14 के दौरान प्रत्यार्पित एवं व्यपगत राशि की विवरणी	**2.3.6**	147
2.3.5	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इन्कार किये गये उत्खनन प्रस्तावों की सूची	**2.3.7.2**	148
2.3.6	संरक्षित स्मारकों एवं पुरातात्विक स्थलों की सूची की विवरणी	**2.3.8**	149
2.3.7	स्वीकृत पद एवं कार्यरत बल की सूची की विवरणी	**2.3.10**	151
2.3.8	पुरातत्व पंजी में छूटे हुए जानकारियों की सूची की विवरणी	**2.3.11.1**	152
2.4.1	सं.स्व.अभि / नि.भा.अभि. के कार्यान्वयन की संगठनात्मक संरचना	**2.4.2**	153
2.4.2	31 मार्च 2014 के अनुसार स्वीकृत बल और कार्यरत मानवबल की स्थिति	**2.4.6.1**	154
2.4.3	ए.पी.एल. और बी.पी.एल. परिवारों के लक्ष्य और उपलब्धि दर्शाने वाली विवरणी	**2.4.6.4**	155
2.4.4	तेरह नमूना जाँचित जिलों में सं.स्व.अभि / नि.भा.अभि. में प्रारंभिक शेष, विमुक्त राशि, कुल उपलब्ध राशि, व्यय और अव्ययित शेष	**2.4.7**	157
2.4.5	वर्ष 2010–14 के दौरान आवश्यक राज्यांश और विमुक्त की गई राशि की विवरणी	**2.4.7**	159
2.4.6	मार्च 2014 तक ग्राम पंचायतों का निर्मल स्थिति का विवरण	**2.4.9.1**	160

वर्णन		संदर्भ	
		कंडिका	पृष्ठ / अभियुक्तियाँ
2.4.7	नमूना जाँचित जिलों में मार्च 2014 तक सामुदायिक स्वच्छता परिसर की स्थिति	**2.4.9.4**	161
2.4.8	सू.शि. एवं. संचार गतिविधियों का लक्ष्य और उपलब्धि दर्शाने वाली विवरणी	**2.4.10**	162
2.5.1	पथ निर्माण विभाग (प.नि.वि.) का संगठनात्मक ढाँचा	**2.5.2**	163
2.6.1	राज्य में पुलिस जिलों के नामों को दर्शाती विवरणी	**2.6.4**	164
2.6.2	सीसीटीएनएस परियोजना के पूरा होने का समय को प्रदर्शित करती विवरणी	**2.6.4**	165
2.7.1	नगरपालिका का मूल कार्य प्रत्येक नगरपालिका स्वयं अथवा किसी एजेंसी के माध्यम से मूल नगर सेवाएं उपलब्ध कराने वाली विवरणी	**2.7.1**	166
2.7.2	पटना नगर निगम का संगठनात्मक ढाँचा	**2.7.2**	167
2.7.3	पटना नगर निगम में संधारित नहीं किये गये अभिलेखों / दस्तावेजों को दर्शाती विवरणी	**2.7.3**	168
2.7.4	ठो.अ.प्र. निधि से विचलन को दर्शाती विवरणी	**2.7.4.1**	169
2.7.5	एक ही अवधि में एक ही चालकों द्वारा विभिन्न अंचलों में दो वाहनों के परिचालन से संबंधित विवरणी	**2.7.4.5**	171
2.7.6A	ईंधन आपूर्त्ति की गई वाहनों की विवरणी जो न तो प.न.नि. के स्वयं के वाहन थे और न ही भाड़े पर रखे गये थे	**2.7.4.5**	172
2.7.6B	पटना नगर निगम (नूतन राजधानी अंचल) द्वारा उपलब्ध कराये गये वाहनों के निबंधन संख्या को दर्शाती विवरणी	**2.7.4.5**	173
2.7.7	पटना नगर निगम द्वारा बगैर नियुक्त किये वाहनों / लोर्डस का भाड़ा / ईंधन प्रभारों के भुगतान को दर्शाती विवरणी (नू.रा.अ.)	**2.7.4.5**	174
2.7.8	प.न.नि. (नूतन राजधानी अंचल) में ईंधन खपत के विरूद्ध अधिक भुगतान की विवरणी	**2.7.4.5**	175
2.7.9	प.न.नि. (नूतन राजधानी अंचल) में एक ही वाहनों के लिए अलग अलग क्रम सं. वाले समान विपत्रों पर दोहरे भुगतान को दर्शाती विवरणी	**2.7.4.5**	176
2.7.10	वाहनों की विवरणी जिसे अधिक ईंधन की आपूर्ति की गयी	**2.7.4.5**	177
2.7.11	प.क्षे.वि.प्र. के लीज भूखण्डों को डेवलपर्स को बिक्री किये जाने के कारण दाखिल खारिज शुल्क की हानि को दर्शाती विवरणी	**2.7.5.1**	178
2.7.12	वास्तुविदों द्वारा स्वीकार्य सीमा से अधिक स्वीकृत सतह क्षेत्रफल अनुपात को दर्शाती विवरणी	**2.7.5.2**	179

वर्णन		संदर्भ	
		कंडिका	पृष्ठ / अभियुक्तियाँ
2.7.13	वास्तुविदों द्वारा भवन के निर्माण के लिए स्वीकृत प्लानों की विवरणी जहाँ सड़क की चौड़ाई स्वीकार्य सीमा से कम थी	**2.7.5.2**	181
2.7.14	आवश्यक सेट बैक छोड़े बिना भवन प्लानों की दी गई स्वीकृति को दर्शाती विवरणी	**2.7.5.2**	183
2.7.15	बिहार आवास बोर्ड की अनुमति के बिना इसके पट्टे की भूखण्डों पर पारित की गई प्लानों को दर्शाती विवरणी	**2.7.5.2**	184
3.1	आवंटित कार्य, संपादित तथा उनके विरूद्ध किया गया आधिक्य खर्च की दिखाती विस्तृत विवरणी (नवम्बर 2014 तक)	**3.1**	186
3.2	सदर/अनुमंडलीय अस्पताल के विपत्र–वार भुगतान को दर्शाती विवरणी	**3.2**	187
3.3	दवाओं के स्थानीय क्रय पर आपूर्तिकर्त्ता को अधिक भुगतान को दर्शाती विवरणी	**3.3**	189
3.4	फर्मो को दिए गए अग्रिम राशि तथा इसके विरूद्ध आपूर्ति /समायोजन का दर्शाती विस्तृत विवरणी	**3.4**	190
3.5	ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों मे जल आपूर्ति योजनाओं का विस्तृत विवरण को दर्शाती विवरणी	**3.6**	193
3.6	उत्पाद शुल्क से विमुक्ति हेतु अधिकृत अभिकरणों द्वारा उत्पाद शुल्क की वापसी राशि की विस्तृत विवरणी	**3.6**	195
3.7	उ0शु0 मुक्त अधिकृत एजेंसी द्वारा उ0शु0 वापसी राशि की दर्शाती विस्तृत विवरणी	**3.6**	197
3.8	उ0शु0 मुक्त अधिकृत एजेंसी द्वारा उ0शु0 की प्रत्यर्पनीय राशि को दर्शाती विस्तृत विवरणी	**3.6**	201
3.9	उपयोगित तथा अनउपयोगित कास्ट आयरन पाईपों पर हुए व्यय को दर्शाती विवरणी	**3.7**	203
3.10	चलानों को दर्शाती विस्तृत विवरणी	**3.8**	204
3.11	रॉयल्टी की कम कटौती को दर्शाती विवरणी	**3.9**	205
3.12	म0नि0द0 एकरारनामा में गलत विधि से शुद्ध कार्य मूल्यों के संगणन के कारण अधिक्य व्यय को दर्शाती विवरणी	**3.10**	208
3.13	अतिरिक्त दायित्व के सृजन को दर्शाती विवरणी	**3.12**	212

प्राक्कथन

1. यह प्रतिवेदन संविधान के अनुच्छेद 151 के अन्तर्गत बिहार के राज्यपाल को प्रस्तुत करने हेतु तैयार किया गया है।

2. राज्य सरकार के विभागों के व्यय की लेखापरीक्षा नियंत्रक–महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियाँ और सेवा की शर्त्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 13 के तहत् किया जाता है।

3. इस प्रतिवेदन में सामान्य, सामाजिक एवं आर्थिक प्रक्षेत्रों के अन्तर्गत बिहार सरकार के विभागों के निष्पादन लेखापरीक्षा तथा अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम सम्मिलित हैं।

4. प्रतिवेदन में वैसे मामले भी शामिल हैं जिन्हें वर्ष 2013–14 के दौरान लेखाओं के नमूना लेखापरीक्षा के दौरान पाया गया तथा साथ–साथ वैसे मामलों को भी उल्लेखित किया गया है जो पूर्ववर्ती वर्षों में पाए गए, परंतु पूर्व प्रतिवेदनों में शामिल नहीं किए जा सके थे; प्रतिवेदन में वर्ष 2013–14 के बाद की अवधि से संबंधित मामलों को भी आवश्यकतानुसार शामिल किया गया है।

5. भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षा मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा संपादित किए गए हैं।

विहंगावलोकन

विहंगावलोकन

इस प्रतिवेदन में तीन अध्याय सम्मिलित हैं: प्रथम अध्याय में राज्य की वित्तीय स्थिति, योजना तथा लेखापरीक्षा का संचालन और लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का अनुपालन। इस प्रतिवेदन के अध्याय दो में पाँच निष्पादन लेखापरीक्षा समीक्षाओं और दो दीर्घ कंडिकाओं के जाँच परिणाम तथा अध्याय तीन विभिन्न विभागों के अनुपालन लेखापरीक्षा से संबंधित है। इस प्रतिवेदन में निष्पादन लेखापरीक्षा एवं अनुपालन लेखापरीक्षा कंडिकाओं के जाँच परिणाम सम्मिलित हैं, जिनका कुल मौद्रिक मूल्य ₹ 2533.34 करोड़ है।

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग हेतु विहित लेखा–परीक्षण मानकों के अनुसार लेखापरीक्षा संचालित की गई है। लेखापरीक्षा नमूनों का चयन, संख्यिकीय नमूना प्रणाली के साथ–साथ जोखिम आधारित विवेकपूर्ण नमूना के आधार पर किया गया है। प्रत्येक निष्पादन लेखापरीक्षा में अंगीकृत विशिष्ट लेखापरीक्षा पद्धति शामिल किए गए हैं। सरकार के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए लेखापरीक्षा निष्कर्ष निकाले गए हैं और अनुशंसाएँ की गई है। प्रमुख लेखापरीक्षा के जाँच परिणामों का सार इस विहंगावलोकन में प्रस्तुत किया गया है।

1. विभागों / कार्यकलापों / कार्यक्रमों का निष्पादन लेखापरीक्षा

(i) बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद की कार्यप्रणाली

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद (बि.रा.प्र.नि.प.) मुख्य एजेंसी के रूप में पर्यावरण कानून को लागू करने एवं प्रदूषण निवारण, नियंत्रण एवं कमी के लिए नीति तैयार करने के लिए उत्तरदायी है। आरम्भ से ही, बि.रा.प्र.नि.प., दूसरे राज्य बोर्डों की तरह अपने कार्यों का निष्पादन जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम 1974 के अन्तर्गत करता आ रहा है। बि.रा.प्र.नि.प. द्वारा प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की पहचान करने के लिए कोई सर्वेक्षण नहीं किया गया था तथा कार्यक्रमों की योजना बनाने हेतु कोई वैसी सूची भी संधारित नहीं थी। आगे, बि.रा.प्र.नि.प. राज्य में मल–जल प्रशोधन सयंत्र की आवश्यकता का निर्धारण करने में विफल रहा। स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों (चिह्नित 2538 में से 1299) तथा पशु चिकित्सा संस्थान जो पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के अधिकार क्षेत्र में थे, जीव–चिकित्सा अपशिष्ट (प्रबंधन एवं हथालन) नियम, 1998 के विरूद्ध बिना बि.रा.प्र.नि.प. के प्राधिकार के संचालित किए जा रहे थे। केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986, आई.एस.ओ. 17025 / 9001 के मान्यता के बिना क्रियाशील थे तथा आवश्यक उपकरण / यंत्र के बगैर खतरनाक अपशिष्टों का विश्लेषण कार्य कर रहे थे। अधिक संख्या में रिक्तियाँ भी बि.रा.प्र.नि.प. के क्रियाकलाप में बाधक थी।

(कंडिका 2.1)

(ii) राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (रा.गाँ.कि.स.यो.) – सबला का कार्यान्वयन

वर्ष 11–18 आयु समूह की बालिकाओं के पोषण एवं स्वास्थ्य स्तर में सुधार करने हेतु केन्द्रीय प्रायोजित योजना, राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (रा.गाँ.कि.स.यो.) –सबला, का शुभारम्भ भारत सरकार (भा.स.) द्वारा नवम्बर 2010 में किया गया था। बिहार सरकार द्वारा मार्च 2011 में राज्य के 38 जिलों में से 12 जिलों में इस योजना की शुरूआत की गई थी। लेखापरीक्षा ने पाया कि किशोरी बालिकाओं के आँकड़े विश्वस्त नहीं थे तथा योजना दिशानिर्देश के विरूद्ध, 18 वर्ष से अधिक आयु की बालिकाओं तथा 11 से 14 वर्ष की विद्यालय जाने वाली बालिकाओं को योजना के लाभ की अनुमति दी गई थी। केन्द्रीय सहायता का उपयोगिता प्रमाण–पत्र या तो प्रस्तुत नहीं किए गए थे या विलम्ब से प्रस्तुत किए गए थे जिसके परिणामस्वरूप केन्द्रांश का ₹ 173.75 करोड़, लेखापरीक्षा अवधि में अप्राप्त थे। जाँचित जिलों में योजना के पोषण

समर्थन घटक के अन्तर्गत, चिह्नित किशोरी बालिकाओं को 300 दिनों का टी.एच.आर. मुहैया नहीं कराया जा सका तथा गैर–पोषण घटक के अर्न्तगत, उन्हें योजना सेवाएँ जैसे स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाएँ, पोषण व स्वास्थ्य शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा व जन–सुविधाओं, परिवार कल्याण सलाह मार्गदर्शन, व्यवसायिक प्रशिक्षण इत्यादि नहीं मिला था।

(कंडिका 2.2)

(iii) पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालयों की कार्यप्रणाली

पुरातत्व निदेशालय, पुरातात्विक अवशेषों की खोज, संरक्षण एवं विकास के साथ–साथ स्मारक तथा संभावित स्थलों को विकसित करने के लिए जबकि संग्रहालय निदेशालय, सरकारी संग्रहालयों के संचालन के लिए जिम्मेवार था। लेखापरीक्षा ने पाया कि पुरातत्व निदेशालय के पास उत्खनन हेतु स्थल चयन के लिए न तो कोई नीति या दिशा–निर्देश ही निर्धारित था और न हीं समय सीमा के भीतर परियोजनाओं को पूर्ण करने हेतु कोई प्राथमिकता सूची या लम्बी अवधि की परिप्रेक्ष्य योजना थी। निदेशालय द्वारा असंरक्षित स्थलों एवं स्मारकों का सर्वेक्षण नहीं किया गया था। आगे, निदेशालय के पास पुरावशेषों के प्रबंधन हेतु व्यापक नीति नहीं थी। संग्रहालय में पुरावशेषों का संरक्षण और प्रलेखीकरण, अभिलेखन एवं एकत्रित पांडुलिपि/पुस्तकों का प्रकाशन, इन्टरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम्स कोड ऑफ एथिक्स में निर्धारित मानकों के अनुसार नहीं किया गया था। राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा पटना संग्रहालय में लाई गई तिब्बती पांडुलिपियाँ अनुवादित/प्रकाशित नहीं हुआ था। संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों का डेटाबेस या विस्तृत विवरणी नहीं था। पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय मानवशक्ति एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों की भारी कमी का सामना कर रहा था। निदेशालय द्वारा वर्ष 2009–14 की अवधि के दौरान किसी भी कर्मचारियों को कोई भी प्रशिक्षण नहीं दिया गया।

(कंडिका 2.3)

(iv) बिहार में संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान का कार्यान्वयन

संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान (सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.) का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में सर्व शिक्षा अभियान (स.शि.अभि.) के अंर्तगत अनाच्छादित ग्रामीण क्षेत्रों के सभी विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रो (आं.केन्द्र) में स्वच्छता अच्छादन में तेजी लाना है। लेखापरीक्षा ने पाया कि बिहार राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन (बि.रा.ज. एवं स्व. मिशन) राज्य में जल और स्वच्छता सहायता संगठन (ज. और स्व.स.संग.) स्थापित नहीं कर सका। जिला जल एवं स्वच्छता मिशन, प्रखंड संसाधन केन्द्र तथा ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का गठन नहीं किया गया था। स्वीकृत बल के विरूद्ध राज्य तथा जिला स्तर पर क्रमशः 55 प्रतिशत और 81 प्रतिशत पद खाली पड़े थे। बि.रा.ज. एवं स्व.मिशन द्वारा वर्ष 2010–14 की अवधि में प्रारंभिक सर्वेक्षण नहीं किया गया था। जाँचित जिलो में बिना जमीनी स्तर पर समेकित योजना को तैयार किये, वार्षिक कार्यान्वयन योजना बनाए गये थे यथा प्रखंड एवं ग्राम पंचायत योजना। राज्य में वर्ष 2010–14 के दौड़ान वैयक्तिक पारिवारिक शौचालय (वै.पा.शौचा.) के निर्माण का लक्ष्य 14 से 71 प्रतिशत के बीच था। नमूना जाँचित जिलो में सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देशों का उल्लंघन कर प्रोत्साहन आधारित कार्यक्रम को एक योजना आधारित में बदल कर ₹ 245.34 करोड़ का अनियमित भुगतान वै.पा.शौचा. के निर्माण पर किया गया। शिक्षा तथा संचार घटक तथा योजना का अनुश्रवण तथा मूल्यांकन का क्षेत्र अपर्याप्त था।

(कंडिका 2.4)

(v) बिहार में राज्य उच्च पथों का निर्माण एवं अनुरक्षण

राज्य उच्च पथ (रा.उ.प.) जिला मुख्यालय और राज्य के भीतर महत्वपूर्ण शहरो को जोड़ने तथा उसे राष्ट्रीय उच्चपथ (एन.एच.) या पड़ोसी राज्यों के उच्चपथ से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण रास्ते है। लेखापरीक्षा ने पाया कि विभाग ने अभी तक पथों को राज्यपथ घोषित करने के कसौटी को अधिसूचित नहीं किया था। सरकार द्वारा निर्माण हेतु पर्याप्त तथा ससमय निधि उपलब्ध करा देने के बावजूद 12 नमूना जाँचित रा.उ.प. में से दो का कार्य बि.रा.प.वि.नि. द्वारा पूर्ण नहीं किया जा सका। ये कार्य भूमि अधिगृहीत नहीं होने, उपयोगिता का स्थानान्तरण नहीं होने आदि, जो विभाग की जिम्मेदारी थी, के कारण दो वर्षो से ज्यादा विलम्बित हुए। राज्य उच्चपथ 68, रा.उ.प. 69 एवं रा.उ.प. 78 के विस्तृत परियोजना विवरण वास्तविक स्थल स्थिति के अनुसार नहीं बनाए गये, परिणामस्वरूप परियोजना के लागत में वृद्धि हुई। पूर्ण रा.उ.प. को बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प.नि.वि. को विलम्ब से हस्तांतरण किये जाने के परिणामस्वरूप इन्हे आ.पी.आर.एम.सी. के अंतर्गत नहीं लिया जा सका। जिसके परिणामस्वरूप रा.उ.प. का अनुरक्षण सुनियोजित तरीक से नहीं हो सका।

(कंडिका 2.5)

2. दीर्घ कंडिकाएँ

(i) 'क्राईम एवं क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क और सिस्टम' पर दीर्घ कंडिका

क्राईम एवं क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क और सिस्टम (सीसीटीएनएस) परियोजना का उद्देश्य ई–शासन के सिद्धान्तों को अपनाते हुए सभी स्तरों पर पुलिस बल की कार्यकुशलता और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए, विशेष रूप से थाना स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के विकास के लिए राज्य के अत्याधुनिक ट्रैकिंग प्रणाली की स्थापना के साथ राष्ट्रव्यापी नेटवर्क के बुनियादी ढ़ाँचे के निर्माण का था। लेखापरीक्षा में पाया गया कि सीसीटीएनएस परियोजना बुनियादी ढ़ाँचे के निर्माण में देरी के कारण राज्य में शुरू नहीं हो सका और परियोजना का उद्देश्य वास्तविक समय के आधार पर राज्य और केन्द्रीय स्तर पर देश भर में अपराध और अपराधियों से संबंधित डेटाबेस की साझीदारी प्राप्त नहीं किया जा सका था। कोर एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर अनुकूलित नहीं किया गया था। सभी को व्यापक प्रशिक्षण के बदलें केवल सीमित संख्या में पुलिस कर्मियों को बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान किया गया था तथा पुलिस थाना से राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरों के स्तर पर नेटवर्क कनेक्टिविटी की परिकल्पना पूरी नही हुई थी।

(कंडिका2.6)

(ii) 'पटना नगर निगम–ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा भवन प्लानों की स्वीकृति' पर दीर्घ कंडिका

पटना नगर निगम (प.न.नि.), पटना का वैधानिक कार्य अपने क्षेत्राधिकार में नागरिक सुविधाएँ प्रदान करना है। इस लेखापरीक्षा में हमलोगों ने (वर्ष 2009–14 की अवधि के लिए प.न.नि. के दो मुख्य कार्यों यथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (ठो.अ.प्र.) तथा भवन प्लान का विश्लेषण किया था। प.न.नि. कुंजी दस्तावेज तैयार नहीं करता था जो कि बिहार नगरपालिका अधिनियम, 2007 तथा बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली 1928 के लिए जरूरी था। 209 लेखापरीक्षा आपत्तियों में से केवल 74 के हीं जवाब प.न.नि. द्वारा दिए गए। लेखापरीक्षा में पाया गया कि प.न.नि. में ठोस वित्तीय प्रबंधन नहीं था जैसा कि कई मामलों में ईंधन विपत्रो का अनियमित भुगतान तथा अधिक शुल्क की माँग का मामला लेखापरीक्षा में पाया गया था। प.न.नि. के पास पर्याप्त ठोस अपशिष्ठों प्रबंधन

प्रणाली यथा अपशिष्ठो का घर–घर से संग्रहण, पृथक्करण तथा पुनरावर्त्तन नहीं किये जा रहे थे। प्रसंस्करण इकाई की स्थापना नहीं की गई थी तथा कूड़ों को अनाधिकृत गडढों में फेंका जा रहा था। योजना जिसे अमान्य सतह क्षेत्र अनुपात के साथ अनुमोदन किया गया में भवन उप–विधियों का पालन नहीं किया गया था। बहुमंजिली इमारतों की योजना का अनुमोदन बिना सार्वजनिक की चौड़ाई को ध्यान में रखकर किया गया था। भवन–प्लान के अनुमोदन के समय विकास अनुज्ञा शुल्क तथा दाखिल–खारिज शुल्क की वसूली नहीं की गई थी जिसके कारण प.न.नि. को राजस्व की हानि हुई।

(कंडिका 2.7)

3. अनुपालन लेखापरीक्षा निष्कर्ष

लेखापरीक्षा ने संवेदनशील क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कमियों को पाया, जो राज्य सरकार की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। अनुपालन लेखापरीक्षा से उत्पन्न कुछ प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्षों (14 कंडिकाओं) को प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख अवलोकन नियमों एवं विनियमों के गैर–अनुपालन, औचित्य के विरूद्ध लेखापरीक्षा तथा बिना पर्याप्त औचित्य के व्यय के मामले एवं दृष्टिचूक/शासकीय विफलता से संबंधित है। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है:

- जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, बेगुसराय द्वारा अत्यधिक दर पर अभिकरणों को अविवेकपूर्ण कार्य आवंटन के फलस्वरूप ₹ 1.31 करोड़ का आधिक्य व्यय के साथ–साथ उस सीमा तक सरकार को हानि हुई।

  (कंडिका 3.1)

- असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, किशनगंज द्वारा समुचित जाँच, मूल्यांकन तथा सतर्कता की कमी के कारण अस्तित्वविहीन अनुमंडलीय अस्पताल के वाह्य सेवा हेतु एक एजेंसी को ₹ 53.94 लाख का कपटपूर्ण भुगतान हुआ।

  (कंडिका 3.2)

- राज्य स्वास्थ्य समिति के निर्धारित प्रक्रियाओं का उल्लंघन कर दवाओं के अनियमित क्रय के फलस्वरूप ₹ 1.41 करोड़ का अधिक भुगतान हुआ।

  (कंडिका 3.3)

- दवाओं के क्रय से संबंधित विहित नियमों तथा अनुदेशों के अनुपालन नहीं किए जाने एवं प्रतिबंधित दवाओं के अनियमित क्रय के कारण सरकार को ₹ 88.28 लाख की हानि हुई।

  (कंडिका 3.4)

- सर्व शिक्षा अभियान के तहत निर्गत राशि को प्रधानाध्यापक से वापसी हेतु कार्यवाही शुरू करने में जिला कार्यक्रम पदाधिकारी की विफलता के कारण ₹ 20.11 लाख का गबन हुआ।

  (कंडिका 3.5)

- लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग द्वारा कुछ मामलों में संविदा में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के प्रत्यर्पण संबंधी विशिष्ट उपबंध सन्निविष्ट नहीं किए जाने तथा अन्य मामलों में इसका अनुसरण नहीं किए जाने के कारण जलापूर्त्ति परियोजना हेतु आपूर्त्तित पाईपों पर देय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के छूट का लाभ नहीं उठाया जा सका जिससे सरकार को ₹ 12.58 करोड़ की हानि हुयी।

  (कंडिका 3.6)

- बिहार राज्य जल पर्षद द्वारा जमीन की उपलब्धता सुनिश्चित किये बगैर जलापूर्त्ति कार्यों के कार्यान्वयन हेतु कास्ट–आयरन पाइपों के अविवेकपूर्ण अधिप्राप्ति के फलस्वरूप ₹ 3.03 करोड़ का निष्क्रिय व्यय हुआ।

(कंडिका 3.7)

- प्रमंडलीय पदाधिकारी की प्रक्रिया एवं प्रणाली के अनुपालन तथा कोषागार में तथाकथित प्रेषित राशि की जाँच में विफलता के परिणामस्वरूप ₹ 8.37 लाख के सरकारी राशि का दुर्विनियोजन हुआ।

(कंडिका 3.8)

- बिहार लघु खनिज रियायती नियमों एवं संविदा की विशेष शर्त्तों का अनुपालन नहीं किये जाने के फलस्वरूप ₹ 12.28 करोड़ के रॉयल्टी की कम कटौती हुई और उस सीमा तक सरकार को हानि हुई।

(कंडिका 3.9)

- मानक निविदा दस्तावेज के प्रावधानों के विपरीत विभाग द्वारा मिट्टी के रॉयल्टी से संबंधित विपत्रों की गणना हेतु गलत सूत्र के अविवेकपूर्ण अंगीकरण तथा बगैर वित्त विभाग की स्वीकृति के फलस्वरूप ₹ 3.57 करोड़ का अधिक भुगतान हुआ और संवेदकों को अदेय वित्तीय लाभ हुआ।

(कंडिका 3.10)

- दो कटाव निरोधक कार्य, जिन पर ₹ 91.35 लाख का व्यय हुआ था, बाढ़ से नदी तटबंधों की रक्षा करने में विफल रहे जिसके परिणामस्वरूप उस सीमा तक व्यर्थ व्यय हुआ।

(कंडिका 3.11)

- विभाग द्वारा जोखिम एवं लागत उपबंध लागू किया गया परंतु अवशेष कार्य पूर्ण करने हेतु आवश्यक अंतर–राशि को वसूल करने में विफल रहा जिसके परिणामस्वरूप राजकीय राजकोष पर ₹ 2.18 करोड़ के अतिरिक्त भार का सृजन हुआ।

(कंडिका 3.12)

- उपयोगिता को सुनिश्चित किये बिना विभाग द्वारा संयत्रों और उपकरणों की खरीद के अविवेकपूर्ण निर्णय के कारण निष्क्रिय संयत्रों पर ₹ 1.34 करोड़ राशि का निष्फल व्यय हुआ।

(कंडिका 3.13)

- आधारभूत संरचना विकास प्राधिकरण, पटना द्वारा जोखिम एवं लागत उपबंध को लागू करने में विफल रहने के परिणामस्वरूप राज्य के राजकोष पर ₹ 2.22 करोड़ का अतिरिक्त भार पड़ा।

(कडिका 3.14)

अध्याय-I

प्रस्तावना

अध्याय-I
परिचय

1.1 बजट की रूपरेखा

राज्य में 44 विभाग एवं 27 स्वायत्त निकाय हैं। वर्ष 2009–14 के दौरान राज्य सरकार के बजट अनुमान तथा उसके विरूद्ध वास्तविक व्यय **तालिका 1.1** में दी गई है।

तालिका 1.1: वर्ष 2009–14 के दौरान राज्य सरकार के बजट एवं व्यय

(₹ करोड़ में)

विवरण	2009-10		2010-11		2011-12		2012-13		2013-14	
	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक
राजस्व व्यय										
सामान्य सेवाएँ	12952.59	12202.35	15448.33	15286.97	18505.11	17729.72	22192.64	18645.11	25469.15	22018.47
सामाजिक सेवाएँ	15571.36	13186.41	17816.09	15089.42	20862.15	18728.78	25632.67	23107.37	32004.63	26394.85
आर्थिक सेवाएँ	7186.96	7087.95	7409.82	7836.28	10562.18	10037.82	13129.83	12709.96	15779.73	14060.06
सहायक अनुदान एवं सहायता	4.12	107.46	4.12	3.25	4.12	3.17	4.12	3.71	4.12	3.85
कुल (1)	**35715.03**	**32584.17**	**40678.36**	**38215.92**	**49933.56**	**46499.49**	**60959.26**	**54466.15**	**73257.63**	**62477.23**
पूँजीगत व्यय										
पूँजीगत परिव्यय	11731.31	7332.09	13080.19	9195.94	15392.31	8852.01	17727.56	9584.52	18830.30	14001.00
संवितरित ऋण एवं अग्रिम	430.16	896.78	730.67	1102.63	1036.60	1906.08	1260.71	2085.95	1394.38	807.38
लोक ऋण का प्रतिदान	1884.11	1982.99	1915.56	2190.03	2907.89	2922.46	3054.48	3069.96	3238.73	3119.56
आकस्मिक निधि	0	0	0	1150.00	0	800.00	0	2250.00	0	1450.43
लोक लेखा संवितरण	3837.32	15447.74	5068.21	16749.02	5819.74	21393.22	7108.79	24798.82	7019.00	29452.57
अंतिम रोकड़ शेष	0	2291.13	0	2735.44	0	1509.45	0	3715.58	0	6156.39
कुल (1)	**35715.03**	**32584.17**	**40678.36**	**38215.92**	**49933.56**	**46499.49**	**60959.26**	**54466.15**	**73257.63**	**62477.23**
कुल (2)	**17882.90**	**27950.73**	**20794.63**	**33123.06**	**25156.54**	**37383.22**	**29151.54**	**45504.83**	**30482.41**	**54987.33**
सकल योग (1+2)	**53597.93**	**60534.90**	**61472.99**	**71338.98**	**75090.10**	**83882.71**	**90110.80**	**99970.98**	**103740.04**	**117464.56**

(स्रोतः वार्षिक वित्तीय विवरणी एवं राज्य बजट के स्पष्टीकरण ज्ञापन)

1.2 राज्य सरकार के संसाधनों के अनुप्रयोग

वर्ष 2013–14 में ₹ 113152.92 करोड़ के कुल बजट के विरूद्ध कुल व्यय (दत्तमत एवं भारित) ₹ 81673.40 करोड़ था। वर्ष 2009–14 के दौरान राज्य का कुल व्यय (राजस्व व्यय, पूँजीगत व्यय और ऋण एवं अग्रिम मिलाकर) ₹ 40813 करोड़ से ₹ 77285 करोड़ तक बढ़ गया। राज्य सरकार का राजस्व व्यय 92 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वर्ष 2009–10 में ₹ 32584 करोड़ से वर्ष 2013–14 में ₹ 62477 करोड़ हुआ। वर्ष 2009–14 की अवधि के दौरान गैर–योजनागत राजस्व व्यय 80 प्रतिशत की वृद्धि के साथ ₹ 24145 करोड़ से ₹ 43381 करोड़ एवं पूँजीगत व्यय 91 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ ₹ 7332 करोड़ से ₹ 14001 करोड़ हुआ।

वर्ष 2009–14 के दौरान राजस्व व्यय, कुल व्यय का 79 से 82 प्रतिशत हिस्सा था एवं पूँजीगत व्यय, कुल व्यय का 14 से 19 प्रतिशत हिस्सा था। इस दौरान, कुल व्यय 17.87 प्रतिशत की वार्षिक औसत वृद्धि की दर से बढ़ा, जबकि वर्ष 2009–14 के दौरान राजस्व प्राप्ति 18.80 प्रतिशत की वार्षिक औसत दर से बढ़ा।

1.3 सतत बचतें

11 मामलों के प्रत्येक में सतत बचतें ₹ 20 करोड़ से ज्यादा था और पिछले पाँच वर्षों के दौरान कुल अनुदान का 11 से 76 प्रतिशत के बीच था जिसका विस्तृत विवरण **तालिका 1.2** में दिया गया है।

तालिका 1.2: वर्ष 2009–14 के दौरान सतत् बचतों वाले अनुदान की सूची

(₹ करोड़ में)

क्र. सं.	अनुदान के नाम एवं संख्या	बचत की राशि एवं प्रतिशतता									
		2009-10		2010-11		2011-12		2012-13		2013-14	
राजस्व–दत्तमत											
		राशि	प्रतिशतता	राशि	प्रतिशतता	राशि	प्रतिशतता	राशि	प्रतिशतता	राशि	प्रतिशतता
1	2–पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग	62.53	18.99	165.72	40.67	210.59	43.22	426.49	44.31	607.69	62.55
2	12–वित्त विभाग	39.09	10.91	55.64	13.46	122.72	43.27	223.31	31.97	106.32	27.48
3	20–स्वास्थ्य विभाग	278.83	16.79	479.42	23.92	528.85	21.52	569.78	22.26	623.24	22.30
4	27–विधि विभाग	31.32	10.72	130.41	26.37	148.50	26.19	151.31	26.11	141.61	22.78
5	40–राजस्व एवं भूमि–सुधार विभाग	120.13	17.17	128.43	23.06	148.70	24.05	72.52	14.96	132.67	21.20
6	41–पथ निर्माण विभाग	274.30	38.78	198.29	33.58	120.06	18.44	109.32	16.45	413.22	32.96
7	50–लघु जल संसाधन विभाग	93.81	28.18	108.29	15.78	291.77	50.39	92.81	25.99	668.14	66.10
कुल		**900.01**		**1266.20**		**1571.19**		**1645.54**		**2692.89**	
पूँजीगत–दत्तमत											
8	3–भवन निर्माण विभाग	26.79	29.86	66.52	36.16	292.26	57.49	722.07	69.33	659.52	40.88
9	36–लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग	462.89	50.68	268.62	29.99	137.81	31.09	265.47	50.66	97.55	13.62
10	49–जल संसाधन विभाग	1415.28	52.57	1722.91	56.81	625.86	26.65	672.73	27.47	1853.56	53.61
11	50–लघु जल संसाधन विभाग	95.11	57.02	181.26	**75.96**	110.50	42.42	127.24	43.26	108.10	35.51
कुल		**2000.07**		**2239.31**		**1166.43**		**1787.51**		**2718.73**	
सकल योग		**2900.08**		**3505.51**		**2737.62**		**3433.05**		**5411.62**	

(स्रोतः सबधितं वर्ष के विनियोग लेखे)

1.4 राज्य कार्यान्वयन अभिकरणों को सीधे स्थानांतरित निधियाँ

वर्ष 2013–14 के दौरान, भारत सरकार ने राज्य के विभिन्न कार्यान्वयन अभिकरणों को सीधे तौर पर ₹ 9464.50 करोड़ का स्थानांतरण किया। चूँकि इन निधियों को राज्य बजट/राज्य कोषागार के माध्यम से परिचालित नहीं किया गया था, ये राज्य के लेखे में प्रतिबिंबित नहीं हुए।

1.5 भारत सरकार से प्राप्त सहायक अनुदान

भारत सरकार से प्राप्त सहायक अनुदान वर्ष 2009–10 में ₹ 7564.16 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2013–14 में ₹ 12584.03 करोड़ हो गया जिसे **तालिका 1.3** में दर्शाया गया है।

तालिका 1.3: भारत सरकार से प्राप्त सहायक अनुदान

(₹ करोड़ में)

विवरण	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
गैर–योजना अनुदान	2256.20	1924.78	2562.62	2412.58	3288.13
राज्य योजना व्यवस्था के लिए अनुदान	3720.97	5456.95	5065.39	5051.97	6238.39
केन्द्रीय योजना व्यवस्था के लिए अनुदान	137.71	175.70	95.78	35.69	136.65
केन्द्रीय प्रायोजित योजना के लिए अनुदान	1449.28	2141.13	2159.19	2777.68	2920.96
कुल	**7564.16**	**9698.56**	**9882.98**	**10277.92**	**12584.03**
पूर्व वर्ष से प्रतिशत में वृद्धि	(-) 5.00	28.22	1.90	4.00	22.44
राजस्व प्राप्ति	35527	44532	51320	59567	68919
राजस्व प्राप्ति के प्रतिशतता के रूप में कुल अनुदान	21.29	21.78	19.26	17.25	18.26

(स्रोतः संबंधित वर्ष के लिए राज्य के वित्त लेखे)

1.6 लेखापरीक्षा का आयोजना एवं संचालन

लेखापरीक्षा प्रक्रिया विभिन्न विभागों, स्वायत्त निकायों, योजनाओं/परियोजनाओं आदि का, उनके कार्यकलापों की नाजुकता/जटिलता, प्रत्यायोजित वित्तीय शक्तियो का स्तर, आंतरिक नियंत्रण तथा हिस्सेदारों के प्रति रवैया एवं पिछले लेखापरीक्षा परिणामों के जोखिम आँकलन के साथ शुरू होती है। इस जोखिम आँकलन के आधार पर, लेखापरीक्षा की बारम्बारता तथा सीमा तय की जाती है तथा एक वार्षिक लेखापरीक्षा योजना तैयार की जाती है।

लेखापरीक्षा की समाप्ति के बाद, लेखापरीक्षा परिणामों को निरीक्षण प्रतिवेदन में सम्मिलित कर कार्यालय अध्यक्ष को इस अनुरोध के साथ निर्गत किया जाता है कि इसके जवाब एक महीने के अन्दर सौंपे जाएँ। जवाब प्राप्ति उपरांत, लेखापरीक्षा परिणामों को या तो निपटा दिए जाते हैं या अनुपालन हेतु आगे की कार्यवाही के लिए परामर्श दिया जाता है। इन निरीक्षण प्रतिवेदनों में इंगित महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा अवलोकनों को भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में समावेश के लिए कार्रवाई की जाती है जिसे भारतीय संविधान की धारा 151 के अन्तर्गत बिहार राज्य के राज्यपाल को प्रस्तुत की जाती है।

वर्ष 2013–14 में, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार के कार्यालय द्वारा राज्य के 828 निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी और 17 स्वायत्त निकाय का अनुपालन लेखापरीक्षा किया गया। इसके अलावे, सात निष्पादन लेखापरीक्षा भी किए गए जिसमें दो दीर्घ कंडिकाएँ शामिल हैं।

1.7 निरीक्षण प्रतिवेदनों के प्रति सरकार की उदासीनता

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार लेन–देनों के नमूना–जाँच द्वारा सरकारी विभागों का आवधिक निरीक्षण करते हैं और निर्धारित नियमों तथा प्रक्रियाओं के अनुसार महत्वपूर्ण लेखाकरण एवं अन्य अभिलेखों के रखरखाव का सत्यापन करते हैं। इन निरीक्षणों के बाद लेखापरीक्षा निरीक्षण प्रतिवेदन (नि.प्र.) जारी किए जाते है। जब लेखापरीक्षा निरीक्षण के दौरान महत्वपूर्ण अनियमितताओं इत्यादि का पता लगने पर कार्य स्थल पर सुलझाया नहीं जाता है तो ये नि.प्र. लेखापरीक्षित कार्यालय के प्रमुख को जारी किया जाता है एवं प्रतिलिपि अगले उच्चाधिकारियों को भेजी जाती है।

इन नि.प्र. कि प्राप्ति के चार सप्ताह के भीतर कार्यालयाध्यक्षों एवं अगले उच्चाधिकारियों को अपना अनुपालन महालेखाकार (लेखापरीक्षा) को देना होता है। गम्भीर अनियमितताएँ महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार के कार्यालय द्वारा प्रधान सचिव (वित्त)

को भेजे जाने वाले लंबित नि.प्र. की एक अर्धवार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से संबंधित विभागाध्यक्षों के जानकारी में भी लायी जाती है।

नमूना लेखापरीक्षा के परिणामों के आधार पर, 31 मार्च 2014[1] तक लंबित 5376 निरीक्षण प्रतिवेदनों में सम्मिलित कुल 31185 लेखापरीक्षा प्रेक्षण **तालिका 1.4** में दिये गए हैं।

तालिका 1.4: लंबित निरीक्षण प्रतिवेदन/कंडिकाएँ

(₹ करोड़ में)

क्र. स.	प्रक्षेत्र का नाम	निरीक्षण प्रतिवेदन	कंडिकाएँ	शामिल राशि
1	सामान्य प्रक्षेत्र	661	3392	6485.47
2	सामाजिक प्रक्षेत्र	2947	18145	97586.20
3	आर्थिक प्रक्षेत्र (गैर सा.क्षे. उ)	1768	9648	47428.69
Total		**5376**	**31185**	**151500.36**

(स्रोतः इस कर्यालय के विभिन्न प्रक्षेत्रों से प्राप्त सूचनाओ का संकलन)

वर्ष 2013–14 के दौरान, लेखापरीक्षा समिति की तीन बैठकें हुई जिनमें केवल तीन कंडिकाओं का निपटारा किया गया।

सितम्बर 2013 तक 39 विभागों से संबंधित 2893 निकासी एवं व्ययन पदाधिकारियों को जारी निरीक्षण प्रतिवेदनों की विस्तृत समीक्षा से पता चलता है कि 31 मार्च 2014 की समाप्ति पर 5376 नि.प्र. जिसमें 31185 कंडिकाओं में शामिल ₹ 151500.36 करोड़ के वित्तीय मूल्यांकन लंबित थे। इन 5376 नि.प्र. एवं 31185 कंडिकाओं के लंबित मामलों की वर्ष–बार स्थिति ***परिशिष्ट–1.1*** एवं अनियमितताओं के प्रकार ***परिशिष्ट–1.2*** में वर्णित है।

विभागीय अधिकारियों द्वारा लंबित नि.प्र. में संकलित अवलोकनों पर तय समय में कार्रवाई करने में असफल रहने के कारण उत्तररदायित्व का ह्रास हुआ।

यह अनुशंसा की जाती है कि सरकार मामलों में रूचि ले ताकि लेखापरीक्षा अवलोकनों पर आवश्यक एवं त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित किया जा सके।

1.8 महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा टिप्पणियों (प्रारूप कंडिकाओं/समीक्षाओं) के प्रति सरकार की प्रतिक्रिया

विगत कुछ वर्षों में लेखापरीक्षा ने चयनित विभागों में विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों के कार्यान्वयन के साथ–साथ आंतरिक नियंत्रण की गुणवत्ता पर कई महत्वपूर्ण कमियों को प्रतिवेदित किया है, जिसका कार्यक्रमों की सफलता और विभागों के क्रियाकलापों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। विनिर्दिष्ट कार्यक्रमों/योजनाओं की लेखापरीक्षा एवं कार्यपालिका को सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए उपयुक्त अनुशंसाएँ देने तथा नाकरिकों को बेहतर सेवा देने पर विशेष ध्याान दिया गया था।

भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा एवं लेखा विनियम, 2007 के प्रावधानों के अनुसार, विभागों के लिए आवश्यक है कि वे भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में सम्मिलित करने हेतु प्रस्तावित प्रारूप निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन एवं प्रारूप कंडिकाओं पर अपनी प्रतिक्रिया छह सप्ताह के अंदर प्रेषित करें। यह उनके व्यक्तिगत ध्यान में लाया गया था कि इन कंडिकाओं के भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन, जो कि राज्य

[1] *30 सितम्बर 2013 तक निर्गत और 31 मार्च 2014 तक लंबित नि.प्र. एवं कंडिकाएँ शामिल हैं।*

विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत किए जाएंगे, में सम्मिलित होने की संभावना के मद्देनजर प्रकरण में उनकी टिप्पणियों को सम्मिलित किया जाना वांछनीय होगा। उन्हें निष्पादन लेखापरीक्षा के प्रारूप प्रतिवेदन एवं प्रारूप लेखापरीक्षा कंडिकाओं के संबंध में चर्चा करने के लिए महालेखाकार के साथ बैठक करने की भी सलाह दी गई थी। प्रतिवेदन में सम्मिलित करने के लिए प्रस्तावित इन प्रारूप प्रतिवेदनों एवं कंडिकाओं को संबंधित प्रधान सचिवों/सचिवों को उनके उत्तर प्राप्त करने हेतु अग्रेषित किया गया था। वर्तमान लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के लिए पाँच निष्पादन लेखापरीक्षा, दो दीर्घ कंडिकाएँ और 14 कंडिकाओं को संबंधित प्रशासनिक सचिवों को अग्रेषित किया गया था। सरकार/विभाग से सभी निष्पादन लेखापरीक्षा के प्रारुप प्रतिवेदनों पर, दीर्घ कंडिकाओं एवं सात कंडिकाओं के प्रति जवाब प्राप्त हुए हैं।

1.9 लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर कृत कार्रवाई

लोक लेखा समिति की आंतरिक कार्यप्रणाली के लिए प्रक्रिया के नियम के अनुसार प्रशासनिक विभागों को नियंत्रक–महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में सम्मिलित लेखापरीक्षा कंडिकाओं एवं समीक्षाओं पर स्वतः कार्रवाई प्रारंभ करनी थी चाहे लोक लेखा समिति द्वारा इनकी जाँच की गई हो या नहीं। उन्हें लेखापरीक्षा द्वारा परीक्षित विस्तृत टिप्पणीयों को विधानसभा में लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की प्रस्तुति के दो माह के भीतर की गई या प्रस्तावित उपचारात्मक कार्रवाई का वर्णन भी प्रस्तुत करने थे।

31 मार्च 2013 की अवधि तक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में सम्मिलित कंडिकाओं पर 30 सितम्बर 2014 तक प्राप्त कृत–कार्रवाई टिप्पणियों की वस्तुस्थिति **तालिका 1.5** में दी गई है।

तालिका 1.5: लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में सम्मिलित कंडिकाओं पर विभागीय कृत–कार्रवाई प्राप्ति की स्थिति

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन	वर्ष	30 सितम्बर 2014 तक लंबित विभागीय उत्तर (कंडिकाओं की संख्या)	राज्य विधानमंडल में प्रस्तुतिकरण का दिनांक	कृत–कार्रवाई की प्राप्ति की नियम तिथि
सामान्य, समाजिक एवं आर्थिक प्रक्षेत्र	2010-11	शून्य	3/4/2012	3/6/2012
	2011-12	2 और मगनरेगस[2]	1/8/2013	1/10/2013
	2012-13	12	15/7/2014	15/9/2014
राज्य वित्त	2010-11	28	3/4/2012	3/6/2012
	2011-12	28	2/4/2013	2/6/2013
	2012-13	34	21/2/2014	21/4/2014

(स्रोतः इस कर्यालय के लोक लेखा समिति अनुभाग से प्राप्त सूचनाओं का संकलन)

[2] *महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना।*

1.10 लेखापरीक्षा के परिणामस्वरूप वसूली

राज्य सरकार के विभागों के लेखे के नमूना जाँच के दौरान ज्ञात हुए वैसे लेखापरीक्षा निष्कर्ष जिनमें वसूली होनी है, विभिन्न विभागीय निकासी एवं व्ययन पदाधिकारियों की पुष्टि एवं लेखापरीक्षा को अग्रेतर आवश्यक कार्रवाई की जानकारी देने के लिए प्रेषित की गयी।

कुल मिलाकर 124 मामलों में ₹ 80.17 करोड़ की वसूली को चिह्नित (वर्ष 2013–14) किया गया। जबकि, वर्ष 2013–14 के दौरान कुल चार मामलों में ₹ 0.01 करोड़ की वसूली की गई जिसका विवरण **तालिका 1.6** में दी गई है।

तालिका 1.6: लेखापरीक्षा के द्वारा चिह्नित वसूली जिसे विभाग के द्वारा स्वीकार/वसूल किया गया

(₹ लाख में)

प्रक्षेत्रों के नाम	वर्ष 2013–14 के दौरान लेखापरीक्षा में चिह्नित वसूली जिसे विभाग द्वारा स्वीकार किया गया		वर्ष 2013–14 के दौरान की गई वसूली		विभाग	किए गए वसूली के विवरण
	मामलों की संख्या	राशि सम्मिलित	मामलों की संख्या	राशि सम्मिलित		
सामान्य प्रक्षेत्र	-	-	1	0.88	गृह	नगद राशि का दुर्विनियोजन
			1	0.28	विधि	यात्रा भत्ता का दुबारा भुगतान
			1	0.02	वित्त	वर्दी हेतु अधिक भुगतान
सामाजिक प्रक्षेत्र	27	169.36	-	-	-	-
आर्थिक प्रक्षेत्र	97	7848.00	1	0.08	पथ निर्माण	राजस्व का प्रेषण नहीं किया जाना

(स्रोतः इस कर्यालय के विभिन्न प्रक्षेत्रों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन)

1.11 राज्य विधान सभा में स्वायत्त निकायों के लिए अलग लेखापरीक्षा प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण की स्थिति

राज्य सरकार द्वारा कई स्वायत्त निकायों का गठन किया गया है। इन निकायों में से अधिकतर निकायों के लेन देनों, परिचालन संबंधी गतिविधि एवं लेखे, नियामक अनुपालन लेखापरीक्षा, आंतरिक प्रबंधन की समीक्षा, वित्तीय नियंत्रण एवं पद्धति तथा प्रक्रियाओं की समीक्षा इत्यादि के सत्यापन के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा लेखापरीक्षा किया जाता है। राज्य में चार स्वायत्त निकायों के लेखों की लेखापरीक्षा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को सौंपी गई है जिसमें तीन का नवनीकरण नहीं हुआ है। लेखापरीक्षा सौपें जाने की स्थिति, लेखों को लेखापरीक्षा को प्रस्तुत करने, पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन को जारी करने एवं विधान सभा में रखे जाने का विवरण ***परिशिष्ट 1.3*** में दर्शाया गया है।

वर्ष 2012–13 के लिए एक स्वायत्त निकाय के पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन देरी से लेखे प्राप्ति के कारण निर्गत नहीं हो पाए। शेष पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन लेखापरीक्षा सौपें जाने के अनवीकरण के कारण निर्गत नहीं किए गए ***(परिशिष्ट 1.3)***। उन पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों (पूर्ववर्ती वर्षों के लिए) को राज्य विधानमंडल के पटल पर जल्द से जल्द प्रस्तुत किए जाने की जरूरत है जिन्हें निर्गत किए गए हैं।

अध्याय-II

निष्पादन लेखापरीक्षा

अध्याय–II
निष्पादन लेखापरीक्षा

पर्यावरण एवं वन विभाग

2.1 *बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद की कार्यप्रणाली*

कार्यकारी सारांश

परिचय

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद (बि0रा0प्र0नि0प0) पर्यावरण कानून के प्रवर्त्तन के लिए मुख्य एजेन्सी है और प्रदूषण के निवारण, नियंत्रण या कमी के लिए नीति तैयार करने के लिए उत्तरदायी है। बि0रा0प्र0नि0प0 अन्य राज्य पर्षदों की तरह जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974 एवं वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1981 के अन्तर्गत उल्लेखित अपने कार्यो का निष्पादन कर रहा है।

(कंडिका 2.1.1)

सर्वेक्षण और योजना

बि0रा0प्र0नि0प0 ने प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की पहचान करने के लिए कोई सर्वेक्षण नहीं किया था। परिणामस्वरूप बि0रा0प्र0नि0प0 प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों का सूचीकरण नहीं कर सका तथा जल एवं वायु प्रदूषण के निवारण अथवा नियंत्रण के लिए कोई व्यापक योजना की रूपरेखा बनाने मे विफल रहा।

(कंडिका 2.1.6)

वित्तीय प्रबंधन

बि0रा0प्र0नि0प0 अपनी उपलब्ध निधियों का केवल 23 से 40 प्रतिशत ही उपयोग कर सका, जबकि इसका पूँजीगत व्यय कुल व्यय का केवल 0.1 से 29 प्रतिशत के बीच था। न तो स्थानीय प्राधिकारों ने जिन्हें जल आपूर्ति का कार्य सौंपा गया था, जल–खपत का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और न ही पर्षद ने उनके द्वारा देय जल उपकर का निर्धारण (अप्रैल 1978 से मार्च 2014 की अवधि के लिए 11 नगर निगमों को छोड़कर) किया।

(कंडिका 2.1.7 एवं 2.1.8.2)

सहमति प्रबंधन

बि0रा0प्र0नि0प0 ने सहमति रजिस्टर का संधारण नहीं किया था । परिणामस्वरूप राज्य में बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा प्रदान किये गये सहमतियों की कुल संख्या के आँकड़ों की जाँच लेखापरीक्षा में नहीं की जा सकी।

(कंडिका 2.1.9.1)

प्रदूषण नियंत्रण उपायों का कार्यान्वयन

140 स्थानीय निकायों में से चार जिलों के केवल चार स्थानीय निकायों में मल–जल प्रशोधन संयंत्र (सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट) (एस0टी0पी0) उपलब्ध थे तथा बि0रा0प्र0नि0प0 ने राज्य के शेष 34 जिलों मे मल–जल के प्रवाह के शोधन के लिए अधिनियममों के प्रावधानों के अन्तर्गत कोई कार्रवाई नहीं की। आगे, सात मौजूद एस0टी0पी0 में से दो अकार्यरत् थे तथा पाँच अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं कर रहे थे। राज्य के लगभग सभी नगरपालिका प्राधिकार नगरीय ठोस अपशिष्ट नियम, 2000 के प्रावधानों का अनुपालन नहीं कर रहे थे और बि0रा0प्र0नि0प0 उन सभी को निर्देश निर्गत करने

में विफल रहा । बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा अभिज्ञात स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों (एच0सी0ई0) में से 1209 एच0सी0ई0 को एवं राज्य के सभी पशु चिकित्सा संस्थानों को प्राधिकृत नहीं किया गया था । बि0रा0प्र0नि0प0 ने राज्य में खतरनाक अपशिष्ट जनक उद्योगों की कुल संख्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए कोई सर्वेक्षण अथवा संबंधित विभागों से सम्पर्क भी नहीं किया था।

(कंडिका 2.1.11, 2.1.12, 2.1.13 एवं 2.1.14)

पर्यावरणीय प्रयोगशाला

केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना बिना प्रमाणन के कार्यशील था। प्रयोगशाला में अपशिष्ट एवं जल/वायु प्रदूषकों के नमूनों के विश्लेषण के लिए वांछित उपकरण/यंत्र भी उपलब्ध नहीं थे ।

(कंडिका 2.1.15)

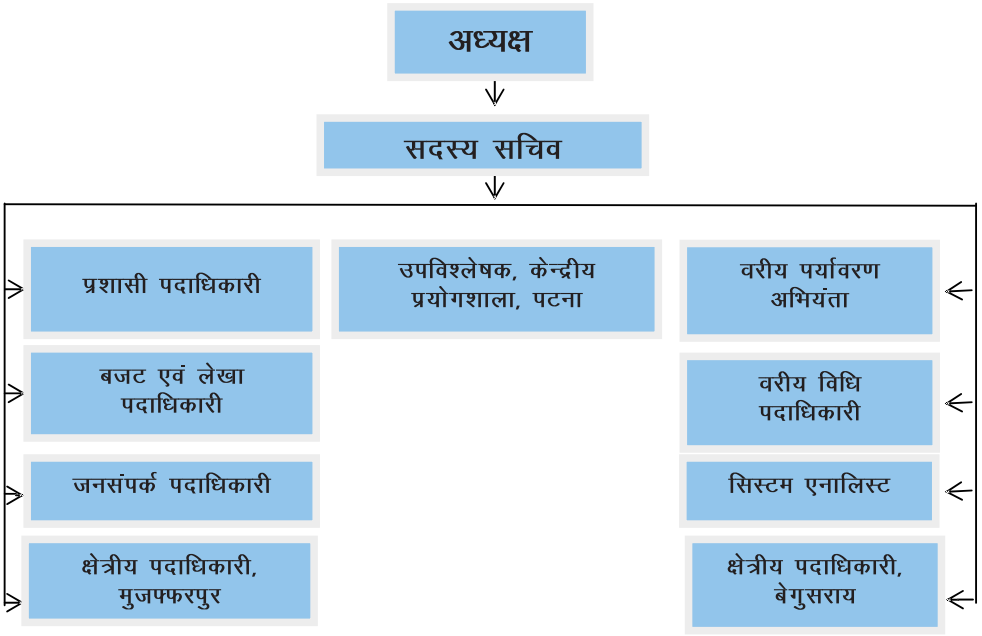
2.1.1 परिचय

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद (बि0रा0प्र0नि0प0) का गठन (नवम्बर 1974) संसद द्वारा अधिनियमित जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम 1974 की धारा 4 के अन्तर्गत किया गया था। अधिनियम के उद्देश्यों में जल प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण और जल की समग्रता को बहाल या पुनः सक्षम बनाना शामिल था। 1981 में बि0रा0प्र0नि0प0 को वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1981 के प्रावधानों के तहत वायु प्रदूषण के नियंत्रण की जिम्मेवारी सौंपी गई। संसद द्वारा अधिनियमित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 ने बि0रा0प्र0नि0प0 की गतिविधियों के दायरे को विस्तृत किया। उपरोक्त अधिनियमों ने राज्य पर्षद को औद्योगिक इकाई को स्थापित करने के लिए सहमति स्वीकृत या अस्वीकृत करने और पर्यावरण प्रदूषण के निवारण, नियंत्रण तथा कमी के लिए किसी भी परिसर, सयंत्र, उपकरण, मशीनरी आदि का निरीक्षण करने के लिए भी अधिकृत किया। जल प्रदूषण के निवारण एवं नियंत्रण के लिए केन्द्रीय पर्षद और राज्य पर्षदों के संसाधनों में वृद्वि के उद्देश्य से जल उपकर आरोपण एवं संग्रहण हेतु संसद द्वारा जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) उपकर अधिनियम, 1977 अधिनियमित (दिसम्बर 1977) किया गया था।

2.1.2 संगठनात्मक संरचना

बि0रा0प्र0नि0प0 का नेतृत्व अध्यक्ष द्वारा किया जाता है जो एक सदस्य सचिव द्वारा सहायतित होते हैं। क्षेत्रीय अधिकारियों के नेतृत्व में दो क्षेत्रीय कार्यालय मुजफ्फरपुर एवं बेगुसराय में स्थित है जो सदस्य सचिव को रिपोर्ट करते हैं। केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में अवस्थित दो प्रयोगशालाएँ औद्योगिक इकाईयों और स्थलों से एकत्रित नमूनों के विश्लेषण के लिए उत्तरदायी हैं। केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना में शोध एवं विकास (आर एण्ड डी) स्कंध उद्योगों के पर्यावरण प्रदूषण से जुड़ी समस्याओं के हल में सहायता प्रदान करता है । बि0रा0प्र0नि0प0 का संगठनात्मक ढाँचा निम्न **चार्ट सं0 2.1.1** में दिया गया है:

चार्ट संः 2.1.1
बि0रा0प्र0नि0प0 का संगठनात्मक ढाँचा



(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

2.1.3 लेखापरीक्षा के उद्देश्य

लेखापरीक्षा का उद्देश्य यह मूल्यांकन और आकलन करना था कि क्या:

- बि0रा0प्र0नि0प0 ने राज्य में प्रदूषण के रोकथाम, नियंत्रण एवं कमी के लिए एक व्यापक कार्यक्रम की योजना बनाया था;
- उपलब्ध करायी गयी निधियाँ/अनुदानें आवश्यकतानुसार पर्याप्त थे और उन्हें कुशलतापूर्वक एवं प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया;
- विभिन्न प्रदूषण नियंत्रण अधिनियमों में परिकल्पित प्रदूषण नियंत्रण उपायों को मितव्ययता, कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से लागू किया गया;
- प्रभावी अनुश्रवण तंत्र प्रदूषण नियंत्रण को लागू करने के लिए उपलब्ध था; एवं
- बिहार में सभी प्रकार के प्रदूषण के निवारण एवं नियंत्रण के अनुश्रवण के लिए पर्याप्त मानव बल उपलब्ध था।

2.1.4 लेखापरीक्षा मानदंड

बि0रा0प्र0नि0प0 के कार्यकलाप की निष्पादन लेखापरीक्षा निम्नलिखित स्रोतों से व्युत्पन्न मानकों के विरूद्ध मानदंडित की गयी थी :

- जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974 और उसके अंतर्गत बनाए गए नियम;
- जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) उपकर अधिनियम, 1977 और उसके अंतर्गत बनाए गए नियम;
- वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1981 और उनके अंतर्गत बनाए गए नियम;
- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 और उसके अंतर्गत बनाए गए नियम;
- जीव–चिकित्सा अपशिष्ट (प्रबंधन एवं हथालन) नियम 1998;

- मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के अन्तर्गत अधिसूचित केन्द्रीय मोटर वाहन नियम 1999 और
- बिहार वित्तीय नियमावली, 2005 (संशोधित), बिहार कोषागार संहिता, 2011 तथा सामान्य वित्तीय नियमावली, 2005 (संशोधित), ।

2.1.5 लेखापरीक्षा का क्षेत्र एवं क्रियाविधि

निष्पादन लेखापरीक्षा के दौरान मुख्यालय स्तर पर बि0रा0प्र0नि0प0, पटना तथा केन्द्रीय प्रयोगशाला के साथ मुजफ्फरपुर एवं बेगुसराय अवस्थित दो क्षेत्रीय कार्यालयों सह–प्रयोगशालाओं के वर्ष 2009–14 की अवधि के अभिलेखों के नमूना जाँच अप्रैल से सितम्बर 2014 के दौरान किया गया। इसके अलावा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार (भा0स0), पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार सरकार (बि0स0), शहरी विकास एवं आवास विभाग, बि0स0, बिहार राज्य जल पर्षद, भागलपुर, समूहिक जीव चिकित्सा अपशिष्ट उपचार ऑपरेटर पटना, भागलपुर और मुजफ्फरपुर से भी सूचनाएँ एकत्र की गयी थी ।

लेखापरीक्षा पद्धति में अभिलेखों का विश्लेषण एवं जाँच, प्रश्नावली के निर्गम, पृच्छा, बि0रा0प्र0नि0प0 के अधिकारियों के साथ वार्तालाप और निर्गत किये गये लेखापरीक्षा आपत्तियों के उत्तरों पर विचार इत्यादि शामिल थे। इस संबंध में सदस्य सचिव, बि0रा0प्र0नि0प0 के साथ अप्रैल 2014 में एक अर्न्तगमन सम्मेलन आयोजित किया गया था। अपर सचिव, पर्यावरण एवं वन विभाग, बि0स0 एवं सदस्य सचिव, बि0रा0प्र0नि0प0 के साथ दिसम्बर 2014 में बहिर्गमन सम्मेलन आयोजित किया गया था। बहिर्गमन सम्मेलन में व्यक्त विचारों एवं जवाबों को संतुलित प्रतिवेदन के लिए समुचित स्थानों पर समाविष्ट किया गया था।

लेखापरीक्षा परिणाम :

2.1.6 सर्वेक्षण एवं योजना

जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974 (जल अधिनियम) एवं वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (वायु अधिनियम) के अनुसार बि0रा0प्र0नि0प0 को जल एवं वायु प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण करने के लिए व्यापक कार्यक्रमों की योजना बनाने एवं उसके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना आवश्यक था। इस प्रयोजन हेतु प्रदूषण के स्रोतों और पर्यावरण में उत्सर्जित प्रदूषण के प्रकार और मात्रा की पहचान की जानी थी। परिणामी सूचीकरण को प्रदूषण के रोकथाम/निवारण कार्यक्रमों की योजना के निर्माण का आधार बनना था।

बि0रा0प्र0नि0प0 ने वर्ष 2009–14 की अवधि में न तो कोई व्यापक योजना तैयार की और न ही जल एवं वायु प्रदूषण के रोकथाम, नियंत्रण एवं निवारण के लिए स्वास्थ्य सेवा संस्थानों सहित प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की पहचान करने के लिए कोई सर्वेक्षण किया

संवीक्षा (जुलाई 2014) के दौरान प्रकटित हुआ कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने वर्ष 2009–14 के दौरान जल एवं वायु अधिनियमों के तहत परिकल्पित न तो कोई व्यापक योजना तैयार की न ही जल एवं वायु प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण एवं कमी के लिए प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की पहचान हेतु कोई सर्वेक्षण किया। बि0रा0प्र0नि0प0 ने राज्य में प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण के कार्यक्रमों की योजना बनाने हेतु प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की कोई सूची (इनवेन्ट्री) भी संधारित नहीं किया था।

इसी तरह, जीव–चिकित्सा अपशिष्ट (प्रबंधन एवं हथालन) नियमावली, 1998 के अंतर्गत अस्पतालों एवं अन्य स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों की पहचान नहीं की गई थी। चूँकि बि0रा0प्र0नि0प0 ने राज्य में संचालित उद्योगों की पहचान नहीं की थी, वे प्लास्टिक विनिर्माण, विक्रय एवं उपयोग नियमावली, 1999, बैट्री (प्रबंधन एवं हथालन) नियमावली, 2001, खतरनाक अपशिष्ट (प्रबंधन, हथालन और सीमा पार संचलन) नियमावली, 2008, (खतरनाक अपशिष्ट नियमावली) एवं ई0वेस्ट (प्रबंधन एवं हथालन), नियमावली, 2011 के अंतर्गत उद्योगों की राज्यव्यापी सूची तैयार नहीं कर सके।

लेखापरीक्षा अवलोकनों के प्रति सदस्य सचिव ने सहमति जताई (अक्टूबर 2014) और बताया कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने उद्योगों एवं स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों के (एच0एस0ई0) सर्वेक्षण एवं सूचीकरण के लिए 2014–15 में निविदा प्रक्रिया आरंभ कर दी है।

अनुशंसाः बि0रा0प्र0नि0प0 को उद्योगों का सर्वेक्षण करना चाहिए और प्रदूषण निवारण, नियंत्रण एवं कमी के लिए व्यापक कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिए।

2.1.7 वित्तीय प्रबंधन

बि0रा0प्र0नि0प0 के वित्तीय संसाधनों में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण पर्षद (के0प्र0नि0प0), भा0स0, बि0स0 से प्राप्त वित्तीय सहायता, भा0स0 द्वारा जल उपकर की प्रतिपूर्ति, सहमति शुल्क और प्राधिकरण शुल्क आदि समाविष्ट था, जैसा कि निम्न **तालिका 2.1.1** में दिया गया है:

तालिका 2.1.1: बि0रा0प्र0नि0प0 के वित्तीय संसाधनों की विवरणी

(₹ करोड़ में)

वर्ष	प्रारंभिक शेष	सी0पी0सी0 बी0 और भा0स0 से सहायता	जल उपकर की प्रतिपूर्ति	बि0स0 से सहायता	बी0एस0पी0सी0बी0 का आंतरिक संसाधन			कुल उपलब्ध निधियों
					सहमति शुल्क	प्राधिकार शुल्क	अन्य संसाधन[1]	
2009-10	13.22	2.43	0.65	5.40	2.76	0.03	2.38	26.87
2010-11	19.43	2.43	0.72	0.00	3.31	0.04	2.98	28.91
2011-12	18.85	2.43	0.59	0.97	5.31	0.06	6.98	35.19
2012-13	21.26	0.06	0.00	2.00	8.65	0.05	4.87	36.89
2013-14	28.23	2.36	2.54	4.50	10.27	0.03	6.27	54.20
कुल		**9.71**	**4.50**	**12.87**	**30.30**	**0.21**	**23.48**	

(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)
नोटः वर्ष 2010–11 से वर्ष 2013–14 के आँकड़े अनांकेक्षित हैं।

बि0रा0प्र0नि0प0 की उपलब्ध निधियों का उपयोग निम्न **तालिका 2.1.2** मे नीचे दी गई है:

तालिका 2.1.2: उपलब्ध निधियों के उपयोग की विवरणी

(₹ करोड़ में)

वर्ष	कुल उपलब्ध निधियाँ	परियोजना व्यय	पूँजीगत व्यय	राजस्व व्यय	कुल व्यय	अंतशेष	कुल उपलब्ध निधियों में से निधियों की उपयोग की प्रतिशतता
2009-10	26.87	3.04	0.01	4.39	7.44	19.43	28
2010-11	28.91	4.59	0.01	5.46	10.06	18.85	35
2011-12	35.19	4.91	1.03	7.99	13.93	21.26	40
2012-13	36.89	0.70	0.67	7.29	8.66	28.23	23
2013-14	54.20	2.98	5.57	10.46	19.01	35.19	35
कुल		**16.22**	**7.29**	**35.59**	**59.10**		

(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

- **तालिका 2.1.2** से यह स्पष्ट था कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशनों की स्थापना के लिए बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करने में विफल रहने के बावजूद उपलब्ध निधियों का केवल 23 से 40 प्रतिशत का उपयोग किया, जिसकी चर्चा **कंडिका 2.1.10.2** में की गयी है।

[1] *मापन शुल्क, जमा राशियों पर ब्याज और आवेदन प्रपत्रों की बिक्री आदि।*

- पूँजीगत व्यय कुल व्यय के 0.1 और 29 प्रतिशत के बीच विस्तारित था, जो कि नमूनों के विश्लेषण के लिए बुनियादी/विशिष्ट उपकरणों की अनुपलब्धता का कारण हुआ, जिसकी चर्चा आगे के पैराग्राफ मे की गयी है।
- यह पाया गया कि बि0स0 ने नगरीय ठोस अपशिष्ट (एम0एस0डब्ल्यू0) और ,खतरनाक अपशिष्ट (एच0डब्ल्यू0) के विश्लेषण के लिए सुविधाओं के सृजन हेतु ₹ 57.75 लाख स्वीकृत (2009–10) किया था। हाँलांकि, बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा तकनीकी कारणों की वजह से उपकरण को प्राप्त नहीं किया गया और निधियाँ अभ्यर्पित कर दी गई। आवश्यक उपकरणों के अभाव में एम0एस0डब्ल्यू0 और एच0डब्ल्यू0 के विश्लेषण नहीं किये जा रहे थे। अध्यक्ष ने तथ्यों को स्वीकार करते हुए उत्तर दिया कि एकल पात्र निविदादाता की वजह से के0प्र0नि0प0 से इस संबध में दिशा–निर्देशों के लिए अनुरोध किया गया था और राशि बि0स0 को प्रत्यर्पित कर दी गई थी।
- आगे यह देखा गया कि अव्ययित अवशेषों को सावधि जमा और बैंक के चालू खाते में रखा गया था। बैंक के सावधि/चालू खातों में वर्षवार रखी गई राशि का विवरण **तालिका 2.1.3** में नीचे दिया गया है:

तालिका 2.1.3: सावधि/चालू खाते में रखी राशि

(₹ करोड़ में)

वर्ष	वर्ष के दौरान अव्ययित अवशेष	सावधि जमाओं में निवेश	चालू खाते में रखी राशि
2009-10	19.43	11.88	7.43
2010-11	18.85	12.63	4.92
2011-12	21.26	14.10	6.24
2012-13	28.23	19.34	8.08
2013-14	35.19	23.76	10.58

(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

किसी निवेश नीति के अभाव में बि0रा0प्र0नि0प0 ने निधि का एक हिस्सा चालू खाते में रखा, जिससे ब्याज प्राप्त नहीं होता था

लेखापरीक्षा संवीक्षा से पता चला कि किसी निवेश नीति के अभाव में बि0रा0प्र0नि0प0 ने निधियों के एक हिस्सा को ब्याज–रहित चालू खाते में रखा। इसके परिणामस्वरूप, ₹ 68.50 लाख[2] ***(परिशिष्ट–2.1.1)*** के ब्याज की हानि हुई, जबकि सावधि जमा के अन्तर्गत निधियों से ब्याज प्राप्त होता।

बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव द्वारा बताया गया कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने चालू/बचत खातों से ₹ 70 लाख रूपये से अधिक अव्ययित अवशेष राशि को सावधि जमा में हस्तांतरण करने के लिए आदेश (सितम्बर 2014) जारी किया था।

अनुशंसाः बि0रा0प्र0नि0प0 को उपलब्ध निधियों का उपयोग बुनियादी सुविधाओं को मजबूत बनाने के लिए करने चाहिए।

2.1.8 जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) उपकर अधिनियम, 1977

जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) उपकर अधिनियम, 1977 (उपकर अधिनियम) तथा उसके तहत् बने नियमों के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति जो किसी प्रकार के उद्योग का परिचालन करते हो तथा स्थानीय प्राधिकरण (जिसे जल आपूर्ति का कार्य सौंपा गया

[2] *वर्ष 2009–14 के दौरान न्यूनतम शेष (न्यूनतम 90 दिनों के लिए) पर सावधि जमा ब्याज दर पर ब्याज की गणना की गई।*

हो) उपरोक्त अधिनियम के अंतर्गत उपकर भुगतान करने के लिए उत्तरदायी है, निर्धारण प्राधिकारी को हर कैलेण्डर माह की पाँचवी तिथि तक या उससे पहले, पिछले माह के जल खपत की मात्रा से संबंधित रिटर्न प्रस्तुत करेंगे। हाँलांकि बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा निर्धारण के लिए कोई समय सीमा तय नहीं की गई थी। संवीक्षा से पता चला कि वर्ष 2009–14 के दौरान बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा जल उपकर के रूप में ₹ 4.71 करोड़ (जिसमें से भारत सरकार द्वारा ₹ 4.50 करोड़ प्रतिपूर्ति किया गया) संग्रहित किया गया था जो कि आंतरिक संसाधनों से किए गए संग्रह का नौ प्रतिशत था।

जल उपकर के निर्धारण में पाई गई अनियमितताओं की चर्चा आगे की कंडिकाओं में की गई है :

2.1.8.1 जल उपकर का निर्धारण

वर्ष 2009–14 के दौरान बि0रा0प्र0नि0प0 को जल उपकर भुगतान करने वाले 32 में से 8 उद्योगों के जल खपत रिटर्नों की जाँच के दौरान पाया गया कि 363 रिटर्न में से केवल 32 रिटर्न नियत समय पर थे, जबकि 75 मामलों में एक से 10 माह की देरी हुई थी ***(परिशिष्ट–2.1.2)***। हाँलांकि, बि0रा0प्र0नि0प0 ने केवल दो दोषी उद्योगों के छः मामलों मे नोटिस जारी किया। इसके अलावा, वर्ष 2009-14 के दौरान 363 में से 192 का निर्धारण, रिटर्न प्राप्ति के 30 दिनों के अंदर किया गया था जबकि शेष 171 मामलों में एक से सात महीनों की देरी हुई थी ***(परिशिष्ट–2.1.3)***। नमूना जाँच के क्रम में यह भी पाया गया कि सात उद्योग बि0रा0प्र0नि0प0 को निर्धारण के निर्धारित अवधि के अंदर जल उपकर का भुगतान करने में विफल रहे।

बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने कहा कि इस संबंध में प्रयास किए जा रहे थे तथा उद्योगों एवं स्थानीय प्राधिकारियों को जल खपत प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए नोटिस निर्गत किये जाएंगे।

2.1.8.2 स्थानीय निकायों से जल उपकर

यह पाया गया कि स्थानीय निकायों, जिन्हें जल आपूर्ति का कार्य सौंपा गया था, द्वारा उपकर अधिनियम के अंतर्गत न तो जल खपत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया, न ही बि0रा0प्र0नि0प0 ने उनके द्वारा देय जल उपकर का निर्धारण किया (अप्रैल 1978 से मार्च 2014 की अवधि में 11 नगर निगमों[3] को छोड़कर)।

न तो स्थानीय निकायों ने बि0रा0प्र0नि0प0 को जल खपत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और न ही बि0रा0प्र0नि0प0 ने उनके द्वारा देय जल उपकर का निर्धारण किया (11 नगर निगमों को छोड़कर)

बि0रा0प्र0नि0प0 ने 11 नगर निगमों के संबंध में अप्रैल 1978 से मार्च 2014 की अवधि के लिए ₹ 8.70 करोड़ ***(परिशिष्ट–2.1.4)*** के जल उपकर का निर्धारण किया। हाँलांकि इन नगर निगमों में से किसी ने भी निर्धारित उपकर का भुगतान नहीं किया और न ही बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा इन बकाएदारों के विरूद्ध कोई कारवाई की गई। इसके अलावा शेष 129 स्थानीय निकायों के संबंध में बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा जल खपत प्रतिवेदन प्राप्त करने के लिए या उनके द्वारा देय जल उपकर का निर्धारण करने के लिए कार्रवाई आरंभ नहीं की गई थी।

बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने आश्वस्त किया कि जल उपकर की वसूली के लिए दोषी स्थानीय निकायों के विरूद्ध कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

अनुशंसाः बि0रा0प्र0नि0प0 को स्थानीय निकायों से बकाया जल उपकर की वसूली के लिए कदम उठाना चाहिए।

---

[3] *आरा, बेगुसराय, भागलपुर, दरभंगा, गया, कटिहार, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, नालन्दा, पटना और पूर्णियाँ।*

2.1.9 सहमति प्रबंधन

जल एवं वायु अधिनियम की धारा क्रमशः 25 एवं 21 के अंतर्गत किसी भी उद्योग की स्थापना या स्थापना के लिए उठाये गये कदम, परिचालन या प्रक्रिया, जिनके द्वारा नदी, कुआँ, नाला या भूमि पर, मल या व्यावसायिक अपशिष्ट का बहिस्राव होने और इस प्रक्रिया/उत्सर्जन से वायु प्रदूषण की संभावना थी, के लिए बि0रा0प्र0नि0प0 की सहमति आवश्यक थी । इन अधिनियमों ने बि0रा0प्र0नि0प0 को किसी उद्योग की स्थापना एवं परिचालन के लिए सहमति निर्गत करने एवं नियतकालिक नवीनीकरण के लिए शक्तिकृत किया।

2.1.9.1 सहमति पंजी का संधारण

वायु अधिनियम की धारा 51 सह–पठित जल अधिनियम की धारा 25 के अनुसार प्रत्येक राज्य बोर्ड को सहमति प्रदान किए गए व्यक्तियों के ब्यौरे से युक्त एक पंजी संधारित करना चाहिए और पंजी को किसी भी व्यक्ति, जो इसमें रूचि रखते हैं या ऐसे किसी आउटलेट, भूमि या परिसर से प्रभावित है, के निरीक्षण के लिए रखना है।

चूँकि बि0रा0प्र0नि0प0 ने सहमति पंजी संधारित नहीं किया था, राज्य में बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा प्रदान किए गए सहमतियों की कुल संख्या के आँकड़ों की जाँच लेखापरीक्षा में नहीं की जा सकी

अभिलेखों की संवीक्षा में पता चला कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने सहमति पंजी संधारित नहीं किया था। आगे यह ज्ञात हुआ कि कुल ₹ 53.99 करोड़ की आंतरित प्राप्ति में से सहमति शुल्क की राशि ₹ 30.30 करोड़ (56 प्रतिशत) थी। यद्यपि आर्थिक सर्वेक्षण 2013–14 के अनुसार सितम्बर 2013 तक राज्य में 194953 औद्योगिक इकाईयाँ पंजीकृत थी। सहमति रजिस्टर के अभाव में राज्य में बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा प्रदान की गई सहमतियों की कुल संख्या के आँकड़ों की जाँच लेखापरीक्षा में नहीं की जा सकी।

अध्यक्ष ने लेखापरीक्षा के अवलोकन को स्वीकार किया (अक्टूबर 2014) तथा कहा कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने सहमति पंजी के ऑनलाइन संधारण करने का निर्णय लिया था।

2.1.9.2 उद्योगों को सहमति प्रदान करने में विलंब

जल एवं वायु अधिनियमों के अनुसार राज्य में किसी उद्योग की स्थापना, परिचालन एवं प्रक्रिया, जिनके द्वारा नदी, कुआँ, नाला या भूमि पर मल या व्यावसायिक बहिस्राव के उत्सर्जन की संभावना थी, के लिए बि0रा0प्र0नि0प0 की पूर्व सहमति आवश्यक थी। आवेदन की तिथि से चार महीने के अंदर सहमति प्रदान कर दिया जाना था, ऐसा न होने पर इसे सहमति देना ही समझा जाएगा।

अभिलेखों के नमूना जाँच में पाया गया कि 2009–14 के दौरान 99 नमूना जाँचित मामलों, जिनमे बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा सहमति प्रदान की गयी थी, में से 50 मामलों में सहमति आदेश चार महीने के निर्धारित समय बाद जारी किए गए थे ***(परिशिष्ट–2.1.5)***।

बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने कहा कि बि0रा0प्र0नि0प0 निर्धारित समय के भीतर सहमतियाँ जारी करना सुनिश्चित करेगा।

2.1.9.3 नमूनों का परीक्षण

लेखापरीक्षा द्वारा चयनित 381 उद्योगों की संचिकाओं में से 180 संचिकाओं को ही लेखापरीक्षा को प्रस्तुत किया गया। जाँच (अक्टूबर 2014) के क्रम में यह पाया गया कि इन 180 उद्योगों ने प्रदूषण के नमूनों के परीक्षण के लिए अपेक्षित शुल्क जमा किया था लेकिन उनमें से केवल 35 के ही नमूनों की जाँच की गई और उनका रिपोर्ट, शुल्क प्राप्ति के एक माह से 34 माह के बाद प्रस्तुत किया गया। शेष 145 मामले में से 34 मामलों में जाँच आवश्यक नहीं थे जबकि 111 मामलों में जाँच ही नहीं किये गये, यद्यपि आवश्यक थे। बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा वर्ष 2009–14 के दौरान आर0 एण्ड डी0 सेवा देने से संबंधित विवरणी **तालिका 2.1.4** में विवरणित है :

तालिका **2.1.4**: बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा आर0 एंड डी0 सेवा प्रदान करने से संबंधित विवरणी

वर्ष	आर0 एण्ड डी0 सेवा के लिए आवेदित इकाईयों की संख्या	इकाईयों की संख्या जिनसे नमूना एकत्र किए गए	कमी
2009-10	869	675	194
2010-11	852	408	444
2011-12	962	489	473
2012-13	1308	276	1032
2013-14	1182	244	938
कुल	**5173**	**2092**	**3081**

(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट था कि बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा आवेदित 5173 ईकाईयों में से केवल 2092 इकाईयों से आर. एण्ड डी. सेवा के लिए नमूने एकत्र किए गए थे। इसके अलावा यह भी पाया गया कि आर. एण्ड डी. खंड में प्रदूषण के नमूनों की प्राप्ति के ब्यौरे अंकित करने के लिए कोई आवक पंजी संधारित नहीं थी। नमूनों के संग्रहण मे कमी एवं उनके परीक्षण में हुई देरी से उद्योगों द्वारा उत्सर्जित प्रदूषणों का पता नहीं चलने के कारण पर्यावरण को नुकसान हो सकता है।

उत्तर में सदस्य सचिव ने स्वीकार किया (अक्टूबर 2014) कि कर्मियों की कमी के कारण परीक्षण नहीं किया गया था। इसके अलावा, बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने कहा कि भविष्य में ऐसी घटनाएँ न हो इसे सुनिश्चित करने के लिए भर्त्ती प्रक्रिया में तेजी लाई जा रही थी।

2.1.9.4 पर्यावरण विवरणी का प्रस्तुतीकरण

पर्यावरण (संरक्षण) नियम 1986 के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जिन्हें किसी उद्योग के परिचालन या प्रक्रिया के लिए वायु अधिनियम की धारा 21 के तहत सहमति की आवश्यकता होती है, को 31 मार्च को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लिए हर वर्ष सितम्बर की 30 वीं तिथि को या पहले, पर्यावरण विवरणी संबंधित राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद को प्रस्तुत करना होगा।

यह पाया गया कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने समेकित आँकड़ों का संधारण नहीं किया था और वह उद्योगों की संख्या की स्थिति, जिसे पर्यावरण विवरणी प्रस्तुत करने की आवश्कयता थी और उद्योगों द्वारा प्रस्तुत किए गए वास्तविक पर्यावरण विवरणी को उपलब्ध नहीं करा सका।

सदस्य सचिव ने उत्तर दिया (अक्टूबर 2014) कि पर्यावरण विवरणी मध्यम एवं बड़े उद्योगों से ली जा रही थी और अब इसे सभी उद्योगों से लिया जाएगा।

अनुशंसाः बि0रा0प्र0नि0प0 को राज्य में स्थापित/परिचालित उद्योगों, जो जलाशय में मल–जल का निस्सरण अथवा वायु को प्रदूषित करते हैं एवं संबंधित मामलों, का विस्तृत ब्यौरा रखने के लिए एक सहमति पंजी का संधारण करना चाहिए।

प्रदूषण नियंत्रण उपायों का कार्यान्वयन

2.1.10 वायु गुणवत्ता अनुश्रवण

2.1.10.1 श्वसनीय निलंबित कण पदार्थ (श्व0नि0क0प0) की विद्यमानता

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण पर्षद (के0प्र0नि0प0) ने (1984) राष्ट्रीय वायु–अनुश्रवण कार्यक्रम (रा0वा0अ0का0) की शुरूआत परिवेशीय वायु गुणवत्ता के प्रवाह की अवस्था को निर्धारित करने एवं परिवेशीय वायु गुणवत्ता के निर्धारित मानकों का उल्लंघन के तथ्यों को सुनिश्चित करने हेतु की। रा0वा0अ0का0 द्वारा उन नगरों की पहचान भी की जानी थी जिनमें वायु प्रदूषण निर्धारित मापदण्ड से बढ़ गए थे एवं प्राकृतिक अपमार्जन प्रक्रिया द्वारा पर्यावरण में प्रदूषण, विलयन, प्रकीर्णन, वायु आधारित चलन, शुष्क निक्षेपण, अवक्षेपण एवं उत्पन्न प्रदूषकों के रासायनिक परिवर्तन के आधार पर निवारक एवं सुधारात्मक उपाय को विकसित करने के लिए आवश्यक जानकारी एवं ज्ञान भी प्राप्त करना था। रा0वा0अ0का0 के अंतर्गत बि0रा0प्र0नि0प0 ने पटना में स्थित दो अनुश्रवण स्टेशनों[4] पर परिवेशीय वायु गुणवत्ता की जाँच की थी।

इन अनुश्रवण स्टेशनों में वर्ष 2009–14 के दौरान दर्ज परिवेशीय वायु गुणवत्ता की स्थिति नीचे दिए गए **तालिका 2.1.5** में विस्तृत है :

तालिका 2.1.5: पटना में परिवेशीय वायु गुणवत्ता की स्थिति (निर्धारित मानक : 60 माइक्रोग्राम/घनमीटर)

पटना में नमूना स्थल	वर्ष	वार्षिक औसत आर0एस0पी0एम0 (माइक्रोग्राम/घनमीटर)
गाँधी मैदान	2009-10	204
बेलट्रॉन भवन	2009-10	121
पटना में वार्षिक औसत	**2009-10**	**163**
गाँधी मैदान	2010-11	217
बेलट्रॉन भवन	2010-11	162
पटना में वार्षिक औसत	**2010-11**	**190**
गाँधी मैदान	2011-12	202
बेलट्रॉन भवन	2011-12	132
पटना में वार्षिक औसत	**2011-12**	**167**
गाँधी मैदान	2012-13	233
बेलट्रॉन भवन	2012-13	153
पटना में वार्षिक औसत	**2012-13**	**193**
गाँधी मैदान	2013-14	186
बेलट्रॉन भवन	2013-14	118
पटना में वार्षिक औसत	**2013-14**	**152**

(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

पटना में श्व.नि.क.प. की विद्यमानता के0प्र0नि0प0 द्वारा निर्धारित मानक से अधिक थी

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट था कि पटना में श्व0नि0क0प0 की विद्यमानता के0प्र0नि0प0 द्वारा निर्धारित मानकों (2009–14 के दौरान 60 माइक्रोग्राम/घनमीटर के विरूद्ध 152 माइक्रोग्राम/घनमीटर एवं 193 माइक्रोग्राम/घनमीटर की सीमा के बीच) के अनुसार खतरनाक रूप में वर्गीकृत किया जा रहा था। श्व0नि0क0प0 में वृद्धि के मुख्य स्रोतों[5] में से एक वाहनों से उत्सर्जन था जैसा कि पटना में वाहनों की संख्या में

[4] *बेलट्रॉन भवन एवं गाँधी मैदान*

[5] *परिवेशीय वायु गुणवत्ता अनुश्रवण के लिए दिशा–निर्देश*

वर्ष 2009 में 5.16 लाख से 2014 में 9.21 लाख (78 प्रतिशत) की भारी वृद्धि देखी गई।

इसके अलावा, वायु अधिनियम के अनुसार, बि0रा0प्र0नि0प0 को वायु प्रदूषण के निवारण, नियंत्रण या कमी से संबंधित किसी भी मामले पर राज्य सरकार को सलाह देना अपेक्षित था। तथापि बि0रा0प्र0नि0प0 ने विभाग को पटना में प्रदूषण के स्तर के बारे में केवल मई 2013 में सूचित किया।

इसके जवाब में सदस्य सचिव ने कहा (अक्टूबर 2014) कि अनुवर्ती कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा, बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) के दौरान अपर सचिव ने बताया कि विभाग द्वारा इस मुद्दे के बारे में जागरूक करने के लिए सभी संबंधित विभागों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित करने का प्रस्ताव दिया जा रहा था।

2.1.10.2 उपकरणों की अधिप्राप्ति

भागलपुर, बेतिया, पूर्णिया, दरभंगा, राजगीर और सासाराम में अनवरत परिवेशीय वायु गुणवत्ता अनुश्रवण स्टेशनों (अ0प0वा0गु0अ0स्टे0) की स्थापना के लिए ₹ 1.18 करोड़ के उपकरणों की खरीद (2010–12) की गई थी। किन्तु बुनियादी सुविधाओं के अभाव में उपकरणों को स्थापित नहीं किया गया परिणामस्वरुप उपकरणों की वारंटी अवधि समाप्त हो गयी।

अध्यक्ष ने उत्तर दिया (अक्टूबर 2014) कि संचालन के लिए मानव बल के अनुमोदन की प्रत्याशा में उपकरणों को खरीदा गया, जिसे वर्ष 2011–12 में बिहार सरकार को भेजा गया था। स्वीकृति अभी भी प्रतीक्षित थी। इसलिए उपकरणों को स्थापित नहीं किया जा सका। तथापि, बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाएगा कि ऐसी चीजें भविष्य में न हो।

अनुशंसाः बि0रा0प्र0नि0प0 को वायु गुणवत्ता अनुश्रवण के उपकरणों की स्थापना एवं संचालन के लिए कदम उठाने चाहिए और सरकार के संबंधित विभागों को पटना में श्व0नि0क0प0 स्तर में हुई वृद्धि के बारे में जागरूक करना चाहिए।

2.1.11 जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974

जल अधिनियम 1974 के अनुसार बि0रा0प्र0नि0प0 को मल जल या व्यावसायिक बहिस्रावों, संयत्रों का निरीक्षण तथा योजनाओं, विशिष्टियों या जल के शोधन एवं तत्संबधी शुद्धिकरण के लिए स्थापित संयंत्र से संबंधित आँकड़ों की समीक्षा करना अपेक्षित है।

2.1.11.1 बहिस्रावों का अपर्याप्त शोधन

राज्य के 34 जिलों में मल–जल शोधन के लिए एस.टी.पी. के अभाव के बावजूद बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा कोई कदम नहीं उठाया गया तथा शेष चार जिलों में लगे एस.टी.पी. में दो अकार्यशील थे

अभिलेखों की नमूना जाँच में पाया गया कि 140 स्थानीय निकायों में से राज्य के चार जिलों[6] के चार स्थानीय निकायों में सात मल–जल शोधन संयंत्र (सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट–एस0टी0पी0) अस्तित्व में थे जबकि अन्य जिलों में एस0टी0पी0 नहीं था। यह भी पता चला कि सभी एस0टी0पी0 केवल गंगा नदी पर स्थापित किए गए थे और उनमें से पाँच चालू हालत में थे। एस0टी0पी0 की अधिष्ठापित क्षमता एवं किया गया वास्तविक शोधन नीचे **तालिका 2.1.6** में दिया गया है।

[6] *भागलपुर–1, छपरा (अकार्यशील)–1, मुंगेर (अकार्यशील)–1, तथा पटना–4*

तालिका 2.1.6: (एस0टी0पी0 की अधिष्ठापित क्षमता एवं वास्तविक शोधन)

एस0टी0पी0 का स्थान	स्थापना का वर्ष	अधिष्ठापित क्षमता {मिलीयन लीटर प्रतिदिन (एम0एल0डी)}	वास्तविक शोधन (एम0ए0 डी0)	अभियुक्ति
पटना–बेउर	1915 (1968 एवं 1987 में क्षमता बढ़ायी गयी)	35	20	
पटना–सैदपुर	1936 (1986 में क्षमता बढ़ायी गयी)	45	25	-
पटना–पहाड़ी	1994	25	17	-
पटना–करमलीचक	2006	4	2	-
भागलपुर	1992-93	11	10	-
मुंगेर	1987-88	13.5	-	अकार्यशील
छपरा	1999	02	-	अकार्यशील
	योग	**135.5**	**74**	

(स्रोतः बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा प्रदान की गई सूचना)

तालिका से यह स्पष्ट है कि इन एस0टी0पी0 के 135.5 एम0एल0डी0 शोधन क्षमता के विरूद्ध सिर्फ 74 एम0एल0डी0 मल जल का शोधन किया गया था। आगे यह भी पता चला कि 2009–14 में इन एस0टी0पी0 का संचालन बि0रा0प्र0नि0प0 से जल अधिनियम के तहत बिना प्राधिकार लिए ही किया जा रहा था। जल अधिनियम के अनुपालन न करने के लिए बि0रा0प्र0नि0प0 ने स्थानीय निकायों के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई आरम्भ नहीं की थी।

बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने कहा कि सरकार द्वारा इस संबंध में कार्रवाई की जाएगी।

एस0टी0पी0 के कार्यकलाप में पायी गयी अन्य अनियमितताओं की चर्चा नीचे की गयी है :

2.1.11.2 गंगा नदी में जैव–रासायनिक ऑक्सीजन माँग स्तर का अधिक होना

बि0रा0प्र0नि0प0 के अभिलेखों में यह पाया गया (जुलाई 2014) कि के0प्र0नि0प0 ने राज्य में 25 नालों की पहचान (जुलाई 2013) की थी जो बक्सर, पटना, मुंगेर, भागलपुर और कहलगाँव होते हुए बह रहे थे तथा गंगा नदी में 99 टन/दिन जैव–रासायनिक ऑक्सीजन माँग[7] (जै0रा0आ0माँ0) का भार गंगा में ला रहे थे। जै0रा0आ0माँ0 भार सहित नालियों का विवरण **तालिका 2.1.7** में दिया गया है।

[7] *जै.रा.आ.माँ. सूक्ष्म जीवों द्वारा पानी में मौजूद कार्बनिक पदार्थों को ऑक्सीडाइज करने के लिए आक्सीजन की मात्रा है। जै.रा.आ.माँ. के संदर्भ में कार्बनिक प्रदूषण की माप जल की गुणवत्ता मे गिरावट के स्तर का संकेत देता है।*

तालिका 2.1.7: चिह्नित 25 नालों में जै0रा0आ0माँ0 भार का विवरण

(जै0रा0आ0माँ0 का निर्धारित मानक भूतल जल के लिए अधिकतम 30 मिलीग्राम प्रति लीटर है (पर्यावरण संरक्षण) नियम, 1986 के अनुसार)

क्रम सं0	शहर का नाम	नालों की कुल संख्या	बहाव (एम0एल0डी0)	बी0ओ0डी0 भार (किलोग्राम/दिन)	बी0ओ0डी0 लोड का विस्तार (मिलीग्राम प्रति लीटर)
1.	बक्सर	5	33.90	4406.56	2.42 – 236.29
2.	पटना	9	233.71	55389.10	172.0 - 279.63
3.	मुंगेर	2	18.63	5393.10	247.49 - 324.72
4.	भागलपुर	7	140.70	31802.80	192.11 - 299.34
5.	कहलगाँव	2	152.48	2514.96	6.33 - 304.26
		25	**579.42**	**99506.50**	

(स्रोतः के0प्र0नि0प0 के प्रतिवेदन)

राज्य के पास मल जल (ज्ञात स्रोतों से) शोधन की क्षमता नहीं थी क्योंकि दो जिलों में पाँच कार्यरत एस.टी.पी. द्वारा 579 में से केवल 74 एम.एल.डी. मल जल का शोधन किया जा रहा था

तालिका 2.1.6 और 2.1.7 से स्पष्ट था कि राज्य के पास मल जल (ज्ञात स्रोतों से) शोधन करने की क्षमता नहीं थी, क्योंकि पाँच कार्यरत एस0टी0पी0 द्वारा 579 में से केवल 74 एम0एल0डी0 मल–जल का शोधन किया जा रहा था। इसके अलावा यह देखा गया कि गंगा में 25 नालों द्वारा मल–जल बहिस्राव से जै0रा0आ0माँ0 लोड अधिकतम निर्धारित मानदण्ड 30 मिलीग्राम प्रति लीटर के विरूद्ध 2.42 मिलीग्राम प्रतिलीटर से 324.72 मिलीग्राम प्रति लीटर तक विस्तारित था। 25 नालों में से 23 नालों का जै0रा0आ0माँ0 भार पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 के तहत निर्धारित अधिकतम भार से सात गुणा अधिक था।

बहिर्गमन सम्मेलन में अपर सचिव, लेखापरीक्षा अवलोकन से सहमत (दिसम्बर 2014) थे और कहा कि शहरी स्थानीय निकायों को इस कमी को पूरा करने के लिए अपेक्षित एस0टी0पी की स्थापना के लिए निर्देश दिए जाएंगे।

अनुशंसा : बि0रा0प्र0नि0प0 को राज्य मे एस0टी0पी0 की आवश्यकता का आकलन करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्थानीय निकायों द्वारा मल–जल शोधन के लिए पर्याप्त संख्या में एस0टी0पी0 अधिष्ठापित किए जाएँ विशेषकर नदियों में होने वाले मल–जल के निस्सरण के लिए।

2.1.12 नगरीय ठोस अपशिष्ट (प्रबंधन और हथालन) नियम, 2000

2.1.12.1 निर्देशों का क्रियान्वयन नहीं किया जाना

नगरीय ठोस अपशिष्ट (प्रबंधन और हथालन) नियम 2000, (एम0एस0डब्ल्यू0 नियमों) के अनुसार बि0रा0प्र0नि0प0 भस्मीकरण मानकों सहित भू–जल, परिवेशीय वायु, विक्षालन गुणवत्ता और कंपोस्ट गुणवत्ता के अनुपालन का अनुश्रवण करेगा। बि0रा0प्र0नि0प0 को नियमानुसार नगर प्राधिकरण को अपशिष्ट संग्रहण, पृथक्करण, परिवहन, प्रसंस्करण और निपटान के पूरे कवरेज सुनिश्चित करने के लिए दिशा–निर्देश जारी करना था।

यह देखा गया कि बिहार में 1670 टन प्रति दिन (ट0प्र0दि0)[8] (जुलाई 2012) नगरीय ठोस अपशिष्ट (न0ठो0अ0) सृजित हो रहा था और राज्य में 140 स्थानीय निकायें

[8] *सी.पी.सी.बी. का नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर वस्तुस्थिति प्रतिवेदन।*

राज्य के लगभग सभी नगर प्राधिकरण, नगरीय ठोस अपशिष्ट नियमों, 2000 के प्रावधानों का पालन नहीं कर रहे थे और बी.एस.पी.सी.बी. ने उन्हें कोई निर्देश जारी नहीं किया।

(11 नगर निगमों, 41 नगर परिषदों और 88 नगर पंचायतों) न0ठो0अ0 प्रबंधन के लिए उत्तरदायी थे। बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा के0प्र0नि0प0 को भेजे गये वार्षिक प्रतिवेदन के जाँच से पता चला कि राज्य के लगभग सभी नगर प्राधिकरण न0ठो0अ0 नियमों के प्रावधानों का पालन नहीं कर रहे थे ***(परिशिष्ट– 2.1.6)***। यद्यपि, बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा न0ठो0अ0 नियमों के प्रावधानों के अनुपालन के लिए स्थानीय निकायों को कोई भी निर्देश जारी नहीं किया गया था। जिसके परिणामस्वरूप, नगरीय ठोस अपशिष्ट बिना किसी भी प्रशोधन के खुले स्थानों पर फेकें जा रहे थे जो मानव जाति और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरनाक था। इस अवलोकन की पुष्टि एक प्रकाशित (2011) शोध प्रतिवेदन ''इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायरमेन्टल टेक्नॉलॉजी एंड मैनेजमेंट'' में भी की गयी थी जिसमें कहा गया कि पटना में क्षेपण स्थलों पर मिथेन, हाइड्रोजन सल्फाइड और डाइऑक्सिन मानक सीमा से अधिक थे।

उत्तर में अध्यक्ष, बि0रा0प्र0नि0प0 ने बताया (अक्टूबर 2014) कि नियमों के प्रावधानों को लागू करने के लिए 41 नगर परिषदों एवं 11 नगर निगमों को निर्देश निर्गत किए गए थे ।

2.1.12.2 नगरीय ठोस अपशिष्ट (न0ठो0अ0) का वार्षिक प्रतिवेदन के0प्र0नि0प0 को विलम्ब से प्रस्तुत किया जाना

बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा के0प्र0नि0प0 को न0ठो0अ0 पर वार्षिक प्रतिवेदन का ससमय प्रस्तुतीकरण प्रत्येक वर्ष 15 सितंबर तक सुनिश्चित करना अपेक्षित था। वार्षिक प्रतिवेदन में न0ठो0अ0 प्रबंधन (उत्सर्जित अपशिष्ट सृजन की मात्रा, प्रसंस्करण, रिसाइक्लिंग, निपटान आदि) से संबंधित सुविधाओं के विवरण सहित पूरी जानकारी प्रतिबिंबित होनी चाहिए।

न0ठो0अ0 के वार्षिक प्रतिवेदन के नमूना जाँच में पाया गया कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने 2009–13 के वार्षिक प्रतिवेदनों को चार से आठ महीने की देरी से के0प्र0नि0प0 को प्रस्तुत किये थे। विस्तृत विवरण **तालिका 2.1.8** में नीचे दिया गया है :

तालिका 2.1.8: के0प्र0नि0प0 को न0ठो0अ0 का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की स्थिति

वर्ष	प्रस्तुत करने की नियत तिथि	प्रस्तुत करने की वास्तविक तिथि	प्रस्तुत करने में विलम्ब (महीनों मे)
2009-10	15/09/2010	26/05/2011	8
2010-11	15/09/2011	09/02/2012	5
2011-12	15/09/2012	01/02/2013	5
2012-13	15/09/2013	29/01/2014	4
2013-14	15/09/2014	17/09/2014	शून्य

(स्रोत : बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

इस प्रकार, वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने लिए नियमों के तहत् निर्धारित प्रक्रिया का पर्षद द्वारा पालन नहीं किया जा रहा था।

उत्तर में, सदस्य सचिव ने आश्वस्त किया (दिसम्बर 2014) कि पर्षद द्वारा निर्धारित अवधि के अन्दर वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

अनुशंसा : प्रत्येक नगरपालिका को उनकी जरुरतों के लिए उपयुक्त सर्वश्रेष्ठ अपशिष्ट प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी की पहचान करने में बि0रा0प्र0नि0प0 को मदद करनी चाहिए।

2.1.13 जीव–चिकित्सा अपशिष्ट (प्रबंधन एवं हथालन) नियमावली, 1998

2.1.13.1 स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों (हेल्थ केयर इस्टैब्लिशमेंट–एच0सी0ई0) का अप्राधिकरण

जीव–चिकित्सा अपशिष्ट (प्रबंधन एवं हथालन) नियमावली, 1998 (बी0एम0डब्ल्यू0 नियम) के अनुसार वैसे क्लिनिकों, डिस्पेन्सरियों, पैथोलोजिकल प्रयोगशालाओं, रक्त बैंकों के अधिभोगियों जो प्रतिमाह 1000 से कम मरीजों का उपचार कर रहे हैं/ सेवाएँ दे रहे है, को छोड़कर संस्थानों के प्रत्येक अधिभोगी (पशु चिकित्सा संस्थानों सहित) जो जीव–चिकित्सा अपशिष्टों का सृजन, संग्रहण, प्राप्ति, भंडारण, परिवहन, शोधन, निपटान या किसी अन्य ढंग से उनका हथालन कर रहे है को प्राधिकार की मंजूरी के लिए बि0रा0प्र0नि0प0 के समक्ष आवेदन प्रस्तुत करेगें।

राज्य में चिन्हित 2538 एच.सी.ई. में से 1209 एच.सी.ई. और सभी 1152 पशु चिकित्सा संस्थान बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा प्राधिकृत नहीं थे।

अभिलेखों की संवीक्षा (जुलाई 2014) के दौरान यह पाया गया कि बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा राज्य में 2538 स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों (एच0सी0ई0) की पहचान की गयी थी। इसमें से दिसम्बर 2013 तक 1329 एच0सी0ई0 ने प्राधिकार के लिए आवेदन किया था तथा बि0रा0प्र0नि0प0 ने 1239 एच0सी0ई0 को प्राधिकार की मंजूरी दी थी। इस प्रकार राज्य में 2538 में से 1209 एच0सी0ई0 प्राधिकार का आवेदन देने में विफल रहे। इसके अलावा 1329 आवेदित एच0सी0ई0 में से 90 एच0सी0ई0 बि0रा0प्र0नि0प0 से कोई भी प्राधिकार प्राप्त करने में विफल रहे।

यह भी देखा गया कि पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बि0स0 के अधिकार क्षेत्र के अधीन 1152 पशु चिकित्सा संस्थानों में से किसी ने भी बी0एम0डब्ल्यू0 नियमों के अन्तर्गत बि0रा0प्र0नि0प0 से आवश्यक प्राधिकार प्राप्त नहीं किया था।

इसे इंगित किये गये जाने पर सदस्य सचिव ने उत्तर दिया (अगस्त 2014) कि दोषी एच0सी0ई0 को बी0एम0डब्ल्यू0 नियमों के प्रावधानों के अन्तर्गत नोटिस और निर्देश निर्गत किये जा रहे थे। बाद में, सदस्य सचिव ने सूचित किया (अक्टूबर 2014) कि 90 एच0सी0ई0 का प्राधिकार प्रक्रियाधीन था।

बी0एम0डब्ल्यू0 नियमों के क्रियान्वयन में पायी गयी अन्य अनियमितताओं की चर्चा आगे की कंडिकाओं में गई है :

2.1.13.2 तरल अपशिष्ट का उपचार

बी0एम0डब्ल्यू0 नियम के अनुसूची V के अनुसार अस्पतालों से उत्सर्जित बहिस्त्राव पी0एच0, निलम्बित ठोस, तेल और ग्रीस, बी0ओ0डी0, केमिकल ऑक्सीजन डिमाण्ड एवं जैव–मापन परीक्षण के निर्धारित मानकों के अनुरूप होना चाहिए। ये मानक वैसे अस्पतालों पर लागू थे जो सार्वजनिक मल नालियों से नहीं जुड़े थे अथवा बगैर अन्त्यवाहित (टर्मिनल) मल उपचार संयत्र वाले मल नाली से जुड़े थे।

अभिलेखों की संवीक्षा (जुलाई 2014) से पता चला कि 1239 प्राधिकृत एच0सी0ई0 में से केवल छः एच0सी0ई0 में बहिस्त्राव उपचार संयंत्र (ई0टी0पी0) स्थापित किए गए थे।

इस ओर इंगित किए जाने पर (जुलाई 2014) सदस्य सचिव ने उत्तर दिया (अगस्त 2014) कि अस्पतालों को बी0एम0डब्ल्यू0 नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु कहा जा रहा था। इसके अलावा बहिर्गमन सम्मेलन (दिसम्बर 2014) में अपर सचिव ने बताया कि इस मामले में तत्काल कदम उठाये जाएगे।

2.1.13.3 के0प्र0नि0प0 को बी0एम0डब्ल्यू0 का वार्षिक प्रतिवेदन विलंब से प्रस्तुत किया जाना।

बी0एम0डब्ल्यू0 के नियमों में यह प्रावधान है कि प्रत्येक अधिभोगी/प्रचालक बि0रा0प्र0नि0प0 को प्रतिवर्ष 31 जनवरी तक वार्षिक प्रतिवेदन भेजेगा जिसमें पूर्ववर्ती

वर्ष के दौरान हथालित जीव–चिकित्सा अपशिष्टों के प्रकार और परिमाण की जानकारी होगी। पर्षद इस जानकारी को समेकित रूप में के0प्र0नि0प0 को प्रतिवर्ष 31 मार्च तक भेज देगा।

बी0एम0डब्ल्यू0 के वार्षिक प्रतिवेदन की नमूना जाँच के दौरान यह पाया गया कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने कैलेण्डर वर्ष 2009 से 2013 के दौरान समेकित वार्षिक प्रतिवेदन के0प्र0नि0प0 को एक महीने से नौ महीने विलम्ब से प्रस्तुत किया था जैसा कि **तालिका 2.1.9** में नीचे दर्शाया गया है।

तालिका 2.1.9: बी0एम0डब्ल्यू0 का वार्षिक प्रतिवेदन के0प्र0नि0प0 को प्रस्तुत करने की स्थिति

वर्ष	प्रस्तुत करने की देय तिथि	प्रस्तुत करने की वास्तविक तिथि	प्रस्तुत करने मे विलंब (महीनों मे)
2009	31/03/2010	31/05/2010	2
2010	31/03/2011	24/05/2011	2
2011	31/03/2012	09/07/2012	3
2012	31/03/2013	26/12/2013	9
2013	31/03/2014	22/04/2014	1

इस प्रकार, नियमों के तहत वार्षिक प्रतिवेदनों को प्रस्तुत करने की विहित प्रणाली का पर्षद द्वारा पालन नहीं किया जा रहा था।

सदस्य सचिव ने उत्तर में (दिसम्बर 2014) आश्वस्त किया कि भविष्य में ससमय प्रतिवेदनों को भेजा जाएगा।

2.1.13.4 सामूहिक जीव–चिकित्सा अपशिष्ट उपचार और निपटान सुविधा (सी बी0डब्ल्यू0टी0एफ0)

सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 150 कि0मी0 की परिधि में स्थित स्वास्थ्य सेवा इकाइयों में उत्सर्जित 10000 बिस्तर के जीव चिकित्सा अपशिष्ट के उपचार की एक प्रणाली है जिससे अपशिष्ट के प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा सके। उपचारित अपशिष्ट को अंत में गड्ढे में या रिसाइक्लिंग प्रयोजनों के लिए भेजा जाता है।

सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 में देखी गयी अनियमितताएँ नीचे दी गई है :

- पटना के सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 आपॅरेटर ने 10000 बेड के मानदंड के विरूद्व 539 इकाइयों में 11243 बेड को आच्छादित किया था।
- भागलपुर तथा मुजफ्फरपुर में स्थित सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 ऑपरेटर ने प्रतिवेदित किया (जून–जुलाई 2014) कि कुल 77 एच0सी0ई0[9], सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 को परिशोधन के लिए जीव चिकित्सा अपशिष्ट नहीं भेज रहे थे।
- भागलपुर के सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 ऑपरेटर के क्षेत्राधीन एच0सी0ई0, बी0एम0डब्ल्यू0 नियमावली के प्रावधान के अनुसार पृथक्कृत अपशिष्ट सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 ऑपरेटर को उपलब्ध नहीं करा रहे थे।
- सी0पी0सी0बी0 के दिशा निर्देशों (अक्टूबर 2013) के अनुसार जीव–चिकित्सा भस्मीकरण यंत्र परिचालन करने वाले एच0सी0ई0/सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 ऑपरेटर को उत्पन्न भस्मीकृत राख के खतरनाक घटकों का मान्यता प्राप्त

[9] *भागलपुर–57 तथा मुजफ्फरपुर–20*

प्रयोगशाला से विश्लेषण रिर्पोट प्राप्त करना अपेक्षित था। राज्य के तीन[10] सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 द्वारा इस प्रावधान का उल्लंघन किया जा रहा था।

- बी0एम0डब्ल्यू0 नियमों के अनुसार भस्मीकृत राख को नगरपालिका के गड्ढों में निपटान किया जाना था। इस प्रावधान का उल्लंघन मुजफ्फरपुर के सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 ऑपरेटर द्वारा किया जा रहा था।
- एच0सी0ई0/सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ द्वारा सृजित पारा युक्त अपशिष्ट के सुरक्षित हथालन एवं अंतरिम भंडारण सुविधा की स्थापना के लिए एच0सी0एफ0/सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ को बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा प्राधिकृत किया जाना अपेक्षित था। संवीक्षा (जुलाई 2014) से प्रकट हुआ कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने एच0सी0ई0/सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 को ऐसा कोई निर्देश नहीं दिया था, परिणामस्वरूप सितम्बर 2013 के बाद से कोई प्राधिकार नहीं दिया गया था।

अध्यक्ष ने लेखापरीक्षा अवलोकन से सहमति व्यक्त की तथा उत्तर दिया (अक्टूबर 2014) कि बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा एक और सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 की स्थापना करने के की सहमति प्रदान की गई थी तथा सी0बी0डब्ल्यू0टी0एफ0 ऑपरेटरों को नियमों के अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दिए गए थे।

2.1.14 खतरनाक अपशिष्ट (प्रबंधन, हथालन और सीमा पार संचलन) नियमावली, 2008

2.1.14.1 खतरनाक अपशिष्ट नियमावली, 2008 के कार्यान्वयन में कमियाँ

खतरनाक अपशिष्ट नियमावली, 2008 के अनुसार, बि0रा0प्र0नि0प0 को परिसकंटमय अपशिष्ट का सूचीकरण करना, प्राधिकार का दिया जाना और नवीकरण, पुनः चक्रणकर्त्ताओं/ पुनः शोधनकर्ताओं का पंजीकरण एवं नवीकरण, खतरनाक अपशिष्ट की उत्पत्ति को रोकने/कम करने/न्यून करने के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए प्राधिकरण के विभिन्न प्रावधानों एवं शर्तों के अनुपालन का अनुश्रवण करना तथा उल्लंघन के विरूद्व कार्रवाई करना था।

बि.रा.प्र.नि.प. ने राज्य में खतरनाक अपशिष्ट उत्पन्न करने वाले उद्योगों की कुल संख्या के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कोई सर्वेक्षण अथवा संबंधित विभागों से सम्पर्क नहीं किया था

संवीक्षा के दौरान यह देखा गया कि इस नियम के अन्तर्गत बि0रा0प्र0नि0प0 ने खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए 85 उद्योगों को प्राधिकार दिया था तथा पुनः चक्रण के लिए आठ उद्योगों का पंजीकरण किया था। आगे संवीक्षा से पता चला कि बि0रा0प्र0नि0प0 ने राज्य में खतरनाक अपशिष्ट उत्पन्न करने वाले उद्योगों की कुल संख्या के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कोई सर्वेक्षण अथवा संबंधित विभागों से संपर्क नहीं किया था। विस्तृत सूची तैयार करने का काम भी बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा नहीं किया गया था।

सदस्य सचिव ने उत्तर दिया (अगस्त 2014) कि बि0रा0प्र0नि0प0 को मानवबल की कमी थी और इस नियम के कार्यान्वयन और अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किये जा रहे थे।

2.1.15 पर्यावरण प्रयोगशालाएँ

बि0रा0प्र0नि0प0 की तीन प्रयोगशालाएँ थी (1) केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना, (2) क्षेत्रीय प्रयोगशाला, मुजफ्फरपुर तथा (3) क्षेत्रीय प्रयोगशाला, बेगुसराय। इनमें से केवल केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना कार्यरत् था। इसके अलावा केन्द्रीय प्रयोगशाला पटना के अन्तर्गत आर0 एण्ड डी0 सेल की सेवाओं का उपयोग किसी भी शोध कार्य के लिए नहीं किया

[10] *पटना, भागलपुर तथा मुजफ्फरपुर*

जा रहा था तथा यह केवल जल एवं वायु के मापदंडों की जाँच एवं विश्लेषण तक सीमित था।

2.1.15.1 केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना की मान्यता नहीं होना

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (प0व0मं0), भा0स0 के निर्देशों (अगस्त 2011) के अनुसार बि0रा0प्र0नि0प0 को केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना के लिए एक वर्ष की अवधि के भीतर पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 के अन्तर्गत आई0एस0ओ017025 (एन0ए0बी0एल0[11] मान्यता) अथवा ओ0एच0एस0ए0एस0[12] 18001 प्रमाणन के साथ–साथ आई0एस0ओ0 9001 प्रमाणन की मान्यता प्राप्त कर लेना आपेक्षित था। यद्यपि, यह पाया गया कि केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना इस मान्यता के बिना कार्य कर रहा था और प्रयोगशाला के विश्लेषक भी पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के अन्तर्गत अधिसूचित नहीं थे।

इसके जवाब में सदस्य सचिव ने आश्वस्त किया (अक्टूबर 2014) कि एम0ओ0ई0एफ0 के निर्देशों का पालन किया जाएगा और इसकी मान्यता के लिए पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के तहत कदम उठाए जाएँगे।

2.1.15.2 केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना में अपर्याप्त उपकरण/यंत्र

केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना नमूनों के विश्लेषण करने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित नहीं था

केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना के यंत्र/उपकरण की विवरणी (***परिशिष्ट–2.1.7***) की जाँच के दौरान (अगस्त 2014) यह देखा गया कि अपशिष्ट जल एवं वायु विश्लेषण के लिए विद्यमान मान उपकरण/यंत्र जल आवश्यक अनिवार्य उपकरण/यंत्रों (***परिशिष्ट–2.1.8***) के अनुरूप नहीं थे। इसके अलावा, बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूची में खतरनाक अपशिष्टों के विश्लेषण के लिए आवश्यक उपकरण/यंत्र नहीं पाए गए। आवश्यक बुनियादी और विशिष्ट उपकरणों/यंत्रों के अभाव में बि0रा0प्र0नि0प0 जल/वायु प्रदूषकों के नमूनों का विश्लेषण करने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित नहीं था।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान अपर सचिव ने बताया (दिसम्बर 2014) कि पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के अनुसार आवश्यक उपकरणों की खरीद की जाएगी।

2.1.16 आंतरिक नियंत्रण

2.1.16.1 वार्षिक प्रतिवेदनों और वार्षिक लेखे का तैयार नहीं किया जाना

जल अधिनियम, 1974 की धारा 39(2) सहपठित वायु अधिनियम, 1981 की धारा 35(2) के तहत प्रत्येक राज्य पर्षद को चाहिए कि वह प्रत्येक वित्तीय वर्ष के दौरान वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करे, जिसमें पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान किये गये क्रियाकलापों का पूर्ण विवरण हो एवं उसकी प्रति पिछले वित्तीय वर्ष के अंतिम तिथि से चार महीने के अन्दर राज्य सरकार को अग्रसारित कर देना चाहिए और सरकार को प्रत्येक ऐसे प्रतिवेदनों को पिछले वित्तीय वर्ष की अंतिम तिथि से नौ महीने की अवधि के अन्दर राज्य विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत करनी चाहिए।

अभिलेखों की संवीक्षा के दौरान यह देखा गया था कि बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा 2009–14 के दौरान वार्षिक प्रतिवेदन तैयार नहीं किये गये थे क्योंकि वर्ष 2009–14 (2009–10 को छोड़कर) के वार्षिक लेखे तैयार नहीं किये गये थे। अतः बि0रा0प्र0नि0प0 वर्ष 2009–14 के दौरान किए गए कार्यकलापो के संबंध में राज्य विधानमंडल को जानकारी प्रदान करने में विफल रहा।

---

[11] *नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लैबोरेट्रीज*

[12] *आक्यूपेशन हेल्थ एंड सेफ्टी असेसमेंट सीरीज*

सदस्य सचिव ने उत्तर दिया कि वन एवं पर्यावरण विभाग को लेखाओं के अंकेक्षण के लिए पैनल में शामिल अंकेक्षकों की नियुक्ति के लिए अधिसूचना जारी करने के लिए ज्ञापित किया गया था। बहिर्गमन सम्मेलन (दिसंबर 2014) के दौरान अपर सचिव ने कहा कि लेखा परीक्षकों की नियुक्ति के मामले में तेजी लाई जाएगी।

2.1.17 मानव बल प्रबंधन

एक संगठन का कुशल संचालन अपेक्षित मानव–बल की उपलब्धता और उपलब्ध मानव बल के उचित प्रबंधन पर निर्भर करता है। अभिलेखों की समीक्षा में प्रकट हुआ (जुलाई 2014) कि बि0रा0प्र0नि0प0 में 193 स्वीकृत पदों में से केवल 73 कर्मचारी पदस्थापित थे। आगे, बि0रा0प्र0नि0प0 में 103 तकनीकी कर्मचारी के स्वीकृत पदों में से केवल 26 कर्मचारी पदस्थापित थे ***(परिशिष्ट–2.1.9)***। दिसम्बर 2013 में विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र और विश्व बैंक द्वारा किये गये ट्रेनिंग नीड एसेसमेंट सर्वे के प्रतिवेदन (दिसम्बर 2013) के अनुसार, बि0रा0प्र0नि0प0 में विगत 20 वर्षों से कोई नियुक्ति नहीं हुई और योगदान के बाद कर्मचारी पदोन्नत नहीं किए गये थे।

बहिर्गमन सम्मेलन (दिसंबर 2014) में अपर सचिव ने कहा कि भर्त्ती नियमों को अंतिम रूप दिया जा रहा था।

अनुशंसाः बि0रा0प्र0नि0प0 को कर्मियों की कमी से निपटने के लिए भर्त्ती प्रक्रिया को अंतिम रूप देना चाहिए।

2.1.18 निष्कर्ष

- बि0रा0प्र0नि0प0, जो मुख्य एजेंसी के रूप में पर्यावरण कानून को लागू करने एवं प्रदूषण निवारण, नियंत्रण एवं कमी के लिए नीति तैयार करने के लिए उत्तरदायी था, ने राज्य में प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की पहचान करने के लिए कोई सर्वेक्षण नहीं किया और राज्य में जल एवं वायु प्रदूषण को रोकने या नियंत्रित करने के लिए व्यापक योजना को तैयार करने में विफल रहा।
- बि0रा0प्र0नि0प0 का वित्तीय प्रबंधन त्रुटिपूर्ण था, जिसके कारण यह उपलब्ध निधियों का केवल 23 से 40 प्रतिशत का उपयोग कर सका।
- बि0रा0प्र0नि0प0 ने न तो राज्य में एस0टी0पी0 की आवश्यकताओं का आकलन किया और न ही बहिस्राव के उपचार के लिए कदम उठाये।
- राज्य मे 2538 चिह्नित एच0सी0ई0 में से 1299 एच0सी0ई0 और समस्त पशु चिकित्सा संस्थान बिना बि0रा0प्र0नि0प0 के प्राधिकार के ही परिचालित किये जा रहे थे।
- केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना बगैर आवश्यक उपकरणों/यंत्रों के कार्य कर रहा था।
- रिक्तियों की बड़ी संख्या की विद्यमानता बि0रा0प्र0नि0प0 के कामकाज को प्रभावित कर रही थी।

समाज कल्याण विभाग

2.2 *राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (रा.गाँ.कि.स.यो.)–सबला का कार्यान्वयन*

कार्यकारी सारांश

प्रस्तावना

11 से 18 आयु समूह की बालिकाओं का पोषण एवं स्वास्थ्य स्तर में सुधार एवं उनके गृह आधारित एवं व्यावसायिक कौशल को उन्नयित करने हेतु केन्द्रीय प्रायोजित योजना, राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (रा.गाँ.कि.स.यो.)–सबला का शुभारम्भ भारत सरकार द्वारा नवम्बर 2010 में किया गया था। बिहार सरकार द्वारा राज्य के 38 जिलों में से 12 जिलों में इस योजना की शुरूआत मार्च 2011 में की गई थी।

(कंडिका 2.2.1)

लाभार्थियों का चिह्नितकरण

विभाग के पास किशोरी बालिकाओं के विश्वस्त आंकड़े नहीं थे, परिणामस्वरूप योजना निर्देशिका के प्रतिकूल 18 वर्ष से उपर की बालिकाओं एवं 11 से 14 वर्ष की विद्यालय जाने वाली बालिकाओं को योजना के लाभ की अनुमति दी गई थी। विभाग द्वारा संधारित किशोरी बालिकाओं के आंकड़े को त्रैमासिक रूप से अद्यतन नहीं किये जाते थे तथा वर्ष 2011–12 के आंकड़े को वर्ष 2012–13 में भी अंगीकृत गया था।

(कंडिका 2.2.6)

वित्तीय प्रबंध

पोषण घटक के तहत वर्ष 2011–14 के दौरान ₹ 513.12 करोड़ के बजट प्रावधान के विरूद्ध विभाग को मात्र ₹ 280.19 करोड़ (55 प्रतिशत) प्राप्त हुआ था। राज्य सरकार द्वारा उपयोगिता प्रमाण पत्र विलंब/नहीं समर्पित किये जाने के परिणामस्वरूप लेखापरीक्षा अवधि के दौरान कुल ₹ 173.75 करोड़ (पोषणः ₹ 164.62 करोड़ + गैर पोषण ₹ 9.13 करोड़)की केन्द्रीय सहायता प्राप्त नहीं हुई।

(कंडिका 2.2.7)

योजना का कार्यान्वयन

किशोरी बालिकाओं को 300 दिनों तक टेक होम राशन उपलब्ध नहीं कराये गए थे जैसा कि योजना के पोषण समर्थन घटक में परिकल्पित था। नमूना जाँचित जिलों में चिन्हित किशोरी बालिकाओं को गैर पोषण घटक यथा स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाऐं, पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा, जीवन कौशल शिक्षा तथा लोक सेवाओं तक पहुँच, परिवार कल्याण पर परामर्श मार्गदर्शन, व्यावसायिक प्रशिक्षण इत्यादि की सेवाऐं नहीं प्रदान की गई थी। इसके अतिरिक्त 75 से 95 प्रतिशत तक की किशोरी बालिकाओं को आई.एफ.ए. अनुपूरण को उपलब्ध नहीं कराया जाना भी योजना के कमजोर कार्यान्वयन को दर्शाता था।

(कंडिका 2.2.8)

2.2.1 प्रस्तावना

केन्द्रीय प्रायोजित योजना, राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना (रा.गाँ.कि.स.यो)–सबला का शुभारम्भ भारत सरकार द्वारा नवम्बर 2010 में किया गया था। इस योजना का उद्देश्य किशोरी बालिकाओं[1] (कि.बा.) को स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, किशोरी प्रजनन तथा यौन स्वास्थ्य, परिवार एवं बच्चों की देखभाल के प्रति सजग रखना है ताकि किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य में सुधार हो सके तथा नारीत्व की ओर पारगमन सरल हो। शुरूआती तौर पर देश के चुनिंदा 200 जिलों में किशोरी बालिकाओं को समेकित बाल विकास सेवा योजना (स.बा.वि.से.यो.) के अर्न्तगत शामिल किया गया था। तदनुसार, बिहार सरकार द्वारा राज्य के 38 जिलों में से 12 जिलों[2] में इस योजना की शुरूआत मार्च 2011 में किया गया।

योजना के उद्देश्य थेः

- आत्म विकास एवं सशक्तिकरण हेतु किशोरियों को सक्षम बनाना;
- उनके पोषण एवं स्वास्थ्य स्तर में सुधार करना;
- स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, किशोरी प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य तथा परिवार एवं बाल देखरेख के विषय में जागरूकता बढाना;
- उनके गृह कौशलों, जीवन कौशलों एवं व्यावसायिक कौशलों को उन्नयन करना;
- विद्यालय से बाहर की किशोरी बालिकाओं सन्निहित किशोरी बालिकाओं को मुख्य धारा में लाना, उन्हें औपचारिक/अनौपचारिक शिक्षा हेतु सक्षम बनाना एवं
- उन्हे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (प्रा.स्वा.के.), सामूदायिक स्वास्थ्य केंद (सा.स्वा.के.), डाकघर, बैंक, पुलिस स्टेशन आदि जैसी मौजूदा सार्वजनिक सेवाओं इत्यादि के बारे में सूचना/मार्गदर्शन प्रदान करना।

भारत सरकार के दिशानिर्देशों के तहत, योजना का कार्यान्वयन समाज कल्याण विभाग के अन्तर्गत स.बा.वि.से.यो. के मंच का प्रयोग कर, किया जाना था।

2.2.2 संगठनात्मक स्वरूप

सचिव, समाज कल्याण विभाग (स.क.वि.) राज्य में इस योजना के कार्यान्वयन एवं मार्गदर्शन के लिए जिम्मेवार हैं तथा राज्य स्तर पर निदेशक, स.बा.वि.से.यो. सहायता करते हैं। योजना के कार्यान्वयन हेतु जवाबदेह अधिकारियों का संगठनात्मक स्वरूप निम्न प्रकार है।

---

1 *किशोरी बालिका 11-18 वर्ष के आयु वर्ग की लड़कियों में यह बाल्यावस्था से व्यस्कता में पारगमन का एक महत्वपूर्ण चरण है जिसमें शारीरिक परिवर्तनों के साथ साथ मनोवैज्ञानिक परिवर्त्तन प्रकट होते हैं।*

2 *औरंगाबाद, बांका, बक्सर, गया, कटिहार, किशनगंज, मुंगेर, पटना, सहरसा, सीतामढी, पश्चिम चम्पारण और वैशाली*

चार्ट संख्या 2.2.1: योजना के क्रियान्वयन से संबंधित अधिकारियों का संगठात्मक ढाँचा



(स्रोतः निदेशक, स.बा.वि.से.)

2.2.3 लेखापरीक्षा उद्देश्य

निष्पादन लेखापरीक्षा का उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों का आकलन करना था, कि क्याः

- लक्ष्य समूह का निर्धारण करने हेतु आँगनवाड़ी सेविकाओं द्वारा वार्षिक आधारभूत सर्वेक्षण किया गया था;
- योजना की मार्गदर्शिका के अनुसार वित्तीय प्रबंधन पर्याप्त था;
- किशोरी बालिकाओं को मापदंड के अनुसार पोषण सहायता दिया गया था;
- किशोरी बालिकाओं के गृह कौशल, जीवन कौशल तथा व्यावसायिक कौशल के उन्नयन हेतु उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था तथा स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, तथा परिवार एवं बच्चों के देखभाल हेतु पर्याप्त जागरूकता के लिए भारत सरकार द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार, गैर पोषण सहायता देने की व्यवस्था किया गया था; एवं
- आँगनवाड़ी केन्द्रों (आ.वा.केन्द्रों) पर योजना के समूचित कार्यान्वयन का आकलन करने के लिए निगरानी तंत्र अस्तित्व में था।

2.2.4 लेखापरीक्षा मानक

निष्पादन लेखापरीक्षा एवं निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए निम्नांकित प्रावधानों को मापदंड के रूप में व्यवहृत किया गयाः

- राजीव गाँधी किशोरी सशक्तिकरण योजना–सबला (भा.स.) कार्यान्वयन से संबंधित मार्गदर्शन;
- बिहार वित्तीय नियमावली एवं बिहार कोषागार संहिताः तथा

- भा.स. के साथ ही साथ बि.स. द्वारा जारी आदेश एवं परिपत्रें।

2.2.5 लेखापरीक्षा का क्षेत्र एवं प्रणाली

लेखापरीक्षा के दौरान, सचिव, सा.क.वि., बि.स. तथा निदेशक, स.बा.वि.से., छः जि.का. पदाधिकारियों[3] जिसमें 93 बा.वि.प.पदाधिकारियों (सबला क्रियान्वित 12 जि.का. पदाधिकारियो में से) का वर्ष 2011-14 से संबंधित अभिलेखों का नमूना जांच अप्रैल से जुलाई 2014 के दौरान किया गया। नमूना जाँचित जि.का.पदाधिकारियो का चयन रैंडम सैंपलिंग के लिए प्रोबेबलिटी प्रोपॉसर्नल टू साइज विथ रिपलेसमेंट विधि से की गई थी।

लेखापरीक्षा कार्य प्रणाली में जि.का.पदाधिकारियो एवं बा.वि.प.पदाधिकारियों के अभिलेखों की जाँच, प्रश्नावलियों का निर्गमन, आ.वा.केन्द्रों से सूचना इकट्ठा, लेखापरीक्षा द्वारा निर्गत आपत्तियों के संदर्भ में विभाग के उत्तर इत्यादि शामिल थे। लेखापरीक्षा का उद्देश्य, इसकी कार्यप्रणाली, क्षेत्र, विस्तार को वर्णन करने एवं विभागीय विचारों को शामिल करने के उद्देश्य से अप्रैल 2014 में विभाग के सचिव, स.क.वि. के साथ एक अंतर्गमन सम्मेलन आयोजित किया गया। सचिव, के साथ एक बहिर्गमन सम्मेलन का आयोजन (अक्टूबर 2014) किया गया जिसमें विभाग के उत्तर तथा बहिर्गमन सम्मेलन में व्यक्त किए गए विचारों को समूचित जगहों पर समाविष्ट कर लिए गए हैं।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष

2.2.6 लाभार्थियों का चिह्नीकरण

भारत सरकार के सितम्बर 2010 के दिशानिर्देशों के तहत लाभार्थियों के चिह्नीकरण के लिए आधारभूत सर्वेक्षण उसी माह तक पूरा कर लिया जाना था। आ.वा.केन्द्रों, जहाँ सबला योजना क्रियान्वित किया जाना था, के तहत आने वाली प्रत्येक किशोरी बालिकाओं की चिह्नीकरण के लिए सर्वेक्षण आँकड़ो का अद्यतन त्रैमासिक तौर पर किया जाना था। योजना के मार्गदर्शिका के अनुसार, किशोरी बालिकाओं के लक्ष्य समूह को दो श्रेणियों, यथा 11 से 14 वर्ष तथा 14 के ऊपर से 18 वर्ष तक में उप विभाजित किया गया था। 11 से 14 वर्ष के आयु वर्ग की विद्यालय छोड़ चुकी बालिकाओं तथा 14 से 18 वर्ष की विद्यालय छोड़ चुकी एवं विद्यालय जाने वाली सभी बालिकाओं, सबला योजना के तहत टेक होम राशन (टीएचआर) के लिए पात्र थीं। तद्नुसार, लाभार्थियों का चयन संबंधित आ.वा.केन्द्रों की आ.वां.सेविकाओं द्वारा आयोजित आधारभूत सर्वेक्षण के आधार पर किया जाना था।

2.2.6.1 आधारभूत संर्वेक्षण के संचालन में विफलता

बेस लाइन सर्वेक्षण निर्धारित अवधि में नहीं किया गया था एवं वर्ष 2011–12 में चिन्हित की गई किशोरी बालिकाओं के आंकड़ों की वर्ष 2012–13 में अंगीकृत किये गए थे।

लेखापरीक्षा के दौरान पाया गया कि राज्य सरकार ने बगैर लाभार्थियों का चिह्नीकरण किए ही योजना की शुरूआत मार्च 2011 में किया था, क्योंकि वर्ष 2010-11 में आधारभूत सर्वेक्षण का कार्य समाप्त नहीं हुआ था। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2011-12 में चिह्नीकरण किए गए लाभार्थियों की संख्या को ही वर्ष 2012-13 में अंगीकृत किया गया था, क्योंकि वर्ष 2012-13 के लाभार्थियों के ऑकड़े को, उस समय तक कैबिनेट द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था। आगे, नमूना जाँचित जि.का.पदाधिकारियों के अभिलेखों के जाँच में पाया गया कि योजना मार्गदर्शिका की परिकल्पना के तहत न तो सर्वेक्षण आँकड़े को तिमाही अद्यतन किया गया था एवं न ही संबंधित महिला पर्यवेक्षिकाओं (म. पर्यवेक्षिका) द्वारा सत्यापित किया गया था। अतः, भा.स. द्वारा बनाए गए दिशानिर्देशों के अनुरूप लाभार्थियों का पहचान नहीं किया गया था। परिणामस्वरूप, टीएचआर के लिए

[3] *औरंगाबाद, गया, कटिहार, किशनगंज, सीतामढी और पश्चिम चम्पारण।*

अयोग्य किशोरी बालिकाओं का चयन किया गया जैसा कि परवर्ती कंडिकाओं में वर्णित है।

2.2.6.2 अयोग्य किशोरी बालिकाओं का चयन

योजना के मार्गदर्शिका के अनुसार, 11-14 वर्ष (विद्यालय छोड़ चुकी लड़कियों) तथा 14 के ऊपर से 18 वर्ष आयु वर्ग की किशोरी बालिकाऐं टीएचआर के लिए योग्य थी। यह भी परिकल्पित था कि आँगंनवाड़ी सेविकाओं द्वारा किए गए सर्वेक्षण के प्रविष्टियों (जैसे–किशोरी बालिकाओं का नाम, माता–पिता का नाम, जन्म तिथि आदि) के 20 प्रतिशत का सत्यापन एवं जॉच की जिम्मेवारी, म. पर्यवेक्षिका की थी।

संबंधित महिला पर्यवेक्षिका के द्वारा प्रविष्टियों का प्रमाणीकरण एवं आकड़ों को अद्यतन नहीं किये जाने के कारण अयोग्य लाभार्थियों को टीएचआर प्राप्त करने की अनुमति दी गई।

लेखापरीक्षा के दौरान यह पाया गया कि किशोरी बालिकाओं के आयु का निर्धारण उनके माता–पिता/अभिभावक के वक्तव्य के आधार पर किया गया था एवं आवश्यक जाँच म. पर्यवेक्षिकाओं द्वारा नही की गई थी। इस प्रकार, किशोरी बालिकाओं जिनका चयन लाभार्थियों के रूप में किया गया था की जन्म तिथि विश्वस्त नहीं थी। इसके अलावा, योजना मार्गदर्शिका के अनुरूप सर्वेक्षण आँकड़े को आ.वा.सेविकाओं द्वारा त्रैमासिक तौर पर अद्यतन नहीं किया गया था। परिणामस्वरूप, 31 बा.वि.प.पदाधिकारियों के आधारभूत सर्वेक्षण पंजी के साथ टीएचआर[4] वितरण पंजी के जाँच के क्रम में पाया गया कि अधिक उम्र की 571 लड़कियों (अर्थात 18 वर्ष से अधिक) को योजना का लाम उठाने के लिए अनुमान्य किया गया था ***(परिशिष्ट-2.2.1)***।

संवीक्षा में यह भी पाया गया कि नौ बा.वि.प.पदाधिकारियों[5] द्वारा विद्यालय जाने वाली 11 से 14 वर्ष आयु समूह की 52 लड़कियों ***(परिशिष्ट-2.2.2)*** को टीएचआर लेने के लिए मान्य किया गया था जबकि, इस आयु वर्ग के मात्र विद्यालय से बाहर की लड़कियां ही टीएचआर पाने के हकदार हैं। चूँकि, योजना के मार्गदर्शिका के अनुरूप लाभार्थियों का चिह्नकरण नहीं किया गया था, अयोग्य किशोरी बालिकाओं को भा.स. द्वारा निर्धारित मानक के प्रतिकूल टीएचआर के लिए अनुमान्य किया गया था।

जवाब में, निदेशक, स.बा.वि.से. द्वारा लेखापरीक्षा अवलोकन के साथ सहमति व्यक्त की गई एवं कहा (अक्टूबर 2014) गया कि जि.का.पदाधिकारियों/बा.वि.प.पदाधिकारियों को इस प्रकार के पुनरावृत्तियों से बचने के लिए निर्देश दिए जा रहे है।

अनुशंसा: किशोरी बालिकाओं का आधारभूत सर्वेक्षण निर्धारित अन्तराल पर संचालित किया जाना चाहिए तथा लाभार्थियों के सर्वेक्षण आँकड़ों को योजना मार्गदर्शिका के अनुरूप अद्यतन किया जाना चाहिए जिससे कि अयोग्य लाभार्थी को योजना का लाभ प्राप्त होने से टाला जा सके।

2.2.7 वित्तीय प्रबंधन

भारत सरकार के वित्तीय पद्धति के अनुसार, सबला के अन्तर्गत किशोरी बालिकाओं को पोषण एवं गैर पोषण सहायता दिया जाना था। केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा 50:50 के अनुपात में पोषण सहायता प्रदान करना था जबकि भारत सरकार द्वारा गैर पोषण सहायता के अन्तर्गत 100 प्रतिशत केन्द्रीय सहयोग प्रदान करना था। भा.स. एवं बि.स. द्वारा वर्ष 2010-14 के दौरान विमुक्त निधियों की स्थिति **तालिका 2.2.1** में दर्शायी गई है।

---

[4] *टीएचआर के तहत प्रत्येक किशोरी बालिका को प्रतिदिन कम से कम 600 कैलोरी एवं 18–20 ग्राम प्रोटीन तथा सुक्ष्म पोशक की आवश्यकता वर्ष में 300 दिनों के लिए दिया जाना था, जिसके लिए ₹ 5 प्रति दिन प्रति लाभार्थी व्यय किया जाना था।*

[5] *बहादुरगंज, बरारी, बैरिया, बेलसंड, दाउदनगर, दिग्घलबैंक, कदवॉ, रफीगंज तथा रून्नीसैदपुर।*

तालिका 2.2.1: पोषण एवं गैर पोषण घटक के अन्तर्गत निधि का प्रावधान और व्यय

(₹ करोड़ में)

वर्ष	पोषण घटक (50 : 50)						गैर पोषण घटक (भारत सरकार का 100 प्रतिशत हिस्सा)			
	बजट प्रावधान	विमुक्ति		किया गया व्यय		भारत सरकार के अंश का अव्ययीत हिस्सा	निधि की आवश्यकता (₹ 3.80 लाख X 176 अर्थात ₹ 6.69 करोड़)	भारत सरकार द्वारा विमुक्ति	किये गये व्यय	अंतशेष (कॉलम 9–10)
		भारत सरकार	बिहार सरकार	भारत सरकार	बिहार सरकार					
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**
2010-11	0	21.05	0	0	0	21.05	0	6.69	0	6.69
2011-12	106.94	24.47	24.47	22.85	22.54	22.67	6.69	3.34	6.69	3.34
2012-13	174.93	14.43	60.03	30.24	49.35	6.86	6.69	0	1.76	1.58
2013-14	231.25	31.99	103.75	64.96	64.96	-	6.69	0.91	0.88	1.61
कुल	**513.12**	**91.94**	**188.25**	**118.05**	**136.85**		**20.07**	**10.94**	**9.33**	

(स्रोतः निदेशक, स.बा.वि.से.)

पोषण घटक के अन्तर्गत बजट प्रावधान के केवल 55 प्रतिशत भा.स. और बि.स. द्वारा उपलब्ध कराया गया।

उक्त तालिका से यह स्पष्ट था कि वर्ष 2010-14 के दौरान भा.स. तथा बि.स. ने अपना अपेक्षित अंश विमुक्त नहीं किया था। आगे, वर्ष 2010-14 के दौरान पोषण घटक के ₹ 513.12 करोड़ के बजट प्रावधान के विरूद्ध राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा ₹ 280.19 करोड़ (55 प्रतिशत) ही, निदेशक, स.बा.वि.से. को उपलब्ध कराया गया था जिसमें से केवल ₹ 254.90 करोड़ ही व्यय किये गये थे। हालांकि, वर्ष 2013-14 के दौरान भा.स. के अंश के रूप में बि.स. द्वारा योजना पर ₹ 64.96 करोड व्यय किये गये थे जबकि बि.स. के पास केन्द्रीय अंश के रूप में मात्र ₹ 38.85 करोड़[6] ही उपलब्ध थे। जिसके परिणामस्वरूप, वर्ष 2013-14 के दौरान बि.स. द्वारा पोषण घटक के अन्तर्गत ₹ 26.11 करोड़ अपने अंश से ज्यादा विमुक्त किया गया था।

इसी प्रकार, गैर पोषण घटक के अन्तर्गत 2010-14 के दौरान भा.स. द्वारा आवश्यक निधि के विरूद्ध केवल 55 प्रतिशत विमुक्त किया गया था। कुल विमुक्त निधि ₹ 10.94 करोड़ में से विभाग ने ₹ 9.33 करोड़ (85 प्रतिशत) व्यय किया था, परिणामस्वरूप ₹ 1.61 करोड़ अव्यवहृत शेष रह गये थे। इस प्रकार, ₹ 20.07 करोड़ की आवश्यकता के विरूद्ध विभाग द्वारा केवल ₹ 9.33 करोड (46 प्रतिशत) ही संबंधित बा.वि.प.पदाधिकारियों को गैर पोषण घटक की गतिविधियों के संचालन हेतु उपलब्ध कराये जा सके थे।

अभिलेखों की संवीक्षा से प्रकट हुआ कि भा.स. द्वारा कम निधि विमुक्त करने का मुख्य कारण, निदेशक, स.बा.वि.से. द्वारा उपयोगिता प्रमाण पत्र नहीं/विलम्ब से समर्पित किया जाना था, जैसा कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भा.स. द्वारा (सितम्बर 2011 एवं दिसम्बर 2013) बि.स. को समय पर व्यय की विवरणी तथा उपयोगिता प्रमाण–पत्र जमा नहीं किए जाने पर आगे निधि का विमुक्त सम्भव नहीं होने के संदर्भ में सतर्क किया गया था। निर्देश के बावजूद, विभाग द्वारा योजना का वित्तीय प्रबंधन में सुधार नहीं किया जा सका तथा भा.स. को व्यय विवरणी तथा उपयोगिता प्रमाण पत्र नहीं/विलम्ब से समर्पित किया जाना वर्ष 2013-14 तक अद्यतन जारी रहा ।

[6] *₹ 6.86 करोड़ (2012–13 का अव्ययित शेष) + ₹ 31.99 करोड़ (2013–14 के दौरान भारत सरकार द्वारा विमुक्त)*

लेखापरीक्षा द्वारा इंगित किये जाने पर निदेशक, स.बा.वि.से. ने उत्तर (मई 2014) दिया कि भा.स. को विलम्ब से उपयोगिता प्रमाण–पत्र जमा करने का मुख्य कारण क्षेत्रीय कार्यालयो से उक्त की विलम्बित प्राप्ति थी।

विभाग का जवाब नियमानुसार नहीं था क्योंकि निदेशक, स.बा.वि.से. क्षेत्रीय कार्यालयों से ससमय उपयोगिता प्रमाण–पत्र की प्राप्ति को सुनिश्चित करने एवं आगे भा.स. को समर्पित करने के लिए जवाबदेह था।

राशि का अल्प उपयोग एवं भा.स. को उ.प्र. पत्र प्रस्तुत नहीं करने के कारण योजना के केन्द्रांश का ₹ 173.75 करोड़ प्राप्त करने से राज्य वंचित रहा

इस प्रकार, योजना निधि का कम उपयोग तथा भा.स. को उपयोगिता प्रमाण पत्र समर्पित नहीं किए जाने के कारण राज्य को केन्द्रीय अंश ₹ 173.75 करोड़[7] से वंचित रहना पड़ा जो कि ₹ 276.63 करोड़ के सकल केन्द्रीय अंश (पोषणः ₹ 256.56 करोड़ एवं गैर पोषणः ₹ 20.07 करोड)का 63 प्रतिशत होता था।

आगे यह भी पता चला कि वर्ष 2011-14 के दौरान निदेशक, स.बा.वि.से. द्वारा वित्तीय वर्ष के समाप्ति में ₹ 71 करोड़[8], जिलों को विमुक्त किये गये थे। जिसका अभिलेख में कोई कारण उपलब्ध नहीं था। इसके अतिरिक्त, यह भी पाया गया कि बा.वि.प. पदाधिकारियों को वास्तविक आवश्यकता से अधिक निधि आवंटित की गई थी क्योंकि वर्ष 2013-14 के दौरान 10 बा.वि.प.पदाधिकारियों ने ₹ 11.43 करोड़ कि निधि की आवश्कता के विरूद्ध ₹ 14.40 करोड़ का आवंटन प्राप्त किया था ***(परिशिष्ट-2.2.3)***।

जवाब में, निदेशक, स.बा.वि.से. ने बताया (अक्टूबर 2014) कि वित्तीय वर्ष के अंत में निधियाँ विमुक्त करने का कारण भा.स. से विलम्ब से निधि प्राप्त होना था।

जवाब तथ्यों के अनुरूप नहीं था क्योंकि निदेशक, स.बा.वि.से. द्वारा बा.वि.प. पदाधिकारियों को आवश्यकता से अधिक निधि भी आवंटित की गई थी।

अनुशंसाः भारत सरकार से नहीं/कम निधि विमुक्त करने से बचने के लिए, निधि का समुचित उपयोग तथा ससमय पर भारत सरकार को उपयोगिता प्रमाण पत्र समर्पित किया जाना सुनिश्चित होना चाहिए।

2.2.8 योजना का कार्यान्वयन

इस योजना के दो घटक, यथा पोषण घटक तथा गैर पोषण घटक है। इन घटकों के कार्यान्वयन में पाई गई कमीयों की चर्चा निम्नवत हैः

2.2.8.1 पोषण घटक

योजना के मार्गदर्शिका के अनुसार, प्रत्येक किशोरी बालिका के लिए सुक्ष्म पोषक की आवश्यक दैनिक सेवन में कम से कम 600 कैलोरी एवं 18-20 ग्राम प्रोटीन जिसके लिए ₹ 5 प्रति दिन प्रति लाभार्थी व्यय वर्ष में 300 दिनों के लिए किया जाना था। इस योजना के अन्तर्गत 11 से 14 वर्ष के आयु वर्ग की विद्यालय से बाहर की बालिकाओं तथा 14 से 18 वर्ष की सभी बालिकाओं टीएचआर के लिए पात्र थी किशोरी बालिकाओं को टीएचआर साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक तौर पर एक बार, जैसा कि राज्य सरकार निर्णित हों, दिया जाना था। तद्नुसार, जनवरी 2012 से प्रत्येक किशोरी बालिकाओं को माह में एक बार टीएचआर दिया जा रहा था जिसमें 3.00 किलो ग्राम (कि.ग्रा.) चावल, 1.5 कि.ग्रा.दाल तथा 300 ग्राम (ग्रा.) सोयाबड़ी शामिल थे।

अभिलेखों की संवीक्षा में पाया गया कि वर्ष 2011-14 के दौरान राज्य में चिह्नित किए गए किशोरी बालिकाओं के विरूद्ध कितने किशोरी बालिकाओं को टीएचआर मुहैया कराया गया, से संबंधित वास्तविक स्थिति की सूचना निदेशक, स.बा.वि.से. के पास उपलब्ध नहीं थी। हाँलांकि, निदेशालय के वित्तीय अभिलेखों से उद्घटित हुआ कि 47

---

7 *पोषणः ₹ 164.62 करोड़ + गैर पोषणः ₹ 9.13 करोड़*

8 *2011-12: ₹ 16.31 करोड़: 2012-13: ₹ 14.24 करोड़: 2013-14: ₹ 40.45 करोड़*

से 77 प्रतिशत के बीच कमी थी। नमूना जाँचित जिलों में टीएचआर उपलब्ध कराये जाने में त्रुटियों की चर्चा अनुवर्ती कंडिकाओं में की गई है।

- ***टीएचआर दिवस में कमी***

वर्ष 2011–14 के दौरान चिन्हित किशोरी बालिकाऐं किसी भी वर्ष 300 दिन टीएचआर प्राप्त नहीं कर सकी (जैसा कि योजना में परिकल्पित था)।

नमूना जाँचित छः जिलों के 73 बा.वि.प.पदाधिकारियों[9] के अभिलेखों के जांच में पाया गया कि वर्ष 2011–14 के दौरान किसी भी वर्ष चिह्नित की गई लाभार्थियों को टीएचआर 300 दिनों तक मुहैया नहीं कराये गये थे जैसा कि निम्न **तालिका 2.2.2** में इंगित किया गया है।

तालिका 2.2.2: चिह्नित तथा टीएचआर से आच्छादित किशोरी बालिकाओं की संख्या

वर्ष	टीएचआर हेतु चिह्नित किशोरी बालिकाऐं (संख्या में)	टीएचआर प्राप्त कराये किशोरी बालिकाओं की संख्या	टीएचआर प्राप्त कराये गये दिवस की संख्या
2011-12	693939	499304	50-75
2012-13	740378	500303	25-225
2013-14	788339	515539	100-250

(स्रोतः बा.वि.प. पदाधिकारियों के अभिलेख)

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टूबर 2014) में, सचिव, स.क.वि. ने कहा कि भविष्य मे टीएचआर की स्थिति में में सुधार किया जाए।

- ***टीएचआर के लिए अधिक भुगतान***

चिन्हित किशोरी बालिकाओं से अधिक को टीएचआर का भुगतान किए जाने के कारण ₹18.16 लाख का अधिक भुगतान हुआ।

औरंगाबाद जिले के बा.वि.प.पदाधिकारी, दाउदनगर में यह पाया गया कि बा.वि.प. पदाधिकारी द्वारा चिह्नित की गई किशोरी बालिकाओं की संख्या से अधिक का टीएचआर मद की राशि का भुगतान आ.वा.सेविकाओं को किया गया था, जैसा कि निम्नवत **तालिका 2.2.3** में दर्शाया गया है।

तालिका 2.2.3: टीएचआर का अधिक भुगतान

बा.वि.प. पदाधिकारी का नाम	वर्ष	(संख्या में)			(₹ लाख में)
		चिन्हित किशोरी बालिकाओं की संख्या	किशोरी बालिकाओं को टीएचआर का भुगतान	चिन्हित के विरूद्ध आधिक्य	अधिक भुगतान
दाउदनगर	2012-13	46718	58466	11748	14.68
	2013-14	35275	38064	2789	3.48
योग		**81993**	**96530**	**14537**	**18.16**

(स्रोतः बा.वि.प.पदाधिकारी का अभिलेख)

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट था कि बा.वि.प. पदाधिकारी द्वारा चिन्हित संख्या से अधिक 14537 किशोरी बालिकाओं को अधिक टीएचआर के लिए भुगतान किया गया था। इसके फलस्वरूप टीएचआर मद में ₹ 18.16 लाख का अधिक भुगतान हुआ।

[9] *94 बा.वि.प.पदाधिकारियों में से, एक बा.वि.प.पदाधिकारी का अभिलेख थाना द्वारा जब्त था तथा 20 बा.वि.प.पदाधिकारियों के पास वांछित सूचना उपलब्ध/अपूर्ण था। अतः 73 बा.वि.प. पदाधिकारियों की स्थिति का विश्लेषण किया गया।*

जि.का. पदाधिकारी, औरंगाबाद द्वारा कोई जवाब नहीं दिया गया। तथापि, निदेशक, स.बा.वि.से. ने बताया (अक्टूबर 2014) कि क्षेत्रीय कार्यालयों को वास्तविक स्थिति समर्पित करने हेतु निर्देश दिये गये है।

- ***टीएचआर हेतु खाद्यान का दर निर्धारण***

यह अव्यावहारिक था कि खाद्यान्न की अपुनरिछित दर के साथ खुले बाजार से टीएचआर की गुणवता और निर्धारित मात्रा बनाए रखा जाए।

सबला मार्गदर्शिका विनिर्दिष्ट करता है कि स.बा.वि.से. योजना के अन्तर्गत गर्भवती एवं धात्री माताओं को उपलब्ध कराये जाने वाले टीएचआर ही किशोरी बालिकाओं को भी उपलब्ध कराया जाये। तद्नुसार, रा.स. ने प्रति किशोरी को ₹ 15 प्रति कि.ग्रा. की दर से खुले बाजार से प्रति माह तीन कि.ग्रा. चावल उपलब्ध कराये जाने हेतु निश्चित किया था।

नमूना जांचित जिलों में आगे पाया गया कि चावल का खुले बाजार का दर विभाग द्वारा निर्धारित दर से अधिक था। इसके अतिरिक्त गर्भवती एवं धात्री माताओं के लिए टीएचआर उपलब्ध कराये जाने हेतु चावल का दर सरकार द्वारा ₹ 21 प्रति कि.ग्रा. संशोधित कर दिया गया था (मई 2013), जो कि उसी आं.वा. सेविका द्वारा क्रय किया जाता था। अतः न्यूनतम दर पर खुले बाजार से टीएचआर की गुणवत्ता एवं विनिर्दिश्ट मात्रा को बरकरार बनाये रखना अव्यवहारिक था। इससे यह पुष्टि होती है कि जि.का. पदाधिकारी सीतामढी, ने भी यह पाया था (अगस्त 2012) कि सस्ते दर पर टीएचआर क्रय करने के क्रम में आं.वां.सेविकाओं द्वारा मिलावटी खाद्यान क्रय किया गया था। इसके अतिरिक्त नमूना जाँचित जिलों के 14 बा.वि.प.पदाधिकारियों ने भी टीएचआर के दर के संशोधन की आवश्यकता पर लेखापरीक्षा अवलोकन पर अपनी सहमति दी थी।

जवाब में निदेशक, स.बा.वि.से. ने कहा (अक्टूबर 2014) कि टीएचआर की राशि भा.स. द्वारा (यथा, ₹ 5 प्रति लाभार्थी/दिन) निर्धारित थी।

जवाब असंगत था क्योंकि लेखापरीक्षा का अवलोकन टीएचआर के लिए चावल एवं दाल के दर निर्धारण पर था, न कि, टीएचआर की राशि पर

2.2.8.2 गैर–पोषण घटक

इस घटक के अन्तर्गत 11 से 18 वर्ष की किशोरी बालिकाओं को आईएफए अनुपूरण, स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाएं, पोषण व स्वास्थ्य शिक्षा, परिवार कल्याण/किशोर प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य (एआरएसएच), बच्चों की देखभाल पर मार्गदर्शन, जीवन कौशल शिक्षा व जन–सुविधाओं तक पहुँच जबकि 16 से 18 वर्ष की किशोरियों को राष्ट्रीय कौशल विकास कार्यक्रम (एन.एस.डी.पी) के अन्तर्गत व्यवसायिक प्रशिक्षण की सेवा उपलब्ध कराया जाना था। लेखापरीक्षा के क्रम में पाई गई कमियों पर अनुवर्ती कंडिकाओं में चर्चा की गई है।

- ***आईएफए अनुपूरण***

आईएफए अनुपूरण एनीमिया की रोकथाम एवं किशोरी बालिकाओं के विकास को बेहतर बनाने में मदद करता है। भा.स. के दिशानिर्देश (फरवरी 2012) के अनुसार प्रति सप्ताह आईएफए की एक गोली किशोरी बालिकाओं को उपलब्ध कराया जाना था। आगे, योजना निर्देशिका के अनुसार, रा.स. की जिम्मेदारी थी कि वह स्वास्थ्य विभाग के साथ समाभिरूपता कर सबला के प्रत्येक लाभार्थी को 100 मि.ग्रा. की आईएफए की गोलियाँ दिया जाना सुनिश्चित करें।

लेखापरीक्षा के दौरान यह पाया गया कि नमूना जाँच किए गए किसी भी जि.का. पदाधिकारियों (सीतामढी एवं बेतिया में वर्ष 2012-13 एवं किशनगंज में 2013-14 को छोड़कर) के पास वर्ष 2011-14 के दौरान आईएफए अनुपूरण की आपूर्ति के संबंध में सूचना नहीं थी। इसके अलावा, नमूना जाँचित जिलों के 73 बा.वि.प.पदाधिकारियों द्वारा उपलब्ध करायी गई सूचना के अनुसार आईएफए अनुपूरण में उल्लेखनीय कमी देखा

गया था। नमूना जाँचित बा.वि.प.पदाधिकारियों में चिह्नित किशोरियों के विरूद्व आईएफए गोलियों की आवश्यकता तथा उसके अनुरूप उपलब्धता **तालिका 2.2.4** में निम्नवत् इंगित है।

तालिका 2.2.4: आई.एफ.ए. गोलियों की आवश्यकता एवं उपलब्धता

वर्ष	पहचान किए गए किशोरियों की संख्या	प्रति किशोरी 100 मि.ग्रा आवश्यकता (किशोरी X 52)	वास्तविक प्राप्ति		कमी[10]	कमी की प्रतिशतता
			20 मि. ग्रा.	100 मि. ग्रा.		
2011-12	693939	36084828	1729450	1617636	34121302	95
2012-13	740378	38499656	7506614	4113693	32884640	85
2013-14	788339	40993628	620400	10084441	30785107	75
योग	**2222656**	**115578112**	**9856464**	**15815770**	**97791049**	

(स्रोतः नमूना जांचित जिलों के 73 बा.वि.प.पदाधिकारियों)

बा.वि.प. पदाधिकारियों के पास आयरन फोलिक एसिड गोलियाँ की आवश्यकता के विरूद्ध कमी 75 एवं 95 प्रतिशत के बीच थी।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता था कि बा.वि.प.पदाधिकारियों के पास आई.एफ.ए. गोलियों की अत्याधिक कमी थी। आवश्यकता के विरूद्ध कमी 75 से 95 प्रतिशत के बीच थी। आगे जाँच में यह भी पाया गया कि न तो बा.वि.प.पदाधिकारियों द्वारा और न ही जि.का.पदाधिकरियों द्वारा योजना मार्गदर्शिका के अनुसार, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन.आर.एच.एम.) प्राधिकारियों से आईएफए गोलियों की आवश्यक मात्रा की प्राप्ति हेतु कोई प्रयास किया गया था।

नमूना जाँचित जि.का.पदाधिकरियों ने लेखापरीक्षा आपत्ति पर सहमति दी थी। निदेशक, स.बा.वि.सें. द्वारा बताया (अक्टूबर 2014) गया कि कार्यपालक निदेशक, राज्य स्वास्थ्य समिति (रा.स्वा.स.) से सबला योजना के लिए आईएफए गोलियों की आपूर्ति का आग्रह (नवम्बर 2013) किया गया था। बहिर्गमन सम्मेलन में, सचिव, समाज कल्याण विभाग ने बताया (अक्टूबर 2014) कि स्वास्थ्य विभाग के साथ अभिसरण को मजबूत करने की आवश्यकता है।

- ***आई.एफ.ए. गोलियों के क्रय पर अतिरिक्त व्यय***

भा.स. के दिशानिर्देशों (फरवरी 2012), के तहत आईएफए अनुपूरण योजना में प्रत्येक किशोरी को 100 मि.ग्रा. (वयस्क) का आईएफए गोली सप्ताह में एक बार दिया जाना था।

100 मि.ग्रा. आयरन फोलिक एसिड की गोलियों के बदले 20 मि. ग्रा. का क्रय किए जाने के कारण ₹ 17.40 लाख का अतिरिक्त व्यय हुआ।

अभिलेखों के जाँच में पाया गया कि निदेशक, स.बा.वि.सें. के आपूर्ति आदेश (मार्च 2012) के विरूद्ध 20 मि.ग्रा. के 3.98 करोड़ आईएफए गोलियों की अधिप्राप्ति वर्ष 2012 -13 में की गई थी जिसके लिए आपूर्तिकर्त्ता को सबला निधि से ₹ 25.76 लाख (मार्च तथा जुलाई 2012) का भुगतान किया गया था। आगे संवीक्षा में स्पष्ट हुआ कि 20 मि.ग्रा. के आईएफए गोलियों का क्रय रा.स्वा.स. बिहार द्वारा अनुमोदित दर अनुबंध (₹ 0.07 प्रति गोली की दर से) के आधार पर किया गया था। रा.स्वा.स. द्वारा उसी समय 100 मि.ग्रा. आईएफए गोली का दर ₹ 0.105 प्रति गोली को भी अनुमोदित किया जा चुका था। इस प्रकार, यह स्पष्ट था कि 20 मि.ग्रा. के पाँच आईएफए गोली (100 मि.ग्रा. के समतुल्य) का दाम 100 मि.ग्रा. के एक आईएफए गोली से ज्यादा मंहगा था।

---

10 *कमी = आवश्यकता – वास्तव में प्राप्त (20 मिलीग्राम की संख्या ÷ 5) + 100 मिलीग्राम की संख्या*

अतः निदेशक, स.बा.वि.सें. द्वारा 100 मि.ग्रा. के बदले 20 मि.ग्रा. के आईएफए गोली के क्रय पर 17.40 लाख[11] का ज्यादा व्यय किया गया था।

बहिर्गमन बैठक में सचिव, स.क.वि. ने उत्तर (अक्टूबर 2014) दिया कि रा.स्वा.स. द्वारा अनुमोदित दर में 20 मि.ग्रा. आईएफए गोली का दर सम्मिलित था, इसलिए 20 मि.ग्रा. के आईएफए गोली का क्रय किया गया एवं प्रत्येक लाभार्थी को पाँच गोली प्रति सप्ताह के दर से आपूरित की गई।

उत्तर मान्य नहीं था क्योंकि निदेशक, स.बा.वि.सें. के अविवेकपूर्ण निर्णय के कारण 100 मि.ग्रा. के बदले 20 मि.ग्रा. के आईएफए गोलियों के क्रय पर अतिरिक्त व्यय किया गया था।

- ***स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाएँ***

किशोरी बालिकाऐं कई प्रकार की प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य समस्याओं, जिनमें कि यौन प्रसारित संक्रमण एवं एचआईवी/एड्स, गोली, हिंसा, चोट, के साथ ही पोषण संबंधी मानसिक एवं व्यवहारिक समस्याओं, जिनसे किशोरावस्था में तेजी से शारीरिक एवं भावात्मक बदलाव आते हैं, का सामना करती है। इसलिए आवश्यक है कि किशोरी बालिकाओं तक स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित की जाए। तद्नुसार, एएनएम एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के गहन निगरानी में कम से कम तीन माह में एक बार, सभी किशोरियों के लिए सामान्य स्वास्थ्य जाँच की गतिविधियाँ आयोजित की जाये। किशोरियों के विकास स्तर पर गहन निगरानी रखने के लिए किशोरी कार्ड पर प्रत्येक किशोरी का कद, वजन एव बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) लिखा जाना था। इसके अतिरिक्त, किशोरियों को किसी विशेष उपचार की आवश्यकता हो तो, चिकित्सा अधिकारी द्वारा उन्हें जिला के अस्पताल/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र/सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र/मातृ एवं बाल स्वास्थ्य उप केन्द्र में इलाज के लिए संदर्भित करना था।

वर्ष 2011-14 के दौरान नमूना जाँचित छः जि.का.पदाधिकारियों के अन्तर्गत स्वास्थ्य–जाँच शिविर एवं किशोरी कार्ड की उपलब्धता की स्थिति **तालिका 2.2.5** में इंगित है।

तालिका 2.2.5: आयोजित स्वास्थ्य–जाँच शिविर की विवरणी एवं किशोरी कार्ड की उपलब्धता

वर्ष	बा.वि.प. पदाधिकारियो की संख्या	बा.वि.प. पदाधिकारियो की संख्या जहाँ स्वास्थ्य शिविर नहीं आयोजित किए गए (प्रतिशत)	किशोरियों की संख्या	स्वास्थ्य जाँच एवं संदर्भ सेवाएँ		किशोरी कार्ड की स्थिति	
				सेवा दिए जानेवाले किशोरियों की संख्या (चार सत्र X किशोरी की कुल संख्या)	उपलब्ध कराई गई सेवा (प्रतिशत)	किशोरी कार्ड की आवश्यकता	उपलब्धता (प्रतिशत)
2011-12	93	89 (96)	1284304	5137216	21915 (0.43)	1284304	2034 (*0.2*)
2012-13	93	81 (87)	1342733	5370932	39802 (*0.74*)	1342733	180194 (*13.41*)
2013-14	93	71 (76)	1432306	5729224	105924 (*1.85*)	1432306	5440 (0.38)

(स्रोतः नमूना जाँचित बा.वि.प.पदाधिकारियों)

[11] *20 मि.ग्रा. की 3.98 करोड़ आई.एफ.ए. गोलियाँ = 100 मि.ग्रा. का 3.98÷5 खुराक यानी 79.6 लाख खुराक, 100 मिलीग्राम की गोली का दर = ₹ 0.105 प्रति गोली, अतएव 79.60 खुराक का मुल्य = ₹ 0.105 X 79.60 = ₹ 8.36 लाख। इस प्रकार अतिरिक्त व्यय ₹ 25.76 लाख –₹ 8.36 लाख = ₹ 17.40 लाख*

किशोरी बालिकाओं के लिए स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन अपर्याप्त था तथा किशोरी कार्ड की उपलब्धता अत्यल्प थी

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि वर्ष 2011-14 के दौरान नमूना जाँचित जिलों में स्वास्थ्य–जाँच शिविरों में कमी 76 से 96 प्रतिशत के बीच थी तथा नगण्य किशोरियों को स्वास्थ्य जाँच की सुविधा प्रदान की गई थी। इसी प्रकार, किसी भी नमूना जाँचित बा.वि.प.पदाधिकारियों के पास वर्ष 2011-12 में किशोरी कार्ड उपलब्ध नहीं थी तथा वर्ष 2012-14 के दौरान उपलब्धता अत्यल्प थी। इसके अतिरिक्त, आ.वा.केन्द्रो में तौल मशीन नहीं रहने अथवा खराब रहने के कारण आ.वा.केन्द्रो द्वारा किशोरियों के बीएमआई परिकलित नहीं किये गये थे। यह भी पाया गया कि किसी भी आ.वा.केन्द्र पर चिकित्सा पदाधिकारियों ने दौरा नहीं किया था फलतः, किशोरियों को विशिष्ट संदर्भ चिकित्सा उपलब्ध नहीं कराया जा सका था।

जवाब में, निदेशक, स.बा.वि.सें. द्वारा बताया (अक्टूबर 2014) गया कि जि.क. पदाधिकारियों को निर्धारित अंतराल पर किशोरी दिवस का आयोजन करने का निर्देश (जनवरी 2013) दिया गया था।.

- ***पोषण व स्वास्थ्य शिक्षा***

जैसे ही किशोरी बालिकाओं का शरीर मातृत्व के लिए विकसित होता है, उन्हें पौष्टिक भोजन के साथ ही पोषण एवं स्वास्थ्य के बारे में सही जानकारी की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए बा.वि.प.प./पर्यवेक्षक की जिम्मेवारी थी कि वे आ.वा.केन्द्रों पर आने वाली सभी किशोरियों के लिए पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा (पो. स्वा.शि.) सत्रों का आयोजन सुनिश्चित करें। किशोरी बालिकाओं की माता को भी प्रभावी सुधार हेतु पो.स्वा.शि. सत्र में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। तदनुसार, इस घटक के तहत निम्न गतिविधियाँ जैसे स्वास्थ्यकर तरीके से भोजन बनाने एवं उचित खान–पान की आदत, सुरक्षित पेयजल के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना तथा सामान्य स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वच्छता हेतु शिक्षित करना, प्राथमिक उपचार आदि शामिल हैं।

नमूना जाँचित जिलों में 2011–14 के दौरान पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा के तहत कोई गतिविधि विभाग द्वारा प्रारम्भ नहीं किया गया था

लेखापरीक्षा के दौरान, यह पाया गया कि वर्ष 2011-14 के दौरान नमूना जाँचित किसी भी जिलों में ये गतिविधियाँ नहीं किया जा रहा था, यद्यपि भा.स. द्वारा वर्ष 2010–11 में इस घटक के लिए 93 बा.वि.प.पदाधिकारियों को ₹ 27.90 लाख की निधि (₹ 30000 प्रति बा.वि.प.पदा. की दर से) उपलब्ध करायी गई थी। आगे यह भी पाया गया कि बा. वि.प.पदाधिकारियों द्वारा कोषागार से राशि का आहरण वर्ष 2011-12 में कर लिया गया था तथा सम्पूर्ण राशि संबंधित बैंक खाते में अव्यवहृत पड़े थे (मई-जूलाई 2014)।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान सचिव, स.क.वि. द्वारा बताया (अक्टूबर 2014) कि इस घटक के तहत गतिविधि में सुधार के लिए कदम उठाये गये थे।

- ***परिवार कल्याण, किशोरी प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल की आदत एवं गृह प्रबंधन पर मार्गदर्शन***

परिवार कल्याण, किशोरी प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल की रीति और गृह प्रबंधन में कोई गतिविधि नहीं किया गया था

यह योजना किशोरियों एवं उनके परिवारों के स्थास्थ्य की देखरेख, परिवार कल्याण, प्रजनन व यौन स्वास्थ्य, बच्चों के देखभाल की बेहतर रीतियाँ एवं गृह प्रबंधन कौशल आदि से विकास संबंधित मार्गदर्शन प्रदान करती है।

लेखापरीक्षा में उद्घटित हुआ कि इस प्रकार की कोई गतिविधि किसी भी नमूना जाँचित जिलों में नहीं किया जा रहा था।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान सचिव, स.क.वि. द्वारा बताया (अक्टूबर 2014) गया कि इस घटक के तहत गतिविधि में सुधार के लिए कदम उठाये जा रहे थे।

- ***जीवन कौशल शिक्षण व लोक सेवाओं तक पहुँच***

प्रतिदिन की जरूरतों एवं चुनौतियों का प्रभावकारी तरीके से सामना करने के लिए किशोरी बालिकाओं को पर्याप्त जानकारी प्राप्त करने एवं व्यवहार कला को विकसित करने की आवश्यकता है जो कि उनमें सकारात्मक आचरण अपनाने तथा प्रोत्साहन में उनका सहयोग करेगी। राज्य को सबला योजना के जीवन कौशल घटक को युवा मामलों के विभाग, भा.स. सामान्य योजनाओं/उपायों से जोड़ना था, एवं किशोरियों के लिए अपनी योजना व वित्त स्रोतों को बढ़ाने की सम्भावनाओं की खोज भी करनी थी।

किशोरियों के जीवन कौशल को विकसित करने के लिए उनके बीच प्रशिक्षण प्रदान करने के संबंध में जागरूकता अभियान प्रारंभ नहीं किया गया था

लेखापरीक्षा के क्रम में पाया गया कि नमूना जाँचित किसी भी जिले में किशोरी बालिकाओं के बीच जीवन कौशल विकसित करने हेतु जागरूकता अभियान के तहत प्रशिक्षण प्रारम्भ नहीं की गई थी (जुलाई 2014)।

जवाब में, निदेशक, स.बा.वि.से. ने कहा (अक्टूबर 2014) कि इस संबंध में क्षेत्रीय कार्यालयों को समय समय पर दिशानिर्देश जारी किया गया था।

जवाब समुचित नहीं था क्योंकि योजना की परिकल्पना के अनुसार विभाग गतिविधियों के कार्यान्वयन एवं अनुश्रवण के लिए जवाबदेह था।

- ***वोकेशनल प्रशिक्षण हेतु अन्य मंत्रालयों और विभागों के मौजूदा बुनियादी ढांचे का उपयोग***

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भा.स. द्वारा पढ़ाई छोड़ चुकी किशोरियों तथा विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के वर्तमान कर्मियों के कौशल विकास के लिए, उद्योग, असंगठित क्षेत्र के सुक्ष्यम उद्यमों, राज्य सरकारों, विशेषज्ञों तथा शिक्षाविदों से गहन विचार विमर्श कर एक नई रणनीतिक ढाचे का निर्माण किया है। जब तक मंत्रालय की राष्ट्रीय कौशल विकास कार्यक्रम की स्थापना कौशल विकास पहल योजना के अन्तर्गत नहीं हो जाता है तक तक वैकल्पिक नियोजनीय कौशल का प्रयोग किया जा सकता है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण के तहत कोई गतिविधि नहीं शुरू किया गया था।

लेखापरीक्षा में उद्घटित हुआ कि किसी भी नमूना जाँचित जिलों में इस प्रकार की कोई भी गतिविधि नहीं किये जा रहे थे।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान सचिव, स.क.वि. ने कहा (अक्टूबर 2014) कि इस गैर पोषण घटक के तहत गतिविधि में सुधार के लिए कदम उठाये जा रहे थे।

इस प्रकार, ऊपर की **कंडिका 2.2.8.2** के अनुसार उल्लेखित था कि गैर पोषण घटक के अन्तर्गत की गतिविधियाँ कार्यान्वित नहीं किये गए थे, जैसा कि योजना में परिकल्पित था।

अनुशंसा: योजना की परिकल्पना के अनुरूप सभी किशोरी बालिकाओं को गैर पोषण सहायता देना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

2.2.9 मानव बल प्रबंधन एवं आधारभूत संरचना

2.2.9.1 मानवबल की उपलब्धता

मानवबल एवं आधारभूत संरचना की पर्याप्त उपलब्धता योजना के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। चुँकि इस योजना का क्रियान्वयन राज्य में स.बा.वि.से. के मंच का उपयोग कर किया जा रहा था, उपरोक्त पहलू के पर्याप्तता का मूल्याकंन नमूना के तौर पर लिए गए जिलों में निष्पादन लेखापरीक्षा के दौरान किया गया एवं मार्च 2014 को पायी गई स्थिति को **तालिका 2.2.6** में नीचे दर्शाया गया है:

तालिका 2.2.6: परियोजना स्तर पर स्वीकृत बल एवं कार्यरत बल

क्र. सं.	पद का नाम	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति (प्रतिशत)
1	बाल विकास परियोजना पदाधिकारी	94	63	31(33)
2	महिला पर्यवेक्षिका (म.प.)	602	511	91(15)
3	आंगनवाड़ी सेविका (आं.वा.से.)	16542	14093	2449(15)
4	आंगनवाड़ी सहायिका (आं.वा.स.)	15840	13359	2481(16)
5	अन्य	311	199	112(36)

(स्रोतः नमूना जांचित जि.प्रो.पदाधिकारी)

उक्त तालिका से यह स्पष्ट था कि बा.वि.प.पदाधिकारी एवं म. पर्यवेक्षिका के रिक्ति की स्थिति क्रमशः 33 एवं 15 प्रतिशत थी। आगे, इस योजना में जमीनी स्तर के आं.वा.से. तथा आं.वा.स. के पद में क्रमशः 15 एवं 16 प्रतिशत की कमी थी। इसके अतिरिक्त, बा. वि.प.पदाधिकारियों तथा म. पर्यवेक्षिका संवर्ग सबला योजना के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे, क्योंकि किशोरी बालिकाओं को चिन्हित करने की सम्पूर्ण जवाबदेही के साथ ही साथ परियोजना स्तर पर व्यय नियंत्रण तथा क्षेत्र स्तर पर निगरानी और पर्यवेक्षण कार्य, इन दोनों संवर्ग को ही सौंपा गया था। इस प्रकार, योजना के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार मानवबल की अपर्याप्तता थी।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान सचिव, स.क.वि. ने कहा (अक्टूबर 2014) कि रिक्त पदों को भरने की कार्यवाई प्रारम्भ की जा रही थी।

2.2.9.2 आधारभूत संरचना की उपलब्धता

योजना के मार्गदर्शिका के अनुसार, सबला योजना के कार्यान्वयन में स.बा.वि.से. के आधारभूत संरचना का उपयोग किया जाना था एवं आं.वा.केन्द्र योजनान्तर्गत सेवा प्रदान करने का केन्द्र बिन्दु था। आधारभूत संरचना में कार्यशील शौचालय, पेयजल की सुविधा आदि शामिल थी।

आ.वा.केन्द्रों में सुरक्षित पेयजल एवं शौचालये की सुविधा क्रमशः 66 तथा 83 प्रतिशत उपलब्ध नहीं थी।

नमूना जाँचित छः जिलों (14410 कार्यशील आं.वा.केन्द्रों सन्निहित) में 9538 आ.वा.केन्द्रों (66 प्रतिशत) में सुरक्षित पेयजल की सुविधा उपलब्ध नहीं थी तथा 11927 (83 प्रतिशत) में शौचालय सुविधा उपलब्ध नहीं थे। आं.वा.केन्द्रों में बुनियादी आधारभूत संरचना की अनुपस्थिति लक्षित लाभार्थियों को प्रदान किए जाने वाले सेवा के प्रतिकूल था।



बुनियादी आधारभूत संरचना के बिना संचालित आं.वा.केन्द्र (बरारी, कटिहार का केन्द्र संख्या 146)

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान सचिव, स.क.वि. ने कहा (अक्टूबर 2014) कि अधिकांशतः आं.वा.केन्द्र किराये के मकान में संचालित किए जा रहे थे तथा विभागीय आं.वा.केन्द्र निर्माणाधीन थे जिसमें पेयजल तथा शौचालय की सुविधा दिये जा रहे थे।

2.2.10 अनुश्रवण समिति का गठन

योजना के मार्गदर्शिका के अनुसार, पूरे राज्य में सबला के प्रभावी कार्यान्वयन तथा अनुश्रवण सुनिश्चित करने हेतु, मुख्य सचिव की अध्यक्षता में राज्य स्तर पर एक अनुश्रवण समिति का गठन किया जाना था। इसके अलावा, लोक सभा के संसद सदस्य (एमपी) तथा विधान सभा के सदस्य (एमएलए) को भी शामिल किया जाना था। जिला स्तर पर जिला पदाधिकारी (जि.प.) की अध्यक्षता तथा जि.का.पदाधिकारी के सदस्य सचिव के रूप में एक समिति का गठन भी किया जाना था, इन दोनों समिति की बैठक तिमाही अथवा जब कभी जरूरत हो, अध्यक्ष के सूचना पर बुलाई जानी थी। इसके अतिरिक्त, प्रखंड एवं ग्राम स्तर पर समितियाँ क्रमशः जि.का.पदाधिकारी तथा संबंधित ग्राम की महिला ग्राम पंचायत सदस्या की अध्यक्षता में भी गठित किया जाना था तथा इन दोनों समितियों को ग्राम से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए नियमित रूप से मासिक बैठक करनी थी।

जिला, प्रखंड और ग्राम स्तर पर अनुश्रवण समिति नहीं बनाया गया था।

लेखापरीक्षा के क्रम में पाया गया कि राज्य से ग्राम स्तर पर ऐसी कोई बैठक लेखापरीक्षा की तिथि तक (मई 2014) आयोजित नहीं की गई थी। सचिव, स.क.वि. ने कहा (अक्टूबर 2014) के वर्ष 2013-14 में मात्र राज्य स्तरीय समिति का गठन किया गया था।

अनुशंसा: जिला, प्रखंड तथा ग्राम स्तर पर अनुश्रवण समितियों का गठन किया जाना चाहिए एवं निर्धारित किए गए अवधि में योजना के कार्यान्वयन पर अनुश्रवण रखने हेतु बैठक आयोजित होनी चाहिए।

2.2.11 निष्कर्ष

- किशोरी बालिकाओं के चिह्नितकरण हेतु आधारभूत सर्वेक्षण कराए बगैर सबला योजना प्रारम्भ की गई थी। परिणामस्वरूप, अयोग्य बालिकाएँ योजना से लाभान्वित हुई;
- योजना निधि के अल्प उपयोग तथा भा.स. को उपयोगिता प्रमाण पत्र समर्पित नहीं किए जाने/विलम्ब से समर्पित किए जाने के कारण, राज्य को 63 प्रतिशत केन्द्रांश से वंचित रहना पड़ा;
- टी एच आर के अन्तर्गत अनाज क्रय करने हेतु निर्धारित दर अनाज की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में अपर्याप्त था;
- नमूना जाँचित जिलों में योजना के तहत चिन्हित किशोरी बालिकाओं को गैर पोषण सहायता घटक की आवश्यक सेवाएँ नहीं दी गई थी और
- योजना के समुचित कार्यान्वयन के लिए अनुश्रवण समिति का गठन जिला, प्रखंड तथा ग्राम स्तर पर नहीं की गई थी।

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग

2.3 *पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालयों की कार्यप्रणाली*

कार्यकारी सारांश

प्रस्तावना

बिहार सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग (विभाग) के अंतर्गत चार निदेशालय हैं जिसमें से पुरातत्व निदेशालय पुरातात्विक अवशेषों की खोज, संरक्षण एवं विकास के साथ–साथ स्मारक तथा संभावित स्थलों को विकसित करने के लिए जिम्मेवार था जबकि संग्रहालय निदेशालय सरकारी संग्रहालयों के संचालन के लिए जिम्मेवार था।

(कंडिका 2.3.1)

वित्तीय प्रबंधन

निदेशालयों का वित्तीय प्रबंधन अपर्याप्त था क्योंकि निधियाँ अनुपयोगित रह गयी थीं एवं विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष के अन्त में ₹ 16.49 करोड़ प्रत्यार्पित किए गए थे। विभाग द्वारा व्यय नियंत्रण पंजी संधारित नहीं था और आवंटन, व्यय, शेष तथा निधि के विनियोग को अभिलेखित तथा सक्षम पदाधिकारी द्वारा उन्हें सत्यापित नहीं किया जा रहा था। इसके अलावे, विभाग की प्राप्ति/व्यय के आँकड़ों को महालेखाकार (ले॰ एवं ह॰) के द्वारा संधारित आँकड़ों के साथ पूरी तरह समाशोधित नहीं किया गया था।

(कंडिका 2.3.6)

योजना

पुरातत्व निदेशालय के पास उत्खनन हेतु स्थल चयन के लिए न तो कोई निर्धारित नीति या दिशा–निर्देश ही था और न ही समय सीमा के भीतर परियोजनाओं को पूर्ण करने हेतु कोई प्राथमिकता सूची या लम्बी अवधि की परिप्रेक्ष्य योजना थी। निदेशालय ने असंरक्षित स्थलों एवं स्मारकों का सर्वेक्षण नहीं किया था तथा संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों के प्रबंधन हेतु व्यापक नीति नहीं थी। वस्तुओं के अधिग्रहण, संरक्षण, प्रलेखन एवं प्राप्ति हेतु कोई मानक नहीं था।

(कंडिका 2.3.7)

पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालयों के अंतर्गत कमियाँ

पुरातात्विक अवशेषों एवं कलाकृतियों के प्राप्ति/संग्रहण, संरक्षण एवं सुरक्षा हेतु स्थापित बिहार विरासत विकास समिति अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकी। संग्रहालय में पुरावशेषों का संरक्षण और प्रलेखीकरण, अभिलेखन एवं एकत्रित पांडुलिपि/पुस्तकों का प्रकाशन इन्टरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम्स कोड ऑफ एथिक्स में निर्धारित मानकों के अनुसार नहीं किया गया था। राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा पटना संग्रहालय में लाई गई तिब्बती पांडुलिपियाँ अनुवादित/प्रकाशित नहीं की गई। संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों का डेटाबेस या विस्तृत विवरणी नहीं था।

(कंडिका 2.3.8.1, 2.3.9.1 एवं 2.3.9.2)

मानव संसाधन प्रबंधन

पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय मानवशक्ति एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों की भारी कमी का सामना कर रहा था। निदेशालय वर्ष 2009–14 अवधि के दौरान किसी भी कर्मचारी को कोई भी प्रशिक्षण देने में विफल रहा।

(कंडिका 2.3.10)

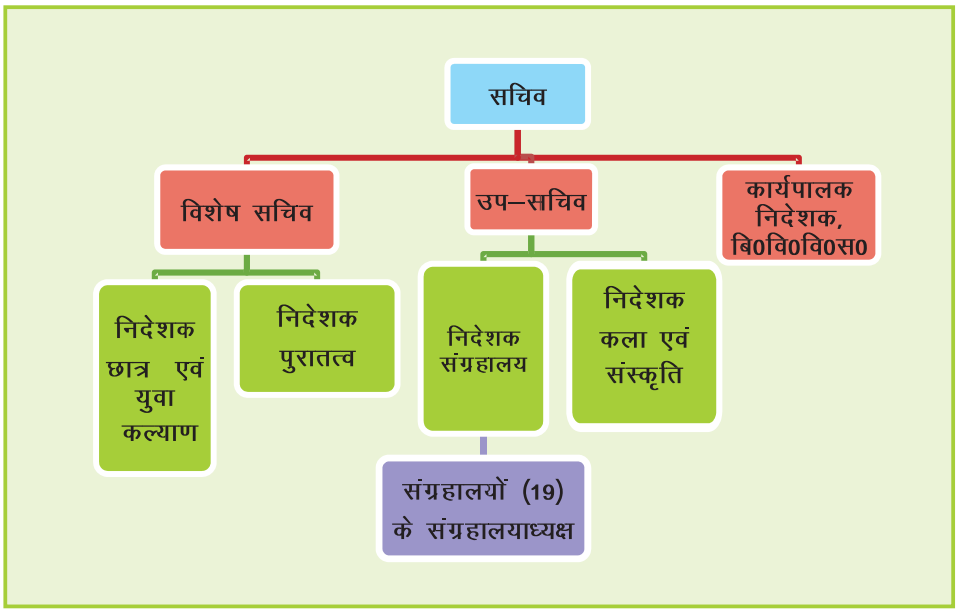
2.3.1 परिचय

बिहार, पूर्वी भारत में संसार के पुराने बसे स्थानों में से एक है, जिसका इतिहास 3000 वर्ष पुराना है। साक्ष्य के रूप में असंख्य प्राचीन स्मारकों, जो पूरे राज्य में बिखरे हैं, से बिहार की समृद्ध संस्कृति और विरासत स्पष्ट होती है। बिहार सरकार का कला, संस्कृति एवं युवा विभाग (विभाग) राज्य के कला, संस्कृति, खेल, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को देखता है जिसके अन्तर्गत चार निदेशालय यथा पुरातत्व निदेशालय, संग्रहालय निदेशालय, कला एवं संस्कृति निदेशालय और छात्र एवं युवा कल्याण निदेशालय हैं। स्मारकों तथा महत्वपूर्ण स्थलों के साथ–साथ पुरातात्विक अवशेषों की खोज, संरक्षण एवं विकास के लिए पुरातत्व निदेशालय जिम्मेवार था जबकि संग्रहालय निदेशालय सरकारी संग्रहालयों के संचालन के लिए जिम्मेवार था । इस संपादन लेखापरीक्षा में स्मारकों और संग्रहालयों के संरक्षण, सुरक्षा, प्रबंधन एवं रखरखाव के संबंध में पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालयों की कार्यप्रणाली का मूल्यांकन किया गया है।

2.3.2 संगठनात्मक संरचना

विभाग एक सचिव द्वारा शीर्षित होता है जो चार निदेशालयों के निदेशकों द्वारा सहायतित होते हैं। पुरातत्व निदेशालय का कोई क्षेत्रीय कार्यालय नहीं है। कार्यपालक निदेशक के नेतृत्व में, बिहार विरासत विकास समिति (बि0वि0वि0स0) की स्थापना, विभाग द्वारा वर्ष 2010 में एक पंजीकृत सोसाईटी के रूप में बिहार के पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक विरासत के अन्वेषण, उत्खनन एवं संरक्षण के लिए किया गया था। संग्रहालय निदेशालय के नियंत्रण में बिहार में 19 सरकारी संग्रहालय है ***(परिशिष्ट–2.3.1)***, जिसके प्रधान संग्रहालयाध्यक्ष होते हैं । विभाग की सांगठनिक रूपरेखा नीचे **चार्ट–2.3.1** मे दी गई है:

चार्ट 2.3.1 कला, संस्कृति एवं युवा विभाग का ढाँचा



(स्रोत : विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

2.3.3 लेखापरीक्षा उद्देश्य

लेखापरीक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित एवं मूल्यांकन करना था कि :–

- निदेशालयों को पर्याप्त निधि उपलब्ध कराई गई थी एवं इसका उपयोग कुशलता से किया गया था;
- विभाग/निदेशालयों द्वारा पुरातात्विक स्थलों और संग्रहालयों के विकास एवं प्रबंधन के लिए एक व्यापक और यथार्थ योजना बनाई गई थी;
- निदेशालयों ने स्मारकों एवं संग्रहालयों के संरक्षण, सुरक्षा, रखरखाव एवं संधारण हेतु प्रभावी ढंग एवं मितव्ययिता से कार्य संपन्न किया था;
- मानव संसाधन प्रबंधन सक्षम था, और
- पुरावशेषों का भंडारण सुदृढ़ सूची नियंत्रण प्रबंधन सिद्धांतों पर आधारित था।

2.3.4 लेखापरीक्षा मानक

पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालयों के कार्यप्रणाली की निष्पादन लेखापरीक्षा निम्नलिखित स्त्रोतों से प्राप्त मापदंडों पर आधारित था;

- बिहार प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल अवशेष तथा कलानिधि अधिनियम, 1976;
- अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद (आईकॉम) की आचार संहिता;
- बिहार बजट नियमावली;
- बिहार कोषागार संहिता 1937 (वर्ष 2011 में संशोधित);
- बिहार वित्तीय नियमावली (संशोधित), 2005, एवं
- विभागीय निर्देश/समय–समय पर जारी किये गये परिपत्र।

2.3.5 लेखापरीक्षा का क्षेत्र एवं कार्यप्रणाली

वर्ष 2009–14 की अवधि के लिए पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालयों के कार्यप्रणाली की निष्पादन लेखापरीक्षा माह अप्रैल से जुलाई 2014 के दौरान किया गया। 12 संग्रहालयों[1] (कुल 19 में से) सहित पुरातत्व निदेशालय, संग्रहालय निदेशालय एवं बिहार विरासत विकास समिति पटना के अभिलेखों की नमूना जांच की गई। 10 संग्रहालयों का चयन संभाव्यता आकार समानुपाती प्रतिस्थापन विधि (स0आ0स0प्र0) से किया गया एवं दो संग्रहालयों (रामचन्द्र शाही संग्रहालय, मुजफफरपुर एवं चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा) का चयन आरंभिक बैठक (अप्रैल 2014) में विभागीय सचिव के सुझाव पर किया गया।

लेखापरीक्षा कार्यप्रणाली में अभिलेखों की जांच, प्रश्नावली जारी करने, प्रासंगिक अभिलेखों की जांच एवं सबूतों के संग्रहण के लिए चयनित क्षेत्रीय इकाइयों का दौरा करना, जारी लेखापरीक्षा आपत्तियों के विभागीय जवाबों का विश्लेषण एवं 18 संरक्षित स्मारकों/उत्खनन स्थलों ***(परिशिष्ट–2.3.2)*** आदि सहित संग्रहालयों की संयुक्त भौतिक निरीक्षण/सत्यापन करना शामिल था। लेखापरीक्षा उद्देश्य, इसकी कार्यप्रणाली, कार्यक्षेत्र, दायरा एवं विभागीय विचारों को प्रकाश में लाने हेतु अप्रैल 2014 में विभागीय सचिव एवं निदेशक, पुरातत्व और संग्रहालय के साथ आरंभिक बैठक का आयोजन किया गया था। लेखापरीक्षा समाप्ति पर नवम्बर 2014 में विभाग के सचिव के साथ एक

[1] *बेगुसराय, भागलपुर, बक्सर, छपरा, दरभंगा (2), गया, जमुई, मुजफ्फरपुर, मधुबनी, नवादा एवं पटना।*

बहिर्गमन सम्मेलन किया गया। विभाग के उत्तर को संतुलित रिपोर्टिंग हेतु उपयुक्त स्थान पर सम्मिलित किया गया।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष

लेखापरीक्षा के दौरान पायी गई कमियों की चर्चा बाद की कंडिकाओं में की गई है:

2.3.6 वित्तीय प्रबंधन

वर्ष 2009–14 की अवधि में बजट प्रावधानों, व्ययों बचतों को निम्न **तालिका संख्या 2.3.1** मे दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या 2.3.1: वर्ष 2009–14 के दौरान बजट प्रावधान, व्यय एवं बचत

(₹ करोड़ में)

वर्ष	बजट प्रावधान	व्यय	कुल बचत	बचत का प्रतिशत
पुरातत्व निदेशालय				
2009–10	1.85	1.15	0.70	38
2010–11	4.92	4.20	0.72	15
2011–12	4.43	3.49	0.94	21
2012–13	5.71	4.24	1.47	26
2013–14	9.74	6.26	3.48	36
कुल	**26.65**	**19.34**	**7.31**	**27**
संग्रहालय निदेशालय				
2009–10	6.90	5.79	1.11	16
2010–11	8.48	5.40	3.08	36
2011–12	12.89	10.20	2.69	21
2012–13	21.89	18.01	3.88	18
2013–14	27.52	22.23	5.29	19
कुल	**77.68**	**61.63**	**16.05**	**21**

(स्रोत – निदेशालय द्वारा उपलब्ध करायी गई जानकारी/विवरणी)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट था कि वर्ष 2009–14 की अवधि में पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालय के बजट प्रावधान के विरूद्ध बचतें क्रमशः 15 से 38 प्रतिशत एवं 16 से 36 प्रतिशत थीं। आगे यह पाया गया कि वर्ष 2009–14 की अवधि में पुरातत्व निदेशालय के योजना शीर्ष ***(परिशिष्ट–2.3.3)*** में बचतें 14 से 48 प्रतिशत के बीच थी, जबकि संग्रहालय निदेशालय में ये चार से 70 प्रतिशत के बीच विस्तारित थी। वित्तीय प्रबंधन में पायी गयी अन्य कमियों की चर्चा नीचे की गई है:

- ***निधियों का प्रत्यर्पण*** : निदेशालयों के अभिलेखों की संवीक्षा में यह पाया गया कि वर्ष 2011–14 की अवधि में निदेशालयों द्वारा ₹ 16.49 करोड की निधियों को वित्तीय वर्ष के अंतिम दिन प्रत्यर्पित किया जबकि वर्ष 2009–11 की अवधि में ₹ 5.61 करोड़ की बचतों का प्रत्यर्पण नहीं किया गया फलतः यह व्यपगत हो गया **(*परिशिष्ट–2.3.4*)**। आगे यह भी पाया गया कि XIII वित्त आयोग के अन्तर्गत नालंदा विरासत योजना[2] हेतु कर्णांकित राशि अनुपयोगित थी एवं अंततः प्रत्यार्पित कर दी गई थी।

- ***व्यय का असमाशोधन*** : संवीक्षा में पता चला कि वर्ष 2009–14 की अवधि में विनियोग लेखा में ₹ 80.15 करोड़ का व्यय दिखाया गया था जबकि विभाग द्वारा दिखाये गये व्यय की राशि ₹ 80.97 करोड़ थी। फलतः ₹ 82.00 लाख की

[2] *नालंदा धरोहर योजना में वर्ष 2012–13 के लिये आधारभूत संरचना के उन्नयन एवं सुविधाएँ (₹ 12.50 करोड़) एवं 29 पुरातात्विक स्थलों का अनुरक्षण, संरक्षण एवं विकास (₹ 12.50 करोड़) सम्मिलित।*

अंतर राशि का लेखापरीक्षा की तिथि (जुलाई 2014) तक समाशोधन नहीं किया गया था।

- ***व्यय नियंत्रण पंजी का असंधारण*** : लेखापरीक्षा संवीक्षा में पता चला कि विभाग द्वारा व्यय नियंत्रण पंजी का संधारण नहीं किया जा रहा था एवं आवंटन, व्यय, शेष और निधियों के विनियोजन की प्रविष्टि नहीं की गयी थी तथा सक्षम प्राधिकारी द्वारा सत्यापित नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान सचिव ने लेखापरीक्षा परिणामों से सहमति जताई तथा आश्वासन दिया कि भविष्य में आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अनुशंसा : बचतों से बचने के लिए बजट प्राक्कलन यथार्थ के आधार पर तैयार किया जाना चाहिए।

2.3.6.1 उपयोगिता प्रमाण–पत्र की अप्राप्ति

निर्माण कार्य/भूमि अधिग्रहण एवं जीर्णोद्धार/संरक्षण कार्य हेतु प्राप्त निधियो के आवंटन के लिए निर्गत स्वीकृति पत्रों में स्पष्ट था कि निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी (नि0 एवं व्य0पदा0) को उपयोगिता प्रमाण–पत्र (उ0प्र0प0) विभाग को प्रस्तुत करना था।

₹ 12.29 करोड़ का उपयोगिता प्रमाण–पत्र कार्यकारी एजेंसियों से प्राप्त नहीं हुआ था

पुरातत्व निदेशालय के अभिलेखों के नमूना जांच के दौरान पाया गया कि निर्माण कार्य/भूमि–अधिग्रहण एवं जीर्णोद्धार/संरक्षण कार्य हेतु वर्ष 2009–14 की अवधि में ₹ 13.91 करोड़ कार्यकारी ऐजेंसियों यथा भवन निर्माण निगम, संबंधित जिला के जिलाधिकारी, बिहार विरासत विकास समिति और भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण, पटना अंचल को विमुक्त किया गया था। हाँलांकि, ₹ 12.29 करोड़ की उपयोगिता प्रमाण–पत्र जो कुल विमुक्त राशि का 88 प्रतिशत था, लेखापरीक्षा की तिथि (जून 2014) तक विभाग को प्राप्त नहीं हुआ था। वांछित उपयोगिता प्रमाण–पत्र की वर्षवार विवरणी नीचे **तालिका संख्या 2.3.2** में दिया जा रहा है:

तालिका संख्या 2.3.2: वर्ष 2009–14 की अवधि में अप्राप्त उपयोगिता प्रमाण–पत्र की विवरणी।

(₹ करोड़ में)

वर्ष	राशि, जिसका उपयोगिता प्रमाण–पत्र आवश्यक था	अप्राप्त उपयोगिता प्रमाण–पत्र
2009–10	4.45	3.26
2010–11	1.65	1.24
2011–12	1.32	1.30
2012–13	1.96	1096
2013–14	4.53	4.53
कुल	**13.91**	**12.29**

(स्त्रोत : निदेशालय द्वारा उपलब्ध करायी गई सूचना/विवरणी)

आगे निदेशालय द्वारा न तो उपयोगिता प्रमाण–पत्र प्राप्ति हेतु कोई कार्रवाई की गई और न ही कार्य की भौतिक प्रगति का आँकलन किया गया।

उत्तर में विभाग ने आश्वस्त किया (सितम्बर 2014) कि भविष्य में उपयोगिता प्रमाण–पत्रों एवं कार्यकारी एजेंसियों से कार्य के प्रगति प्रतिवेदन प्राप्ति हेतु आवश्यक कदम उठाए जाएँगे। बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) में सचिव ने कहा कि अद्यतन उत्तर एवं उपयोगिता प्रमाण–पत्रों की सूची उपलब्ध करा दी जाएगी।

अनुशंसा: विभाग को सुनिश्चित करना चाहिए कि दिये गये निधि का उ0प्र0प0/निकासी एवं व्ययन पदाकारियों से समय पर प्राप्त हो।

2.3.7 योजना

निदेशालयों ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु लंबी अवधि/परिप्रेक्ष्य योजनाएँ नहीं बनाई थी

पुरातत्व निदेशालय का मुख्य उद्देश्य अतीत का रहस्य जानने के लिए महत्वपूर्ण स्थलों का उत्खनन करना एवं स्मारकों और मुख्य स्थलों सहित पुरातात्विक अवशेषों की खोज, संरक्षण एवं विकास का कार्य था। संग्रहालय निदेशालय संग्रहालयों के विकास एवं रखरखाव हेतु जिम्मेवार था। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों की पहचान करने एवं वार्षिक के साथ–साथ परिप्रेक्ष्य योजना बनाने की आवश्यकता थी ताकि उन स्थलों का उत्खनन, सुरक्षा, संरक्षण एवं विकास किया जा सके तथा संग्रहालयों के रखरखाव हेतु दिशा निर्देश जारी किया जाना था।

जांच के दौरान पाया गया कि वर्ष 2009–14 के दौरान केवल वार्षिक योजनाएँ निदेशालय द्वारा प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर बनायी गयी थी जबकि परिप्रेक्ष्य योजनाएँ नहीं बनाई गई थी। पुरातत्व निदेशालय के पास उत्खनन हेतु स्थल चयन के लिए न तो कोई निर्धारित नीति या दिशा निर्देश ही था और न ही समय सीमा के भीतर परियोजनाओं को पूर्ण करने हेतु कोई प्राथमिकता सूची या परिप्रेक्ष्य योजना थी। इसके अलावे, संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों के प्रबंधन हेतु व्यापक नीति/दिशा–निर्देश नहीं था। वस्तुओं के अधिग्रहण, संरक्षण, प्रलेखन एवं प्राप्ति हेतु कोई मानक नहीं था। आईकॉम द्वारा जारी किये गये अन्तर्राष्ट्रीय सर्वोतम मानक निदेशालय द्वारा नहीं अपनाये गये थे। किसी भी मानकों के अभाव में निदेशालयों द्वारा लिये गये निर्णयों में प्रायः निष्पक्षता, एकरूपता एवं पारदर्शिता का अभाव था।

वार्षिक योजनाओं में पाई गई कमियां निम्नानुसार हैं:

2.3.7.1 असंरक्षित स्मारकों एवं स्थलों का सर्वेक्षण नहीं किया जाना

पुरातत्व निदेशालय की वार्षिक योजना वर्ष 2009–10 में किलों, स्मारकों, इमारतों एवं स्थलों का वर्णन था जो राज्य में अपनी कला एवं पुरातात्विक शैली में अद्वितीय थे एवं ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थे। योजना में ऐसे स्मारकों/स्थलों की पहचान/सर्वेक्षण हेतु ₹10 लाख कर्णांकित करने का भी प्रस्ताव था।

पुरातत्व निदेशालय ने असंरक्षित स्मारकों एवं स्थलों के पहचान हेतु कोई सर्वेक्षण नहीं किया था

अभिलेखों की जांच में पाया गया कि वर्ष 2009–14 के दौरान निदेशालय द्वारा बिहार में असंरक्षित स्मारकों एवं स्थलों की पहचान हेतु कोई सर्वेक्षण नहीं किया गया था। फलस्वरूप निदेशालय के पास असंरक्षित स्मारकों की कोई सूची नहीं थी और परिणामस्वरूप उसकी सुरक्षा हेतु वार्षिक योजनाओं में कोई योजना नहीं बनाई जा सकी थी। आगे पाया गया कि काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान[3], पटना द्वारा वर्णित 305 पुरातात्विक स्थलों में से केवल 36 स्थलों को निदेशालय ने सुरक्षित घोषित किया था।

जबाब में, पुरातात्विक निदेशालय द्वारा यह स्वीकार किया गया (सितम्बर 2014) कि वर्ष 2009–14 की अवधि के दौरान बिहार में पुरातात्विक स्थलों एवं स्मारकों के आँकडों को एकत्रित करने हेतु कोई भी विशिष्ट सर्वेक्षण नहीं किया गया था। फिर भी बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) में सचिव द्वारा तथ्यों को स्वीकारते हुए यह कहा गया कि पुरातात्विक स्थलों को सुरक्षित स्थलों के रूप में घोषणा एक सतत् प्रक्रिया है तथा विभिन्न स्थलों के प्रतिवेदनों के आँकलन के बाद कार्रवाई की जाएगी।

---

[3] *पटना में काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान की स्थापना बिहार सरकार द्वारा वर्ष 1950 में ऐतिहासिक खोज, पुरातात्विक उत्खनन एवं अन्वेषण के विकास और विद्वानों के स्थायी महत्व के कार्यों के प्रकाशन के उद्देश्य से की गई थी।*

अनुशंसा : असंरक्षित स्मारकों एवं स्थलों की पहचान के लिए सर्वेक्षण किया जाना चाहिए एवं उनके संरक्षण हेतु योजनाएँ बनाई जानी चाहिए।

2.3.7.2 उत्खनन प्रस्तावों का अनुमोदन नहीं होना

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए0एस0आई0) के निर्देशों (मई 2010) के अनुसार वैसे क्षेत्रों में उत्खनन के प्रस्ताव, जो केन्द्र सरकार द्वारा संरक्षित नहीं हैं, संबंधित राज्य सरकार के माध्यम से प्रस्तुत किये जायेंगे जो अपनी ओर से यह प्रमाणित करेगी कि वे असंरक्षित क्षेत्र में स्वयं पुरातत्वीय उत्खनन कराना चाहती है अथवा आवेदक को पुरातत्वीय उत्खनन करने के लिए प्राधिकृत करती है। प्रस्ताव अनुसंधान–उन्मुख होना चाहिए तथा जिसका उद्देश्य भारतीय पुरातत्व एवं इतिहास के विच्छेदित सम्बंधों तथा अंतरालों को पाटना हो।

बिना कोई सर्वेक्षण या प्रारंभिक प्रतिवेदन के ही उत्खनन् हेतु अपूर्ण प्रस्ताव ए0एस0आई0 को भेजे गये थे

निदेशालय के अभिलेखों की जांच में पाया गया कि उत्खनन् के अधूरे प्रस्ताव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को बिना किसी प्रारंभिक रिपोर्ट या सर्वेक्षण के भेजे गये थे फलसवरूप प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया गया था ***(परिशिष्ट 2.3.5)***।

जवाब में विभाग ने स्वीकार किया (सितम्बर 2014) कि पुरातत्व निदेशालय के पास उत्खनन् के लिए राज्य में स्थल चयन हेतु कोई विशिष्ट नीति/मार्गदर्शिका नहीं थी।

2.3.8 पुरातात्विक स्थलों का उत्खनन एवं समारकों का रखरखाव

पुरातत्व निदेशालय, बिहार ने प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल अवशेष तथा कला निधि अधिनियम, 1976 के तहत 36 प्राचीन स्मारकों को सुरक्षित घोषित किया था ***(परिशिष्ट 2.3.6)***। बि0वि0वि0स0 के अभिलेखों के जांच के दौरान पाई गई कमियाँ निम्नांकित कंडिकाओं में वर्णित हैः

2.3.8.1 बिहार विरासत विकास समिति

बि0वि0वि0स0 की स्थापना पुरातात्विक अवशेषों की प्राप्ति/संग्रहण, संरक्षण और पुरातात्विक स्थानों से प्राप्त कलाकृतियों/कला वस्तुओं तथा उनका संग्रहालयों में प्रदर्शन तथा संबंधित शोध कार्यो के प्रोत्साहन हेतु, विशिष्ट परियोजनाओं के निर्माण, संरक्षण, सुरक्षा, जिर्णोद्धार एवं पुरातात्विक स्मारकों के विकास, विरासत भवनों एवं बिहार के ऐतिहासिक इमारतों तथा पुरातात्विक महत्व के स्थानों को विरासत संसाधन के रूप में विकसित करने के लिए की गई थी।

इस संस्था के अभिलेखों की जाँच में पाया गया कि बि0वि0वि0स0 द्वारा इन उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में कोई भी कार्रवाई अभी तक नहीं की गई थी। लेखापरीक्षा के दौरान पाई गई कमियाँ निम्नांकित है :

- उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु विभाग ने बि0वि0वि0स0 को ₹ 1.50 करोड़[4] उपलब्ध कराया था जबकि संस्था द्वारा मात्र ₹ 0.85 करोड़ ही व्यय किया जा सका एवं शेष ₹ 0.65 करोड़ *(43 प्रतिशत)* की निधियाँ वापस कर दी गयी थी।

बि0वि0वि0स0 अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अभी तक प्रर्याप्त कदम नहीं उठाया था।

- संस्था को मजबूत बनाने के लिए पांच अनुभागों यथा रासायनिक संरक्षण प्रयोगशाला, संरचनात्मक संरक्षण अनुभाग, अनवेषण एवं उत्खनन अनुभाग, पुरातत्व अनुभाग और प्रकाशन एवं प्रलेखन अनुभाग की स्थापना (जुलाई 2010) की जानी थी परन्तु उन अनुभागों की स्थापना लेखापरीक्षा की तिथि (मई 2014) तक नहीं की गयी थी ;

[4] *₹ एक करोड दिसम्बर 2010 में एवं ₹ 0.50 करोड फरवरी 2013 में।*

- कार्यकारी समिति की बैठक (सितम्बर 2011) में यह निर्णय लिया गया था कि सेवानिवृत पुरातत्वविदों और इतिहासकारों की सेवाएँ बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक पुरातात्विक अनवेषणों के लिए ली जाएँगी एवं एक विरासत कैलेंडर और डायरी प्रकाशित की जाएगी। यद्यपि यह पाया गया कि उपरोक्त में से किसी भी निर्णयों पर लेखापरीक्षा की तिथि (मई 2014) तक अमल नहीं किया गया था।

इसे इंगित करने पर, कार्यकारी निदेशक, बि0वि0वि0स0 ने कहा (जून 2014) कि संस्था के सुचारू संचालन हेतु तकनीकी कर्मचारियों की नियुक्ति का कार्य प्रगति पर था। सचिव ने तथ्यों को स्वीकारते हुए वहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) में भविष्य में कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

अनुशंसा: अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बि0वि0वि0स0 को विशिष्ट अनुभागों की स्थापना हेतु पहल करनी चाहिए एवं योग्य व्यक्तियों को वैज्ञानिक पुरातात्विक अन्वेषण कार्यों पर लगाया जाना चाहिए।

2.3.9 संग्रहालय निदेशालय के अधीन पुरावशेषों का संरक्षण, प्रलेखन एवं अभिलेखन

संग्रहालय निदेशालय 19 सरकारी संग्रहालयों के संचालन हेतु जिम्मेवार है। निदेशालय के लेखापरीक्षा के दौरान, 19 संग्रहालयों में से 12 संग्रहालयों के अभिलेखों की नमूना जांच की गई। लेखापरीक्षा के दौरान पाई गई कमियों की चर्चा आगे की कंडिकाओं में की गई है।

2.3.9.1 एकत्रित पांडुलिपि/पुस्तकों का संरक्षण, अभिलेखन एवं प्रकाशन

आईकॉम कोड ऑफ इथिक्स के अनुसार प्राकृतिक आापदाओं, मानव निर्मित अथवा सशस्त्र संघर्ष के दौरान संग्रहों की सुरक्षा हेतु नीतियों के विकास के लिए सावधानीपूर्वक ध्यान दिया जाना चाहिए तथा संग्रहालय नीति एवं संग्रहों के रखरखाव हेतु निवारक संरक्षण एक महत्वपूर्ण तत्व है। संग्रहालय के सदस्यों की यह एक आवश्यक जिम्मेवारी है कि वे एक सुरक्षात्मक वातावरण तैयार कर भंडार में, प्रदर्शन पर या पारगमन में रखे संग्रहों का उचित रखरखाव करें।

राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा समर्पित तिब्बती पांडुलिपियों को न तो ठीक ढंग से संरक्षित ही किया गया था न ही प्रकाशित

पटना संग्रहालय के अभिलेखों की जांच में पाया गया कि राहुल सांस्कृत्यायन द्वारा वर्ष 1929 में छः हजार तिब्बती पांडुलिपियाँ पटना संग्रहालय को दी गयी थी। चूँकि ये पुस्तकें बहुत पुरानी थी, संग्रहालय द्वारा इन्हें अत्यन्त सावधानी से संरक्षित किये जाने की आवश्यकता थी, लेकिन यह पाया गया कि इनमें 20 फटे हुए थे और इस दिशा में संरक्षण हेतु कोई कार्रवाई नहीं की गई थी जबकि इस हेतु निधि (₹ 10लाख) मार्च 2008 से उपलब्ध थी। निधियों को बैंक के सावधिक खाता में जमा रखा गया था। आगे पाया गया कि पांडुलिपियों का अनुवाद/प्रकाशन लेखापरीक्षा की तिथि तक (मई 2014) नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान सचिव ने उपरोक्त तथ्यों को स्वीकारते हुए भविष्य में उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। उन्होंने यह भी कहा कि कार्य हेतु निविदा जारी की गयी थी तथा कार्य शुरू कर दिया जायेगा।

अनुशंसा: विभाग को पुराने पांडुलिपियों के संरक्षण एवं अनुवाद/प्रकाशन हेतु पहल करनी चाहिए।

2.3.9.2 संग्रहालयों में प्रलेखीकरण की कमी

संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों का डाटाबेस या विस्तृत विवरणी नहीं थी और केवल 34 प्रतिशत ही पुरावशेष प्रलेखित थे

आईकॉम कोड ऑफ इथिक्स के अनुसार, संग्रहालय के संग्रहों को अपनाये गए व्यवसायिक मानकों के अनुसार प्रलेखित किया जाना चाहिए जिसमें पुरी पहचान तथा प्रत्येक वस्तुओं का विवरण, इनका जुड़ाव, प्राप्तिस्थल, अवस्था, उपचार तथा वर्तमान स्थान के बारे में जानकारी रहनी चाहिए। आंकड़ों को सुरक्षित वातावरण में रखा जाना चाहिए जो पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा समर्थित हो।

अभिलेखों की संवीक्षा के दौरान पाया गया कि संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों का डेटाबेस या विस्तृत विवरणी नहीं थी। वर्ष 2010–14 के दौरान नमूना जांचित संग्रहालयों में प्रलेखन की स्थिति **तालिका संख्या 2.3.3** में नीचे दी गई है–

तालिका संख्या 2.3.3: नमूना–जांचित संग्रहालयों में प्रलेखन की स्थिति

क्रम संख्या	संग्रहालय का नाम	पुरावशेषों की कुल संख्या	किये गये प्रलेखनों की संख्या (प्रतिशतता)	शेष
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	पटना संग्रहालय पटना	54533	22432(41)	**32101**
2	सिताराम उपाध्याय संग्रहालय, बक्सर	1563	1205(77)	**358**
3	रामचन्द्र शाही संग्रहालय, मुजफ्फरपुर	14617	0(0)	**14617**
4	छपरा संग्रहालय, छपरा	114	0(0)	**114**
5	एम0एल0सिंह संग्रहालय, दरभंगाा	607	0(0)	**607**
6	चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा	2454	0(0)	**2454**
7	मिथिला ललित संग्रहालय, सौराठ, मधुबनी	154	0(0)	**154**
8	बेगुसराय संग्रहालय, बेगुसराय	4064	4064(100)	**0**
9	भागलपुर संग्रहालय, भागलपुर	740	0(0)	**740**
10	चन्द्रशेखर सिंह संग्रहालय, जमुई	247	0(0)	**247**
11	नारदः संग्रहालय, नवादा	2032	0(0)	**2032**
12	गया संग्रहालय, गया	2067	384(19)	**1683**
कुल		**83192**	**28085(34)**	**55107**

(स्रोत : संबंधित संग्रहालयों द्वारा उपलब्ध करायी गई जानकारी)

उपरोक्त तथ्य, बेगुसराय और बक्सर छोड़कर, अन्य संग्रहालयों में पुरावशेषों के बहुत ही कम प्रलेखीकरण को दर्शाते थे।

बहिर्गमन बैठक (नवम्बर 2014) में सचिव ने बताया कि सभी संग्रहालयों में प्रलेखन कार्य किया जा रहा है और इसे इस वर्ष पूर्ण कर लिया जायेगा।

अनुशंसा: विभाग को पुरातत्वों का प्रलेखीकरण जल्द ही पूर्ण करना चाहिए एवं पुरातत्वों के केन्द्रीकृत तथा अभिलेखित आंकड़ों का डाटा बेस विकासित करना चाहिए।

2.3.9.3 संग्रहालयों के भूमि–अभिलेखों की अनुपलब्धता

चयनित संग्रहालयों के अभिलेखों के नमूना जांच के दौरान यह पाया गया कि चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा और नारदः संग्रहालय, नवादा को छोडकर किसी भी संग्रहालय में भूमि का कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं था। आगे, यह पाया गया कि पटना संग्रहालय, पटना के उत्तर में स्थित संग्रहालय के जमीन का एक भाग अनाधिकृत तत्वों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया था। यह भी पाया गया कि पटना संग्रहालय की भूमि पर ही जिला मत्स्य पदाधिकारी, पटना का कार्यालय अवस्थित था। इसे इंगित करने पर, अवर निदेशक, पटना संग्रहालय ने लेखापरीक्षा आपत्ति को स्वीकार किया (मई 2014) और कहा कि इस मामले पर जिला प्रशासन से आवश्यक कार्रवाई करने के लिए अनुरोध किया जाएगा। बहिर्गमन बैठक (नवम्बर 2014) में सचिव ने भी आश्वासन दिया कि आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अनुशंसा: संग्रहालयों को सुनिश्चित करना चाहिए कि भूमि एवं उसके अभिलेख सुरक्षित एवं अच्छे ढंग से संधारित हों।

2.3.10 मानव संसाधन प्रबंधन

विभाग का कुशल संचालन अपेक्षित मानवशक्ति की उपलब्धता और उपलब्ध मानवशक्ति के उचित प्रबंधन पर निर्भर करता है।

दोनों निदेशालय कर्मियों के अत्यधिक ही कमी का सामना कर रहे थे

जांच के दौरान पाया गया कि पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय, प्रशिक्षित मानवशक्ति की अत्यधिक कमी का सामना कर रहे थे। निदेशालयों द्वारा वर्ष 2009–14 के दौरान किसी भी कर्मचारी को कोई प्रशिक्षण भी नहीं दिया गया था। यह पाया गया कि पुरात्तव निदेशालय में निदेशक, संरक्षण अधिकारी, सहायक निदेशक(संरक्षण) और रसायन सहायक के पद खाली थे। आगे, संग्रहालय निदेशालय निदेशक, सहायक निदेशक एवं क्षेत्रीय उप–निदेशक के पद भी रिक्त थे एवं 19 कार्यरत् संग्रहालयाध्यक्ष के विरूद्ध मात्र सात संग्रहालयाध्यक्ष पदस्थापित थे। एक संग्रहालयाध्यक्ष एक से ज्यादा संग्रहालयों के प्रभार में थे, जो संग्रहालयों में पुरावशेषों के प्रदर्शन और प्रबंधन को अत्यधिक प्रभावित कर रहा था। यह भी पाया गया कि पिछले पांच वर्षों के दौरान एक भी दर्शक द्वारा संग्रहालयों में भ्रमण नहीं किये जाने के बावजूद भी छपरा संग्रहालय, छपरा और मिथिला ललित संग्रहालय, सौराठ, मधुबनी में पूर्णकालिक संग्रहालयाध्यक्ष तैनात थे। विभिन्न पदों का स्वीकृत पद एवं कार्यरत बल की विवरणी ***परिशिष्ट–2.3.7*** में दी गयी है।

विभाग ने लेखापरीक्षा अवलोकन को स्वीकार किया (सितम्बर 2014) और कहा कि मानवशक्ति की कमी को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएँगें।

अनुशंसा: विभाग को निदेशालयों में मानवशक्ति कमी को दूर करने हेतु तत्काल कदम उठाना चाहिए।

2.3.11 भंडार/सामग्री प्रबंधन

2.3.11.1 परिग्रहण पंजी का निम्न/संधारण नहीं होना

"प्रैक्टिकल हैंडबुक ऑन इन्वेन्ट्रीज एन्ड डॉक्यूमेंटेशन ऑफ आईकॉम, रनिंग ए म्यूजियम" के अनुसार संग्रहालयों को सभी अधिग्रहितों की एक सूची के साथ एक परिग्रहण पंजी संधारित करना चाहिए। इसमें परिग्रहण संख्या, तिथि, स्रोत, विधि एवं समूह का संक्षिप्त विवरण, समूह बनाने के लिए वस्तुओं की संख्या और संग्रहालयाध्यक्ष के अद्याक्षर या नाम के लिए कॉलम होना चाहिए।

लेखापरीक्षा के दौरान नमूना जांचित संग्रहालयों में पाया गया कि पटना संग्रहालय, पटना जहां पंजी का संधारण ठीक ढंग से नहीं हुआ था को छोड़कर कहीं भी परिग्रहण

पटना संग्रहालय के अलावे किसी भी संग्रहालयों में प्रलेखन पंजी का संधारण नहीं हो रहा था एवं पटना संग्रहालय के पंजी का संधारण भी निम्न स्मरीय था

पंजी का संधारण नहीं किया गया था । पटना संग्रहालय के कुल 41 परिग्रहण पंजियों में से पाँच का नमूना जांच किया गया तथा पाया गया कि 9570 पुरावशेषों की प्रविष्टि उक्त पंजियों में की गई थी। इसमें से 2031 पुरावशेष में परिग्रहण की तिथि, 773 पुरावशेष में प्राप्ति का स्थान, 1213 पुरावशेष में दाता की तिथि, 2496 पुरावशेष में प्राप्ति की तिथि और 7597 पुरावशेष में कहाँ रखा गया है, की प्रविष्टि नहीं की गई थी।

आगे पाया गया कि यद्यपि, बक्सर, मुजफफरपुर, भागलपुर, जमुई, नवादा और गया संग्रहालयों में प्राप्ति/पुरावशेष पंजी को संधारित किया गया था, जिसमें भी अनेक महत्वपूर्ण जानकारी नहीं दी गई थी ***(परिशिष्ट–2.3.8)***।

संग्रहालयों द्वारा इन पंजियों को संधारित नहीं करने के कारण गायब/चोरी/स्थान परिवर्तित पुरावशेषों की पहचान में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) में सचिव ने आश्वस्त किया कि जल्द से जल्द सभी संग्रहालयों में परिग्रहण पंजी तैयार कर ली जाएगी और पुरावशेषों के चल रहे प्रलेखीकरण में छूटी हुई जानाकारियों की प्रविष्टि कर ली जाएगी।

2.3.11.2 पुरावशेषों का भौतिक सत्यापन

पुरावशेषों का अस्तित्व सुनिश्चित करने हेतु एवं उनकी स्थितियों का आँकलन करने के लिए भी पुरावशेषों का सावधिक भौतिक सत्यापन आवश्यक था। यह पाया गया कि वर्ष 2009–14 के दौरान नमूना जांचित संग्रहालयों में भौतिक सत्यापन नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) में सचिव ने भी इन तथ्यों को स्वीकार किया और आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

अनुशंसा: उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने हेतु संग्रहालयों को पुरावशेषों की प्राप्ति के साथ साथ उनके प्राप्ति–स्थलों एवं रखने के स्थान का समुचित अभिलेख संधारित करना चाहिए।

2.3.12 निष्कर्ष

- दोनों निदेशालयों का वित्तीय प्रबंधन अपर्याप्त था क्योंकि निधियाँ अनुपयोगित रह गयी थी और वित्तीय वर्ष के अंत में उन्हे प्रत्यर्पित कर दिया गया;
- निदेशालयों का योजना पक्ष काफी हद तक उपेक्षित था क्योंकि पुरातत्व निदेशालय के पास उत्खनन के लिये स्थल चयन हेतु कोई निर्धारित नीति या दिशा निर्देश नहीं था एवं संग्रहालय निदेशालय के पास पुरावशेषों के प्रबंधन हेतु कोई परिप्रेक्ष्य योजना नहीं थी;
- बि0वि0वि0स0 की स्थापना पुरातात्विक अवशेषों एवं कलाकृतियों के अधिग्रहण/प्राप्ति, संरक्षण तथा अनुरक्षण के लिए किया गया था जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सका;
- संग्रहालय में पुरावशेषों का संरक्षण और प्रलेखीकरण, अभिलेखन एवं एकत्रित पांडुलिपि/पुस्तकों का प्रकाशन इन्टरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम्स कोड ऑफ एथिक्स में निर्धारित मानकों के अनुसार नहीं किया गया था;
- दोनों निदेशालय मानव–बल की अत्यधिक कमी का सामना कर रहे थे।

लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग

2.4 बिहार में संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान का कार्यान्वयन

कार्यकारी सारांश

परिचय

भारत सरकार (भा.स.) द्वारा उचित स्वच्छता सुविधाओं के माध्यम से ग्रामीण लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से एवं महिलाओं को गोपनीयता और गरिमा प्रदान करने के लिए 1986 में केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम (के.ग्रा.स्व.कार्य.) शुरू किया गया। सरकार द्वारा 1999 में के.ग्रा.स्व.कार्य. का नामकरण संपूर्ण स्वच्छता अभियान (सं.स्व.अभि.) के रूप में किया गया और बाद में सं.स्व.अभि. का 1 अप्रैल 2012 से निर्मल भारत अभियान (नि.भा.अभि.) के रूप में पुनः नामित किया गया।

(कंडिका 2.4.1)

कार्यान्वयन प्रणाली

बिहार राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन (बि.रा.ज.एवं.स्व.मिशन) राज्य में जल एवं स्वच्छता सहायता संगठन (ज.एवं स्व.सहा.संगठन) स्थापित नहीं कर सका। नमूना जाँचित जिलों में जिला जल एवं स्वच्छता मिशन, प्रखंड संसाधन केंद्रों और ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों का गठन नहीं किया गया था। राज्य और जिला स्तर पर स्वीकृत पदों के विरुद्ध क्रमशः 55 प्रतिशत और 81 प्रतिशत पद रिक्त थे।

(कंडिका 2.4.6)

प्रारंभिक और बेसलाइन सर्वेक्षण

बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा वर्ष 2010-14 के दौरान प्रारंभिक सर्वेक्षण नहीं किया गया था और बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा केवल वर्ष 2013-14 में बेसलाइन सर्वेक्षण किया गया यद्यपि सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. द्वारा वर्ष 2010, 2011 और 2012 में वित्त पोषण मानदंडों में परिवर्तन किया गया था। नमूना जाँचित जिलों में वर्ष 2000-06 के दौरान परियोजना के अनुमोदन के बाद से परियोजना क्रियान्वयन योजना संशोधित नहीं किया गया था। नमूना जाँचित जिलों में वार्षिक कार्यान्वयन योजना जमीनी स्तर अर्थात् प्रखंड और ग्राम पंचायत की योजनाओं को समेकित किये बिना तैयार की गयी थी।

(कंडिका 2.4.6.2 से 2.4.6.4)

निधि की विमुक्ति और उपयोग

बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा वर्ष 2010-14 के दौरान उपलब्ध निधियों का केवल 73 प्रतिशत उपयोग किया जा सका था। व्यय का प्रतिशत 32 से 66 प्रतिशत के बीच में रहा। हाँलांकि वर्ष 2011-12 से वर्ष 2013-14 के दौरान 66 प्रतिशत से घटकर 32 प्रतिशत हो गया। बि.रा.ज.एवं.स्व.मिशन द्वारा उपलब्ध निधियों का उपयोग नहीं करने के कारण वर्ष 2013-14 के दौरान भा.स. से प्राप्त होने वाली निधि ₹ 585.14 करोड़ से वंचित रहना पड़ा। शौचालयों के निर्माण के लिए ₹ 6.63 करोड़ का अग्रिम सात साल से अधिक व्यतीत होने के बाद भी बकाया था।

(कंडिका 2.4.7)

लक्ष्य और उपलब्धि

राज्य में, 79 प्रतिशत परिवार शौचालय सुविधा से वंचित थे। राज्य में वैयक्तिक पारिवारिक शौचालय के निर्माण के लिए उपलब्धि का प्रतिशत वर्ष 2010-14 के दौरान 14 और 71 प्रतिशत के बीच रही। हाँलांकि, यह वर्ष 2011-12 में 71 प्रतिशत से घटकर 2013-14 के दौरान 14 प्रतिशत हो गयी।

(कंडिका 2.4.8.1 एवं 2.4.8.2)

सूचना शिक्षा और संचार

नमूना जाँचित जिलों के जि.ज.स्व.समिति में बिना जमीनी आधार वाले ग्राम स्तरीय प्रेरकों (स्वच्छता दूतों, आशा इत्यादि) को शामिल किए सूचना शिक्षा और संचार (सू.शि. और सं.) को क्रियान्वित किया गया एवं सबसे महत्वपूर्ण सू.शि. और सं. उपकरण जैसे कि परस्पर चर्चा और घर–घर जाकर संपर्क का आयोजन नहीं किया गया था।

(कंडिका 2.4.10)

2.4.1 परिचय

भारत सरकार (भा.स.) द्वारा समुचित स्वच्छता सुविधाओं के माध्यम से ग्रामीण लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने एवं महिलाओं को गोपनीयता और गरिमा प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 1986 में केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम (के.ग्रा.स्व.कार्य.) प्रारंभ किया गया। सरकार ने वर्ष 1999 में के.ग्रा.स्व.कार्य. को संशोधित किया और संपूर्ण स्वच्छता अभियान (सं.स्व.अभि.) के रूप में पुनः नामकरण किया। बाद में 1 अप्रैल 2012 से सं.स्व.अभि. को निर्मल भारत अभियान (नि.भा.अभि.) के रूप में पुनः नामकरण किया गया।

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में, सर्व शिक्षा अभियान (स.शि.अभि.) के अंतर्गत अनाच्छादित ग्रामीण क्षेत्रों के सभी विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों (आं.के.) में स्वच्छता आच्छादन में तेजी लाना है। निर्मल भारत का उद्देश्य वर्ष 2022 तक सभी ग्राम पंचायतों (ग्रा.पं.) को उस वर्ष तक निर्मल भारत की परिकल्पना को प्राप्त कराना है।

बिहार में सं.स्व.अभि. का कार्यान्वयन 1999 में आरंभ किया गया। राज्य में सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के तहत गरीबी रेखा से ऊपर (ए.पी.एल.) एवं गरीबी रेखा से नीचे (बी.पी.एल) के लिए, वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों (वै.पा.शौ.), स्कूल शौचालयों और आंगनबाड़ी शौचालयों का आच्छादन मार्च 2010 तक क्रमशः अनुमोदित परियोजना उद्देश्य के विरूद्ध 11, 27, 41 और छः प्रतिशत थे।

2.4.2 संगठनात्मक ढाँचा

बिहार में संपूर्ण स्वच्छता अभियान के क्रियान्वयन के लिए बिहार सरकार (बि.स.) के अधीन लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, (लो.स्वा.अभि.वि.) बिहार सरकार के अंतर्गत बिहार राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन (बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन), संस्था पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत् 2004 से पंजीकृत संस्था है। बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन भारत सरकार (भा.स.) या बि.स. द्वारा समय-समय पर जारी किए गए निर्देशों को लागू करेगी और उनके द्वारा वांछित रिपोर्टों/रिटर्नों और अन्य सूचना को प्रस्तुत करगी जो कि उनको आवश्यक हो। बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन में एक शीर्ष समिति और कार्यकारी समिति होती हैं।

शीर्ष समिति, विकास आयुक्त की अध्यक्षता में नीति मार्ग दर्शन प्रदान करने और लाइन विभागों[1] के साथ समन्वय के लिए जिम्मेवार है। कार्यकारी समिति, प्रमुख सचिव, लो. स्वा.अभि.वि की अध्यक्षता में इस योजना के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेवार है। अभियंता प्रमुख, लो.स्वा.अभि.वि, बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन के सदस्य सचिव होते हैं। बि.रा.ज.एव.स्व. मिशन को परियोजना प्रबंधन इकाई (प.प्र.इ.) और संचार और क्षमता संवर्धन इकाई (सं. और क्ष.सं.इ.) सहायतित एवं परामर्शकों द्वारा समर्थित होती है। राज्य स्तर से ग्राम स्तर तक की संगठनात्मक संरचना ***परिशिष्ट–2.4.1*** में दी गई है।

2.4.3 लेखापरीक्षा का उद्देश्य

लेखापरीक्षा का उद्देश्य यह आकलन और मूल्यांकन करना था कि क्या:

- विभिन्न स्तरों पर योजना के कार्यान्वयन की योजना पर्याप्त और प्रभावी थी और यह योजना के उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में उन्मुख थी;
- केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा निधियों की विमुक्ति, लेखाकरण एवं उपयोग इस योजना के तहत् जारी किए गए दिशा-निर्देशों का अनुपालन करते हुए किया गया;
- योजना के विभिन्न घटकों के तहत् इकाइयों की संख्या निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने और सभी ग्रा.पं. को 2022 तक निर्मल स्थिति प्राप्त करने एवं निर्मल भारत बनाए रखने के उद्देश्य हेतु पर्याप्त थे;
- लाभार्थी के चयन की प्रणाली पारदर्शी थी तथा निर्माण और योजना के विभिन्न घटकों के तहत् बुनियादी ढाँचे का उन्नयन योजना के दिशा-निर्देशों में निर्धारित वित्तीय और गुणवत्ता के मानकों के अनुरूप था;
- योजना के तहत् सूचना, शिक्षा और संचार रणनीति समुदाय कार्यशील के माध्यम से सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के मांग सृजन में प्रभावी था;
- नि.भा.अभि. की अभिसरण परिकल्पित रूप में अन्य कार्यक्रमों/हितधारकों के साथ प्रभावी ढंग से हासिल की गई थी; और
- योजनाओं के परिणामों की निगरानी और मूल्यांकन के लिए तंत्र पर्याप्त और प्रभावी थे।

2.4.4 लेखापरीक्षा के मापदंड

बिहार में संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान के क्रियान्वयन पर निष्पादन लेखापरीक्षा निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त मापदंडों के साथ व्यवहृत किया गया था:

- सं.स्व.अभि. के 2010 और 2011 के दिशा–निर्देश और नि.भा.अभि. 2012 के दिशा निर्देश; पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, भा.स.द्वारा जारी अधिसूचना व परिपत्र;
- सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के कार्यान्वयन से संबंधित राज्य सरकार के आदेश;

---

[1] *ग्रामीण विकास विभाग, पंचायती राज विभाग, वित्त विभाग, स्वास्थय विभाग, शिक्षा विभाग, महिला और बाल विकास विभाग, जल संसाधन विभाग, कृषि विभाग और सूचना एवं जन संपर्क विभाग*

- महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन गारंटी अधिनियम (मनरेगा) से कुशल और अकुशल श्रमिकों की सहभागिता के लिए दिशा निर्देश;
- बिहार कोषागार संहिता;
- प्रबंधन सूचना प्रणाली के तहत् योजना की वेबसाइट (tsc.gov.in) पर प्रतिवेदित भौतिक और वित्तीय प्रगति; और
- बिहार राज्य द्वारा सं.स्व.अभि. के कार्यान्वयन हेतु दिशा निर्देश।

2.4.5 लेखापरीक्षा क्षेत्र एवं क्रियाविधि

निष्पादन लेखापरीक्षा के दौरान वर्ष 2010-14 की अवधि के लिए शीर्ष स्तर पर और जिला स्तर पर बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन. के अभिलेखो एवं जिला जल और स्वच्छता समिति (जि.ज.स्व. समिति) के अभिलेखों की लेखापरीक्षा मई से अगस्त 2014 के दौरान की गई। बिहार के 38 में से 13 जिलों[2] का चयन अनुमोदित परियोजना लागत साईज मेजर के आधार पर दिशा निर्देशों के अनुसार प्रोबबिलिटी प्रोपोर्शनेट टू साइज विथ रिप्लेसमेंट (पी.पी.एस.डब्ल्यु.आर.) विधि से किया गया था।

हाँलांकि, अभिलेखों की जाँच जि.ज.स्व.समिति तक ही सीमित थी, क्योंकि निचले स्तर पर समितियों के रूप में प्रखंड, पंचायत एवं ग्राम स्तर पर समिति का गठन नहीं किया गया था। लेखापरीक्षा में शामिल मुद्दों, प्रणाली, क्षेत्र, आच्छादन, मुख्य बिंदु पर विवेचना तथा विभागीय मंतव्य प्राप्त करने के लिए मई 2014 में प्रधान सचिव के साथ अंर्तगमन सम्मलेन का आयोजन किया गया था। बर्हिगमन सम्मलेन नवम्बर 2014 में विशेष सचिव, लो.स्वा.अभि.वि. के साथ आयोजित किया गया जिसमे विभाग के मंतव्य/उत्तर प्राप्त किये गये और उपर्युक्त स्थानों पर सम्मिलित किया गया।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष

2.4.6 योजना

2.4.6.1 कार्यान्वयन पद्धति

संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान के दिशा-निर्देशों के अनुसार राज्य, जिला, प्रखंड और ग्राम स्तर पर एक चार–स्तरीय कार्यान्वयन तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।

राज्य स्तर पर, राज्य सरकार द्वारा परियोजना जिलों में सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के क्रियान्वयन की देख रेख में मदद करने के लिए एक राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन (रा.ज. एवं स्व. मि.) का गठन करना चाहिए। रा.ज. एवं स्व. मि. राज्य के परियोजना जिलों में नि.भा.अभि. के कार्यान्वयन की निगरानी एवं लाइन विभागों आदि के बीच समाभिरूपता तंत्र सुनिश्चित करने के लिए छह महीने में कम–से–कम एक बार बैठक करेगी। इसके अलावा राज्य स्तर पर रा.ज. एवं स्व. मि. के अंतर्गत एक जल और स्वच्छता सहायता संगठन (ज. एवं स्व.सहा.संगठन) सूचना, शिक्षा एवं संचार (सु.शि. संचार), मानव संसाधन विकास (मा.स.वि.) और निगरानी तथा मूल्यांकन के लिए स्थापित किया जाना चाहिए।

---

[2] *भोजपुर, दरभंगा, गया, कैमूर, कटिहार, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, नवादा, पटना, पूर्णियाँ, सहरसा, सीतामढ़ी और पश्चिम चंपारण*

बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन मार्च 2014 तक ज. एवं स्व.सहा. संगठन स्थापित नहीं कर सका

लेखापरीक्षा के दौरान यह पाया गया कि यह बि..रा.ज.एव.स्व.मिशन का गठन (नवंबर 2004) निर्धारित संरचना के साथ किया गया था । हाँलांकि, बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन दिशा–निर्देशों के अनुसार वर्ष 2010-14 के दौरान जरूरी आठ बैठकों के विरुद्ध मात्र छह बैठकों का ही आयोजन कर सका। इसके अलावा बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन मार्च 2014 तक ज. एवं स्व.सहा.संगठन का भी गठन नहीं कर सका।

इसके अलावा जिला स्तर पर जिला जल एवं स्वच्छता मिशन (जि.ज. एवं स्व.मि.), प्रखंड स्तर पर प्रखंड संसाधन केन्द्र (प्र.सं. केन्द्र) एवं ग्रा.पंचा. स्तर पर ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति (ग्रा.ज. एवं स्व.स.) का गठन सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. योजना तथा उसके कार्यान्वयन के लिए गठन किया जाना चाहिए था। जिला जल एवं स्वच्छता मिशन मासिक बैठक करेगी।

जि.ज.स्व.समिति बी.आर.सी. और ग्रा.ज.एवं स्व.सं. का गठन नहीं कर सका

बिहार में राज्य द्वारा जारी मार्गदर्शिका के अनुसार वर्ष 2010-14 के दौरान जि.ज. एवं स्व.मि. के स्थान पर जि.ज.स्व.समिति कार्यान्वित थी तथा नमूना जाँचित जिलों में वर्ष 2010-14 के दौरान प्रखंड संसाधन केंद्र (बी.आर.सी.) और ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति (ग्रा.ग. एवं स्व.स.) का गठन नहीं किया गया था। इसके अलावा, नमूना जाँचित जिलों में 2010-14 के दौरान आवश्यक 48 बैठकों के विरुद्ध शून्य से 15 बैठकों (प्रत्येक जि.ज.स्व.समिति के लिए) का आयोजन किया गया था। इस प्रकार बी.आर.सी. और जि.ज.स्व.समिति का गठन नहीं करने और आवश्यक बैठकों का आयोजन नहीं करने के कारण नमूना जाँचित जिलों के ग्रा.ज.एवं स्व.स. द्वारा जमीनी स्तर पर सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के योजना और क्रियान्वयन के महत्व को नजर अंदाज किया गया।

मार्च 2014 तक स्वीकृत बल के विरुद्ध राज्य स्तर पर कुल 55 प्रतिशत और जिला स्तर पर 81 प्रतिशत पद खाली पड़े थे

इसके अलावा यह भी देखा गया कि मार्च 2014 तक राज्य स्तर पर समग्र रूप से स्वीकृत बल के विरुद्ध 55 प्रतिशत और जिला स्तर पर 81 प्रतिशत पद खाली पड़े थे ***(परिशिष्ट- 2.4.2)***। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया कि मार्च 2014 तक जिला स्तर पर 145 में से केवल 76 कर्मी ही प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए थे। हाँलांकि, नमूना जाँचित जिलों में पंचायती राज संस्थान (पं.रा.संस्थान) के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण आयोजित नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने लेखापरीक्षा निष्कर्ष को स्वीकार करते हुए बताया कि 534 प्रखंड समन्वयकों एवं 1257 क्लस्टर समन्वयकों को नियुक्त करने की प्रक्रिया आरम्भ की गयी है।

अनुशंसा: जल एवं स्वच्छता सहायता संगठन, प्रखंड संसाधन केंद्र, ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का गठन बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन/जि.ज.स्व.समिति द्वारा यथा शीघ्र किया जाना चाहिए और योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए विभिन्न स्तरों पर रिक्त पदों को भरा जाना चाहिए।

2.4.6.2 प्रारंभिक और बेसलाइन सर्वेक्षण

संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान के दिशा निर्देशों के अनुसार प्रारम्भिक गतिविधियों में प्रारंभिक सर्वेक्षण, बेसलाइन सर्वेक्षण, जिला/ग्रा.प. स्तर पर मुख्य कार्मिकों का उन्मुखीकरण और राज्य योजना की तैयारी करना है। इसके अलावा सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के दिशा निर्देशों के अनुसार वित्त पोषण के मानदंडों में परिवर्तन के बाद परियोजना प्रस्ताव संशोधित किया जाना चाहिए। संशोधित परियोजना प्रस्ताव में बेसलाइन सर्वेक्षण रिपोर्ट, जिलों में उपलब्ध नवीनतम जनगणना के आंकड़ों और परियोजना प्रस्ताव में संशोधन के समर्थन में किसी भी अन्य सर्वेक्षण को शामिल करना चाहिए।

प्रारंभिक सर्वेक्षण वर्ष 2010-14 के दौरान नहीं किया गया था जबकि बेसलाइन सर्वेक्षण मात्र वर्ष 2013-14 के दौरान प्रारम्भ किया गया

लेखापरीक्षा के दौरान नमूना जाँचित जिलों में जि.ज.स्व.समिति द्वारा पाया गया कि वर्ष 2010-14 के दौरान प्रारंभिक सर्वेक्षण नहीं कराया गया था। बेसलाइन सर्वेक्षण न तो वर्ष 2010-13 के दौरान कराये गए न ही बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा बेसलाइन सर्वेक्षण कराने के लिए आवर्तिता को बताया गया था। यद्यपि वित्त पोषण मानदंडों में वर्ष 2010, 2011 और 2012 में परिवर्तन किया गया था तथापि बेसलाइन सर्वेक्षण बि.रा. ज.एव.स्व.मिशन द्वारा वर्ष 2013-14 में ही आरंभ किया गया था। इस प्रकार प्रारंभिक सर्वेक्षण और बेसलाइन सर्वेक्षण नहीं करने के कारण विभाग उक्त अवधि के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता और सफाई की स्थिति का आकलन करने में विफल रहा।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने स्वीकार किया कि परियोजना कार्यान्वयन योजना (परि.कार्या.यो.) पुराने आंकड़ों पर आधारित था और बताया कि भा.स. द्वारा बेसलाइन सर्वेक्षण करने के लिए किसी भी अवधि को परिभाषित नहीं किया है।

उत्तर सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. दिशा–निर्देशों से मेल नही खाता था क्योकि वित्त पोषण नियमों में संशोधन के समय में बेसलाइन सर्वेक्षण किया जाना था।

2.4.6.3 परियोजना कार्यान्वयन योजना

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के दिशा निर्देशों के अनुसार बेसलाइन सर्वेक्षण करने के बाद उपर्युक्त आवश्यक हार्डवेयर के विभिन्न श्रेणियों के लिए परिवर्तन हो सकता है जिसके लिए परियोजना में संशोधन की आवश्यक होगी।

नमूना जाँचित जिलों में परियोजना कार्यान्वयन योजना परियोजना के आरम्भ होने के बाद संशोधित नहीं की गयी थी

लेखापरीक्षा के दौरान यह पाया गया कि नमूना जाँचित जिलों में 2000-06 के दौरान परियोजना कार्यान्वयन योजना अनुमोदित किए गए थे। बाद में मार्च 2014 तक नमूना जाँचित जिलों में परि.कार्या.यो. संशोधित नहीं की गयी थी। इस प्रकार परि. कार्या.यो. के संशोधन नहीं करने के कारण नमूना जाँचित जिलों के डी.डब्ल्यू.एस. सी. द्वारा हार्डवेयर के विभिन्न श्रेणियों की वास्तविक आवश्यकता का आकलन नहीं किया जा सका।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने स्वीकार किया कि परियोजना उद्देश्य पुराने आँकड़ों पर आधारित थी।

2.4.6.4 वार्षिक कार्यान्वयन योजना

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के दिशा–निर्देशों के अनुसार वार्षिक कार्यान्वयन योजना (एआईपी) का मुख्य उद्देश्य निर्मल ग्राम के सृजन के लिए इस कार्यक्रम को एक निश्चित दिशा प्रदान करना था। ग्राम पंचायत योजना से प्रखंड कार्यान्वयन योजना तथा आगे जिला कार्यान्वयन योजना के समेकन से वार्षिक कार्यान्वयन योजना तैयार किया जाना चाहिए था।

वा.कार्या.यो. जमीनी स्तर पर योजनाओं को समेकित किए बिना वा.कार्या.यो. तैयार किये गए थे

नमूना जाँचित जिलों में संवीक्षा के दौरान पाया गया कि ग्राम पंचायत स्तर और प्रखंड स्तर पर योजना नहीं बनाया गया था और वा.कार्या.यो. मात्र जिला स्तर पर ही तैयार किया गया था। ग्राम पंचायत योजना और संबंधित प्रखंड योजनाओ से वार्षिक कार्यान्वयन योजना तैयार करने में विफल रहने के फलस्वरूप जमीनी स्तर पर, परिवारों के लिए उनको नवीन विचारों के योगदान देने से वंचित रहा जो उनके लिए उपयुक्त था।

इसके अलावा नमूना जाँचित 11 जिलों[3] के वर्ष 2011-14 के वा.कार्या.यो. की जाँच में पाया गया कि ए.पी.एल. और बी.पी.एल. परिवारों के लिए वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों (वै.पा.शौचा.) का निर्माण के लिए लक्ष्य निर्धारित करने हेतु पूर्व वर्ष का उपलब्धि पर कभी भी विचार नहीं किया गया था। ए.पी.एल. परिवारों के लिए वर्ष 2012-13 और वर्ष 2013-14 के दौरान निर्धारित लक्ष्य और पूर्व वर्ष की उपलब्धि की तुलना करने पर यह क्रमशः 190 से 1693 प्रतिशत तथा 15 से 951 प्रतिशत के बीच रहा। हाँलांकि, बी.पी.एल. परिवारों के लिए यह क्रमशः 108 से 807 प्रतिशत तथा 105 से 488 प्रतिशत के बीच रहा ***(परिशिष्ट-2.4.3)***।

इस प्रकार, नमूना जाँचित जिलों के जिला जल एवं स्वच्छता समितियों द्वारा पूर्व वर्षों की उपलब्धि पर विचार नहीं किया गया और अवास्तविक लक्ष्य निर्धारित किया जिसे 2012-14 के दौरान पूरा नहीं किया जा सका।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने स्वीकार किया कि वा. कार्या.यो. जिला स्तर पर तैयार किया गया था लेकिन वा.कार्या.यो. का क्रियान्वयन ग्राम पंचायत स्तर से किया गया था। इसके अतिरिक्त विभाग ने बताया कि लक्ष्य को नहीं प्राप्त करने के कारण आई.ए.वाई. और मनरेगा के अधीन समाभिरूपता के अभाव में और ग्राम पंचायत स्तर पर मनरेगा निधि का अनुपलब्ध रहना था।

अनुशंसा : वित्त पोषण के मानदंडों में संशोधन के पश्चात परियोजना कार्यान्वयन योजना को भी संशोधित किया जाना चाहिए और वार्षिक कार्यान्वयन योजना जमीनी स्तर की योजना को शामिल करके तैयार किया जाना चाहिए।

2.4.7 निधियों की विमुक्ति और उपयोग

संपूर्ण स्वच्छता अभियान/निर्मल भारत अभियान का दिशा–निर्देश यह वर्णित करता है कि सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के तहत् बिहार राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन (बि.रा.ज. एवं स्व.मिशन) निधियों की विमुक्ति, जो कि वा.कार्या.यो. की बैठक में अनुमोदित मांगों तथा निधि को उपलब्धता के आधार पर की जानी थी। सम्बंधित रा.ज. एवं स्व. मि. को आबंटित निधियाँ दो किस्तों में विमुक्ति की जानी थी और निधियों की दूसरी किस्त उपलब्ध निधियों के 60 प्रतिशत उपयोग के बाद विमुक्त की जानी थी।

वर्ष 2010-11 से वर्ष 2013-14 के दौरान निधि की विवरणी **तालिका–2.4.1** में दी गयी है।

तालिका 2.4.1: भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा निर्गत निधियाँ, उसके विरुद्ध व्यय एवं बचतें

(₹ करोड़ में)

वर्ष	राज्य वा. कार्या.यो. के अनुसार आवश्यक केन्द्रांश	प्रारंभिक शेष	निर्गत निधि		वर्ष के दौरान कुल उपलब्ध निधियाँ	कुल व्यय	अंतशेष (उपलब्ध निधियों की प्रतिशतता)	व्यय का प्रतिशत
			भारत सरकार (*प्रतिशत*)	राज्य				
2010-11	421.51	116.88	112.60 (27)	69.51	298.99	178.90	120.09 (40)	60
2011-12	453.15	120.08	172.19 (38)	74.81	367.08	242.06	125.03 (34)	66
2012-13	562.69	125.03	478.15 (85)	58.71	661.89	282.93	378.96 (57)	43
2013-14	585.14	378.96	0.00 (0)	102.73	481.69	156.19	325.50 (68)	32
योग	**2022.49**		**762.94(38)**	**305.76**		**860.08**		

(स्रोत : बि.रा.ज.एवं स्व.मिशन द्वारा प्रदत्त सूचना)

[3] *कैमूर और पूर्णियाँ जिला द्वारा लेखापरीक्षा को वार्षिक कार्यान्वयन योजना उपलब्ध नहीं करायी गयी ।*

बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन वर्ष 2010-14 के दौरान उपलब्ध निधियों का 73 प्रतिशत ही उपयोग कर सका। परिणामस्वरुप वर्ष 2013-14 के दौरान ₹ 585.14 करोड़ के केन्द्रांश से राज्य वंचित रहा

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि भारत सरकार द्वारा वर्ष 2010-14 के दौरान आवश्यक केंद्रांश ₹ 2022.49 करोड़ के विरुद्ध मात्र ₹ 762.94 करोड़ (38 प्रतिशत) ही विमुक्त किए गये थे। इसके अतिरिक्त बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन उपलब्ध निधियों ₹ 1185.58 करोड़[4] में से ₹ 860.08 करोड़ (73 प्रतिशत) ही उपयोग कर सका। व्यय का प्रतिशत वर्ष 2011-12 के दौरान 66 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2013-14 में 32 प्रतिशत हो गया। परिणामस्वरूप वर्ष 2013-14 के दौरान आई.ई.सी. गतिविधियों पर कम व्यय, मानव बल का अभाव, समाभिरूपता पद्धति की विफलता इत्यादि के कारण राज्य को ₹ 585.14 करोड़ के केन्द्रांश से वंचित रहना पडा, जिसकी चर्चा उत्तरवर्ती कंडिकाओं में की गई है। नमूना जाँचित जिलों में जि.ज.स्व. समिति द्वारा उपलब्ध ₹ 520.76 करोड़ की निधि के विरुद्ध मात्र ₹ 355.66 करोड़ (68 प्रतिशत) ही व्यय किया जा सका ***(परिशिष्ट 2.4.4)।***

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव द्वारा बताया गया कि केंद्रांश का आवंटन भारत सरकार को प्रस्तुत राज्य वार्षिक कार्यान्वयन योजना के अनुसार निधि की आवश्यकता पर आधारित नहीं था।

उत्तर में यह नहीं बताया गया था कि राज्य को केंद्रांश कम मिलने का कारण योजना के विरूद्ध घटकों पर कम राशि का व्यय किया जाना था।

अन्य पाई गई अनियमितताओं की चर्चा निम्नवत् है :

- वर्ष 2010-12 के दौरान बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा समरूप राज्यांश 68 और 69 दिनों[5] की देरी के बाद विमुक्त किया गया, जिला स्तर पर नमूना जाँचित जिलों में (कटिहार के अलावा) जि.ज.स्व.समिति द्वारा वर्ष 2010-13 के दौरान ग्रा.पं. को निधि विमुक्त नहीं की गई थी, जबकि सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. दिशा निर्देश के अनुसार निधि प्राप्ति के 15 दिनों के अन्दर विमुक्त करना था।
- सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. कार्यक्रम के तहत 2010-14 के दौरान बी.रा.ज. एवं स्व. मिशन द्वारा ₹ 34.90 करोड़ ***परिशिष्ट 2.4.5*** का समरूप राज्यांश विमुक्त करने में विफल रहा।

छः नमूना जाँचित जिलों में ₹ 6.63 करोड़ की अग्रिम असमायोजित रहीं

- नमूना जाँचित छः जिलों[6] में उपयोगिता प्रमाण पत्र (उ.प्र.प.) प्रस्तुत नही करने के कारण ₹ 6.63 करोड़ का अग्रिम, मार्च 2014 तक असमायोजित था।

अनुशंसा : बि.रा.ज.एवं स्व.मिशन द्वारा सूचना शिक्षा एवं संचार के अंतर्गत गतिविधियों में वृद्धि करनी चाहिए और सरकार के अन्य विभिन्न योजनाओं के साथ समाभिरूपता सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे कि राज्य को भारत सरकार की निधि से वंचित नहीं रहना पड़े।

2.4.8 लक्ष्य और उपलब्धि

2.4.8.1 लक्ष्यों की प्राप्ति

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश संसूचित करते हैं कि देश के सभी ग्राम पंचायत को निर्मल स्थिति प्राप्त करने के साथ वर्ष 2022 तक निर्मल भारत बनाने के दृष्टिकोण से ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता आच्छादन में गति लाई जानी चाहिए।

---

4 *प्रारंभिक शेषः ₹ 116.88 करोड़ + केन्द्रांश : ₹ 762.94 करोड़ + राज्यांश : ₹ 305.76 करोड़ = ₹ 1185.58 करोड़*

5 *2010-11: 69 दिन, 2011-12 : 68 दिन*

6 *भोजपुरः ₹ 1.28 करोड़, दरभंगा : ₹ 2.50 करोड़, कटिहारः ₹ 0.14 करोड़, मुजफ्फरपुरः ₹ 1.60 करोड़, नवादाः ₹ 0.51 करोड़ और पश्चिमी चंपारणः ₹ 0.60 करोड़।*

राज्य में 79 प्रतिशत परिवारों को अब तक शौचालय सुविधा प्राप्त नहीं थी

संवीक्षा के दौरान यह पाया गया कि बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा वर्ष 2013-14 के दौरान कराये गए बेसलाईन सर्वेक्षण के अनुसार राज्य में 2.14 करोड़ परिवार थे। उनमे से 1.68 करोड़ परिवार (79 प्रतिशत) अब तक बिना शौचालय सुविधा के थे।

2.4.8.2 लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रगति

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के दिशा–निर्देश परिकल्पित करते हैं कि योजनाओं का क्रियान्वयन सभी ग्रामीण बी.पी.एल. और चिह्नित ए.पी.एल. परिवारों[7] को आच्छादित करने के लक्ष्य से किया गया था।

यह पाया गया कि वर्ष 2010-14 के दौरान बी.पी.एल. और ए.पी.एल. परिवारों के यहाँ वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों के निर्माण के लिए बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा लक्ष्य निर्धारित किया गया था जैसा कि **तालिका संख्या** 2.4.2 में दिया गया है।

तालिका संख्या 2.4.2: वर्ष 2010-14 के दौरान वै.पा.शौचा. निर्माण का लक्ष्य और उपलब्धियाँ

वर्ष	बी.पी.एल. के लिए वै.पा.शौचा. का निर्माण		ए.पी.एल. के लिए वै. पा.शौचा का निर्माण		कुल		उपलब्धि की प्रतिशतता
	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	
2010-11	1434638	545770	1450446	172022	2885084	717792	25
2011-12	737735	646052	443313	193875	1181048	839927	71
2012-13	791355	560678	453336	236021	1244691	796699	64
2013-14	686880	98456	460169	63190	1147049	161646	14

(स्रोत : बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट था कि बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन वर्ष 2010-14 के दौरान किसी भी वर्ष में लक्ष्य प्राप्त करने में विफल रहा। उपलब्धि का प्रतिशत वर्ष 2011-12 में 71 प्रतिशत से काफी घटकर वर्ष 2013-14 में 14 प्रतिशत हो गया।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विभाग द्वारा यह बताया गया कि दो वर्षों (2012-14) के दौरान वै.पा.शौचा. के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किये जाने का मुख्य कारण इंदिरा आवास योजना (आई.ए.वाई.) और मनरेगा के अंतर्गत समाभिरूपता तथा ग्राम पंचायत स्तर पर मनरेगा निधि का अभाव था।

2.4.9 सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के तहत् लाभार्थी का चयन, निर्माण और आधारभूत सरंचना का उन्नयन

2.4.9.1 संतृप्तिकरण के लिए ग्राम पंचायत का चयन

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. दिशा–निर्देश वर्णित करते हैं कि वार्षिक कार्यान्वयन योजना (वा.कार्या.यो.) का निर्माण संतृप्तिकरण दृष्टिकोण अपनाते हुए व्यापक स्वच्छता और जल आच्छादन को विशिष्टता दर्शाते हुए करना चाहिए। कार्यरत पाईप जलापूर्ति वाले ग्राम पंचायत को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए ।

लेखापरीक्षा के दौरान नमूना जाँचित जिलों में यह पाया गया कि 3263 ग्राम पंचायतों में से 228 (सात प्रतिशत) ग्राम पंचायतों को मार्च 2014 तक वा.कार्या.यो. में संतृप्तिकरण दृष्टिकोण के लिए चिह्नित किया गया था। जि.ज.स्व.समिति द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर, मार्च 2014 तक 73 ग्राम पंचायत ही

[7] *अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, लघु एवं सीमांत किसान, वास भूमि के साथ भूमिहीन मजदूरों, शारीरिक रूप से विकलांगों तथा महिला प्रमुख परिवारों*

निर्मल स्थिति प्राप्त कर सके थे। हाँलांकि, संवीक्षा में पाया गया कि 73 ग्राम पंचायतों में से मात्र छः ग्राम पंचायत ही शत–प्रतिशत पाईप जलापूर्ति से आच्छादित थे ***(परिशिष्ट–2.4.6)*** जो यह दर्शाता है कि नि.भा.अभि. दिशा–निर्देश को ध्यान में रखते हुए प्राथमिकता निर्धारित नहीं की गयी थी।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने बताया कि विभाग ने प्रत्येक प्रखंड में कम–से–एक ग्राम पंचायत चयन हेतु निर्देशित किया था और यह भी बताया कि अन्य पंचायतों में वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों के निर्माण कार्य पर जोर दिया गया था।

2.4.9.2 वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों के लाभार्थी का चयन

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देशों को ध्यान में रखकर योजना का लक्ष्य सभी ग्रामीण परिवारों को आच्छादित करना था।

नमूना जाँचित जिला जल एवं स्वच्छता समितियों में बी. पी. एल. और पात्र ए. पी. एल. परिवारों की सूची उपलब्ध नहीं थी

संवीक्षा के दौरान यह पाया गया कि बी.पी.एल. और योग्य ए.पी.एल. परिवारों की सूची वर्ष 2010–14 अवधि के लिए नमूना जाँचित जिलों में उपलब्ध नहीं थी। हाँलांकि वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों का निर्माण संबंधित जिला प्रशासन द्वारा तैयार किये गये बी.पी.एल. परिवारों की सूची से किया जा रहा था।

2.4.9.3 ए.पी.एल. परिवारों को अनियमित भुगतान

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश संसूचित करते हैं कि योग्य ए.पी.एल. परिवार यथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति छोटे और सीमांत किसानों, वासभूमि विहीन मजदूर, शारीरिक रूप से विकलांग और महिला प्रमुख परिवारों को वित्तीय प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन के अभिलेखों की संवीक्षा से प्रकट हुआ कि विभाग द्वारा 37.10 लाख योग्य ए.पी.एल. परिवारों के लिए ₹ 519.44 करोड़ की राशि इस धारणा के साथ विमुक्त (दिसम्बर 2012) की गयी कि सितम्बर 2012 से ऐसे ए.पी.एल. परिवारों में से 90 प्रतिशत चिन्हित श्रेणी से संबंधित थे। राज्य में 2.60 लाख ए.पी.एल. परिवारों के लिए ₹ 119.83 करोड़[8] भुगतान (सितंबर 2012 से जनवरी 2014) किया गया था। हाँलांकि, संवीक्षा में यह प्रकट हुआ कि नमूना जाँचित जिलों के द्वारा योग्य ए.पी. एल. परिवारों की सूची संधारित नहीं की जा रही थी। इसप्रकार, ₹ 119.83 करोड़ रुपये का संपूर्ण भुगतान ए.पी.एल. की निर्धारित श्रेणी पता लगाये बिना किया गया था।

2.4.9.4 सामुदायिक स्वच्छता परिसर

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश संसूचित करते हैं कि वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों के निर्माण हेतु गांव में जहाँ जगह की कमी है तथा सार्वजनिक स्थानों, बाजार, इत्यादि पर भी सामुदायिक स्वच्छता परिसर (सा.स्व.परि.) का निर्माण करना सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.का उद्देश्य था। इनके अनुरक्षण एवं रख–रखाव की जिम्मेवारी सम्बंधित ग्राम पंचायत की थी और सा.स्व.परि. में जल सुविधा अन्य योजनाओं जैसे कि त्वरित ग्रामीण जलापूर्त्ति योजना इत्यादि से की जानी थी।

[8] *केंद्रांशः ₹ 83.36 करोड़ और राज्यांशः ₹ 36.47 करोड़।*

बिना जल सुविधा तथा ग्रा.पं. द्वारा अनुरक्षण तथा सुविधा एवं रख–रखाव आश्वस्त किए बगैर सामुदायिक स्वच्छता परिसर निर्मित किए गए थे

सात सौ तीन सा.स्व.परि. के निर्माण की परियोजना उद्देश्य के विरुद्ध मार्च 2014 तक ₹ 4.41 करोड़ के व्यय के बावजूद 346 (49 प्रतिशत) सा.स्व.परि. का ही निर्माण किया गया था ***(परिशिष्ट–2.4.7)***। नमूना जाँचित जिलों के अभिलेखों की संवीक्षा में यह पता चला कि वै.पा.शौचा. निर्माण के लिए गाँव में जगह उपलब्धता की कमी से संबधित कोई सूचना उपलब्ध नहीं थी। आगे यह पता चला कि नमूना जाँचित सभी जिलों में संबंधित जि.ज.स्व.समिति द्वारा निर्मित सा.स्व.परि. में पानी का प्रावधान उपलब्ध नहीं कराया गया था। इसके अलावा यह भी देखा गया कि जि.ज.स्व.समिति, सीतामढ़ी द्वारा 180 सा.स्व.परि. का निर्माण एन.एस.एस.सी. अंतर्गत स्वीकृत 50 परियोजना उद्देश्य के विरुद्ध किया गया था जिसमें 130 सा.स्व.परि. का अनाधिकृत निर्माण किया हुआ। आगे सात नमूना जाँचित जिलों[9] में अनुरक्षण एवं रख–रखाव से संबंधित अभिलेख उपलब्ध नहीं थे।

बहिर्गमन सम्मलेन के दौरान (नवम्बर 2014) विशेष सचिव ने यह बताया कि सा. स्व.परि. के जल स्त्रोत का प्रावधान अधिकतम रूपये दो लाख के लागत के कारण नहीं किया गया था। हाँलांकि मार्गदर्शिका के अनुसार जल स्रोत को अन्य योजनाओं, जिसमें एन.आर.डी.डब्ल्यू.पी. भी सम्मिलित था, से दिया जाना सकता था।

2.4.9.5 स्कूल शौचालय

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश संसूचित करते हैं कि सभी स्कूलों में बालिकाओं एवं बालकों के लिए अलग–अलग शौचालय प्रदान किया जाना चाहिए था। विशेष जरूरतों के बच्चों (सी.डब्ल्यू.एस.एन.) के लिए शौचालय पहुँचने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए था। निर्मित शौचालय इकाईयों की संख्या स्कूल में पढ़ रहे छात्रों की संख्या के अनुसार स्कूलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए थी।

स्कूल शौचालयों का निर्माण बच्चों के संख्या बल के आकलन और विशेष आवश्यकता के बच्चों के लिए अवसर का प्रावधान किए बिना किया गया था

अभिलेखों की संवीक्षा से पता चला कि स्कूल शौचालयों के निर्माण की उपलब्धि राज्य में 94 प्रतिशत से अधिक थी तथा नमूना जाँचित जिलों में 95 प्रतिशत थी और 2010–14 के दौरान ₹ 61.11 करोड़ व्यय करने के बाद 22375 शौचालय का निर्माण किया गया था। हाँलांकि, किसी भी नमूना जाँचित जिलों के द्वारा विद्यालयों में शौचालय का आकलन पढ़ रहे छात्रों की संख्या के आधार पर नहीं किया गया था। इसके अतिरिक्त, विद्यालयों में सी.डब्ल्यू.एस.एन के लिए शौचालय में पहुँच के अवसर का प्रावधान नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मलेन के दौरान (नवम्बर 2014) विशेष सचिव ने यह बताया कि विद्यालय में बच्चों की संख्या के आधार पर शौचालयों के अतिरिक्त इकाईयों के निर्माण हेतु कोई समुचित मार्गदर्शन जारी नहीं किया गया था।

2.4.9.6 आंगनबाड़ी शौचालय

नमूना जाँचित जिलों में निजी भवन में चल रहे सभी आंगनबाड़ी केन्द्र बिना शौचालय सुविधा के चल रहे थे

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश यह हैं कि नि.भा.अभि. निधि से सरकारी भवनों के प्रत्येक आंगनबाड़ी में बच्चों के अनुकूल शौचालय का निर्माण किया जाना था। निजी भवनों के आंगनबाड़ी केन्द्रों के मालिकों द्वारा नक्शे के अनुरूप शौचालय का निर्माण कराना चाहिए था। निर्माण की लागत वसूली के लिए बढे हुये दर पर किराया लेना था।

नमूना जाँचित जिलों के अभिलेखों की जाँच से पता चला कि जि.ज.स्व.समिति द्वारा सरकारी भवनों में संचालित 5615 आं.के. (22758 आं.के. में से) में बच्चों के अनुकूल

[9] *कैमूर, कटिहार, मुंगेर, नवादा, पूर्णियाँ, सहरसा और सीतामढ़ी*

शौचालय आच्छादित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। उनमें से केवल 2987 (53 प्रतिशत) का निर्माण हुआ था। हाँलांकि ये शौचालय बच्चों के अनुकूल नहीं थे एवं 17143 निजी भवनों में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों पर कोई शौचालय निर्माण नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने स्वीकार किया कि आंगनबाड़ी केन्द्रों में शौचालय निर्माण का दर अपर्याप्त रहने के कारण बच्चों के अनुकूल शौचालय का निर्माण नहीं किया जा सका।

2.4.9.7 ग्रामीण स्वच्छता मार्ट और उत्पादन केन्द्र

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. का दिशा–निर्देश परिकल्पित करता है कि ग्रामीण स्वच्छता मार्ट (ग्रा.स्व.मार्ट) का मुख्य उद्देश्य चयन के आधार पर विभिन्न प्रकार के शौचालयों के निर्माण स्वच्छता सुविधाओं के लिए सामग्री, सेवाओं और जरूरी निर्देश प्रदान करना था। उत्पादन केंद्र (उ.केन्द्र) स्थानीय स्तर पर, लागत प्रभावी सस्ती सेनेटरी माल का उत्पादन करने के साधन हैं।

वर्ष 2010-14 के दौरान सभी नमूना जाँचित जिलों में (पूर्णिया को छोड़कर) ग्रा.स्व. मार्ट और उत्पादन केन्द्र अप्रभावी थे

लेखापरीक्षा के क्रम में यह पाया गया कि तीन नमूना जाँचित जिलों में वर्ष 2010-14 के दौरान एक से 14 ग्रा.स्व.मार्ट तथा उ.केन्द्र[10] उपलब्ध थे और उनमें से कोई भी (पूर्णियाँ को छोड़कर) कार्यशील नहीं थे। अन्य नमूना जाँचित जिलों में वर्ष 2010-14 के दौरान कोई भी ग्रा.स्व.मार्ट/उ.केन्द्र उपलब्ध नहीं थे।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने बताया कि 2008 के बाद उ.केन्द्र का उपयोग बहुत कम था।

उत्तर दिशा–निर्देशों के विपरीत था क्योंकि ग्रा.स्व.मार्ट/उ.केन्द्र विभिन्न प्रकार के शौचालयों के निर्माण के लिए सामग्रियों की आपूर्ति, सेवाओं और मार्गदर्शन और अन्य स्वच्छता सुविधाओं को सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया जाना था।

2.4.9.8 प्रोत्साहन आधारित कार्यक्रम को योजना आधारित में बदला जाना

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश प्रावधानित करते हैं कि पारिवारिक शौचालयों का निर्माण स्वयं परिवारों द्वारा किये गए चयन के आधार पर किया जाएगा और शौचालयों के पूरा होने और उपयोग के बाद उसकी उपलब्धि पहचान कर नकद प्रोत्साहन राशि दी जा सकती थी।

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के दिशा निर्देश का उल्लंघन कर प्रोत्साहन आधारित कार्यक्रम को योजना आधारित में बदल दिया

नमूना जाँचित जिलों के जि.ज.स्व.समिति के अभिलेखों की संवीक्षा में पता चला कि वै.पा.शौचा का निर्माण विभागों के माध्यम/गैर–सरकारी संगठनों से वर्ष 2010-14 के दौरान किया गया था। नमूना जाँचित जि.ज.स्व.समिति के द्वारा 10.93 लाख शौचालय का निर्माण किया गया था और वर्णित अवधि में ₹ 245.34 करोड़ का भुगतान विभागीय पदाधिकारियों/गैर–सरकारी संगठनों को किया गया था, इस प्रकार नमूना जाँचित जि.ज.स्व.समिति ने सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश का उल्लंघन कर प्रोत्साहन आधारित कार्यक्रम को एक योजना आधारित में बदल दिया। पुनः यह पाया गया कि वर्ष 2012-14 के दौरान जि.ज.स्व.समिति के द्वारा गैर–सरकारी संगठनो को निर्गत कार्यादेश में कम लागत के शौचालय का मानक रूपांकन बिना स्वीकृत प्राक्कलन के जारी किया गया था। आगे यह भी पाया गया कि निम्न गुणवत्ता निर्माण के कारण कुल निर्मित 20.15 लाख वै.पा.शौचा में से बेसलाईन सर्वे वर्ष 2013-14 के अनुसार 6.28 लाख (31 प्रतिशत) शौचालय

---

[10] *पटना एक ग्रा.स्व.माट और उ.केन्द्र वर्ष 2013–14 के दौरान, पूर्णियाँ : आठ ग्रा.स्व.माट (2010–13), आठ उ.केन्द्र (2010–13) और सहरसा : 14 उ.केन्द्र (2010–14)।*

अकार्यशील थे। यह तथ्य भौतिक सत्यापन के दौरान पुनः प्रमाणित हुआ कि 155 ग्राम पंचायत में 1567 परिवारों में से 589 (38 प्रतिशत) वै.पा.शौचा. अकार्यशील पाए गए। पुनः समुचित जागरूकता के अभाव के कारण 63 (चार प्रतिशत) परिवार इन ग्रा.पं. के वै.पा.शौचा का उपयोग अन्य उद्देश्यों यथा चारे, लकड़ी आदि के गोदाम के रूप में कर रहे थे।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान विशेष सचिव ने स्वीकार किया (नवम्बर 2014) कि वर्ष 2012-13 से शौचालय का निर्माण बिना मानक प्राक्कलन के किया गया था क्योंकि दो लिजिंग पिट एवं ईंट सुपर संरचना आधारित वै.पा.शौचा. का निर्माण ₹ 5500 में संभव नहीं था। इसलिए मानक प्राक्कलन जि.ज.स्व.समिति को प्रेषित नहीं किया गया था।

हाँलांकि जबाव प्रोत्साहन आधारित कार्यक्रम को एक योजना आधारित कार्यक्रम में बदलाव किये जाने के बारे में मौन रहा।

- ***ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन***

ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन घटक का क्रियान्वयन राज्य में दो प्रतिशत ग्राम पंचायतों में किया गया

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश विहित करता है कि ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन (ठो.और त.अ.प्र.) घटक के अंतर्गत कम्पोस्ट पिट, वर्मी कम्पोस्टिंग, सार्वजनिक एवं निजी बायो–गैस, संयंत्र, कम लागत वाली निकासी, सोख्ता चैनल/गड्ढा, अपशिष्ट जल का पुनः इस्तेमाल और संग्रहण प्रणाली, घरेलु कचरा को अलग–अलग करना तथा उसका निपटान करना इत्यादि जैसे क्रियाकलाप शुरु किये जा सकते थे।

संवीक्षा में प्रकट हुआ कि बी.एस.डब्ल्यू.एस.एम. ने ठो.और त.अ.प्र. के विभिन्न घटकों के तहत वर्ष–वार लक्ष्य निर्धारित नहीं किया था। आगे मार्च 2014 तक राज्य के 8404 ग्राम पंचायत में से केवल 154 ग्राम पंचायत (दो प्रतिशत) में ठो.और त.अ.प्र. के लिए काम किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन के दौरान विशेष सचिव ने बताया (नवम्बर 2014) कि विशिष्ट दिशा–निर्देश के अभाव के कारण इस घटक को समुचित रूप से लागू नहीं किया गया।

2.4.9.9 परिक्रमी निधि (रिवाल्विंग फंड)

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश विहित करते हैं कि परिक्रमी निधि सहकारी समितियों, स्वयं सहायता समूह (स.स.समूह), ए.पी.एल. परिवारों और आंगनबाड़ी केन्द्रों के मालिकों को दिया जा सकता था। इस कोष से ऋणों की वसूली 12-18 किश्तों में किया जाना चाहिए।

यह पाया गया कि सभी नमूना जाँचित ज़िलों में किसी भी सहकारी समिति, स्वयं सहायता समूह, ए.पी.एल. परिवारों और आंगनबाड़ी केन्द्रों के मालिकों को परिक्रमी निधियों नहीं दी गयी थी। जबकि तीन नमूना जाँचित जिलों में वर्ष 2010-14 के दौरान चार एन.जी.ओ. एवं चार सहायक अभियंताओं (सहा.अभि.) एवं 24 ग्राम पंचायतों को ₹ 83.40 लाख[11] वै.पा.शौचा. एवं ठो.और त.अ.प्र. के निर्माण के लिए दिया गया था। उक्त राशि में से ₹ 73.57 लाख[12] की वसूली अगस्त 2014 तक नहीं हो पाई थी।

---

11 *भोजपुर : ₹ 16.50 लाख चार एन.जी.ओ. को वै.पा.शौचा. के लिए, पटना : ₹ 6.90 लाख चार सहा.अभि. को ठो. और त.अ.प्र के लिए और पश्चिमी चंपारणः ₹ 60 लाख 24 ग्रा.पं. को वै. पा.शौचा. के लिए।*

12 *भोजपुर : ₹ 8.67 लाख ,पटना : ₹ 4.90 लाख और पश्चिमी चंपारण : ₹ 60 लाख।*

अनुशंसाः बी.एस.डब्ल्यू.एस.एम. को यह आश्वस्त करना चाहिए किः

- *जिन ग्राम पंचायत में कार्यशील पाईप जलापूर्त्ति उपलब्ध हैं, उन्हें निर्मल स्थिति प्राप्त करने के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए;*
- *संबंधित जि.ज.स्व.समिति को पात्र ए.पी.एल. परिवारों से संबंधित आँकड़ों को संधारित करना चाहिए;*
- *सरकारी भवनों के साथ निजी भवनों तथा विद्यालयों के आंगनबाड़ी केन्द्रों में शौचालयों/बच्चों के अनुकूल शौचालयों/विशेष आवश्यकता के बच्चों के लिए शौचालय का निर्माण किया जाना चाहिए;*
- *सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. को परिकल्पित दिशा–निर्देशों के अनुसार प्रोत्साहन आधारित कार्यक्रम बना रहना चाहिए।*

2.4.10 सूचना, शिक्षा और संचार

दिशा–निर्देश वर्णित करते हैं कि राज्य स्तर पर स्थापित संचार एवं क्षमता विकास इकाई (सं. एवं क्ष.वि.इ.) को जिलों को बेहतर सू.शि. और संचार योजना विकसित एवं क्रियान्वयन करने के लिए सहायता प्रदान करना चाहिए। स्वच्छता दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा को मनाने के साथ–साथ परस्पर चर्चा और घर–घर जाकर संपर्क वार्षिक कार्रवाई योजना का आवश्यक घटक होना चाहिए था। ग्राम स्तर पर संचार तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए ग्राम स्तरीय भाग लेने वाले क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता यथा स्वच्छता दूत, भारत निर्माण स्वयं–सेवकों, आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं, विद्यालय शिक्षकों इत्यादि को भी ग्राम स्तर पर मांग सृजन और व्यावहारिक बदलाव लाने के लिए शामिल किया जा सकता है।

11 नमूना जाँचित जिलों के 88 प्रतिशत ग्रा.ज. एवं स्व. समिति संचार गतिविधियों को कार्यान्वित करने में विफल रहा

नमूना जाँचित ग्रा.ज. एवं स्व.सं. के अभिलेखों की संवीक्षा में पाया गया कि वर्ष 2010-14 के दौरान संचार एवं क्षमता विकास इकाई से सूचना, शिक्षा और संचार योजना के विकास एवं इसके कार्यान्वयन के लिए कोई सहायता प्राप्त नहीं हुयी थी। नमूना जाँचित 11 जिलों[13] के जी0प0स0 समिति द्वारा परस्पर चर्चा और घर–घर जाकर संपर्क करने के लिए निर्धारित लक्ष्य के विरुद्ध मात्र 12 प्रतिशत ही क्रियान्वित किया गया था। इसके अलावा यह भी पाया गया कि इन जि.ज. एवं स्व.समिति ने इस अभियान में मुख्यतः दीवार लेखन, होर्डिंग और बैनर, पिक्चर फ्रेम, और सू.शि. और संचार सामग्री के वितरण के माध्यम से सू.शि. और संचार गतिविधियों को चलाया गया था ***(परिशिष्ट–2.4.8)*** और स्वच्छता दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा मनाना सूचना, शिक्षा और संचार योजना में शामिल नहीं किया गया था।

इस प्रकार 11 नमूना जाँचित जिलों के 88 प्रतिशत जि.ज.स्व.समिति द्वारा सूचना, शिक्षा और संचार का सबसे महत्वपूर्ण साधन यथा परस्पर चर्चा और घर–घर जाकर संपर्क को कार्यान्वित करने में विफल रहा। परिणामस्वरूप, सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. का ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता सुविधाओं के लिए मांग सृजन किया जाने के मुख्य उद्देश्य को जि.ज.स्व.समिति द्वारा प्राप्त नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने लेखापरीक्षा अवलोकन स्वीकार करते हुए कहा कि विभाग के सूचना, शिक्षा एवं संचार गतिविधियों में कमी का कारण मुख्य रूप से जमीनी कार्यकर्त्ताओं का अभाव था तथा यह भी बताया कि प्रोत्साहन की दर कम रहने के कारण कार्य पर लगे व्यक्ति नहीं आये।

---

[13] *भोजपुर, दरभंगा, गया, कटिहार, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, नवादा, पटना, सहरसा, सीतामढ़ी और पश्चिमी चंपारण।*

अनुशंसाः जि.ज.स्व.समिति को मांग सृजन करने के लिए परस्पर चर्चा और घर–घर जाकर संपर्क को बढ़ाना चाहिए।

2.4.11 सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के अंतर्गत समाभिरूपता

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश वर्णित करते हैं कि इंदिरा आवास योजना (इं.आ.यो.) के तहत् निर्मित सभी घर, जिनमें शौचालय नहीं था, प्रोत्साहन के पात्र हांगे। इसके अलावा, कार्यक्रम की योजना बनाने, कार्यान्वयन और अनुश्रवण के लिए भारत सरकार द्वारा मनरेगा योजना के अंतर्गत समाभिरूपता प्रणाली का परिपत्र (जून 2012) जारी किया गया जिससे कि उपलब्ध निधियों से ग्रामीण परिवारो द्वारा वैयक्तिक पारिवारिक शौचालयों का निर्माण किया जा सके।

नमूना जाँचित डी डब्ल्यू. एस.सी. में अभिसरण तंत्र विकसित नहीं होने के कारण ₹ 66.98 करोड़ अब तक सं.स्व.अभि./नि.भा. अभि.निधि से बाहर थे

नमूना जाँचित ज़िलों के जि.ज.स्व.समिति के अभिलेखों की संवीक्षा से उद्घाटित हुआ कि जि.ज.स्व.समिति द्वारा नि.भा.अभि. परियोजना के जिला में प्रभावी योजना एवं उसके कार्यान्वयन के लिए द्वारा कोई समाभिरूपता तंत्र विकसित नहीं किया गया था। वर्ष 2010-14 के दौरान नमूना जांचित जि.ज.स्व. समिति द्वारा (दिसम्बर 2011 से मार्च 2014) 175 प्रखंड विकास पदाधिकारिओं को इंदिरा आवास योजना हेतु ₹ 38.73 करोड़[14] तथा मनरेगा के अंतर्गत 930 ग्राम पंचायत को ₹ 28.11 करोड़[15] वै.पा.शौचा. निर्माण हेतु दिए गए थे जिसमें से केवल तीन जि.ज.स्व.समिति[16] में मनरेगा समाभिरूपता के अंतर्गत ₹ 0.38 करोड़ का उपयोगिता प्रमाण–पत्र प्राप्त (अगस्त 2014) हुआ था। इस प्रकार नमूना जाँचित जि.ज.स्व.समिति में समाभिरूपता तंत्र विकसित नहीं करने के कारण, ₹ 66.98 करोड़ सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. निधि से बाहर थे।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान विशेष सचिव ने स्वीकार किया और बताया कि अभिसरण के अभाव एवं ग्राम पंचायत स्तर पर मनरेगा निधि के उपलब्ध नहीं होने के कारण प्रगति कम थी एवं निधियाँ ग्रा.पं. एवं प्र.वि.पदा. के बैंक खातों में पड़े हुयी थी।

2.4.12 अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश वर्णित करते हैं कि कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राज्य स्तर और जिला स्तरों के अधिकारियों द्वारा नियमित क्षेत्र निरीक्षणों के द्वारा अनुश्रवण करना अनिवार्य है। परियोजना प्राधिकारियों को जिले में विशेषज्ञों के एक दल का गठन करना चाहिए जिनके द्वारा विभिन्न प्रखंडों में तिमाही में कम–से–कम एक बार समीक्षा की जानी चाहिए।

---

14 *भोजपुर – ₹ 2.65 करोड़ 14 प्र.वि.पदा. को, दरभंगा – ₹ 1.87 करोड़ 18 प्र.वि.पदा. को, गया – ₹ 8.11 करोड़ 24 प्र.वि.पदा. को, कैमूर – ₹ 1.78 करोड़ 11 प्र.वि.पदा. को, कटिहार – ₹ 4.52 करोड़ 17 प्र.वि.पदा. को, मुंगेर – ₹ 0.18 करोड़ 9 प्र.वि.पदा. को, मुजफ्फरपुर– ₹ 4.06 करोड़ 16 प्र.वि.पदा. को, नवादा – ₹ 5.91 करोड़ 14 प्र.वि.पदा. को, पटना– ₹ 5.49 करोड़ 25 प्र.वि.पदा. को, सहरसा – ₹ 2.13 करोड़ 9 प्र.वि.पदा. को और पश्चिम चंपारण – ₹ 2.03 करोड़ 18 प्र.वि.पदा. को ।*

15 *भोजपुर – ₹ 5.22 करोड़ 227 ग्राम पंचायतों को, दरभंगा– ₹ 2.94 करोड़ 62 ग्रा.पं. को, गया – ₹ 0.52 करोड़ 13 ग्रा.पं. को, कैमूर – ₹ 1.71 करोड़ 149 ग्रा.पं. को, कटिहार – ₹ 7.30 करोड़ 238 ग्रा.पं. को, मुजफ्फरपुर – ₹ 0.97 करोड़ 21 ग्रा.पं. को, नवादा – ₹ 8.60 करोड़ 187 ग्रा.पं. को, सीतामढ़ी : ₹ 0.16 करोड़ तीन ग्रा.पं. को और पश्चिम चंपारण – ₹ 0.69 करोड़ 30 ग्रा.पं. को।*

16 *नवादा – 401: ₹ 0.18 करोड़ दरभंगा–300 ₹ 0.14 करोड़ गया–124 ₹ 0.06 करोड़।*

संबंधित पदाधिकारियों के निरीक्षण प्रतिवेदन अभिलेखों में उपलब्ध नहीं थे और बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा किसी भी नमूना–जाँचित जिलों में परियोजनाओं की समीक्षा नहीं की गयी

लेखापरीक्षा के दौरान यह पाया गया कि वर्ष 2010-14 के दौरान नमूना जाँचित जिलों के सदस्य सचिवों, सहायक अभियंताओं, कनीय अभियंताओं जिला समन्वयकों का निरीक्षण प्रतिवेदन अभिलेखों में उपलब्ध नहीं था। किसी भी नमूना जाँचित जिलों में जि.ज.स्व.समिति द्वारा सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. परियोजनाओं की समीक्षा करने के लिए जिला स्तर पर विशेषज्ञों के दल का गठन नहीं किया गया था। इसके अतिरिक्त, नमूना जाँचित जिलों में जिला जि.ज.स्व.समिति द्वारा परियोजनाओं की समीक्षा भी नहीं की गई। यह भी पाया गया कि बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन द्वारा वर्ष 2010-14 के दौरान सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि.के क्रियान्वयन पर मूल्यांकन अध्ययन नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव द्वारा कार्यक्रम का विभिन्न स्तरों पर निरीक्षण प्राधिकारियों द्वारा निरीक्षण की आवश्यकता को स्वीकार किया गया और आश्वस्त किया गया कि इस संबंध में क्षेत्र और मुख्यालय के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश निर्गत किया जायेगा।

अनुशंसा: विभाग द्वारा कार्यक्रम के क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए प्रत्येक जिले में परियोजनाओं की समीक्षा की जानी चाहिए।

2.4.12.1 सामाजिक लेखापरीक्षा

सं.स्व.अभि./नि.भा.अभि. के दिशा–निर्देश सतत् और व्यापक जन–सत्तर्कता के साधनों के रूप में सामाजिक लेखापरीक्षा की केंद्रीय भूमिका अदा करता है। ग्राम पंचायत प्रत्येक महीने स्वच्छता दिवस का आयोजन करेगी और ग्राम स्वच्छता सभा (ग्रा.स्व. सभा.) की आवधिक सभाओं का भी आयोजन करेगी।

संबंधित जिलों में सामाजिक लेखापरीक्षा के अंतर्गत स्वच्छता दिवस और ग्राम स्वच्छता सभाएँ कभी भी आयोजित नहीं की गयी और जि.ज.स्व.समिति स्तरों पर शिकायत निवारण पद्धति विकसित नहीं थी

नमूना जाँचित जिलों द्वारा प्रतिवेदित किया गया कि सम्बधित जिलों में स्वच्छता दिवस और ग्रा.स्व.सभा. कभी भी आयोजित नहीं किये गये थे। अभिलेखों की संवीक्षा में पाया गया कि जि.ज.स्व.समिति स्तरों पर शिकायत निवारण तंत्र विकसित नहीं थे। राज्य/ जिला स्तर पर प्राप्त शिकायतों एवं मांगों को कभी भी संकलित नहीं किया गया था या निर्माण के लिए मांगों को अभिलेखित नहीं किया गया था।

बहिर्गमन सम्मेलन (नवंबर 2014) के दौरान विशेष सचिव द्वारा लेखापरीक्षा अवलोकन को स्वीकार किया गया और बताया कि आवश्यकतानुसार इसका आयोजन किया जायेगा।

2.4.13 निष्कर्ष

- वर्ष 2010-14 के दौरान स्वच्छता एवं साफ-सफाई कार्यों की स्थिति का आकलन करने के लिए प्रारंभिक सर्वेक्षण नहीं किया गया था जबकि परिवारों को चिह्नित करने हेतु बेसलाइन सर्वेक्षण मात्र वर्ष 2013-14 में ही किया गया था;
- परियोजना कार्यान्वयन योजना, परियोजना स्वीकृति के बाद संशोधित नहीं की गयी थी और वार्षिक कार्यान्वयन योजना ग्राम पंचायत/प्रखंडों के आँकड़ो पर आधारित नहीं थी;
- कार्यक्रम का वित्तीय प्रबंधन अपर्याप्त था क्योंकि ग्राम पंचायत को निधियाँ विमुक्त नहीं की गयी थी और बिहार राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा आवश्यक राज्यांश विलम्ब से विमुक्त किये गये थे;

- पूर्व वर्ष में आबंटित निधि का 60 प्रतिशत उपयोग नहीं करने के कारण वर्ष 2013-14 में केन्द्रांश के रूप में ₹ 585.14 करोड़ से राज्य वंचित रहा;
- योजनाओं के घटकों यथा वै.पा.शौचा., सा.स्व.परि., ए.डब्ल्यू. शौचालय, ग्रा.स्व. मार्ट और ठो.और त.अ.प्र. पर्याप्त रूप से क्रियान्वित नहीं किये गए थे;
- नमूना जाँचित जिलों के जि.ज.स्व.समितियाँ 88 प्रतिशत सू.शि. और सं. गतिविधियों को क्रियान्वित करने में विफल रही; और
- बि.रा.ज.एव.स्व.मिशन और जि.ज.स्व.समिति द्वारा कार्यक्रम के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन में कमी थी।

पथ निर्माण विभाग

2.5 *बिहार में राज्य उच्चपथों का निर्माण एवं अनुरक्षण*

कार्यकारी विवरणी

परिचय

एशियाई विकास बैंक (ए.वि.बैंक) के वित्तपोषण के अंतर्गत पथ निर्माण विभाग (प.नि.वि.) द्वारा बिहार में राज्य उच्चपथों (रा.उ.पथ) के निर्माण एवं अनुरक्षण की जिम्मेदारी बिहार राज्य पथ विकास निगम (बि.रा.प.वि.नि.) को प्रदान की गई तथा इसे बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना (बि.रा.उ.प.परि.) नामित किया गया।

(कंडिका 2.5.1)

योजना

विभाग द्वारा रा.उ.पथ. की घोषणा के लिए मानदंडों की अधिसूचना लम्बित है। बिहार सरकार द्वारा रा.उ.पथ की घोषणा सांसदों/विधायकों की सिफारिश के आधार पर की गई।

(कंडिका 2.5.6)

वित्तीय प्रबंधन

विभाग द्वारा रा.उ.पथ. निर्माण हेतु पर्याप्त निधियाँ समय से प्रदान की गई। संवेदकों को बाधा–मुक्त निर्माण स्थल उपलब्ध कराने में विफल रहने के कारण बि.स. द्वारा ऋण समझौता अवधि में कार्य पूरा नहीं किये जाने के फलस्वरूप ₹ 64.47 करोड़ का दावा की प्रतिपूर्त्ति ए.वि.बैंक से नहीं किया जा सका। बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा बि.रा.उ.प.परि.-II के लिए ए.वि.बैंक से प्रतिपूर्त्ति का दावा, ऋण स्वीकृति की तुलना में केवल 40 प्रतिशत ही था क्योंकि जमीन के अधिग्रहण, उपयोगिता के स्थानांतरण एवं वन मंजूरी कार्य में विलंब हुआ था।

(कंडिका 2.5.7.1)

परियोजना कार्यान्वयन

बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना-II के अन्तर्गत पाँच में से तीन रा.उ.पथ का निर्माण प्रगति पर था तथा दिसम्बर 2014 तक संपादन निर्धारित था। भूमि अधिग्रहण तथा बाधा–मुक्त निर्माण स्थल नहीं उपलब्ध होने के कारण शेष दो रा.उ.पथ की संविदा निरस्त कर दी गई। यह भी पाया गया कि दोषपूर्ण विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन के कारण ₹175.31 करोड़ की लागत में वृद्धि हुई।

(कंडिका 2.5.8.1 से 2.5.8.3)

अनुरक्षण

राज्य उच्चपथ निर्माण उपरांत बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प.नि.वि. को हस्तांतरण में विलम्ब के कारण उक्त रा.उ.पथ को संरक्षण हेतु दीर्घकालीन निष्पादन आधारित पथ आस्तियां अनुरक्षण संविदाओं में शामिल नहीं किया जा सका, जिस कारण उक्त रा.उ.पथ का दो वर्षों तक अनुरक्षण नहीं हो सका।

(कंडिका 2.5.9.1)

2.5.1 परिचय

सड़कों का विकास राज्य में ढाँचागत विकास का एक बुनियादी घटक है। राज्य उच्चपथ (रा.उ.पथ) जिला मुख्यालय और राज्य के भीतर महत्त्वपूर्ण शहरों को जोड़ने तथा उसे राष्ट्रीय उच्चपथ (एन.एच.) या पड़ोसी राज्यों के उच्चपथ से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण रास्ते हैं। राज्य में कुल सड़कों की लंबाई 105620 कि.मी. (पक्का 59159 कि.मी. + कच्चा 46461 कि.मी.) है जिसमें रा.उ.पथ की लंबाई 4857 कि.मी. (72 रा.उ.पथ.)

है। राज्य उच्चपथ द्वारा सभी प्रमुख जिला मुख्यालय को जोड़ने तथा इस सड़क पर यातायात कई गुणा बढ़ने के कारण रा.उ.पथ को कम–से–कम दो लेन में उन्नयन करना आवश्यक हो गया था।

वर्ष 2008 में बिहार में कुल 45 रा.उ.पथ थे। फरवरी 2008 से अगस्त 2011 के बीच पथ निर्माण विभाग (प.नि.वि.) द्वारा 27 नये रा.उ.पथ की घोषणा की गई। फलस्वरुप अप्रैल 2014 तक कुल 72 रा.उ.पथ थे। इनमें से, 53 रा.उ.पथ का निर्माण वर्ष 2005–14 में किया गया। शेष 19 रा.उ.पथ पर निर्माण सितम्बर 2014 तक आरंभ नहीं किया गया था।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (के.लो.नि.वि.) और इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड (इरकॉन) को राष्ट्रीय सम विकास योजना (रा.स.वि.यो.) के तहत् 33 रा.उ.पथ का निर्माण करने के लिए (अप्रैल 2005) में अधिकृत किया गया तथा इसे राज्य उच्चपथ विकास कार्यक्रम (रा.उ.प.वि.का.) वर्ष 2005 में नामित किया गया। इन रा.उ.पथ का निर्माण कार्य मार्च 2009 से सितम्बर 2013 के बीच पूर्ण किया गया। के.लो.नि.वि./इरकॉन को दो अन्य रा.उ.पथ का कार्य मार्च 2013 में सौंपा गया जिसका कार्य चल रहा था।

कंपनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत बिहार में सभी प्रकार के सड़कों के निर्माण हेतु फरवरी 2009 में बिहार राज्य पथ विकास निगम (बि.रा.प.वि.नि.) को राज्य उपक्रम के रूप में गठन किया गया। वर्ष 2009 से 2014 के दौरान 53 रा.उ.पथ में से 18 रा.उ.पथ के निर्माण एवं उन्नयन की जिम्मेदारी प.नि.वि. द्वारा बि.रा.प.वि.नि. को प्रदान की गई। इनका निर्माण ए.वि.बैंक के ऋण सहयोग से किया जाना था तथा इसे बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना (बि.रा.उ.प.परि.) नामित किया गया (2009)। उक्त 18 रा.उ.पथ जो बि.रा.उ.प.परि. को वर्ष 2009–14 में सौंपे गये थे इनमें 10 मौजूदा रा.उ.पथ तथा आठ नवघोषित रा.उ.पथ सम्मिलित थे। इनमें से सात का निर्माण पूरा हो चुका है तथा शेष 11 अधूरे हैं। फरवरी 2013 में प.नि.वि. द्वारा बिहार पथ आस्तियां अनुरक्षण नीति बनायी गयी, जिसके अन्तर्गत बिहार में सभी सड़कों रा.उ.पथ को शामिल करते हुए अनुरक्षण किया जा रहा है।

वर्ष 2009 से 2014 की अवधि में बि.रा.उ.प.परि. अन्तर्गत बि.रा.प.वि.नि. द्वारा किये गये रा. उ.पथ का निर्माण तथा प.नि.वि. द्वारा किये गये रा.उ.पथ का अनुरक्षण का निष्पादन लेखापरीक्षा किया गया।

2.5.2 संगठनात्मक ढाँचा

सचिव/प्रधान सचिव की अध्यक्षता में रा.उ.पथ के निर्माण एवं अनुरक्षण की जिम्मेदारी प.नि.वि. की है। उनको मुख्यालय स्तर पर एक अभियंता प्रमुख–सह–सचिव तथा सात मुख्य अभियंताओं द्वारा सहायता प्रदान किया जाता है। क्षेत्रीय स्तर पर निर्माण एवं अनुरक्षण के कार्य के लिए 11 अधीक्षण अभियंताओं की देख–रेख में पथ निर्माण प्रमंडलों के 49 कार्यपालक अभियंताओं (का.अ.) द्वारा किया जाता है, जिन्हें अनुमंडल स्तर पर सहायक अभियंता तथा कनीय अभियंता द्वारा सहायता किया जाता है ***(परिशिष्ट-2.5.1)***।

बिहार राज्यपथ विकास निगम एक निदेशक मण्डल के नेतृत्व में एवं अध्यक्ष, कार्यकारी पदाधिकारियों के रूप में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य महाप्रबंधक के साथ कार्य करता है। तीन महाप्रबंधकों और नौ उप–महाप्रबंधक (उ.म.प्र.) क्रमशः मुख्यालय एवं परियोजना कार्यान्वयन इकाइयों के कार्य के निष्पादन के लिए उत्तरदायी हैं ***(परिशिष्ट-2.5.1)***।

2.5.3 लेखापरीक्षा उद्देश्य

निष्पादन लेखापरीक्षा यह आँकने के लिए किया गया था कि क्या :

- पथ निर्माण विभाग द्वारा रा.उ.पथ घोषित करने की योजना प्रभावशाली थी तथा बिहार सरकार (बि.स.), भारत सरकार (भा.स.), तथा वित्तीय संस्थानों के मानक के अनुसार थी;
- पथ निर्माण विभाग के वित्तीय प्रबंधन के अंतर्गत निधि की पर्याप्त और समय पर उपलब्धता तथा उनका प्रभावी और आर्थिक उपयोग को सुनिश्चित किया गया था;
- संवेदक को बाधामुक्त निर्माण स्थल प्रदान करने के लिए भूमि अधिग्रहण और उपयोगिता स्थानांतरण कार्य को समय से पूरा किया गया था;
- बिहार राज्यपथ विकास निगम द्वारा परियोजनाओं का कार्यान्वयन संविदा के नियम एवं शर्त्तों. तथा ए.वि.बैंक के ऋण समझौते के अनुसार किया गया तथा परियोजनाओं के वांछित उद्देश्यों की पूर्त्ति हुई;
- पथ निर्माण विभाग और बि.रा.प.वि.नि. द्वारा रा.उ.पथ के निर्माण और संधारण में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उचित तथा प्रभावी तंत्र उपलब्ध था;
- पूर्ण रा.उ.पथ के अनुरक्षण हेतु प.नि.वि. द्वारा कार्यान्वित प्रभावशाली अनुरक्षण नीति उपलब्ध थी; एवं
- पथ निर्माण विभाग और बि.रा.प.वि.नि. द्वारा परियोजना के प्रत्येक स्तर पर कार्यान्वयन पर नियंत्रण रखने के लिए प्रभावी अनुश्रवण प्रणाली थी।

2.5.4 लेखापरीक्षा मापदंड

निष्पादन लेखापरीक्षा के मापदंड के लिए निम्नलिखित स्रोत अपनाये गये थे :

- जहाजरानी, भूतल परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (ज.भू.प. एवं रा.मं)/भारतीय रोड कांग्रेस (भा.रो.कां.) के विनिर्देश;
- बि.रा.उ.प.परि. चरण I, II एवं II (अतिरिक्त वित्तपोषण) के ऋण समझौते;
- बिहार लोक कार्य लेखा (बि.लो.का.ले.) संहिता, बिहार लोक कार्य विभागीय (बि. लो.का.वि.) संहिता;
- बिहार पथ आस्तियाँ अनुरक्षण नीति; एवं
- पथ निर्माण विभाग, बि.रा.प.वि.नि., ए.वि. बैंक एवं वित्त मंत्रालय, भा.स. की आधिकारिक वेबसाईट।

2.5.5 लेखापरीक्षा क्षेत्र एवं कार्यप्रणाली

निष्पादन लेखापरीक्षा मार्च से सितम्बर 2014 तक आयोजित किया गया जिसमें निर्माण से संबंधित बि.रा.प.नि.वि. का परियोजना मुख्यालय तथा पाँच[1] परियोजना कार्यान्वयन इकाईयों (परि.का.ई.) के वर्ष 2009–14 के अभिलेखों की नमूना जाँच की गई। इसके अलावा, अभियंता प्रमुख, प.नि.वि. तथा 49 में से 18 (रैण्डमली सेलेक्टेड) पथ निर्माण प्रमण्डलों[2] के रा.उ.पथ के अनुरक्षण से संबंधित अभिलेखों की जाँच की गई।

बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना के तहत् 18 में से 12 रा.उ.पथ का चयन निष्पादन लेखापरीक्षा के लिए किया गया। मार्च 2014 में सचिव, प.नि.वि. के साथ एक अंर्तगमन सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें निष्पादन लेखापरीक्षा के उद्देश्यों, मानदंडों एवं

---

1 *बिहारशरीफ, गया, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर और राजगीर*

2 *आरा, औरंगाबाद, बाँका, भागलपुर, बिहारशरीफ, बक्सर, दरभंगा, गया, हाजीपुर, मधुबनी, मोतीहारी, मुजफ्फरपुर, नवादा, पटना, पूर्णियाँ, रोहतास, समस्तीपुर एवं सुपौल*

कार्यप्रणाली की चर्चा की गई। प्रमुख सचिव और कार्यान्वयन एजेंसियों के अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में नवम्बर 2014 में बहिर्गमन सम्मेलन का आयोजन किया गया। लेखापरीक्षा निष्कर्ष पर चर्चा की गई और विभाग द्वारा दिए गए उत्तर को उपयुक्त स्थानों पर सम्मिलित किया गया है।

2.5.6 योजना

पथ निर्माण विभाग को नए रा.उ.पथ घोषित करने हेतु मापदंड निर्धारित करना था। यह पाया गया कि प.नि.वि. द्वारा न तो मापदंड अधिसूचित किया गया और न ही रा.उ.पथ घोषित करने के लिए अपनाई गई प्रक्रिया अभिलेखित की गई। हाँलांकि फरवरी 2008 में अस्तित्व में रहे 45 रा.उ.पथ के अलावा 27 अन्य वर्गों के सड़कों (1694 कि.मी.) को वर्ष 2008–11 में रा.उ.पथ घोषित किया गया। 72 रा.उ.पथ बिहार राज्य के 38 में से 37 जिलों को जोड़ता है तथा अरवल जिला अभी तक रा.उ.पथ से नहीं जुड़ा हुआ था।

विभाग रा.उ.पथ के लिए मापदंड अधिसूचित करने में विफल रहा

अभियंता–प्रमुख, प.नि.वि., बिहार, पटना के अभिलेखों के जाँच के क्रम में पाया गया कि माननीय मुख्यमंत्री, बिहार द्वारा मार्च 2006 में नये रा.उ.पथ के निर्धारण हेतु प.नि.वि. का प्रस्ताव पारित किया गया। हालाँकि, मापदंड निर्धारण का कार्य अगस्त 2009 में शुरू किया गया। सितम्बर 2009 में माननीय मंत्री, प.नि.वि. ने मापदंडों को अनुमोदित किया किन्तु माननीय मुख्यमंत्री का अनुमोदन प.नि.वि. द्वारा अक्टूबर 2014 तक नहीं लिया गया था। माननीय मंत्री द्वारा अनुमोदित मापदंड निम्नलिखित थेः–

- सड़क जो कम से कम दो जिलों को जोड़ती हो,
- सड़क की लम्बाई 25 कि.मी. से कम न हो,
- सड़क जिसमें 20 मीटर की चौड़ाई विद्यमान हो,
- सड़क जो कृषि उत्पादों और औद्योगिक सामग्रियों के परिवहन के लिए उपयोगी हो और
- सड़कें जो एक रा.उ.पथ./एन.एच. एक दूसरे के साथ जोड़ती हो।

आगे यह पाया गया कि फरवरी 2008 से अगस्त 2011 के बीच में प.नि.वि. द्वारा सांसदों/विधायकों के अनुशंसा के आधार पर रा.उ.पथ घोषित किया गया। इस प्रकार माननीय मुख्यमंत्री के निर्देश मार्च 2006 तथा माननीय मंत्री के द्वारा अनुमोदित मापदंड सितम्बर 2009 के बावजूद प.नि.वि. द्वारा मापदंडों को अधिसूचित नहीं किया गया।

विभाग ने जवाब दिया (नवम्बर 2014) कि बिहार राज्य के अन्तर्गत पथों/पथों के समूह, जिनकी लम्बाई कम–से–कम 50 कि.मी. एवं जो दो जिलों को जोड़ती हो, को निम्न प्राथमिकता के अनुसार रा.उ.पथ घोषित किया गया थाः–

(i) ऐसे पथों/पथों के समूह, जो बिहार को दूसरे राज्यों/अर्न्तराष्ट्रीय सीमा को जोड़ती हो, को मुख्य प्राथमिकता दी गई थी;

(ii) पथों/पथों के समूह जो एन.एच./रा.उ.पथ को जोड़ती हो एवं पुनः एन.एच./रा.उ.पथ पर समाप्त हो;

(iii) पथों/पथों के समूह जो पर्यटन/कृषि विपणन/उद्योग के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो।

लेखापरीक्षा द्वारा उठायी गयी आपत्तियों यथा मुख्यमंत्री द्वारा मापदंड का अनुमोदन नहीं करने एवं सांसदों/विधायकों की अनुशंसा के आधार पर नये पथों को रा.उ.पथ घोषित किया जाने पर विभाग द्वारा विशिष्ट जवाब नहीं दिया गया।

अनुशंसाः पथ निर्माण विभाग को नया रा.उ.पथ घोषित करने के लिए मापदंड शीघ्र अधिसूचित करना चाहिए।

2.5.7 वित्तीय प्रबंधन

2.5.7.1 बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना के अन्तर्गत रा.उ.पथ के निर्माण के कार्यान्वयन के लिए नवंबर 2008 से अगस्त 2013 के दौरान प.नि.वि., ए.वि.बैंक एवं भा.स. के बीच एक ऋण समझौता किया गया। ऋण की प्राप्ति प्रतिपूर्त्ति के आधार पर की गई थी। बिहार सरकार, राज्य बजट के माध्यम से बि.रा.प.वि.नि. के आवश्यकतानुसार समय–समय पर धन का प्रावधान कराता है। बिहार राज्य पथ विकास निगम भा.स. के माध्यम से ए.वि.बैंक को खर्च के आधार पर प्रतिपूर्त्ति दावा पेश करती है। बिहार सरकार संवेदकों को भुगतान के लिए बि.रा.प.वि.नि. को बजट में सभी खर्चों के लिए, जिसमें राज्यांश भी शामिल है, प्रावधान करती है। पथ निर्माण विभाग, कार्यपालक अभियंता, नूतन राजधानी प्रमंडल, पटना को राशि प्रदान करता है जिसे वह निकासी कर चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा बि.रा.प.वि.नि. को स्थानान्तरण करता है।

वर्ष 2009–14 के दौरान ए.वि.बैंक द्वारा स्वीकृत ₹ 4930.80 करोड़ ऋण के विरूद्ध प.नि.वि. द्वारा ₹ 6835.57 करोड़ का बजट में प्रावधान कर ₹ 4482.17 करोड़ (जिसमें ₹ 1265.29 करोड़[3] राज्यांश) भी शामिल है बि.रा.प.वि.नि. को हस्तांतरित किया गया। मार्च 2014 तक बि.रा.प.वि.नि. द्वारा परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए ₹ 2935.40 करोड़ व्यय किया गया। इसमें से ए.वि.बैंक द्वारा ₹ 2437.22 करोड़ की राशि प्रतिपूर्त्ति की गई जिसकी विवरणी **तालिका संख्या 2.5.1** में दर्शायी गयी है:–

तालिका संख्या 2.5.1: ए.वि. बैंक द्वारा वित्तपोषण के अन्तर्गत आवंटन एवं व्यय की विवरणी

(₹ करोड़ में)

चरण (अवधि)	राज्य उच्च पथों की संख्या (लम्बाई कि.मी. में)	ए.वि. बैंक द्वारा स्वीकृत ऋण	प.नि.वि. द्वारा निकासी एवं बि.रा.प.वि.नि. को हस्तांतरित की गई राशि	मार्च 2014 तक बि.रा.प.वि.नि. द्वारा व्यय की गई राशि	ए.वि. बैंक को समर्पित प्रतिपूर्त्ति दावे की राशि (कॉलम 3 के सापेक्ष प्रतिशतता)	प्राप्त की गई प्रतिपूर्त्ति दावे की राशि (कॉलम 6 के सापेक्ष प्रतिशतता)
1	2	3	4	5	6	7
बि.रा.उ.प.परि.-I (नवम्बर 2008 से जूलाई 2012)	9 (820)	1757.60	1984.10	2061.07	1693.13 (96)	1667.23 (98)
बि.रा.उ.प.परि.-II (अक्टूबर 2012 से जून 2015)	5 (387)	1373.20	1814.57	690.50	548.65 (40)	537.53 (98)
बि.रा.उ.प.परि.-II **(ए.एफ.)** (अगस्त 2013 से मार्च 2018)	4 (254)	1800	683.50	183.83	293.77 (16)	232.46 (79)
कुल	**18 (1461)**	**4930.80**	**4482.17**	**2935.40**	**2535.55**	**2437.22**

(स्रोत :बि.रा.प.वि.नि. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

लेखापरीक्षा हेतु (18 रा.उ.पथ में से) 12 रा.उ.पथ का चयन किया गया जिसके लिए वर्ष 2009–14 में परियोजना पर खर्च करने के लिए प्राप्त ₹ 2644.27 करोड़ में से ₹ 1610.27 करोड़ का व्यय हुआ।

[3] *बि.रा.उ.प.परि.–I; ₹ 195.29 करोड़; बि.रा.उ.प.परि.–II; ₹ 620 करोड़ एवं बि.रा.उ.प.परि.–II; (ए.एफ.) ₹ 450 करोड़।*

- ***पर्याप्त राशि का आवंटन***

वर्ष 2009–14 के दौरान बजट आबंटन (₹ 6835.57 करोड़) की राशि 18 रा.उ.प. के निर्माण की प्राक्कलित/स्वीकृत लागत (₹ 4655 करोड़) के साथ–साथ ए.वि.बैं. द्वारा स्वीकृत ऋण के कुल राशि से अधिक थी। इस प्रकार बिहार सरकार द्वारा पर्याप्त राशि आबंटित की गयी थी।

- ***ऋण की प्रतिपूर्त्ति नहीं किया जाना***

ऋण एकरारनामा बंद होने के फलस्वरूप ₹ 64.47 करोड़ की राशि प्रतिपूर्त्ति नहीं की जा सकी

बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना-I के लिए बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प्रस्तुत प्रतिपूर्त्ति दावा स्वीकृत ऋण की तुलना में 96 प्रतिशत था तथा शेष राशि ₹ 64.47 करोड़ के लिए दावा प्रतिपूर्त्ति नहीं किया गया क्योंकि ऋण एकरारनामा जुलाई 2012 में बंद किया जा चुका था। बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा ₹ 76.97 करोड़ की राशि अधिक व्यय की गई थी जो कि प.नि.वि. द्वारा बि.रा.प.वि.नि. को हस्तांतरित किया गया था। स्रोत, जिससे अधिक व्यय अधिरोपित किया गया था का कोई अभिलेख मौजूद नहीं था और न ही इस बारे में बि.रा.प.वि.नि. द्वारा बताया गया।

विभाग द्वारा उत्तर दिया (नवंबर 2014) गया कि बि.रा.उ.प.परि.–I के लिए बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प्रतिपूर्त्ति दावा ए.वि. बैंक द्वारा स्वीकृत राशि से अधिक थी एवं ₹ 42 करोड़ अधिक खर्च बि.रा.प.वि.नि. संसाधनों से की गई। उत्तर मान्य नहीं है क्योंकि बि.रा.प.वि.नि. द्वारा राशि की गणना ₹ 50 प्रति अमेरिकी डॉलर के हिसाब से की गई है जबकि लेखा टिप्पणियाँ बि.रा.प.वि.नि. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित थी। बि.रा.उ.प. परि.–I निधि से ₹ 42 करोड़ खर्च की गणना केवल नवंबर 2013 तक थी, जबकि मार्च 2014 तक वास्तविक व्यय की राशि ₹ 76.97 करोड़ थी।

- ***राशि का कम उपयोग किया जाना***

84 प्रतिशत अवधि पूर्ण हो जाने के बावजूद बि.रा.प.वि.नि. द्वारा केवल 38 प्रतिशत राशि उपयोग की गई

बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा बि.रा.उ.प.परि.-II के लिए सितंबर 2014 तक प्रतिपूर्त्ति दावा स्वीकृत राशि का 40 प्रतिशत ही थी क्योंकि कार्य की प्रगति बहुत धीमी थी। चरण–II, के अंतर्गत पाँच रा.उ.पथ को दिसम्बर 2014 तक पूरा नहीं किया जा सका क्योंकि जमीन का अधिग्रहण नहीं था, बिजली के खंभे, टेलिफोन के पोल, जमीन के अंदर के तार, धार्मिक प्रतिष्ठान, रास्ते के दोनों ओर के झोपड़ी को हटाना एवं साथ–ही–साथ अनुबंधों का समापन हो चुका था जैसा कि कंडिका 2.5.8.1 एवं 2.5.8.2 में वर्णित है। लेखापरीक्षा द्वारा पाया गया कि कार्य समाप्ति के लिए निर्धारित (55 माह में से 46 माह) अर्थात् 84 प्रतिशत ऋण अवधि में दावा प्रतिपूर्त्ति नहीं की जा सकी थी। बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा प.नि.वि. से विमुक्त 38 प्रतिशत राशि का ही उपयोग किया गया।

विभाग ने लेखापरीक्षा टिप्पणियाँ को स्वीकार किया (नवम्बर 2014) एवं कहा कि भूमि अधिग्रहण, उपयोगिता स्थानांतरण एवं पर्यावरण/वन मंजूरी में विलम्ब के कारण कार्य में कम उपलब्धि हुई।

- ***प्रारंभिक चरण में कार्य***

अगस्त 2013 में बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना-II (ए.एफ.) के अंतर्गत कार्यान्वित चार रा.उ.पथ के निर्माण में खर्च मात्र ₹ 183.83 करोड़ (27 प्रतिशत) था जिसकी तुलना में जमीन अधिग्रहण, पथ पुनर्वास एवं उपयोगिता हस्तांतरण के लिए ₹ 683.50 करोड़ की राशि उपलब्ध थी। सिविल कार्य के लिए निविदा को अंतिम रूप दिया जा चुका था परंतु कार्यान्वयन प्रारंभिक अवस्था में थी । योजना कार्यान्वयन की कमियों की चर्चा बाद की कंडिकाओं में की गई है।

इस संबंध में विभाग द्वारा जवाब (नवंबर 2014) दिया गया कि ऋण वैधता की अवधि मार्च 2018 तक थी तथा बि.रा.उ.प.परि.-II (ए.एफ.) के अंतर्गत चार रा.उ.पथ का कार्य प्रगति पर था।

- *संवेदक को अनियमित भुगतान*

अतिरिक्त मोबीलाइजेशन अग्रिम एवं सामग्री अग्रिम के रूप में संवेदकों को ₹ 18.14 करोड़ अनियमित भुगतान किया गया

वर्ष 2009–14 के दौरान बि.रा.उ.प.परि. के लिए कुल ₹ 2935.40 करोड़ खर्च किए गए जिसमें ₹ 18.14 करोड़ का संवेदकों को किया गया अनियमित भुगतान शामिल था। लेखापरीक्षा में पाया गया कि संविदा शर्त्त की अनदेखी कर परि.का.ई., गया और हाजीपुर (नवंबर 2011 से नवंबर 2013) ने अतिरिक्त मोबीलाइजेशन अग्रिम ₹ 14 करोड़ (रा.उ.प.–69 एवं 90) भुगतान किया जबकि निर्धारित अग्रिम दी जा चुकी थी। परिणामस्वरूप, उक्त राशि जो किसी अन्य तरीके से कार्य के लिए उपयोग किया जा सकता था, बि.रा.प.वि.नि. निधि से यह एक से तीन वर्ष तक बाहर रही। इसी प्रकार संविदा की सामान्य शर्त्तों (सं.सा.शर्त्त) की अनदेखी कर परि.का.ई., हाजीपुर (जून से दिसंबर 2013) जल्दी खराब होने वाले एवं ज्वलनशील सामग्री (सीमेंट और अलकतरा) के लिए रा.उ.प.–90 के लिए ₹ 4.14 करोड़ का भुगतान कर दिया गया। इस राशि का सितंबर 2014 तक भरपाई नहीं हो सका। निविदा की सामान्य शर्त्तों के विरूद्ध परि.का.ई., गया रा.उ.प.-68 एवं रा.उ.प.-69 के लिए अवधारण राशि ₹ 2.71 करोड़ संवेदकों से वसूल करने में सक्षम नहीं रहा क्योंकि इन मार्गों के लिए बढ़ी हुई निविदा राशि ₹ 54.26 करोड़ थी। अनियमित भुगतान के लिए उ.म.प्र. को न जिम्मेदार ठहराया गया और न ही उनके विरूद्ध कोई कार्रवाई की गई।

विभाग द्वारा (नवंबर 2014) उत्तर दिया गया कि बिहार राज्य में नई उत्खनन के तहत प्रतिबंध लगाने के कारण तथा कार्य को जल्द समाप्त करने के लिए सुविधा मुहैया कराने हेतु अतिरिक्त मोबीलाईजेशन अग्रिम ₹ 14 करोड़ संवेदकों को उनके आग्रह पर वित्तीय बाधाओं को दूर करने के लिए दिया गया था। उत्तर मान्य नहीं था क्योंकि संविदा में अतिरिक्त मोबीलाईजेशन अग्रिम का प्रावधान नहीं था। खराब होने वाली सामग्रियों जैसे सीमेंट और अलकतरा पर सामग्री अग्रिम न्याय संगत नहीं था, जैसाकि यह बिहार लोक कार्य विभागीय संहिता के नियम 207 के विरूद्ध था। अवधारण राशि के कम वसूली के संदर्भ में विभाग द्वारा (नवम्बर 2014) बताया गया कि सं.सा.शर्त्त के अनुसार, स्वीकार की गई राशि संविदा की राशि का मतलब स्वीकारनामा पत्र में स्वीकृत राशि से है तथा उसी के अनुरूप अवधारण राशि की वसूली की गई थी। जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि संविदा मूल्य को ना ही सं.सा.शर्त्त के उपबंध 14.1 (अ) के तहत समायोजित किया गया था और ना ही बढ़े हुए संविदा मूल्य में से अवधारण राशि घटाई गई थी।

अनुशंसा : पथ निर्माण विभाग को संविदा के आवंटन के पूर्व प्रारंभिक कार्य पूरा करने के लिए कदम उठाने चाहिए जिससे बि.रा.प.वि.नि. निर्धारित समय के भीतर परियोजनाओं को पूरा करने और समय पर प्रतिपूर्त्ति दावा प्रस्तुत करने मे सक्षम हो सके।

2.5.8 बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना का कार्यान्वयन

बि.रा.उ.प.परि. के अंतर्गत पुर्नवास कार्य तथा चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण कार्य के साथ–साथ नये वर्गीकृत रा.उ.पथ का निर्माण कार्य शामिल है। बिहार राज्य पथ विकास निगम को सुपुर्द कुल 18 रा.उ.पथ में से बि.रा.उ.प.परि. चरण–I के सात रा.उ.पथ पूर्ण किये जा चुके थे जबकि दो अपूर्ण रहे। चरण–II में लिए गए सभी पाँच रा.उ.पथ का काम अपूर्ण रहा। चार अतिरिक्त रा.उ.पथ चरण–II (ए.एफ.), जो कि बि.रा.प.वि.नि. को दिए गए थे, का कार्य प्रारंभिक अवस्था में था। सात कार्य बि.रा.उ.प.परि. के अंतर्गत अधूरे रहे जिसकी मुख्य वजह भूमि अधिग्रहण में देरी, प्रयोज्यों का नहीं हटाया जाना जैसे कि बिजली के खंभे, टेलिफोन के पोल इत्यादि नक्सल गतिविधियां एवं त्रुटिपूर्ण

विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (वि.प.प्र.) जिसके फलस्वरूप लागत में वृद्धि हुई जैसाकि कंडिका 2.5.8.1 से 2.5.8.3 में चर्चा किया गया है। परियोजना की विस्तृत विवरणी नीचे **तालिका 2.5.2** में दिया गया है:

तालिका 2.5.2: बि.रा.उ.प.परि. के कार्यान्वयन का ब्यौरा

बि.रा.उ.प.परि	रा.उ.पथ की संख्या (लम्बाई कि.मी. में)	परियोजना का प्रारंभ *	पूर्ण होने की निर्धारित तिथि	सितम्बर 2014 तक पूर्ण रा.उ.पथ (कि.मी. में) की संख्या	मार्च 2014 तक व्यय की गई राशि (₹ करोड़ में)	पूर्णता की प्रतिशतता (कि.मी. में)
चरण-I	9 (820)	नवम्बर 2008	जनवरी 2012	7 (589)	2061.07	72
चरण- II	5 (387)	दिसम्बर 2010	दिसम्बर 2014	शून्य	690.50	शून्य
चरण-II (ए.एफ.)	4 (254)	अगस्त 2013	सितम्बर 2017	शून्य	183.83	शून्य
कुल	**18**				**2935.40**	

** ए.वि. बैंक ऋण एकरारनामा के अनुसार*
(स्रोत : वि.रा.प.वि.नि. द्वारा सूचना प्रदत्त)

बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना–I के अंतर्गत लिए गए नौ रा.उ.पथ (820 कि.मी.) में से सात रा.उ.पथ (589 कि.मी.) पूर्ण किये जा चुके थे। बिहार राज्य पथ विकास निगम को निर्माण हेतु आवंटित शेष दो पथ लंबाई का 28 प्रतिशत भूमि अधिग्रहण, उपयोगिता स्थानांतरण आदि से संबंधित कारणों से कार्य समाप्ति के दो वर्ष व्यतीत होने (जनवरी 2012) एवं ₹ 333.06 करोड़ व्यय करने के पश्चात् भी अधूरे रह गए। बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना–II के अंतर्गत पाँच रा.उ.पथ का निर्माण दिसम्बर 2014 तक पूर्ण किया जाना था, परन्तु ₹ 690.50 करोड़ (सितम्बर 2014) व्यय करने के बावजूद भी अपूर्ण रहा। कार्य में प्रगति धीमी प्रगति के कारण, इनमें से दो कार्य अप्रैल/मई 2014 में समाप्त कर दिए गए। बि.रा.उ.प. परि.–II (ए.एफ.) के अंतर्गत चार रा.उ.पथ का निर्माण, जिसमें ₹ 183.83 करोड़ रुपए का व्यय (सितम्बर 2014) किया जा चुका था, प्रारंभिक चरण में थे। लेखापरीक्षा निष्कर्षों की चर्चा निम्नलिखित कंडिकाओं में की गई है:

2.5.8.1 भूमि अधिग्रहण नहीं किए जाने के कारण अपूर्ण कार्य

एशियाई विकास बैंक के ऋण एकरारनामा की अनुसूची 4 के उपबंध 3 के अनुसार, राज्य को यह सुनिश्चित करना होगा कि परियोजना के लिए आवश्यक सभी भूमि एवं सभी अधिकृत रास्ते, निर्माण संविदा के अंतर्गत, अनुसूचित एकरारनामे के अनुसार निर्माण संवेदकों को उपलब्ध करा दिया है तथा सभी भूमि अधिग्रहण एवं पुनर्वास गतिविधियों का कार्यान्वयन कर्जदार के लागू नियमों एवं विनियमों के साथ अनुपालन किया गया है।

बिहार राज्य उच्चपथ परियोजना–I एवं II से संबंधित 12 रा.उ.पथ के नमूना जाँच क्रम में से नौ रा.उ.पथ पूर्णता हेतु लंबित थे, लेकिन चार रा.उ.प.[4] का निर्माण कार्य, प.नि.वि. के भूमि अधिग्रहण करने में विफलता एवं पुनर्वास मुद्दों के हल नहीं होने के कारण अभी तक पूर्ण नहीं हुआ था। प्रमुख मामलों को नीचे वर्णित किया गया है:

[4] *रा.उ.प.–68,69 (परि.का.ई., गया), 78 (परि.का.ई., बिहार □रीफ) तथा 90 (परि.का.ई., हाजीपुर)।*

भूमि अधिग्रहण नहीं होने के कारण रा.उ.प.–78 एवं रा.उ.प.–90 के कार्य पर ₹ 284.77 करोड़ व्यय होने के बावजूद निरस्त कर दिये गये

बिहार राज्य पथ विकास निगम के बिहारशरीफ एवं हाजीपुर परि.का.ई. के अभिलेखों की संवीक्षा में पाया गया कि बिहटा–सरमेरा पथ (रा.उ.प.–78) एवं मोहम्मदपुर–छपरा पथ (रा.उ.प.–90) के उन्नयन कार्य संबंधित एजेंसियों को क्रमशः ₹ 391.76 करोड़ एवं ₹ 201.82 करोड़ के एकरारनामा मूल्य पर प्रदान किया गया था एवं जिसका एकरारनामा क्रमशः मई 2010 एवं सितम्बर 2011 में किया गया। इन कार्यों को पूर्ण करने की तिथि क्रमशः मई 2013 एवं अप्रैल 2014 थी। तथापि, ये कार्य, रा.उ.प.–78 में 173.24 एकड़ एवं रा.उ.प.–90 में 15.366 कि.मी. के स्ट्रेच में भूमि अधिग्रहण नहीं होने के कारण पूर्ण नहीं किया जा सका। इसके अलावा बि.स. द्वारा निर्माण हेतु भूमि उपलब्ध कराने की विफलता के कारण रा.उ.प.–78 का अनुबंध एकरारनामा को अप्रैल 2014 में निरस्त कर दिया गया। संवेदक द्वारा कार्य की प्रगति धीमी रहने के कारण मई 2014 में बि.रा.प.वि.नि. द्वारा मोहम्मदपुर–छपरा पथ (रा.उ.प.–90) का उन्नयन कार्य निरस्त कर दिया गया।

इस प्रकार, संबंधित जिला भूमि अधिग्रहण अधिकारियों को निधियों के हस्तांतरण तथा ₹ 284.77 करोड़ (₹ 201.39 करोड़ रा.उ.प.–78 एवं ₹ 83.38 करोड़ रा.उ.प.–90) व्यय किए जाने के बावजूद भी प.नि.वि. आवश्यक भूमि का अधिग्रहण करने में विफल रहा, और अनुबंध की समाप्ति का कारण बना जिससे दो जिलों के बीच जोड़ने के लिए परियोजना के अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति नहीं जा सकी।

विभाग द्वारा जवाब (नवम्बर 2014) दिया गया कि आदर्श अवस्था में, सभी प्रारंभिक कार्य जैसे कि भूमि अधिग्रहण, पर्यावरण/वन मंजूरी, उपयोगिता स्थानांतरण आदि पथ विकास एवं उन्नयन कार्य संविदा करने से पूर्व कर लिया जाना चाहिए।

2.5.8.2 प्रयोज्यों के गैर–स्थानांतरण के कारण परियोजनाओं के पूर्ण करने में विलंब

बिहार राज्य पथ विकास निगम एवं संविदा की सामान्य शर्तें (सं.सा.शर्त) के उपबंध 2.1 (अ) के अनुसार, बि.रा.प.वि.नि. द्वारा संवेदक को कार्य के निष्पादन के लिए बाधा–मुक्त स्थल उपलब्ध कराया जाना था।

प्रयोज्यों के गैर स्थानांतरण एवं पर्यावरण/वन मंजूरी नहीं होने के कारण ₹ 416.44 करोड़ व्यय होने के बावजूद रा.उ.प.–68, रा.उ.प 69 एवं रा.उ.प 90 के कार्य अपूर्ण रहे।

अभिलेखों की संवीक्षा के क्रम में पाया गया कि 18 रा.उ.पथ में से 12 के प्रयोज्यों के गैर–स्थानांतरण के कारण तीन रा.उ.पथ की प्रगति में विलम्ब हुआ जिस पर बि.रा.प.वि. नि. द्वारा ₹ 416.44 करोड़ का व्यय किया जा चुका था।

- परियोजना कार्यान्वयन इकाई, गया में लेखापरीक्षा द्वारा पाया गया कि शिवगंज–बिदराबाद पथ (रा.उ.प.–68) एवं डुमरिया–रानीतालाब पथ (रा.उ.प.–69) को बि.रा.प.वि.नि. द्वारा दो एजेंसियों[5] को क्रमशः ₹ 168.53 करोड़ से ₹ 313.50 करोड़ के संविदा मूल्य पर दिया (जुलाई 2009, दिसम्बर 2008) गया। कार्यों के पूरा होने की निर्धारित तिथियाँ क्रमशः अप्रैल 2012 एवं जनवरी 2012 थी, तथापि, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (बि.रा.वि.बोर्ड) के साथ गैर समन्वय के कारण बि.रा.प.वि.नि. द्वारा रा.उ.प.–68 के संरेखण से विद्युत पोल का स्थानांतरण फरवरी 2014 तक नहीं किया गया था, जबकि बि.रा.वि.बोर्ड (अप्रैल 2010) को ₹ 27.66 लाख पर्यवेक्षण प्रभार के लिए जमा किया जा चुका था। इसके अलावा, टेलिफोन खंभे भी स्थानांतरित नहीं किये गये थे तथा पेड़ों को भी नहीं हटाया गया था। इस प्रकार, प्रयोज्यों के गैर–स्थानांतरण के कारण, ₹ 126.05 करोड़ (रा.उ.प.–68) एवं ₹ 207.01 करोड़ (रा.उ.प.–69) व्यय किए जाने के बावजूद जुलाई 2014 तक कार्य पूर्ण नहीं किया जा सका।

---

[5] *मेसर्स एम.बी.एल. इन्फास्ट्रक्चर लिमिटेड, कोलकाता (रा.उ.प.–68), मेसर्स गेमॉन इण्डिया लिमिटेड (रा.उ.प.–69)*

- परियोजना कार्यान्वयन इकाई, हाजीपुर में दो वर्ष व्यतीत होने के बाद अगस्त 2013 में प्रधान मुख्य वन संरक्षक, पटना द्वारा परियोजना के 64.71 कि.मी. (रा.उ.प.–90) की लंबाई में से केवल 30 कि.मी. से 58 कि.मी. की लंबाई में ही पेड़ काटने की अनुमति दी गई, जबकि शेष बचे लंबाई 36.41 कि.मी. (0 से 30 कि.मी. एवं 58 कि.मी.से 64.71 कि.मी.) के लिए फरवरी 2014 तक अनुमति नहीं मिली थी। इस प्रकार, ₹ 83.38 करोड़ व्यय होने के बावजूद भी सरकार धीमी गति से चल रही पुनर्वास गतिविधियों के कार्य को हल करने में विफल रही।

विभाग द्वारा लेखापरीक्षा निष्कर्ष स्वीकार (नवम्बर 2014) कर लिया गया एवं कहा गया कि परियोजना के शुरुआत से ही पूर्ण प्रयास किए जाने के बावजूद भी वन विभाग द्वारा रा.उ.प.–68 के लिए पेड़ों के गिराने की अनुमति नहीं मिली। तथापि, रा.उ.प.–90 के लिए वन विभाग की मंजूरी के लिए अंतिम अनुमोदन, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय से प्राप्त कर लिया गया था।

अनुशंसा: भूमि अधिग्रहण एवं उपयोगिता स्थानांतरण कार्य की सुविधा के लिए प.नि.वि., बि.रा.वि.बोर्ड एवं राजस्व विभाग के बीच बेहतर समन्वय के लिए बि.स. को उचित तंत्र विकसित करनी चाहिए।

2.5.8.3 डी.पी.आर. के दोषपूर्ण निर्माण के कारण लागत वृद्धि

त्रुटिपूर्ण डी.पी.आर. बनाने वाले डी.पी.आर. सलाहकार के विरूद्ध विभाग कार्रवाई करने में विफल रहा। जिसके कारण ₹ 175.31 करोड़ का लागत वृद्धि हुई।

बारह राज्य उच्च पथों में से तीन के नमूना जाँच के क्रम में यह पाया गया कि डी.पी.आर. के दोषपूर्ण निर्माण के परिणामस्वरूप तीन रा.उ.पथ के कार्यों की लागत में ₹175.31 करोड़ की वृद्धि हुई जैसा कि नीचे चर्चा किया गया है:

- राज्य उच्चपथ–68 के कार्यों से संबंधित अभिलेखों की संवीक्षा के दौरान यह पाया गया कि डी.पी.आर. एवं मूल प्राक्कलन में रा.उ.प., गया के संरेखन में पड़नेवाले तीन पुलों के निर्माण के लिए ओपन फाउण्डेशन का प्रावधान किया गया था। तथापि, कार्य के क्रियान्वयन के दौरान, अभियंता के रूप में परियोजना प्रबंधन के लिए बि.रा.प.वि.नि. में लगे हुए निर्माण पर्यवेक्षण सलाहकार (नि.प.सला.) द्वारा वास्तविक क्षेत्र–सर्वेक्षण के आधार पर यह सुझाव दिया कि ओपन फाउण्डेशन को पाइल फाउण्डेशन से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। वैरिएशन समिति (सितम्बर 2011) द्वारा इंगित किया गया कि तीन पुलों के लिए, ओपन को पाइल फाउण्डेशन में बदलने के कारण मूल प्राक्कलन एवं डी.पी.आर. में बदलाव हुआ। समिति द्वारा रोड डिजाइन में परिवर्तन के कारण ₹ 75.11 लाख की लागत वृद्धि के साथ 546.5 मीटर की अंतर मात्रा को अनुमोदित किया गया। समिति द्वारा वास्तविक स्थल की स्थिति के अनुसार डिजाइन फ्रेम करने में विफल रहने के कारण डी.पी.आर. सलाहकार[6] के खिलाफ कारवाई करने के लिए प.नि.वि. को निर्देश दिया। हाँलांकि, डी.पी.आर. में कमी के कारण ₹ 75.11 लाख की लागत वृद्धि होने के बावजूद भी बि.रा.प. वि.नि. द्वारा अब तक कोई कार्रवाई (सितम्बर 2014) नहीं की गई थी।
- रा.उ.प.–69 के कार्य के संबंध में लेखापरीक्षा में पाया गया कि बी.ओ.क्यू के अनुसार मात्रा[7] की भारी भिन्नता के बारे में निर्माण पर्यवेक्षण सलाहकार द्वारा बताया गया, ₹ 7.56 करोड़ की राशि के कार्य के मात्राओं की विभिन्नता में वृद्धि वैरिएशन समिति (सितम्बर 2011) द्वारा स्वीकृत की गई एवं वास्तविक

---

6 *मेसर्स प्लानिंग एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर डेपलपमेंट कन्सलटेंट (पी.आई.डी.सी.), पटना, डी.पी.आर. के निर्माण हेतु बि.रा.प.बि.नि. द्वारा नियुक्त।*

7 *तटबंध : 405944 क्यूबिक मीटर; जी.एस.बी.: 169498 क्यूबिक मीटर; डब्ल्यू.एस.एम. 13615 क्युबिक मीटर; डी.बी.एम: 1607 क्यूबिक मीटर; बी.सी. 1789 क्यूबिक मीटर; डी.एल.सी.: 2169 क्यूबिक मीटर; पी.क्यू.सी. 4337 क्यूबिक मीटर।*

मात्रा के आँकलन में विफल रहने के कारण डी.पी.आर. सलाहकार के विरूद्ध प.नि.वि. को कार्रवाई करने का अनुरोध किया गया। हाँलांकि, डी.पी.आर. में त्रुटि के कारण ₹ 7.56 करोड़ की लागत वृद्धि होने के बाद भी बि.रा.प.वि.नि. द्वारा सितम्बर 2014 तक कोई कार्रवाई नहीं की गई।

- राज्य उच्चपथ–78 से संबंधित अभिलेखों की जाँच में प्रकट हुआ कि डी.पी.आर. सलाहकार[8] द्वारा तैयार डी.पी.आर. की समीक्षा नि.प.सला. द्वारा की गयी थी और उच्चपथ के डिजाईन में त्रुटि पायी गयी थी। वृहद्/लघु पुल डिजाईन दोषपूर्ण थे और पर्याप्त क्रॉस–ड्रेनेज की डी.पी.आर. में व्यवस्था नहीं की गई, जिससे योजना एवं प्रोफाइल, भूमि अधिग्रहण के अनुरूप नहीं था। इसके अलावा सरकारी भवन/स्कूलों के स्थानांतरण भी आवश्यक थे। इसलिए, पूरे खण्ड को भूमि अधिग्रहण की योजना के अनुरूप करने के लिए पुनः रूपांकित किया गया। इस प्रकार, वास्तविक आवश्यकता तथा कार्य स्थल के स्थान के अनुसार डी.पी.आर. का निर्माण नहीं किया गया। परिणामस्वरूप, रूपांकन में त्रुटि के सुधार के बाद प्राक्कलन को पुनर्रीक्षित कर ₹ 391 करोड़ (मूल संविदा मूल्य) से ₹ 558 करोड़ कर दिया गया जिससे ₹ 167 करोड़ की लागत वृद्धि हुई। हाँलांकि बि.रा.प.वि.नि. द्वारा अब तक (अक्टूबर 2014) डी.पी.आर. सलाहकारों के विरूद्ध कोई कार्रवाई आरंभ नहीं की गई।

विभाग द्वारा लेखापरीक्षा निष्कर्ष को स्वीकार किया गया (नवम्बर 2014) और बताया गया कि डी.पी.आर की दोषपूर्ण तैयारी के मामले को देखा जा रहा है और डी.पी.आर. सलाहकारों के खिलाफ उचित कार्रवाई आरंभ की जाएगी।

अनुशंसा: डी.पी.आर. एवं प्राक्कलनों का निर्माण वास्तविक स्थल के आवश्यकता के आधार पर उचित सर्वेक्षण और व्यवहार्यता अध्ययन के बाद तैयार किया जाना चाहिए जिससे कि अनुमोदित लागत के भीतर कार्य पूर्ण किया जा सके।

2.5.8.4 संवेदक से अपर्याप्त निष्पादन प्रतिभूति लेना

पाँच नमूना जाँचित परियोजना कार्यान्वयन इकाईयों में से एक में देखा गया कि संवेदक से ₹ 7.06 करोड़ की अतिरिक्त निष्पादन प्रतिभूति प्राप्त करने में बि.रा.प.वि.नि. विफल रहा, जैसा कि नीचे विवरणित हैः

संवेदक के साथ एकरारनामा की बीडरस के लिए निर्देश (आइ.टी.बी.) के उपबंध 36.5 सह–पठित उपबंध 42.1 के अनुसार, यदि न्यूनतम मूल्यांकित बीड बहुत ज्यादा असंतुलित है, तो नियोक्ता निष्पादन गारंटी की राशि में आनुपातिक वृद्धि (अतिरिक्त निष्पादन गारंटी के रूप में)[9] कर सकता है जिससे कि संवेदक द्वारा चूक किए जाने पर वित्तीय हानि से नियोक्ता को बचाया जा सके।

संवेदक से ₹ 7.06 करोड़ की अतिरिक्त निष्पादन प्रतिभूति प्राप्त नहीं किया गया

संवीक्षा के दौरान यह पाया गया कि रा.उ.प.–90 के लिए संविदा, बोली मूल्य से 9.5 प्रतिशत कम पर आवंटित की गई थी। ऐसे मामलों में बि.रा.प.वि.नि. द्वारा संवेदक से ₹ 7.06 करोड़ (एकरारनामा मूल्य के 3.5 प्रतिशत दर पर) का अतिरिक्त निष्पादन प्रतिभूति प्राप्त किया जाना चाहिए था। फिर भी बि.रा.प.वि.नि. अतिरिक्त निष्पादन सुरक्षा जमा लेने में विफल रहा। अवधि विस्तार की मंजूरी दिए जाने के बावजूद भी कार्य का निष्पादन बहुत धीमा था एवं एकरारनामा को मई 2014 में समाप्त कर दिया गया। यदि एकरारनामा के समय बि.रा.प.वि.नि. द्वारा अतिरिक्त निष्पादन सुरक्षा–जमा राशि प्राप्त

---

[8] *मेसर्स प्लानिंग एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलप्मेंट कन्सलटेंट (पी.आई.डी.सी.), पटना।*

[9] *प्राक्कलित राशि से 0 से 5 प्रतिशत कम पर @ 0.25 प्रतिशत, 5 से 10 प्रतिशत कम पर : @ 0.50 प्रतिशत तथा 10 से 15 प्रतिशत कम पर : @ एकरारित मूल्य का एक प्रतिशत।*

की गई होती तो संवेदक द्वारा धीमी गति से कार्य करने के कारण एकरारनामा निरस्त करने पर बि.रा.प.वि.नि. ₹ 7.06 करोड़ की गारंटी राशि की वसूली कर सकता था।

विभाग द्वारा जवाब दिया गया (नवम्बर 2014) कि अनुमोदित आई.टी.बी. दस्तावेज (उपबंध 36.5) के अनुसार नियोक्ता द्वारा इकाई दर विश्लेषण किया गया था और यह निष्कर्ष निकाला गया कि बोली असंतुलित एवं फ्रंट लोडेड थी। अतः बि.रा.प.वि.नि. ने ए.वि. बैंक को 10 प्रतिशत की नियमित निष्पादन गारंटी के अतिरिक्त 15 प्रतिशत अतिरिक्त निष्पादन गारंटी लेने की अनुशंसा की थी। यद्यपि ए.वि. बैंक इस बात से सहमत नहीं था कि यह मामला फ्रंट लोडेड/असंतुलित था। हाँलांकि ए.वि बैंक, द्वारा बि.रा.प.वि.नि. के प्रस्ताव की समीक्षा के लिए नियुक्त सलाहकार ने भी पाँच प्रतिशत अतिरिक्त निष्पादन गारंटी के लिए अंतिम सिफारिश की थी। सलाहकार की सिफारिश को ए.वि. बैंक ने मंजूरी नहीं दी ।

जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि गंभीर असंतुलित बीड के लिए संविदा में अतिरिक्त निष्पादन गारंटी के प्रावधान वाली संविदा को ए0वि0बैंक द्वारा पहले ही अनुमोदित कर दिया गया था एवं बि.रा.प.वि.नि. को उसे लागू करना था एवं जिसके लिए ए.वि. बैंक से नए अनुमोदन की आवश्यकता नहीं थी।

2.5.8.5 गुणवत्ता नियंत्रण

निर्माण पर्यवेक्षण सलाहकार (नि0प0सला0) परियोजना के अभियंता के रूप में कार्य करता है एवं परियोजना की देखरेख एवं गुणवत्ता आश्वासन एवं पर्यवेक्षण के लिए भी जिम्मेदार है। गुणवत्ता नियंत्रण के अंतर्गत नि.प.सला. सभी मिश्रित रूपांकनों तथा संवेदक द्वारा अपनाए गए गुणवत्ता नियंत्रण उपायों की समीक्षा के लिए जिम्मेदार है जिसमें, परीक्षण आवृत्तियों के अनुपालन के साथ गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली विकसित करना, कारीगरों के साथ निष्पादन के निरीक्षण एवं मॉर्स्थ (MoSRTH) तथा आई0आर0सी0 की विशिष्टियों की समीक्षा कार्य स्थल पर लायी गयी सामग्रियों की मंजूरी, स्वतंत्र प्रयोगशाला परीक्षण किया जाना एवं सभी परीक्षण कार्य के अभिलेख का अनुरक्षण शामिल है। इस प्रयोजन के लिए, सभी परीक्षण उपकरणों के साथ कार्य स्थल के प्रयोगशाला का गठन किया जाना एवं संबंधित नि.प.सला. को प्रभार सौंपना संवेदकों की जवाबदेही है।

गुणवत्ता नियंत्रण के उपायों से संबंधित 18 रा.उ.पथ में से 12 के अभिलेखों की जाँच में पाया गया कि संबंधित संवेदकों द्वारा 12 प्रयोगशालाओं में सभी आवश्यक उपकरण स्थापित कर दिए गए थे एवं कार्य के प्रारंभ होने से पूर्व ही संबंधित नि.प.सला. को प्रभार सौंप दिया गया था। मिश्रित डिजाइन के साथ–साथ सामग्रियों की गुणवत्ता का परीक्षण सुनिश्चित किया गया था जो प्रत्येक स्तर पर मॉर्स्थ (MoSRTH) एवं आई0आर0सी0 विशिष्टियों के अनुरूप सम्पादित था। जाँच रिपोर्ट में पाए त्रुटि का समापन नि.प.सला. द्वारा गुणवत्ता आश्वासन प्रमाण–पत्र जारी करने के उपरांत ही भुगतान किया गया था।

2.5.9 पथ निर्माण विभाग द्वारा सड़कों का रख रखाव

बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा निर्मित सभी राज्य उच्च पथों को पूरा होने के बाद पथ निर्माण विभाग को सौंप दिया जाना था। प.नि.वि. ने बिहार पथ आस्तियां अनुरक्षण नीति के तहत रा.उ.पथ का अनुरक्षण अगस्त 2013 से शुरू किया। राज्य के 4857 किमी रा.उ.पथ में से, 1916 किमी पाँच वर्षों की अवधि के लिए अनुरक्षण हेतु अगस्त 2013 में लिये गये। सभी रा.उ.पथ के लिए दोष दायित्व अवधि (दो.दा.अ.) कार्य समापन की तिथि से 12 महीनों के लिए थी एवं तत्पश्चात् अनुरक्षण की जिम्मेदारी प.नि.वि. की थी। बिहार पथ आस्तियाँ अनुरक्षण नीति, प.नि.वि. द्वारा फरवरी 2013 में यह सुनिश्चित करने के लिए लागू की गयी थी कि पूरे अनुबंध अवधि में सड़कों की भौतिक स्थिति

सड़क उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता के अनुरूप पर्याप्त हो। दीर्घकालीन निष्पादन आधारित पथ आस्तियाँ अनुरक्षण अनुबंध (ओ.पी.आर.एम.सी.) को सड़क परिसंपत्ति प्रबंधन और अनुरक्षण की दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए बनाया गया था। ओ.पी.आर.एम.सी. संविदाओं के अंतर्गत साधारण मरम्मति (सा.मर.), प्रारंभिक सुधार (प्रा. सु.), आवधिक अनुरक्षण (आ.अनु.), मामूली सुधार (मा.सु.) और आकस्मिक कार्य शामिल हैं। अनुरक्षण से संबंधित अभिलेखों की संवीक्षा के दौरान पाई गई कमियों की चर्चा आगे के अनुच्छेदों में की गयी है:

2.5.9.1 वि.रा.प.वि.नि द्वारा प.नि.वि. को पूरे किये गये रा.उ.पथ के हस्तांतरण में विलम्ब

बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प.नि.वि. को विलंब से पूर्ण रा.उ.प हस्तांतरण करने के कारण छः राज्य उच्च पथ ओ.पी.आर. एम.सी. से बाहर रहा

सात पूर्ण राज्य उच्च पथों में में से छः रा.उ.पथ (सातवाँ, रा.उ.पथ सं.–76 एन.एच. के रूप में 2013 में घोषित) के अनुरक्षण करने हेतु बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प.नि.वि. को सूचित (मार्च 2014) किया गया । हाँलांकि, लेखापरीक्षा संवीक्षा के दौरान पाया गया कि बि.रा. प.वि.नि. द्वारा इनके पूर्ण होने के तुरंत बाद हस्तांतरित न कर, इनके पूर्ण होने के एक वर्ष के उपरांत आदेश जारी कर किया गया क्योंकि वे संचालन, अनुरक्षण एवं हस्तांतरण नीति के तहत् इन सड़कों के अनुरक्षण के लिए निविदाओं को अंतिम रूप देने में विफल रहे थे। परिणामतः ये रा.उ.पथ फरवरी 2013 में प्रारंभ किए गए ओ.पी. आर.एम.सी. के तहत् शामिल नहीं किए जा सके थे। इन सभी सड़कों की दोष दायित्व अवधि भी समाप्त हो गई थी और इसके परिणामस्वरूप ये सड़क पथ निर्माण विभाग के अनुरक्षण नीति से बाहर रहे।

विभाग द्वारा स्वीकार (नवम्बर 2014) किया गया कि बि.रा.प.वि.नि. द्वारा पूर्ण रा.उ.पथ को प.नि.वि. को हस्तांतरित करने में विलम्ब हुआ। ऐसा केवल अभियंता–प्रमुख, प.नि.वि. द्वारा जुलाई 2014 में निर्गत आदेश के आलोक में किया गया था।

2.5.9.2 अनुरक्षण कार्य का अनियमित आबंटन

मॉडल बिडिंग डॉक्यूमेंट[10] (मॉ.बि.डॉ.) के भाग 1 के खंड़–1 निविदादाताओं को निर्देश की कंडिका 27.4.2 (निविदा का मूल्यांकन) के अनुसार, यदि किसी एक वर्ष के आवधिक अनुरक्षण मुल्य पूरे आवधिक मूल्य के 35 प्रतिशत से अधिक का हो, तो बीड को गंभीर असंतुलित माना जाएगा एवं अस्वीकार कर दिया जाएगा।

पथ प्रमंडल, पूर्णियाँ के अभिलेखों की संवीक्षा से प्रकटित हुआ कि ओ पी आर एम सी–32 (रा.उ.प.–65 एवं नौ अन्य पथ) का कार्य, तकनीकि एवं वित्तीय बीडों के मूल्यांकन/अनुमोदन के उपरांत सबसे कम बोली लगाने वाले एजेंसी (मेसर्स टॉपलाईन इन्फ्रा प्रोजेक्टस प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता) को आवंटित किया गया था। हाँलांकि, एजेंसी द्वारा प्रस्तुत बीड के अनुसार, संविदा के पहले वर्ष में आवधिक अनुरक्षण के कार्य का मूल्य पूरे आवधिक अनुरक्षण के मूल्य का 42 प्रतिशत था, जैसा कि नीचे **तालिका 2.5.3** में दिया गया है:

तालिका 2.5.3: निम्नतम बोली का ब्यौरा

(₹ करोड़ में)

आवधिक अनुरक्षण कार्य का विवरण	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तीसरा वर्ष	चौथा वर्ष	कुल
मूल्य	10.55	1.95	4.95	7.73	**25.18**
प्रतिशतता में मूल्य	42	8	19	31	**100**

(स्रोत : पथ निर्माण प्रमंडल, पूर्णियाँ द्वारा सूचना प्रदत)

10 *ओ.पी.आर.एम.सी. के अंतर्गत मॉ.बि.डॉ., उपबंधों का संग्रह तथा संविदाओं की बोली हेतु दस्तावेज है।*

बीड के गलत मूल्यांकन के कारण ₹ 34.07 करोड़ का अनियमित कार्याबंटन हुआ

अतः बीड मूल्यांकन के लिए संविदा की शर्त्तों के प्रावधानों के अनुसार मेसर्स टॉपलाइन इन्फ्रा प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता का बीड अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए था। बीड के गलत मूल्यांकन के कारण एवं बीड के अस्वीकार नहीं किए जाने के कारण ₹ 34.07 करोड़ का अनियमित कार्याबंटन हुआ।

विभाग ने जवाब (नवम्बर 2014) दिया कि विभिन्न वर्षो में संविदा के प्रदान करने के समय आवधिक अनुरक्षण के प्रस्ताव को पुनः व्यवस्थित किया गया था। जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि बीड के तकनीकी एवं वित्तीय मूल्यांकन के समय ही उसे रद्द कर दिया जाना चाहिए था।

बिहार लोक कार्य विभागीय संहिता के नियम 126 के अनुसार सक्षम प्राधिकारी से तकनीकी स्वीकृति (त.स्वी.) प्राप्त किए बगैर अभिकरण के साथ अनुबंध निष्पादित नहीं किया जाना चाहिए। पुनः निविदादाताओं को निर्देश के उपबंध 27.5 के अनुसार प्रारंभिक सुधार, आवधिक अनुरक्षण, मामूली सुधार और/या साधारण अनुरक्षण कार्य का मूल्य बीड डाटा शीट (बी.डा.शीट) में अंकित तय सीमा (थ्रेशोल्ड) से कम/अधिक नहीं होना चाहिए। पुनः बी.डा.शीट के अनुसार प्रारंभिक सुधार, आवधिक अनुरक्षण, एवं मामूली सुधार कार्य (प्रारंभिक सुधार+आवधिक अनुरक्षण+मामूली सुधार) की प्राक्कलित राशि, सभी कर एवं एवं सेस सहित, प्राक्कलित राशि से पाँच प्रतिशत से अधिक एवं (प्रारंभिक सुधार+आवधिक अनुरक्षण+मामूली सुधार+साधारण मरम्मति) सभी कर एवं सेस सहित प्राक्कलित राशि से दस प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। हाँलांकि बीड की निम्न सीमा प्राक्कलित राशि से 15 प्रतिशत नीचे तक होगी।

₹ 117.41 करोड़ की चार संविदाएँ तकनीकी स्वीकृति प्राप्त किए बगैर आबंटित की गई

तीन पथ प्रमण्डलों[11] के अभिलेखों की संवीक्षा के दौरान प्रकटित हुआ कि विभागीय निविदा समिति (वि.नि.स.) द्वारा नवम्बर 2013 में चार पैकेजों के बीडों का मूल्यांकन किया गया था जबकि निविदादाताओं के चयन होने तक सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्राक्कलन की तकनीकी स्वीकृति नहीं प्रदान की गई थी। पुनः निविदादाताओं को यह अंकित करते हुए सफल घोषित किया गया कि उनके द्वारा उल्लेखित दरें आइ.टी.बी. एवं बी.डा.शीट में अंकित तय सीमा (थ्रेशोल्ड लिमिट) के अंतर्गत हैं, जबकि उसके पूर्व ना ही प्राक्कलन तैयार था और ना ही प्राक्कलन की तकनीकी स्वीकृति प्रदान की गई थी। इस प्रकार बि.लो.का.वि. संहिता के प्रावधानों के विपरीत, ₹ 117.41 करोड़ के चार अनुबंध तकनीकी स्वीकृति प्राप्त किए बगैर नवम्बर 2013 में आबंटित किए गए एवं उनका एकरारनामा भी बिना तकनीकी स्वीकृति के किया गया। ब्यौरा नीचे **तालिका 2.5.4** में दिया गया है:

तालिका 2.5.4: तकनीकि स्वीकृति के बिना आबंटित अनुबंध की विवरणी

प्रमण्डल का नाम	पैकेज संख्या	एकरारनामा की राशि (₹करोड़ में)	कार्यावंटन की तिथि	तकनीकी स्वीकृति की तिथि
प.नि.प्र., भागलपुर	46ए/ओपीआरएमसी	23.74	नवम्बर 2013	01/04/2014
प.नि.प्र., सुपौल	22/ओपीआरएमसी	28.74	नवम्बर 2013	24/01/2014
प.नि.प्र., सुपौल	23/ओपीआरएमसी	31.78	नवम्बर 2013	24/01/2014
प.नि.प्र., नवादा	75/ओपीआरएमसी	33.15	नवम्बर 2013	जूलाई 2014 तक स्वीकृत नहीं
योग		**117.41**		

(स्रोत : संबंधित पथ निर्माण प्रमंडल द्वारा सूचना प्रदत्त)

[11] *भागलपुर, नवादा और सुपौल*

विभाग द्वारा लेखापरीक्षा निष्कर्ष को स्वीकार किया गया (नवम्बर 2014) एवं कहा गया कि विभागीय निविदा समिति द्वारा चारों पैकेजों का कार्याबंटन नवम्बर 2013 में किया गया एवं इनकी तकनीकी स्वीकृति जनवरी से अक्टुबर 2014 के दौरान प्रदान की गई थी।

अनुशंसाः संहिता के प्रावधानों के अनुरूप प.नि.वि. द्वारा संविदा आबंटन से पूर्व प्राक्कलनों की तकनीकी स्वीकृति का लिया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

2.5.9.3 दोष-दायित्व अवधि में कार्य का निष्पादन

मॉडल बीडिंग डॉक्यूमेंट (मॉ.बी.डॉ.) के प्रावधानों के अनुसार दोष–दायित्व (दो0दा0अ0) अवधि के अंतर्गत आने वाली सड़कों का अनुरक्षण मूल संवेदक द्वारा ही किया जाना चाहिए था तथा स्ट्रेच दो.दा.अ. के अंर्तगत आने वाले विस्तारों में नये अभिकरण द्वारा कोई भी कार्य नहीं किया जाना चाहिए।

कार्य पर ₹ 1.20 करोड़ का अनधिकृत भुगतान दोष–दायित्व अवधि में किया गया

पथ निर्माण प्रमण्डल, भागलपुर के अभिलेखों के जाँच के दौरान प्रकटित हुआ कि सुल्तानगंज–तारापुर रोड (0.00 से 6 किमी) का निर्माण सी0पी0डब्लू0डी0 द्वारा किया गया था। सड़क 20 मई 2013 को पूर्ण हुआ था एवं दो.दा.अ. 19 मई 2014 तक था। हाँलांकि, सड़क के उपरोक्त खण्ड में प्रारंभिक सुधार/मामूली सुधार कार्य के तहत ओ.पी.आर.एम.सी. पैकेज 46 ए के अंतर्गत ₹ 1.20 करोड़ व्यय किए गए थे। इस प्रकार प.नि.वि. द्वारा अनधिकृत रूप से ₹ 1.20 करोड़ का भुगतान संवेदक को किया गया।

विभाग द्वारा उत्तर दिया गया (नवम्बर 2014) कि 98.865 कि.मी. की पूरी सड़क मुख्य रूप से मार्च 2010 में ही पूर्ण कर ली गई थी एवं संबंधित कार्यपालक अभियंताओं द्वारा जून से दिसंबर 2012 के बीच प्रभार ले लिया गया था और बाँका जिले में छोटा सा खण्ड (190 मीटर) भूमि विवाद एवं भूमि अधिग्रहण की समस्या के कारण पूरा नहीं किया जा सका था।

जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि सड़क के प्रभार देने/लेने के प्रतिवेदन में सड़क के पूर्ण होने के तिथि मई 2013 एवं दो.दा.अ. 19 मई 2014 अंकित थी तथा सड़क के पूर्ण रूप से बनने के बाद ही प.नि.वि. द्वारा ली जा सकती थी।

2.5.9.4 आवधिक अनुरक्षण कार्य पर अनधिकृत व्यय

अट्ठारह नमूना जाँचित प्रमण्डलों में सें दो के ओ.पी.आर.एम.सी. से संबंधित अभिलेखों की जाँच से प्रकटित हुआ कि प.नि.वि. द्वारा आवधिक अनुरक्षण कार्य पर ₹ 13.29 करोड़ का अनधिकृत व्यय किया गया जैसा कि नीचे अंकित हैः

मॉ.बि.डॉ के भाग–E के खंड–V के अनुसार आवधिक अनुरक्षण कार्य में केवल 25 मिमी सेमी डेन्स बिटुमिनस कंक्रीट (एस.डी.बी.सी.) का प्रावधान है। ओ.पी.आर.एम.सी. में बिटुमिनस मेकाडम (बी.एम.) का प्रावधान नहीं था।

संविदा के कार्य–क्षेत्र से इतर कार्यों पर ₹ 6.26 करोड़ का अनधिकृत भुगतान किया गया

अभिलेखों के संवीक्षा से प्रकटित हुआ कि ओपीआरएमसी (पैकेज सं. 53) के अंतर्गत रा. उ.पथ (आरा–सासाराम : 48.31 कि.मी.) का अनुरक्षण किया गया था। तथापि, संविदा की शर्त्तों के विपरीत 25 मिमी एस.डी.बी.सी. परत के अतिरिक्त 50 मिमी बी.एम. का एक अतिरिक्त परत का प्रावधान किया गया था। पुनः, 17.28 कि.मी. पथ में आवधिक अनुरक्षण का कार्य किया गया था जिसके लिए ₹ 10.01 करोड़ का भुगतान किया गया था जिसमें से ₹ 6.26 करोड़ का भुगतान बी.एम. के अतिरिक्त परत के लिए किया गया था इस प्रकार ओ.पी.आर.एम.सी. के कार्य के दायरे के बाहर बी.एम. कार्य का प्रावधान किए जाने से ₹ 6.26 करोड़ का अनधिकृत भुगतान किया गया।

विभाग ने उत्तर दिया (नवम्बर 2014) कि डी.पी.आर. तैयार करते समय सड़क की खराब स्थिति के कारण बी.एम. का प्रावधान किया गया था। जवाब मान्य नहीं था क्योंकि ओ.पी.आर.एम.सी. संविदा में बी.एम. का कोई प्रावधान नहीं था।

मॉ.बि.डॉ. के खंड V, उपबंध बी 4, मद संख्या 2.1 (ब एवं स) के अनुसार जब किसी पथ के किसी भाग की मरम्मति प्रारंभिक सुधार (आइ.आर.) के अंतर्गत की जा रही हो एवं उसकी आवधिक अनुरक्षण के अंतर्गत भी मरम्मति किया जाना निर्धारित हो तो आवधिक अनुरक्षण के अंतर्गत एस.डी.बी.सी. बिटुमिनस कार्य किए जाने के कम से कम एक माह पूर्व सभी विनियमन कार्य कर लिये जाने चाहिए। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि किसी पथांश में प्रारंभिक सुधार एवं आवधिक अनुरक्षण एक माह के अंदर एक ही विस्तार में नहीं किया जा सकता।

संविदा के प्रावधानों के विपरीत ₹ 7.12 करोड़ का अनियमित भुगतान

पूर्णियाँ के अभिलेखों (ओ.पी.आर.एम.सी. पैकेज सं. 32) की जाँच से प्रकटित हुआ कि मॉ.बि.डॉ. के प्रावधानों के विपरीत पूर्णियाँ–धमदाहा–रूपौली–टीकापट्टी पथ (रा.उ.पथ सं. 65) के 28.489 किमी पथांश में प्रारंभिक सुधार एवं आवधिक अनुरक्षण संबंधी कार्य एक साथ कराए गए। इससे ₹ 7.12 करोड़ का अनियमित भुगतान हुआ।

विभाग ने उत्तर दिया (नवम्बर 2014) कि प्रारंभिक सुधार कार्य पूर्ण होने के उपरांत ही आवधिक अनुरक्षण संबंधी कार्य किए गए। जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि मापी–पुस्तिका में किए गए प्रविष्टियों से स्पष्ट था कि दोनों कार्य, मॉ.बि.डॉ. का उल्लंघन करते हुए एक साथ कराए गए थे।

अनुशंसा: पथ निर्माण विभाग को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सड़कों का नियमित अनुरक्षण सुनिश्चित करने के लिए पूर्ण सड़कों को यथाशीघ्र हस्तांतरित किया जाए। पथ निर्माण विभाग को राज्य उच्च पथों का अनुरक्षण सुनियोजित तरीके से करना चाहिए।

2.5.10 अनुश्रवण

एक प्रभावी अनुश्रवण एवं मूल्यांकन प्रणाली परियोजना के ससमय पूर्ण किए जाने का महत्वपूर्ण कारक है। इस प्रयोजन के लिए सचिव, पथ निर्माण विभाग की अध्यक्षता में एक निगरानी सेल था जिसमें बि.रा.प.वि.नि., जो बिहार के रा.उ.पथ के निर्माण के लिए जिम्मेदार है, के प्रतिनिधि भी शामिल थे। प्रगतिशील निर्माण कार्यों की निगरानी के लिए बैठक प्रत्येक माह में आयोजित की गई थी और निष्पादन के दौरान प्रगति के साथ ही आसन्न समस्याओं पर चर्चा और पहचान भी की गई थी। सचिव, प.नि.वि. द्वारा बैठकों में लिए गए निर्णय के अनुसार उठाए जाने वाले आवश्यक कदम संबंधित कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ–साथ बि.रा.प.वि.नि/प.नि.वि. को सूचित किए गए थे। विभाग के पास अलग से कोई कृत–कारवाई प्रतिवेदन नहीं था। हाँलांकि, बहिर्गमन सम्मेलन (नवम्बर 2014) के दौरान विभाग द्वारा कहा गया कि समीक्षा बैठक में जारी दिशा–निर्देशों का अनुश्रवण नियमित रूप से आगामी बैठकों में किया गया था।

2.5.11 निष्कर्ष

- मार्च 2006 में माननीय मुख्यमंत्री के निर्देशों एवं सितम्बर 2009 में माननीय मंत्री, पथ निर्माण विभाग द्वारा नियमों के अनुमोदन के बावजूद पथों को राज्य उच्च पथ के रूप में वर्गीकरण के लिए मानदंड अधिसूचित करने में प.नि.वि. विफल रहा। फरवरी 2008 से अगस्त 2011 के दौरान घोषित राज्य उच्च पथ पूर्ण–रूपेण सांसदों/विधायकों की अनुशंसाओं पर आधारित थे;
- कार्य की धीमी प्रगति के कारण बि.रा.प.वि.नि. द्वारा बि.रा.उ.प.परि. के चरण–II में किए गए व्यय के विरूद्ध प्रतिपूर्ति-दावा, स्वीकृत ऋण का मात्र 40 प्रतिशत था। कार्य पूर्ण करने की समयावधि के 84 प्रतिशत (55 माह में से 46 माह)

व्यतीत हो जाने के उपरांत भी सितम्बर 2014 तक प.नि.वि. द्वारा जारी की गई राशि का मात्र 38 प्रतिशत ही बि.रा.प.वि.नि. द्वारा उपयोग किया गया था;

- सरकार द्वारा निर्माण हेतु पर्याप्त तथा ससमय निधि उपलब्ध करा देने के बावजूद 12 नमूना जाँचित रा.उ.पथ में से दो का कार्य बि.रा.प.वि.नि. द्वारा पूर्ण नहीं किया जा सका। इन कार्यों में भूमि अधिग्रहण नहीं होने, उपयोगिताओं का स्थानान्तरण नहीं किए जाने आदि, जो प.नि.वि. की जिम्मेदारी थी, के कारण दो वर्षों से अधिक का विलंब हुआ;
- राज्य उच्च पथ–68 रा.उ.प.–69 एवं रा.उ.प.–78 के डी.पी.आर. वास्तविक स्थल स्थिति के अनुसार नहीं बनाए गए परिणामस्वरूप परियोजना की लागत में वृद्धि हुई; तथा
- पूर्ण रा.उ.पथ को बि.रा.प.वि.नि. द्वारा प.नि.वि. को विलम्ब से हस्तांतरण किए जाने के परिणामस्वरूप इन्हें ओ.पी.आर.एम.सी. के अंतर्गत नहीं लिया जा सका। परिणामस्वरूप रा.उ.पथ का अनुरक्षण सुनियोजित तरीके से नहीं हो सका क्योंकि बि.रा.प.वि.नि. द्वारा संचालन, अनुरक्षण एवं हस्तांतरण नीति तैयार करने में विलम्ब हुआ।

गृह विभाग

2.6 *'क्राईम एवं क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क और सिस्टम' पर दीर्घ कंडिका*

2.6.1 परिचय

राष्ट्रीय ई–शासन योजना के अंतर्गत गृह मंत्रालय (एमएचए) भारत सरकार (भा0स0) ने पुलिस बल के आधुनिकीकरण के लिए क्राईम एवं क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क और सिस्टम (सीसीटीएनएस) की परिकल्पना (जून 2009) किया। सीसीटीएनएस का उद्देश्य ई–शासन के सिद्धान्तों को अपनाते हुए सभी स्तरों पर पुलिस बल की कार्यकुशलता और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए, विशेष रूप से थाना स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के विकाश के लिए राज्य के अत्याधुनिक ट्रैकिंग प्रणाली की स्थापना के साथ एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क के बुनियादी ढ़ाचें के निर्माण का था।

सीसीटीएनएस परियोजना में राज्य के भीतर, विभिन्न स्तरों पर पुलिस इकाईयों को राज्य मुख्यालय और राज्य अपराध रेकार्ड ब्यूरो (एससीआरबी) से भारत सरकार के स्तर पर राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) को जोड़ना और पुलिस के कार्यो को राज्य एवं केन्द्र से बाहरी संस्थाओं को जोड़ना था। सीसीटीएनएस, नागरिकों को बुनियादी सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक सिटीजन इंटरफेस भी उपलब्ध कराता है।

2.6.2 लेखापरीक्षा का उद्देश्य

लेखापरीक्षा का उद्देश्य जाँच करने के लिए था कि क्या:

- जाँच पड़ताल के लिए संवर्धित आई0टी0 उपकरण, अपराध की रोकथाम, कानून और व्यवस्था का रखरखाव और अन्य कार्य जैसे यातायात प्रबंधन, आपातकालीन प्रतिक्रिया आदि उपलब्ध हैं एवं उनका उपयोग किया गया था;
- हस्तचालित और एक ही कार्यो को बार–बार किये जाने की प्रक्रिया में कमी के द्वारा परिचालन क्षमता में वृद्धि प्राप्त किया गया था;
- वास्तविक समय के आधार पर राज्य और केन्द्रीय स्तर पर देश भर में अपराध और अपराधियों से संबंधित डेटाबेस की साझीदारी प्राप्त किया गया था; और
- सार्वजनिक और अन्य हितधारको के लिए सेवा प्रदान करने में सुधार किया गया था।

2.6.3 कार्य क्षेत्र और पद्धति

सीसीटीएनएस पर दीर्घ कंडिका में अवधि 2009–14 के दौरान इस योजना के तहत गतिविधियों को आच्छादित किया गया। लेखापरीक्षा के दौरान, गृह विभाग (विभाग), बिहार सरकार (बि0स0) नोडल अधिकारी सीसीटीएनएस–सह–पुलिस महानिरीक्षक, एससीआरबी, राज्य मनोनीत एजेन्सी (एसडीए), सिस्टम इन्टीग्रेटर (एसआई) और दो जिले[1] (जहाँ यह योजना पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू की जा रही थी) के अभिलेखों की नमूना जाँच की गयी थी। लेखापरीक्षा मई से जूलाई 2014 तक आयोजित की गयी थी। लेखापरीक्षा के पूरा होने पर विभाग के प्रधान सचिव के साथ सितम्बर 2014 में बहिर्गमन बैठक आयोजित किया गया और उनके द्वारा व्यक्त विचारों को प्रतिवेदन को संतुलित करने के लिए उपयुक्त स्थान पर शामिल किया गया।

2.6.4 परियोजना का आच्छादन

एमएचए, भा0स0 और बि0स0 के बीच राज्य में सीसीटीएनएस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए एक समझौता ज्ञापन (एम0ओ0यू0) हस्ताक्षर (सितम्बर 2009) किये गये थे।

---

[1] *भागलपुर एवं पटना।*

समझौता ज्ञापन के अनुसार बि0स0 राज्य में सीसीटीएनएस के सफल और समयबद्ध कार्यान्वयन के लिए और बाहरी एजेन्सीयों के साथ इसके इन्टरफेस के लिए जिम्मेदार था। इसके लिए बिहार सरकार ने आवश्यक जनशक्ति और संसाधनों के आवंटन के द्वारा और गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उपलब्ध करायी गयी कार्यान्वयन दिशानिर्देशों के अनुसार सीसीटीएनएस का शासन संरचना तैयार करने में प्रभावी ढंग से जिम्मेदारी का निर्वहन करने की सहमति और आश्वासन दिया। बिहार राज्य में सीसीटीएनएस योजना सभी 887 पुलिस थानों, 192 हलकों, 122 अनुमंडलों, 44 पुलिस जिलों ***(परिशिष्ट–2.6.1)***, 12 रेन्जों, पाँच क्षेत्रों, एससीआरबी, बिहार पुलिस अकादमी और पुलिस मुख्यालय तक फैला है। अन्य इन्टरफेस में नागरिक, बाहरी कार्यालय जैसे–जेल, कोर्ट और फॉरेन्सिक विज्ञान प्रयोगशाला शामिल है।

सीसीटीएनएस योजना समझौते की तिथि (17 अक्टूबर 2012) से 55 सप्ताह के भीतर पूरा किया जाना था और परियोजना के घटक में साईट की तैयारी, डाटा सेन्टर (डीसी) और आपदा रिकवरी सेन्टर (डीआरसी) में बुनियादी ढ़ाचें की स्थापना, हार्डवेयर वितरण, 'कोर' एप्लीकेशन साफ्टवेयर (कास) का कस्टमाईजेशन, डाटा डिजिटाईजेशन और पुराने डाटे का माइग्रेशन, क्षमता निर्माण ,नेटवर्क कनेक्टिविटी, निगरानी और प्रदर्शन का मूल्यांकन शामिल था।

अभिलेखों की समीक्षा से पता चला कि सितम्बर 2014 तक सीसीटीएनएस के कोई भी घटक ***(परिशिष्ट 2.6.2)*** पूरे नहीं किए गए थे। इस परियोजना के पूरा नहीं होने के कारणों की चर्चा आगे की कंडिकाओं में की गई है:–

2.6.5 *लेखापरीक्षा निष्कर्ष*

2.6.5.1 वित्तीय प्रबंधन

सीसीटीएनएस योजना पूरी तरह भा0स0 द्वारा प्रायोजित होने के कारण राज्य को कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक धन प्रदान करना था जैसे–निर्माण लागत, नागरिक बुनियादी सुविधाओं, मानवश्रम लागत, आवर्ती और परिचालन लागत। आगे, योजना अवधि 2011–12 के बाद पूंजीगत और आवर्ती लागत राज्य द्वारा वहन किया जाना था। राज्य को निधि की विमुक्ति, परियोजना के कार्यान्वयन और पूर्व निर्धारित माईलस्टोन की उपलब्धि से जुड़ा हुआ था। एसडीए को निधियों की विमुक्ति के लिए एक चैनल के रूप में सेवा प्रदान करना था।

- ***आवंटन और निधियों का उपयोग***

सीसीटीएनएस के तहत वर्ष 2009–14 के दौरान निधियों का आवंटन और उपयोग नीचे **तालिका 2.6.1** में दिया गया है:

तालिका 2.6.1: निधियों का आवंटन एवं व्यय

(₹ करोड़ में)

वर्ष	पूर्व शेष	भा0 स0 द्वारा विमुक्त निधियाँ	अन्य प्राप्तियाँ (ब्याज / निविदा शुल्क आदि)	कुल उपलब्ध निधियाँ	व्यय	शेष निधि
2009-10	0	4.90	00.00	4.90	0.00	4.90
2010-11	4.90	9.69	0.42	15.01	0.00	15.01
2011-12	15.00	6.03	1.10	22.14	2.44	19.70
2012-13	19.70	5.23	1.52	26.45	3.04	23.41
2013-14	23.41	00.00	1.25	24.66	0.90	23.76
	योग	**25.85**	**4.29**		**6.38**	

(स्रोतः एसडीए द्वारा दी गई जानकारी)

उपलब्ध निधि का चौथाई हिस्सा ही उपयोग किया जा सका तथा बचे हुए निधि का 80 प्रतिशत भाग को सावधि तथा बचत खाता में रखा गया।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि इस योजना के तहत उपलब्ध निधि का केवल एक चौथाई भाग का हीं उपयोग किया जा सका था। भारत सरकार द्वारा जारी निर्देशों का उल्लंघन करते हुए विभाग द्वारा उपलब्ध निधि का 84 प्रतिशत राशि (वर्ष 2013–14 तक उपलब्ध निधि ₹ 23.76 करोड़ में से ₹ 20.02 करोड़) सावधि जमा और बचत खातों के रूप में अवरूद्ध कर रखा गया था। परिणामस्वरूप भा0स0 ने शेष राशि[2] ₹ 33.81 करोड़ निर्गत नहीं किया क्योंकि राज्य को अनुवर्ती निधि के आवंटन हेतु प्रत्येक गतिविधि के लिए अपेक्षित उपयोगिता प्रमाण पत्र (यूसी) उपलब्ध कराना जरूरी था।

जवाब में एसडीए ने कहा (सितम्बर 2014) कि केवल ₹ 6.38 करोड़ का उपयोगिता प्रमाण–पत्र गृह विभाग को भेजा गया था।

- ***परियोजना कार्यान्वयन के लिए अनियमित भुगतान***

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी राज्य के लिए कार्यान्वयन दिशानिर्देशों के अनुसार, राजकीय मिशन टीम, परियोजना के परिचालन, परियोजना प्रस्ताव तैयार करने, हार्डवेयर रौल आउट और कार्यारंभ, विभिन्न एजेन्सीयों के साथ समन्वय, सभी सॉफ्टवेयर से संबंधित मामलों का अनुकुलन सहित संकल्प, परियोजना विकाश के लिए अन्य सभी बाधाओं का संकल्प और परियोजना के तीव्र कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए कोई अन्य निर्णय के लिए जिम्मेवार होगा। जिला मिशन टीम साइट तैयार करने और सभी उपयोगी अवयवों की उपलब्धता, जिले के सभी पुलिस कर्मियों के प्रशिक्षण, परियोजना के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की स्थापना और संचालन सुनिश्चित करने और प्रत्येक चयनित पुलिस स्टेशनों में परियोजना के उचित रौल आउट के लिए जिम्मेदार होगा।

सीसीटीएनएस परियोजना को कार्यान्वित करने में निधि को भारत सरकार से राज्य और राज्य सरकार से भेन्डर को धन के हस्तांतरण के लिए एक चैनल के रूप में एसडीए काम करेगा। गृह विभाग, बिहार सरकार द्वारा राज्य मिशन टीम एवं जिला मिशन टीम की स्थापना (अक्टूबर 2009)[3] की गयी और सीसीटीएनएस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए एसडीए के रूप में बिहार राज्य इलेक्ट्रोनिक्स विकास निगम (बीएसईडीसी) को नामित किया गया था।

परियोजना के दिशानिर्देश के विरूद्ध परियोजना हैडलिंग शुल्क के रूप में ₹ 4.85 करोड़ की स्वीकृति

यह देखा गया कि, सितम्बर 2012 में आयोजित राज्य इम्पार्वड समिति की बैठक के अनुसार परियोजना के कार्यान्वयन के लिए राजकीय मिशन टीम के स्थान पर मे0 बीएसईडीसी को एसआई यानी मेसर्स आईटीआई लिमिटेड (मेसर्स वयम टेक्नोलॉजी लिमिटेड के साथ संघ में) के साथ एकरारनामा पर हस्ताक्षर के लिए अधिकृत किया था। उसी आधार पर अक्टूबर 2012 में राजकीय मिशन टीम के स्थान पर मेसर्स बीएसईडीसी (एसडीए) के साथ गृह मंत्रालय के कार्यान्वयन दिशानिर्देशों की अनदेखी करते हुए एकरारनामा पर हस्ताक्षर किया गया। इसके लिए एसडीए ने ₹ 4.85 करोड़ (कुल परियोजना लागत का सात प्रतिशत) की माँग परियोजना हैन्डलिंग शुल्क के रूप में किया और बिहार सरकार द्वारा राशि की मंजूरी दे दी गयी।

जवाब में सीसीटीएनएस नोडल अधिकारी सह पुलिस महानिरीक्षक ने कहा कि (अगस्त 2014) परियोजना के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी बिहार सरकार द्वारा एसडीए को सौपा गया था। जबकि एसडीए ने स्वीकार करते हुए कहा कि (सितम्बर 2014) गृह मंत्रालय, भा0स0 द्वारा जारी क्रियान्वयन दिशानिर्देशों में सेवा शुल्क के लिए प्रावधान नहीं था। जबकि बि0 स0 द्वारा सेवा शुल्क अनुमोदित किया गया।

---

[2] *(स्वीकृत राशि ₹ 59.66 करोड़) – (विमुक्त राशिः ₹ 25.85 करोड़) = ₹ 33.81 करोड़*

[3] *संकल्प संख्या 6792*

2.6.6 परियोजना का क्रियान्वयन

2.6.6.1 सीसीटीएनएस साइटों का कार्यारंभ नहीं किया जाना

सीसीटीएनएस के कार्यान्वयन के लिए प्रस्ताव के अनुरोध (आरएफपी) के अनुसार एसआई, सीसीटीएनएस साईट की बुनियादी सुविधाओं को सक्षम करने के लिए आवश्यक सभी गतिविधियों को क्लाईन्ट साइट स्थानों को आच्छादित करने के लिए तैयार करेगा। क्लाईन्ट साइट स्थान में पुलिस स्टेशन, अंचल कार्यालय, क्षेत्र रेन्ज कार्यालय, एससीआरबी, अनुमंडल पुलिस कार्यालय, जिला मुख्यालय, राज्य मुख्यालय और पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र शामिल होगें। एसआई को सभी पायलट जिलों में समझौते पर हस्ताक्षर (17 अक्टूबर 2012) किये जाने की तारीख से क्लाईन्ट साइटस को 25 सप्ताह (07 अप्रैल 2013) के भीतर और सभी साइटों को 55 सप्ताह के भीतर (05 नवम्बर 2013) तैयार करना था।

कई अवधि विस्तार देने के उपरांत भी एस आई द्वारा सीसीटीएनएस साइटो का कार्यारंभ नहीं किया जा सके

नमूना जाँच में यह देखा गया कि एसडीए ने उपरोक्त कार्य के लिए एसआई के साथ एक समझौता हस्ताक्षर (अक्टूबर 2012) किया। विभाग ने एसआई को साईट के कार्यारंभ के लिए ₹ 2.77 करोड़ अग्रिम के रूप में भुगतान किया और कई बार अवधि विस्तार (छह बार) दिया था लेकिन एसआई आंशिक रूप से केवल 251 साइट ही तैयार (अक्टूबर 2013) कर सका था। प्रमाणीकरण के दौरान, बि0 स0 द्वारा सीसीटीएनएस परियोजना की निगरानी के लिए नियुक्त राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई (एसपीएमयू) ने पाया कि साइट समझौते के अनुसार तैयार नहीं थे। इसलिए, एसआई परियोजना के कार्यान्वयन में तेजी लाने के निर्देश दिये थे लेकिन एसआई ने इस संबंध में कोई कार्रवाई नहीं की थी। अंत में एसडीए ने एसआई के साथ समझौते को रद्द (जुलाई 2014) कर दिया। परिणामस्वरूप, सीसीटीएनएस के कार्य शुरू नहीं किये जा सके क्योंकि सीसीटीएनएस के सभी परिचालन, साइट की तैयारी पर निर्भर था।

जवाब में सीसीटीएनएस नोडल अधिकारी सह पुलिस महानिरीक्षक ने तथ्य को स्वीकार करते हुए कहा कि (अगस्त 2014) एसआई के खराब प्रदर्शन को देखते हुए उसका अनुबंध समाप्त कर दिया गया।

अनुशंसाः विभाग अविलम्ब सीसीटीएनएस स्थानों पर बुनियादी सुविधाओं की स्थापना करें।

2.6.6.2 राज्य डाटा केन्द्र और आपदा वसूली केन्द्र पर कार्यारंभ नहीं किया जाना

प्रस्ताव के अनुरोध के अनुसार, राज्य को प्राथमिक डाटा केन्द्र और आपदा वसूली केन्द्र (आ.व.के.) की स्थापना के लिए एसआई को परिसर उपलब्ध कराना था। डीसी, बिहार राज्य डेटा केन्द्र (रा.डे.के.) और आ.व.के. राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (रा.सू.के.) के अलग भूकंपीय जोन में स्थापित होगा।

रा.डे.के. के कार्यारंभ होने की संभावित समय 31 दिसंबर 2011 था और अगर कार्यारंभ में छह माह से अधिक देरी होती है तो पायलट परियोजना को कार्यात्मक बनाने के लिए एसआई, एससीआरबी में या पटना में किसी अन्य बताये गए जगह पर जो सरकार द्वारा अनुमोदित हो, डाटा केन्द्र के बुनियादी ढ़ाचे की तैनाती के लिए अंतरिम व्यवस्था करेगा।

डीसी और आ.व.के. के कार्यारंभ नहीं होने के कारण डीसी और आ. व.के. के लिए खरीदे गए हार्डवेयर निष्क्रिय पड़े रहे

नमूना जाँच में यह देखा गया कि रा.डे.के. दिसम्बर 2013 में पूरा हो गया था। जबकि एसडीए द्वारा एसआई को डेटा सेन्टर की स्थापना हेतु अंतरिम व्यवस्था के लिए एससीआरबी में एवं किसी अन्य चिह्नित स्थान पर पूर्ण सर्वर स्टैक की तैनाती के लिए स्थान उपलब्ध नहीं कराया गया था। परिणामस्वरूप, डीसी एवं डीआरसी के लिए खरीदे गए हार्डवेयर निष्क्रिय पड़े थे।

जवाब में सीसीटीएनएस नोडल अधिकारी सह पुलिस महानिरीक्षक ने कहा कि (अगस्त 2014) मामला एसडीए से संबद्ध है एसडीए ने तथ्य को स्वीकार किया (सितम्बर 2014) और कहा कि एसडीसी तैयार (दिसम्बर 2013) था, एसआई द्वारा राउटर और नेटवर्क प्रबंधन प्रणाली (ईएमएस) आपूर्ती नहीं किये जाने के कारण डीसी को परियोजना के उद्देश्य के लिए कार्यारंभ और उपयोग किया जाना संभव नहीं था। यद्यपि राज्य मिशन टीम, परियोजना के शीघ्र कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए परियोजना की प्रगति और निर्णय निरोधक सभी मुद्दों के समाधान के लिए गठित किए गए थे लेकिन यह मुद्दों को हल करने हेतु संबंधित एजेन्सी के साथ समन्वय स्थापित करने में विफल रहे।

अनुशंसाः विभाग एसडीसी स्तर पर पूर्ण सर्वर स्टैक के अधिष्ठापना की पहल करे।

2.6.6.3 हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर वितरण

- ***हार्डवेयर की खरीद पर अतिरिक्त/अनियमित व्यय***

कैपेसिटी बिल्डिंग दिशानिर्देशों के अनुसार, मौजूदा पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र और संस्थानों में प्रशिक्षण के बुनियादी ढ़ाचें[4] को संवर्धन करने के लिए निधियों को निर्गत किया जाना था, जो जिला मुख्यालय में स्थापित किया जाना था। इसके अलावा, भारत सरकार के (फरवरी 2011) निर्देशों के अनुसार, एंटीवायरस, ऑपरेटिंग सिस्टम और ऑफिस सुइट के लिए अतिरिक्त निधि नहीं दिया जाना था, क्योंकि वे पहले से ही निर्धारित लागत ₹ 25000 प्रति पर्सनल कम्प्यूटर (पीसी) में सम्मिलित थे।

पीसी और लैपटॉपों की खरीद पर ₹ 97.01 लाख रूपये का अनियमित/अतिरिक्त व्यय

नमूना जाँच में यह देखा गया कि एसडीए ने 45 जिला प्रशिक्षण केन्द्रों के लिए ₹ 1.52 करोड़ में 460 पीसी क्रय किया था। इसमें से 415 पीसी ₹ 33287 प्रति पीसी और शेष 45 पीसी ₹ 31325 प्रति पीसी की दर से खरीदे गए थे। इसके अलावे, एसडीए ने एमएस ऑफिस 2013 सॉफ्टवेयर ₹ 42.20 लाख की लागत से और 46 लैपटॉप ₹ 17.57 लाख की लागत से खरीदे। अतः भा0 स0 के दिशानिर्देशों के उल्लंघन करते हुए एसडीए ने पीसी एवं सॉफ्टवेयर के क्रय पर ₹ 79.44 लाख[5] अधिक/अनियमित और लैपटॉप पर ₹ 17.57 लाख अनियमित व्यय किया।

जवाब में एसडीए ने तथ्य को स्वीकार किया और कहा (सितम्बर 2014) कि राज्य इम्पार्वड समिति के निर्देशों पर खरीद किया गया था।

जवाब स्वीकार योग्य नहीं था क्योंकि भा0 स0 द्वारा निर्देशित धनराशि से ज्यादा खर्च करने के लिए राज्य इम्पार्वड समिति अधिकृत नहीं था।

- ***एमएस ऑफिस सॉफ्टवेयर का क्रय***

भा0 स0, गृह मंत्रालय द्वारा अनुमोदित सीसीटीएनएस परियोजना के परियोजना कार्यान्वयन और निगरानी (पीआईएम) रिपोर्ट के अनुसार, भारत सरकार ने ₹ 25000 प्रति कम्प्यूटर (एंटीवायरस, ऑपरेटिंग सिस्टम और ऑफिस सुइट सहित) की दर से कम्प्यूटर की खरीद की स्वीकृति प्रदान (फरवरी 2011) की थी। इसके अलावे, समझौता ज्ञापन की शर्तो के अनुसार एसआई को सेवाओं के बंडल[6] के लिए संलग्न करना था। आरएफपी के अनुसार सीसीटीएनएस लागू करने के लिए, बोलीदाता को सीसीटीएनएस

---

[4] *प्रशिक्षण के बुनियादी ढाचे में एक सर्वर के साथ 10 क्लाइन्ट, एक यूपीएस और पुलिस थानों पर साइट तैयार करने सहित अन्य उपकरण जो उपलब्ध कराये गये थे, फर्नीचर, एलसीडी प्रोजेक्टर आदि शामिल थे।*

[5] *(415 पीसी के लिए ₹ 152.24 लाख + 45 पीसी एमएस ऑफिस सहित के लिए ₹ 42.20 लाख)– ₹ 25000 प्रति पीसी की दर से 460 पीसी ₹ 115.00 लाख = ₹ 79.44 लाख*

[6] *सेवाओं के बंडल में योजना और प्रबंधन सेवाएँ, एप्लीकेशन विकास और प्रबंधन सेवाए, हार्डवेयर (कम्प्यूटर, बाह्य उपकरण) शामिल थे।*

साईटस के घटकों के लिए न्यूनतम तकनीकि विनिर्देश आवश्यकता के अनुसार आपूर्ति करनी थी।

एसआई के साथ करार समाप्त होने के बावजूद ₹2.38 करोड़ का एमएस ऑफिस सॉफ्टवेयर का क्रय

नमूना जाँच में यह देखा गया कि एसडीए ने आरएफपी में जनवरी 2012 में संशोधन किया गया और वित्तीय बोली में एमएस ऑफिस की कीमत उल्लेखित नहीं करने के लिए निर्देशित किया। तदनुसार, एसआई ₹ 26000 प्रति कम्प्यूटर बिना एमएस ऑफिस के आपूर्ति करने के लिए सहमत (अक्टूबर 2012) हो गया। बाद में एसआई के साथ करार समाप्त (4 मार्च 2014) करने का निर्णय लेने के बावजूद एसडीए नें 2600 एमएस ऑफिस सॉफ्टवेयर ₹ 9151 प्रति लाईसेंस की दर से ₹ 2.38 करोड़ में क्रय (28 मार्च 2014) किया। एसआई द्वारा साइटस को पूरा नहीं किये जाने के कारण एमएस ऑफिस सॉफ्टवेयर पूरे राज्यभर में किसी भी सीसीटीएनएस साइटस पर स्थापित नहीं किया जा सका।

जवाब में एसडीए ने स्वीकार किया (सितम्बर 2014) कि राज्य इम्पार्वड समिति के निर्देश के अनुसार 2600 एमएस ऑफिस लाईसेन्स क्रय किये गए थे।

जवाब समझौता ज्ञापन की शर्तो के अनुरूप नहीं था जैसा कि बि0स0 ने गृह मंत्रालय, भा0स0 को एसआई को सेवाओं के बंडल एमएसऑफिस सॉफ्टवेयर सहित के लिए संलग्न करने का आश्वासन दिया था। इस प्रकार, साइटों के पूरा होने की सुनिश्चितता तय किये बिना एमएस ऑफिस सॉफ्टवेयर क्रय करने के एसडीए के निर्णय के कारण ₹ 2.38 करोड़ का व्यर्थ निवेश हुआ।

2.6.6.4 कोर एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (कास) का अनुकूलन नहीं किया जाना

आरएफपी के अनुसार, सीसीटीएनएस एपलीकेशन सॉफ्टवेयर में राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के लिए एक 'कोर' शामिल होगा जो सभी 35 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में एक समान होगा। प्रत्येक राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश अपने यूनिक जरूरतों के अनुसार कास का अनुकूलन करेगें और उसके बाद उसे कार्यारंभ करेगें। राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के पास यह भी विकल्प था कि वे कास से आगे एवं उपर अतिरिक्त एपलिकेशन विकसित और तैनात कर सकते थे। कास का अनुकूलन एसआई द्वारा 06 मार्च 2013[7] तक पूरा किया जाना था।

निबंधन, अन्वेषण, अभियोग, अभिलेख प्रबंधन, खोज एवं बुनियादी प्रतिवेदन इत्यादि के क्रियान्वयन हेतु कास का अनुकूलन नहीं होना

नमूना जाँच में यह देखा गया कि एसआई द्वारा कई नोटिस के बावजूद सिस्टम रिक्वायरमेन्ट स्पेसीफीकेशन (एसआरएस), फंक्शनल रिक्वायरमेन्ट स्पेसीफीकेशन (एफआरएस), सिस्टम डिजाइन डाक्यूमेन्ट (एसडीडी) और राज्य में अन्य समाधान डिजाईन तैयार नहीं किये जाने के कारण कास का अनुकूलन नहीं किया जा सका। इसके परिणामस्वरूप कास के अंतर्गत निबंधन, अन्वेषण, अभियोग, अभिलेख प्रबंधन, खोज एवं बुनियादी प्रतिवेदन इत्यादि का क्रियान्वयन नहीं हुआ।

जवाब में नोडल अधिकारी ने लेखापरीक्षा परीक्षण को स्वीकार (अगस्त 2014) किया।

2.6.6.5 डेटा का डिजिटाईजेशन नहीं किया जाना

आरएफपी के अनुसार, एसआई द्वारा अन्य प्रणाली/मैनुअल ऑपरेशन से नये सिस्टम में डेटा माईग्रेट करेगा जिसमें कि डाटा स्थानान्तरण आवश्यकताओं की पहचान, उपयोगकर्ता डेटा का संग्रह एवं माईग्रेशन, मास्टर डाटा का संग्रह एवं माइग्रेशन, खुले लेन–देन का समापन या माईग्रेशन, दस्तावेजी जानकारी का संग्रह और माईग्रेशन और लिगेसी प्रणाली से डेटा का माईग्रेशन शामिल होगा।

---

[7] *समझौते की तिथि से 20 सप्ताह के अंदर।*

समझौते की तिथि[8] से 50 सप्ताह के भीतर डिजिटाईजेशन के लिए लगभग एक करोड़ लिगेसी डाटा यानि एफआईआर, केस डायरी, इन्वेंट्री रजिस्टर, निजी पंजी एवं लेखा रजिस्टर को डिजिटाईज्ड करना था।

लिगेसी डेटा को डिजीटाईज्ड नहीं होना

नमूना जाँच में यह देखा गया कि एसआई ने केवल 16018 रेकार्ड डिजिटाईज्ड किया था। इस डेटा को, डेटा के ऑनरशिप की कमी एवं अशुद्धता के कारण एसआई द्वारा इसे स्क्रैप किया गया था। विभाग ने एसआई को केश फाईल दृष्टिकोण के आधार पर अभिलेखों का सत्यापन सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दिया। क्योंकि बिना इसके डेटा गारबेज के रूप में माना जा सकता है। इस संबंध में एसआई ने पुष्टि की (दिसम्बर 2013) कि गतिविधियाँ 16 दिसम्बर 2013 से शुरू की जाएगी। हाँलांकि कोई भी प्रगति नहीं हुई और एसआई के साथ अनुबंध समाप्त कर दिया गया (जूलाई 2014)। इस प्रकार, लिगेसी डेटा डिजिटाईज्ड नहीं किया जा सका।

जवाब में सीसीटीएनएस नोडल अधिकारी–सह–पुलिस महानिरीक्षक ने तथ्य को स्वीकार किया और कहा (अगस्त 2014) कि राज्य मिशन टीम नें डिजिटाईजड डेटा का नमूना परीक्षण किया और पाया कि यह गलत और अधूरा था। इसलिए उन्हें फिर से सुधार हेतु निर्देश दिये गए थे, जो आज तक नहीं किया गया था।

अनुशंसाः विभाग द्वारा समयबद्ध आधार पर डेटा डिजिटाईजेशन और पुराने डेटा का माईग्रेशन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

2.6.6.6 क्षमता संवर्धन

- ***पुलिस कर्मियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम***

एसआई प्रशिक्षण सामग्री के निर्माण, प्रशिक्षण कार्यक्रम को डिजाइन और लक्ष्य समूह तक उनको लक्षित समूह तक पहुँचाने के लिए जिम्मेदार था। ऐसे मामले जहाँ प्रशिक्षण सामग्री एमएचए/एनसीआरबी द्वारा उपलब्ध कराया जाना था, एसआई की जिम्मेवारी थी कि राज्य के लिए सामग्री की प्रासंगिकता, जरूरत होने पर अनुकूलन और वितरण और प्रभावशीलता को सुनिश्चित करे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा सामान्य/बुनियादी कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम को आच्छादित करना था और थाना स्तर पर प्रणाली की स्वीकृति को सुनिश्चित करने के लिए सीसीटीएनएस विशिष्ट कार्यक्रम थे।

नमूना जाँच में यह देखा गया कि जिला प्रशिक्षण केन्द्र संबंधित आरक्षी अधीक्षक द्वारा स्थापित किए गए थे जबकि प्रशिक्षण के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर मेसर्स बीएसइडीसी द्वारा आपूर्ति किए गए थे। केन्द्रों पर विभिन्न समूहों के 35878 पुलिस कर्मियों को नवंबर 2013 तक प्रशिक्षित करने की बि0स0 ने योजना बनाई। विभिन्न समूहों के 35878 में से केवल 10456 पुलिस कर्मियों (29 प्रतिशत) को प्रशिक्षित किये गये थे और मार्च 2014 तक ₹ 4.40 करोड़ खर्च किया गया था। यह भी देखा गया कि केवल बुनियादी कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिया गया था और एसडीए के पास जिला स्तर पर पुलिस कर्मियों के प्रशिक्षण से संबंधित कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं था। इसलिए सीसीटीएनएस परियोजना, सीसीटीएनएस सॉफ्टवेयर के सूचारू रूप से संचालन और उपयोग करने वाले विशिष्ट प्रशिक्षित पुलिस कर्मियों के बिना संभव नहीं था।

आगे, यह पाया गया था कि एसडीए नें 49 पुलिस कर्मियों को प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षण का आयोजन (दिसंबर 2010 और जनवरी 2011) बिहार नॉलेज सेंटर, पटना में किया और गृह मंत्रालय के निर्देश (दिसम्बर 2011) की अनदेखी करते हुए स्वीकृत दर (₹ 1000 प्रति व्यक्ति) के विपरीत ₹ 3.24 लाख का भुगतान (प्रति व्यक्ति ₹ 6618)

[8] *2 अक्टूबर 2013।*

किया। परिणामस्वरूप प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रशिक्षण पर ₹ 2.75 लाख राशि का अतिरिक्त भुगतान किया गया।

जवाब में नोडल अधिकारी ने कहा (अगस्त 2014) कि मामला एसडीए से संबंधित है। जबकि, एसडीए ने कहा (सितम्बर 2014) कि उसकी जिम्मेदारी केवल निधि व्यवस्था तक है और प्रशिक्षण सुविधाओं का अपर्याप्त उपयोग एसडीए के दायरे में नहीं था। यह विभाग और एसडीए के बीच समन्वय की कमी का संकेत था।

अनुशंसाः सीसीटीएनएस विशिष्ट कार्यक्रमों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए विभाग अधिक प्रशिक्षित श्रमशक्ति उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित करें।

2.6.6.7 बीएसएनएल द्वारा कनेक्टिविटी प्रदान नहीं किया जाना

गृह विभाग, बि0 स0 और भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) बिहार दूरसंचार सर्किल के बीच हस्ताक्षरित (मई 2012) सेवा स्तर समझौते (एसएलए) के अनुसार बीएसएनएल को उपलब्ध कराना था:

- सभी पुलिस थानों (पीएस) और उच्च कार्यालयों जिसमें शामिल हैं, बिहार के राज्य मुख्यालय, जिला पुलिस कार्यालयों, आयुक्तालय, रेन्ज कार्यालयों, सर्किलों, एससीआरबी आदि को अलग नेटवर्क के माध्यम से जिसमें स्टेट वाईड एरिया नेटवर्क (स्वान) प्वाइंट ऑफ परजेन्स (पीओपी) से प्वाइंट टू प्वाइंट लीज्ड लाइन (पी2पीएलएल) के माध्यम से स्वान में कनेक्टिविटी शामिल है;
- बीएसएनएल भीपीएनओबीबी[9], वाईमैक्स[10] और भीसैट[11] तकनीक के माध्यम से उन स्थानों के लिए बीएसएनएल नेटवर्क पर कनेक्टिविटी जहॉ स्वान से संभव नहीं था;
- एसडीसी, डीआरसी और राष्ट्रीय डेटा सेन्टर (एनडीसी) पर मल्टीप्रोट्रोकॉल लेवल स्विचिंग (एमपीएलएस) से कनेक्टिविटी।

इसके अलावे, बीएसएनएल को बिहार राज्य भर में फरवरी 2013 तक 1046 पुलिस परिसर में स्थित 1234 साईटस पर नेटवर्क कनेक्टिविटी उपलब्ध करानी थी।

बीएसएनएल द्वारा सभी सीसीटीएनएस साईट्स पर कनेक्टिविटी प्रदान नहीं किया

अभिलेखों की संविक्षा में यह पता चला कि बीएसएनएल ने केवल 743 परिसरों में नेटवर्क कनेक्टिविटी उपलब्ध करायी थी। उनमें से केवल 514 परिसरों ने ही पिंन्ग[12] रिपोर्ट दी थी। हॉलांकि, एसएलए की शर्तो के अनुसार बीएसएनएल को ₹ 89.80 लाख अग्रिम भुगतान (सितम्बर 2012) निर्गत कर दिया गया था। यह भी देखा गया कि 66 सीसीटीएनएस साइटस जो कि स्वान के साथ सहस्थित थे उनको भी स्वान पीओपी के साथ कनेक्ट नहीं किया गया था।

बीएसएनएल ने कहा (नवम्बर 2014) कि नोडल अधिकारी द्वारा कार्यारंभित साइट को सुरक्षित अभिरक्षा में रखने का अनुरोध (मई 2014) करने पर कनेक्टिविटी रोक दी गई थी। जबकि एसडीए ने कहा (सितम्बर 2014) कि स्वान से सह–स्थित 66 साइटस को जोड़ने के लिए सूचना प्राद्यौगिकी विभाग, बिहार सरकार के अनुमोदन के लिए पीओपी के द्वारा एक पत्र लिखा गया था।

बीएसएनएल का जवाब तथ्यों के विपरीत था क्योंकि बीएसएनएल को फरवरी 2013 तक सभी साइटसों के लिए कनेक्टिविटी प्रदान करना था। इस प्रकार निर्धारित तिथि

---

9 *व्र्चुअल प्राइवेट नेटवर्क ओवर ब्राडवैन्ड।*

10 *वर्ल्ड वाईड इंटरोपरएवलिटी फॉर माइक्रोवेव एक्सेस*

11 *भेरी स्माल अपरेचर टर्मिनल*

12 *पिन्ग (नेटवर्किंग यूटीलिटी) एक कम्प्यूटर नेटवर्क उपकरण है जिसका उपयोग यह जॉच करने के लिए किया जाता है कि क्या एक विशेष होस्ट आईपी नेटवर्क की पहुॅच में है।*

से 16 माह पूरा होने के बाद भी पहचान की गई साइटों पर नेटवर्क कनेक्टिविटी प्रदान नहीं की जा सकी थी।

2.6.6.8 निगरानी और प्रदर्शन का आकलन

आरएफपी के अनुसार एसआई को इन्टरप्राईज और नेटवर्क प्रबंधन प्रणाली (ईएमएस) डिजाईन, लागू/अनुकूलित करना था और एसएलए के तहत सूचीबद्ध प्रदर्शन संकेतक की निगरानी के लिए आवश्यक कोई भी अतिरिक्त उपकरण विकसित करना था। इसके अलावे, ईएमएस मौजूदा सिस्टम में शामिल विषम नेटवर्क, सिस्टम, एपलीकेशन और डेटाबेस में सभी उद्यम संसाधनों के लिए अंत प्रदर्शन उपलब्धता, गलती और घटना और प्रभाव प्रबंधन उपलब्ध कराना था।

एसएलए के तहत सूचीबद्ध प्रदर्शन संकेतक की निगरानी के लिए ईएमएस को स्थापित नहीं किया गया

नमूना जाँच के दौरान यह पाया गया कि ईएमएस प्रणाली जो कि परियोजना का एक महत्वपूर्ण घटक था एसआई द्वारा स्थापित नहीं किया गया था। ईएमएस के अभाव में विभाग, पोर्टल की प्रतिक्रिया समय को मापनें, समवर्ती जोड़ की संख्या के अनुसार एपलीकेशन सर्वर की लेनदेन क्षमता से निपटने, डेटा सेन्टर/सर्वर की अपटाईम, डेटा सेन्टर सेवा इत्यादि के बहाली के लिए मिन टाईम और कम नेटवर्क की उपलब्धता के लिए लिक्विडेटेड क्षति, यदि कोई हो, आरोपित करने की स्थिति में नहीं था।

जवाब में (अगस्त 2014) नोडल अधिकारी ने कहा कि मामला एसडीए के साथ संबद्ध था। एसडीए ने तथ्य को स्वीकार किया और कहा (सितम्बर 2014) कि एसआई द्वारा ईएमएस स्थापित नहीं किया गया था।

2.6.7 निष्कर्ष

- सीसीटीएनएस परियोजना बुनियादी ढ़ाचे के निर्माण में देरी के कारण राज्य में शुरू नहीं हो सका और परियोजना का उद्देश्य वास्तविक समय के आधार पर राज्य और केन्द्रीय स्तर पर देश भर में अपराध और अपराधियों से संबंधित डेटाबेस की साझीदारी प्राप्त नहीं किया जा सका था;
- कोर एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर अनुकूलित नहीं किया गया था और लिगेसी डाटा को डिजीटाइज्ड नहीं किया गया था;
- सभी को व्यापक प्रशिक्षण के बदले केवल सीमित संख्या में पुलिस कर्मियों को बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान किया गया था;
- पुलिस थाना से राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरों के स्तर पर नेटवर्क कनेक्टिविटी की परिकल्पना पूरी नही हुई थी।

नगर विकास एवं आवास विभाग

2.7 'पटना नगर निगम–ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा भवन प्लानों की स्वीकृति' पर दीर्घ कंडिका

2.7.1 परिचय

पटना नगर निगम (प.न.नि.), पटना की स्थापना 15 अगस्त 1952 में हुई थी। यह 1683200 (जनगणना 2011) की जनसंख्या के साथ 109.218 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला हुआ है तथा क्षेत्र चार अंचलों में विभक्त है जिसमें 72 वार्ड है। प.न.नि. का वैधानिक कार्य अपने क्षेत्राधिकार के नागरिकों को सुविधाएँ प्रदान करना है ***(परिशिष्ट–2.7.1)***। इन कार्यों को पूरा करने के लिए प.न.नि. को बिहार नगरपालिका अधिनियम (बि.न.अ.), 2007 की धारा 126 से 136 में किये गये प्रावधानों के तहत गृहकर, जल संबद्धता, पेशा, विज्ञापन इत्यादि पर विभिन्न करों तथा शुल्कों को अधिरोपित करने की शक्ति प्रदान की गयी है। बि.न.अ., 2007 की धारा 65 तथा 66, राज्य सरकार को अभिलेख की माँग करने तथा प.न.नि. के अभिलेखों के निरीक्षण करने के लिए पदाधिकारियों को प्रतिनियुक्त करने की शक्ति प्रदान करता है।

वृहत कंडिका में 2009–14 की अवधि में प.न.नि. के दो मुख्य कार्यों यथा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (ठो.अ.प्र.) तथा भवनों के प्लानों की स्वीकृति को शामिल किया गया। लेखापरीक्षा का कार्य मई से सितंबर 2013 और जुलाई 2014 में किया गया था।

2.7.2 संगठनात्मक ढाँचा

प.न.नि., मेयर की अध्यक्षता वाली पार्षदों की एक परिषद द्वारा शासित होता है तथा आयुक्त, जो मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी होते हैं, के द्वारा सहयोग किया जाता है। प. न.नि. का संगठनात्मक ढाँचा ***परिशिष्ट 2.7.2*** में दिया गया है।

2.7.3 बाध्यता

प.न.नि. द्वारा मूल अभिलेखों का संधारण बि.न.अ., 2007 तथा बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 में किये गये प्रावधानों के अंतर्गत नहीं किया गया था ***(परिशिष्ट–2.7.3)*** तथा लेखापरीक्षा के क्रम में 209 र्निगत लेखापरीक्षा आपत्तियों में से मात्र 74 का ही जवाब दिया गया। अनेक स्मार पत्रों के बावजूद जनवरी 2009 से दिसंबर 2013 की अवधि में पारित कुल 7865 भवन प्लानों के विरूद्ध मात्र 700 प्लानों की संचिकाओं को ही लेखापरीक्षा में प्रस्तुत किया गया।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष

2.7.4 ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (ठो.अ.प्र.) नगरीय ठोस अपशिष्टों का संग्रहण, भंडारण, पृथक्करण, परिवहन, प्रसंस्करण और निष्पादन है। नगरीय अपशिष्ट का प्रबंधन, नगरीय ठोस अपशिष्ट (प्रबंधन तथा हथालन) नियमावली, 2000 (न.ठो.अ., नियमावली) द्वारा शासित होता है जो नगरीय अपशिष्टों के प्रबंधन का उत्तरदायित्व नगरपालिका प्राधिकारियों, राज्य प्रदुषण नियंत्रण पर्षद (रा.प.नि.प.) तथा राज्य सरकार को न्यस्त करता है।

2.7.4.1 ठो.अ.प्र. के तहत वित्तीय प्रबंधन

प.न.नि. का राजस्व स्रोत राज्य सरकार से विमुक्त अनुदानों, केन्द्रीय वित्त आयोग के (के.वि.आ.) अनुदानों, केन्द्र प्रायोजित योजनाओं (के.प्र.यो.) के अनुदान तथा स्वयं के स्रोतों से प्राप्त राजस्व पर आधारित था।

प.न.नि. को ठो.अ.प्र. के लिए 2009–14 के दौरान बारहवें वित्त आयोग (बा.वि.आ.) तथा तेरहवें वित्त आयोग (ते.वि.आ.) के अंतर्गत ₹ 56.82 करोड़[1] का अनुदान प्राप्त हुआ जबकि 2009–10 में प.न.नि के पास ₹ 36.01 करोड़ का प्रारंभिक अवशेष था। इसके विरूद्ध प.न.नि ने 2009–14 के दौरान ₹ 53.83 करोड़ का व्यय किया। प.न.नि. द्वारा लेखाओं के संधारण नहीं किये जाने के कारण ठो.अ.प्र. पर अन्य स्रोतों से किये गये व्यय को लेखापरीक्षा में सुनिश्चित नहीं किया जा सका।

प.न.नि. उपलब्ध निधियों का उपयोग नहीं कर सका तथा पूँजीगत व्यय के रुप में बहुत ही कम राशि व्यय किया गया

यद्यपि लेखापरीक्षा में पाया गया कि ठो.अ.प. के लिए किये गये कुल व्यय में से मात्र ₹ 0.59 करोड़[2] (एक प्रतिशत) का व्यय पूँजीगत मद पर और शेष राशि का व्यय राजस्व मद पर किया गया। आगे, वर्ष 2006 से 2008 के दौरान बिहार सरकार (₹ 19.35 करोड़) तथा भारत सरकार (₹ 4.62 करोड़) से प्राप्त अनुदानों तथा इन अप्रयुक्त अनुदानों पर प्राप्त ब्याज (₹ 12.04 करोड़), जो ₹ 36.01 करोड़ के प्रारंभिक अवशेष के रूप में परिलक्षित था, भी सितम्बर 2014 तक अप्रयुक्त रहा।

इसके परिणामस्वरूप प.न.नि. गड्ढा केन्द्रों पर आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ देने तथा ठो.अ.प. के लिए प्रसंस्करण संयंत्र, वाहनों इत्यादि का क्रय करने में असफल रहा।

- ***ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कर्णांकित निधियों का विचलन***

प.न.नि. ने ठो.अ.प्र. के लिए चिन्हित राशि को अन्य व्यय के लिए विचलन किया

संविक्षा में पता चला कि प.न.नि. के नूतन राजधानी अंचल (नू.रा.अ.) द्वारा दिसम्बर 2011 से 2013 के दौरान ते.वि.आ. से ठो.अ.प्र.के लिए कर्णांकित अनुदान में से ₹ 64.42 लाख का व्यय किया गया जिसमें प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए वाहनों पर व्यय (₹ 1.04 लाख) के अलावा हाई स्पीड डीजल (₹ 52.58 लाख) तथा फोगिंग[3] एवं फोगिंग मशीन चलाने के लिए पेट्रोल (₹ 10.80 लाख) के क्रय पर व्यय शामिल है। यह व्यय ठो.अ.प्र. के अंतर्गत का नहीं था तथा इसका व्यय निगम कोष से किया जाना चाहिए था। चूकी संपूर्ण व्यय ठो.अ.प्र. के अंतर्गत दर्ज किया गया था, इसके कारण ₹ 64.42 लाख का निधि का विचलन हुआ ***(परिशिष्ट–2.7.4)***। इसके अतिरिक्त, बा.वि.आ. के अनुदान से ठो.अ.प्र. के लिए कर्णांकित राशि में से ₹ 38.82 लाख[4] का विचलन कर वाकी–टॉकी और बायोमेट्रीक उपस्थिति मशीन का क्रय किया गया।

यह बताये जाने पर कार्यपालक पदाधिकारी, नू.रा.अ. ने जवाब (जनवरी 2014) दिया कि इस राशि की प्रतिपूर्ति निगम कोश से कर ली जाएगी। बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टूबर 2014) में अपर नगर आयुक्त (अ.न.आ) ने भी जवाब दिया कि विचलित राशियों की प्रतिपूर्ति कर ली जाएगी।

2.7.4.2 नगरीय ठोस अपशिष्टों का आकलन, संग्रहण, पृथक्करण तथा भंडारण

नगरीय ठोस अपशिष्ट, नियमावली के अनुसरण में प.न.नि. को सभी सृजित ठोस अपशिष्टों के संग्रहण को सुनिश्चित करना था। आगे, अपशिष्टों के बिखराव को रोकने तथा अनुपालन हेतु प.न.नि. को नगरीय ठोस अपशिष्टों को घर–घर से संग्रहण के लिए सामुदायिक कुड़ेदान संग्रहण (केंद्रीय बिन) तथा नियमित रूप से/पूर्व सूचित समय पर संग्रहण में से किसी एक की व्यवस्था करना था। न.ठो.अ. नियमावली के अनुसार नगरपालिका प्राधिकारी को अपशिष्टों के पृथक्करण के लिए चरणबद्ध तरीके से सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए अपशिष्टों के पुर्नचक्रीय अथवा पुर्नउपयोग को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम संचालित करना था। नगरपालिका

---

1 *बा.वि.आ.– ₹ 2.98 करोड़ तथा ते.वि.आ.– ₹ 53.84 करोड़*

2 *सड़क व पुलिया निर्माण– ₹ 0.29 करोड़ तथा हाथ ठेला के क्रय के लिए ₹ 0.30 करोड़*

3 *यह मच्छरों को हटाने के लिए डीजल एवं मैलाथियन के मिश्रण के धुएँ को फैलाता है।*

4 *वाकी–टॉकी – ₹ 18.09 लाख, बायोमेट्रीक उपस्थिति मशीन–₹ 20.73 लाख*

प्राधिकारियों को अपशिष्टों के भंडारण की सुविधाएँ स्थापित करने तथा बनाये रखने के लिए ऐसी विधि की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे इसके आसपास अस्वच्छ तथा अस्वास्थ्यकर परिस्थितियाँ उत्पन्न न हो।

प.न.नि. द्वारा अपशिष्टों का घर–घर संग्रहण तथा पृथक्करण नहीं किया गया

संविक्षा में पाया गया कि प.न.नि. द्वारा घर–घर से अपशिष्टों का संग्रहण तथा पृथक्करण नहीं किया जा रहा था तथा अधिकांश अपशिष्टों को सिर्फ सड़क किनारे से संग्रहित किया गया था। प.न.नि. ने वर्ष 2009–14 के दौरान अपशिष्टों के पृथक्करण के लिए सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करने हेतु कोई भी जागरूकता कार्यक्रम का संचालन नहीं किया। यह भी पाया गया कि इस अवधि के दौरान प.न.नि. के पास ठोस अपशिष्ट के सृजन का कोई अभिलेख नहीं था। पूछे जाने पर प.न.नि ने शहर में प्रतिदिन 1230 टन[5] अपशिष्टों के सृजन का आकलन प्रस्तुत किया जो कि केन्द्रीय प्रदुषण नियंत्रण पर्षद (के.प्र.नि.प.) के मानदंडों[6] के आधार पर परिकलित 623 टन[7] से लगभग दोगुना था। जबकि, प.न.नि. ने प्रतिदिन सृजित किये जा रहे 1230 टन अपशिष्टों (जुलाई 2014) के अनुमान से संबंधित अभिलेखों अथवा आधार को प्रस्तुत नहीं किया।

आगे, यह पाया गया कि प्रत्येक 0.4 टन क्षमता के आवश्यक 3075 कुड़ेदानों की आवश्यकता के विरूद्ध सभी 72 वार्डों के लिए निगम द्वारा मात्र 100 बिनों की व्यवस्था की गयी थी (नवंबर 2012) जो प्रतिदिन सृजित हो रहे आकलित मात्रा 1230 टन अपशिष्टों के लिए पर्याप्त नहीं थे। इस प्रकार, पूर्व की कंडिका में वर्णित निधियों की उपलब्धता के बावजूद आवश्यक संख्याओं में कुड़ेदानों का क्रय नहीं किया गया था तथा सभी प्रकार के अपशिष्टों को बिना पृथक किये जमीन पर खुले में रखा गया जिससे अस्वास्थ्यकर एवं गंदा वातावरण बना।

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टूबर 2014) में अ.न.आ.ने लेखापरीक्षा अवलोकन से सहमति जताया तथा बताया कि सफाई के कार्यों के बेहतर प्रबंधन के लिए बाह्य सेवा लेने की प्रक्रिया की गई है। उन्होने आगे बताया कि पर्याप्त संख्या में कुड़ेदानों का क्रय शीघ्र कर वार्डों में संस्थापित किया जाएगा।

अनुशंसाः प.न.नि. को न.ठो.अ. नियमों के अनुरूप अपशिष्टों का संग्रहण, पृथक्करण, भंडारण तथा पुर्नचक्रण सुनिश्चित करना चाहिए।

2.7.4.3 ठोस अपशिष्टों का अनाधिकृत गड्ढों के स्थलों पर परिवहन

न.ठा.अ. नियमों में यह प्रावधान है कि अपशिष्टों के ढोने के लिए ढ़के हुए वाहनों का उपयोग किया जाना चाहिए। अपशिष्टों को न तो नागरिकों को दृष्टिगोचर होना चाहिए न ही खुले वातावरण में रहना चाहिए। परिवहन वाहनों का डिजाईन ऐसा होना चाहिए कि अपशिष्टों के अंतिम निष्पादन से पूर्व कई बार उनके चढ़ाई–उतराई से बचा जा सके। नियमों में आगे प्रावधान है कि गड्ढा स्थल रिहायशी समूहों के बीच, वन क्षेत्रों, जल निकायों, राष्ट्रीय उद्यानों इत्यादि से दूर तथा राज्य प्रदुषण नियंत्रण पर्षद (रा.प्र.नि.प.) द्वारा प्राधिकृत होना चाहिए। कूड़ा संग्रह स्थल पर मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था होना चाहिए यथा स्थल का घेराव, गेट, अभिलेखों को रखने के लिए कार्यालय, अग्निशमन उपकरणों, कूड़ों को तौलने के लिए कॉटा, पेयजल तथा प्रकाश ।

अभिलेखों की संविक्षा में पाया गया कि प.न.नि. ने मात्र 103 अपशिष्टों को ढोने वाले वाहनों के लिए आवरण का क्रय किया जबकि मई 2012 में अपशिष्टों के परिवहन के

---

5 *नूतन राजधानी अंचल–440 टन, पटना सिटी अंचल–240 टन, बॉकीपुर अंचल–360 टन, कंकड़बाग अंचल–190 टन*

6 *केन्द्रीय प्रदुषण नियंत्रण पर्षद (क.प.नि.प.) ने एक सर्वे में पटना में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 0.37 कि.ग्रा. अपषिश्ट के सृजन का आकलन (2004–05) किया था।*

7 *1683200 x 0.37 कि.ग्रा. = 622783 कि.ग्रा. या 623 टन*

लिए 154 वाहनों का परिचालन किया जा रहा था। इस प्रकार, न.ठो.अ. नियमावली का उल्लंघन कर 51 वाहन अब भी बगैर ढके चलाये जा रहे थे। यह भी पाया गया कि प. न.नि. के स्वयं के कुल 81 वाहनों में से 44 वाहनें बिना पंजीकरण ही चलाये जा रहे थे। आगे यह पाया गया कि प.न.नि. के रामाचक बैरिया में चिन्हित गड्ढा स्थल एक रिहायशी इलाके में था तथा एक गड्ढा स्थल के लिए निर्धारित सभी मूलभूत सुविधाओं से रहित था। इसके अतिरिक्त, यह गड्ढा स्थल रा.प्र.नि.प. से बगैर प्राधिकार लिए नवम्बर 2013 तक संचालित किया गया था।

सृजित अपशिष्ट चिन्हित कुड़ा संग्रह स्थल से अलग स्थानों पर गिराया गया

लेखापरीक्षा संविक्षा में यह भी पाया कि प्रति दिन सृजित हो रहे 1230 टन अपशिष्टों के विरूद्ध प.न.नि. द्वारा प्रति दिन 1129 टनों[8] का ही ढुलाई किया जा रहा था तथा चिन्हित गड्ढा स्थल के अलावा रिहायशी क्षेत्र के पाँच अन्य स्थलो[9] में ठोस अपशिष्टों को गिराया जा रहा था। इस प्रकार, आवासीय क्षेत्रों से 101 टन अपशिष्ट प्रति दिन नहीं उठाये/ढुलाई किये जा रहे थे। परिणामतः प.न.नि. रिहायशी क्षेत्रों में स्वास्थ्यकर तथा स्वच्छ वातावरण बनाये रखने में असफल रहा।

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टुबर 2014) में अ.न.आ.ने आश्वासन दिया कि अनाधिकृत स्थलों पर अपशिष्टों के फेंके जाने पर रोक लगायी जाएगी। अ.न.आ.ने यह भी कहा कि कूड़ा संग्रह स्थल पर आवश्यक सुविधाएँ सुनिश्चित करने के लिए शीघ्र आवश्यक कदम उठाया जायगा। यद्यपि रिहायशी क्षेत्रों से प्रतिदिन 101 टन अपशिष्टों का उठाव नहीं होने के संबंध में कोई जवाब नहीं दिया गया।

2.7.4.4 अपशिष्ट शोधन के लिए प्रसंस्करण इकाई की स्थापना नहीं

न.ठो.अ. नियमों में यह प्रावधान है कि नगरपालिका प्राधिकारियों द्वारा उपयुक्त तकनीक या तकनीकों के संयोजन द्वारा अपशिष्टो को उपयोगी बनाया जाना चाहिए जिससे गड्ढा स्थल पर बोझ कम हो। पुर्नचक्रीय संसाधनों से युक्त मिश्रित अपशिष्ट का पुनश्चक्रण किया जाना चाहिए।

प.न.नि. ने निधि की उपलब्धता के बावजूद अपशिष्टों के उपचार के लिए प्रसंस्करण इकाई की स्थापना नहीं की

लेखापरीक्षा में पाया गया कि प.न.नि. ने अपशिष्टों के शोधन के लिए निधि[10] की उपलब्धता के बावजूद प्रसंस्करण इकाई की स्थापना नहीं की। यद्यपि न.ठो.अ. नियमों के तहत रा.प.नि.प. ने अपशिष्टों के प्रसंस्करण इकाई को स्थापित तथा परिचालन के लिए प.न.नि. प्राधिकृत (दिसंबर 2013) किया था, लेकिन जुलाई 2014 तक कोई प्रसंस्करण इकाई की स्थापना नहीं की गयी थी तथा इस प्रयोजन के लिए उपलब्ध ₹ 23.10 करोड़ की राशि अप्रयुक्त रही। परिणामस्वरूप, ठोस अपशिष्टों का बगैर शोधन के खुले स्थानों पर फेंका जा रहा था जो मानव जीवन के साथ ही साथ पूरे पारिस्थितिक तंत्र के लिए खतरा था। इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्वायर–मेन्टल टेक्नॉलॉजी एंड मैनेजमेंट में प्रकाशित (2011) एक शोध के अनुसार पटना के डंपिग स्थलों पर मीथेन, हाइड्रोजन सल्फाईड और डाईऑक्सिन की मात्रा निर्धारित सीमाओं से बहुत अधिक था।

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टूबर 2014) में अ.न.आ.ने आश्वस्त किया कि इस संबंध में आवश्यक कदम उठाए जायेंगे।

2.7.4.5 ईंधन आपूर्त्ति/भाड़ा प्रभारों का अनियमित भुगतान

प.न.नि. ने अपने चारों अंचलों को ठो.अ.प्र. पर व्यय के लिए निधि उपलब्ध कराया था। कचड़े के परिवहन तथा अन्य स्वच्छता प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किये जानें वाले

---

8 *बॉकीपुर अंचल–355 टन, कंकड़बाग अंचल–180 टन, नूतन राजधानी अंचल–374 टन तथा पटना सिटी अंचल–220 टन*

9 *70 फीट बाई–पास सड़क, एल सी टी घाट (जल निकायें), दीघा आम बगीचा (पार्क), बेतौरा तथा दीघा नेपाली नगर (समूह)*

10 *जनवरी 2008 में ₹ 23.10 करोड़ प्राप्त किया*

वाहनों के ईंधन की आपूर्ति के लिए इन अंचलों द्वारा स्वास्थ्य पदाधिकारी/मुख्य सफाई निरीक्षक द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित तेल कुपन की दो प्रतियों (एक पेट्रोल पंप के लिए तथा दूसरा कार्यालय उपयोग के लिए) ड्राईवरों को प्रतिदिन जारी किया गया था। प.न.नि. द्वारा निजी वाहनों का भाड़ा प्रभार का भुगतान निर्धारित दर के अनुसार किया गया था। माह के अंत में अंचल के कार्यपालक पदाधिकारियों द्वारा पेट्रोल पंप और निजी वाहनों के मालिकों को उनके द्वारा प्रस्तुत विपत्रों का सत्यापन करने के बाद भुगतान किया गया था।

लेखापरीक्षा को उपलब्ध कराये अभिलेखों के अनुसार वर्ष 2009–14 के दौरान मजदूरी, ईंधन तथा वाहनों के भाड़ा में क्रमशः कुल ₹ 20.76 करोड़, ₹ 22.33 करोड़ तथा ₹ 7.56 करोड़ का व्यय किया गया था। पेट्रोल पम्प तथा वाहनों के भाड़ा भुगतान से संबंधित विपत्रों के नमूना जॉच में निम्नलिखित अनियमितताएँ उजागर हुईः–

- तीन चालकों को एक ही अंचल में एक ही दिन एक ही समय पर उनके द्वारा परिचालित विभिन्न वाहनों के भाड़ा/ईंधन के दावों के लिए ₹ 1.02 लाख का भुगतान किया गया था ***(परिशिष्ट–2.7.5)***।

- ₹ 5.91 लाख का ईधन का भुगतान वैसे वाहनों पर किया गया था जो न तो भाड़े के थे और न ही प.न.नि. के ***(परिशिष्ट–2.7.6अ)***। लेखापरीक्षा में इंगित किये जाने पर प.न.नि. ने नये पंजीकरण संख्याओं वाले वाहनों की एक सूची को सही बताते हुए प्रस्तुत किया। लेकिन ये सभी वाहन भी प.न.नि. के स्वयं/भाड़े के वाहनों से मेल नहीं खाये ***(परिशिष्ट–2.7.6ब)***।

- एक वाहन को 26 अगस्त से 25 सितम्बर 2012 की अवधि के लिए ₹ 0.20 लाख के ईंधन विपत्र का भुगतान वैसे एक वाहन का किया गया जो अंचल कार्यालय परिसर में मई 2012 से खड़े थे।

- छः वाहनों को 27 दिसम्बर 2012 से 10 जनवरी 2013 की अवधि के लिए भाड़ा तथा ईंधन प्रभार की राशि के मद में ₹ 4.13 लाख का भुगतान किया गया था जबकि इस अवधि में इन वाहनों पर अपशिष्ट लोड करने के लिए कोई लोडर कार्यरत नहीं था। इन छः वाहनों में से दो को जनवरी 2013 में बॉकीपुर अंचल में भी चलते हुए दिखाया गया था जिसके लिए ₹ 4.13 लाख का भुगतान किया गया था ***(परिशिष्ट–2.7.7)***।

- लॉग बुकों के अनुसार अप्रैल 2012 से जनवरी 2013 की अवधि में 12 वाहनों पर 21555 लिटर डीजल का खपत दर्शाया गया था जबकि इसके विरूद्ध 36115 लिटर ईंधन मद में भुगतान किया गया, परिणामस्वरूप ₹ 6.42 लाख का अधिक भुगतान किया गया ***(परिशिष्ट–2.7.8)***।

- एक ही अवधि के लिए उसी वाहनों को एक ही विपत्र के विभिन्न क्रम सं0 पर डीजल का भुगतान किया गया जिसके परिणामस्वरूप पेट्रोल पम्प को डीजल क्रय मद में ₹ 4.32 लाख का अधिक भुगतान किया गया ***(परिशिष्ट–2.7.9)***।

- पटना सिटी अंचल में दो हाईवा[11] तथा एक जे.सी.बी.[12] को द्वितीयक डम्पिंग ग्राउण्ड (बिस्कोमान, अगमकुंआं) से प्राथमिक डम्पिंग ग्राउण्ड (रामाचक बैरीया) तक ठोस अपशिष्ट को ढोते हुए अक्टुबर 2012 से जुलाई 2013 की अवधि में दिखाया गया तथा इन वाहनों के 298 दिनों के परिचालन पर ₹ 41.66 लाख

---

11 *NL02G 4869 और BR1GB 1217*

12 *BR1GA 8004 (अक्टूबर 2012 से जून 2013), 3DX-1718517(22 जून 2013 से 31 जुलाई 2013)*

का भुगतान किया गया था। जबकि वाहनों के लॉगबुक से पता चला कि इस अवधि में सिर्फ दो से बारह ट्रैक्टरों द्वारा मात्र 5305 ट्रिप ठोस अपशिष्ट ही बिस्कोमान में गिराया गया था। इन अपशिष्टों को सिर्फ एक हाईवा और एक जेसीबी के द्वारा ₹ 32.21 लाख खर्च कर निपटाया जा सकता था जिससे हाईवा/जेसीबी के लिए ₹ 9.45 लाख[13] अधिक राशि का भुगतान किया गया।

- नूतन राजधानी अंचल में कूड़ा संग्रहण तथा निष्पादन के कार्यो में लगाये गये वाहनों को शहर के अंदर आठ घंटों (6 बजे सुवह से 2 बजे शाम) में 680 कि. मी. से 1120 कि.मी. का परिचालन करते दिखाया गया तथा 85 से 140 लिटर ईंधन की आपूर्त्ति प्रतिदिन की गई थी। यद्यपि प.न.नि. द्वारा भाड़े पर रखे गये वाहन सिर्फ 120 कि.मी. ही चल रहे थे तथा प्रतिदिन औसतन 40 लिटर ईंधन की आपूर्त्ति किये जा रहे थे। इस प्रकार अगस्त 2011 से मार्च 2013 की अवधि में 21 वाहनों को ईंधन की अधिक मात्रा की आपूर्त्ति की गई ***(परिशिष्ट–2.7.10)***।

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टुबर 2014) के दौरान अ.न.आ. ने जवाब दिया कि एक समिति का गठन कर मामले की शीघ्र जॉच की जाएगी तथा इसके परिणाम से सूचित किया जाएगा। अ.न.आ.ने बाद में जवाब दिया (नवम्बर 2014) कि संबंधित अंचलों के कार्यपालक पदाधिकारी का जवाब अभी तक प्रतीक्षित है।

अनुशंसाः प.न.नि. को ठो.अ.प्र.के तहत किए गए व्यय पर एक प्रभावी निगरानी और आंतरिक नियंत्रण तंत्र की स्थापना करनी चाहिए।

2.7.5. भवन प्लानों की स्वीकृति

बि.न.अ., 2007 की धारा 314 के अनुसार वास्तुकार अधिनियम 1972 के अधीन निबंधित किसी प्रमाणिक वास्तुकार द्वारा भवन प्लान की स्वीकृति के बिना किसी व्यक्ति द्वारा कोई भी भवन अथवा स्थायी प्रकृति के संरचना का निर्माण अथवा निर्माण का प्रारंभ अथवा भवन निर्माण से संबंधित किसी कार्य का क्रियान्वयन अथवा विद्यमान भवन में कोई परिवर्त्तन, जोड़ अथवा रूपान्तरण नहीं किया जाएगा। तथापि कोई वास्तुकार किसी भवन निर्माण की स्वीकृति तब तक नहीं देगा जब तक राज्य सरकार/नगरपालिका द्वारा बनाये गये भवन उप–विधि (भ.उ.वि.) के अनुरूप न हो।

कुल स्वीकृत 7865 भवन योजनाओं (जनवरी 2009 से दिसम्बर 2013 के बीच) में से 700 के नमूना जाँच में भवन उप–विधि का उल्लंघन, राजस्व की हानि और अन्य अनियमितताएँ पायी गयी जो आगे की कंडिकाओं में वर्णित है।

2.7.5.1 राजस्व की हानि

- ***विकास अनुज्ञा शुल्क की उगाही नहीं***

प.न.नि. ने जनवरी 2009 से दिसम्बर 2013 के दौरान भवन योजनाओं को स्वीकृत करते समय विकास अनुज्ञा शुल्क की उगाही नहीं की

भ.उ.वि. के उप विधि सं0 6.1 समाविष्ट करता है कि उप–विधि 4.1 के तहत विकास अनुज्ञा के लिए कोई आवेदन की वैधता तब तक नहीं होगी जब तक आवेदक उप–विधियों में विहित पैमाने के अनुसार शुल्क (विकास क्षेत्र के अनुसार ₹ 1500 – ₹ 5000) का भुगतान नहीं करता है और भुगतान की रसीद की अभिप्रमाणित प्रतिलिपि आवेदन के साथ संलग्न नहीं करता है।

लेखापरीक्षा संवीक्षा में पाया गया कि प.न.नि./वास्तुविदों द्वारा एक हेक्टेयर तक के क्षेत्रफल के विकास की 7865 भवन योजनाओं की स्वीकृति (जनवरी 2009 से दिसम्बर 2013) दी गयीं थी। तथापि न तो प.न.नि. और न ही वास्तुविदों द्वारा भवन योजनाओं

[13] *NL02 4869 नं. की हाईवा पर ₹ 9.45 लाख व्यय किया गया।*

को स्वीकृत करते समय विकास अनुज्ञा शुल्क की वसूली की गयी। परिणामस्वरूप, प.न.नि. को जनवरी 2009 से दिसम्बर 2013 के दौरान ₹ 1.18 करोड़[14] राजस्व की हानि हुई।

इसे इंगित किये जाने पर प.न.नि. द्वारा कोई जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया।

- ***दाखिल खारिज शुल्क की हानि***

पटना क्षेत्रीय विकास प्राधिकार (प.क्षे.वि.प्र.), भूमि निपटान अधिनियम, 1978 के नियम 20 अनुबद्ध करता है कि प्राधिकार द्वारा पट्टे पर दी गई किसी भूखण्ड अथवा उसके किसी भाग को प्राधिकार की अनुमति के बिना पट्टे की तिथि से 10 वर्षों की अवधि के अंदर विक्रय अथवा उपहार द्वारा हस्तांतरित नहीं किया जाएगा। आगे यह प्रावधान किया गया है कि वैसे मामलों में भी जहां 10 वर्षों की अवधि समाप्त हो चूकी है भूखण्ड हस्तांतरण होने के पहले पट्टे की शर्त्तों के साथ भूमि के हस्तांतरण के अभिप्राय को लिखित रूप में ससमय प्राधिकार को बताया जायेगा। बशर्त्ते कि प्राधिकार को प्रतिवर्ष 6 प्रतिशत ब्याज के साथ आवंटी द्वारा भुगतान की गई प्रीमियम वापस करने के बाद पुर्नप्राप्ति का प्रथमाधिकार होगा या आवंटी द्वारा विक्रय मूल्य के 50 प्रतिशत राशि में से लीज की राशि को घटाकर शेष राशि नामंतरण शुल्क के रूप में प्राधिकार को भुगतान करना होगा। हस्तांतरित भूखण्ड का उपयोग केवल रिहायशी उद्देश्य हेतु किया जाना था।

स्वीकृत भवन योजनाओं के अभिलेखों के संवीक्षा में यह पाया गया कि प.क्षे.वि.प्रा. (विघटित और अब प.न.नि. के तहत) द्वारा पट्टे पर दिए गए भुखण्डों के 6ः मामलों में पट्टेदारों ने प्राधिकार के अनुमति के बिना निजी डेवलपरों के साथ बहुमंजिली इमारतों के निर्माण हेतु अनुबंध (अक्टूबर 2008 से जून 2011) किया।

प.न.नि. ने प्रीमियम एवं उसपर ब्याज की प्रतिपूर्त्ति के पश्चात् न तो जमीन की पुर्नप्राप्ति के अपने प्रथम अधिकार का प्रयोग किया और न ही नियमानुसार निर्धारित नामांतरण शुल्क वसूला, जिसके कारण ₹ 2.04 करोड़ की हानि हुई ***(परिशिष्ट–2.7.11)***।

बहिर्गमन सम्मेलन में अ.न.आ.ने जवाब दिया कि मामले की जाँच कर तदनुरूप कारवाई की जायेगी।

2.7.5.2 भवन उप–विधियों का उल्लंघन

भ.उ.वि. की उप विधियॉ उद्वित करता है कि भवन की उँचाई का निर्धारण सतह क्षेत्र अनुपात (स.क्षे.अ.)[15], (भ.उ.वि. 21.1) भूखण्डों के सामने खुली जगह एवं सड़क की चौड़ाई के अनुसार किया जायेगा। भ.उ.वि. के नियम 19 (टिप्पणी 10 एवं 11) प्रावधान करता है कि 15 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले भवन के सामने कम से कम 12 मीटर चौड़ा विद्यमान सड़क होगा तथा 11 मीटर से ज्यादा तथा 15 मीटर तक की ऊँचाई के भवन के सामने कम से कम छः मीटर चौड़ा विद्यमान सड़क होगा। भ.उ.वि. उपबंध करता है कि विनिर्देशित न्यूनतम आवश्यकता के अनुसार विभिन्न आवासीय भवनों के सामने, पीछे और अगल–बगल भूखण्ड सीमाओं के अंदर बाह्य खुला जगह छोड़ा जाएगा जो भूखण्ड की चौड़ाइ और भवनों की उँचाईयों के अनुरूप होगा।

---

14 *हानि की गणना एक हेक्टेयर तक के भुखण्ड के लिए न्यूनतम विकास दर ₹ 1500 पर की गयी है।*

15 *सतह क्षेत्र अनुपात (स.क्षे.अ):– पूरे तलों के क्षेत्रफल में कुल भूखण्ड़ क्षेत्रफल को भाग देने से प्राप्त भागफल को सतह क्षेत्रफल अनुपात (भ.उ.वि–2.32) कहा जाता है। भ.उ.वि के उ.वि सं 21.1 के प्रावधान के अनुसार जनसंख्या घनत्व, आधारभूत संरचना की उपलब्धता की स्थिति, विकास की संभावना इत्यादि को देखते हुए भिन्न–भिन्न स.क्षे.अ निर्धारित किया गया है।*

बिहार राज्य आवास बोर्ड (बि.रा.आ.बो.) अधिनियम 1982 में प्रावधान किया गया है कि कोई व्यक्ति भवन या दीवार निर्माण, फिर से निर्माण, जोड़ या परिवर्त्तन नहीं करेगा या उसके द्वारा स्वामित्व या बोर्ड द्वारा आवंटित भूमि या भवन पर ऐसा करना प्रारंभ नहीं करेगा जब तक कि प्रस्तावित निर्माण को दर्शाते हुए प्रबंध निदेशक से पूर्व अनुमोदन न लिया गया हो और प्रस्तावित निर्माण इस अधिनियम के तहत बनाए गए नियमों, विनियमों एवं उप विधि के अनुरूप न हो।

भवन प्लानों की स्वीकृति देते समय भवन उप–विधियों का उल्लंघन किया गया

लेखापरीक्षा संवीक्षा में प.न.नि. द्वारा भवन योजनाओं को दी गई स्वीकृति में निम्नलिखित विसंगतियॉं पाई गई :

- 17 मामलों में स्वीकार्य सीमा से अधिक स.क्षे.अ. के साथ भवन निर्माण योजनाओं की स्वीकृति दी गई, जो भ.उ.वि. में विहित खुले क्षेत्र में कमी के रूप में परिणत हुई ***(परिशिष्ट–2.7.12)***।
- 22 मामलों में 15 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले भवनों के निर्माण योजनाओं की स्वीकृति दी गई जबकि भूखण्डों के सामने गली की चौड़ाई 12 मीटर से कम था। 11 से 15 मीटर ऊंचाई के तीन योजनाओं की स्वीकृति दी गई जबकि सड़क की चौड़ाई 6 मीटर से कम थी ***(परिशिष्ट–2.7.13)***।
- 15 मामलों में भ.उ.वि. के प्रावधानों का उल्लघंन कर आवश्यक न्यूनतम सेट बैक 0.18 मी. से 3.5 मी. छोड़े बिना ही योजनाओं की स्वीकृति दी गयी ***(परिशिष्ट– 2.7.14)***।
- 30 मामलों में प.न.नि. के आर्किटेक्ट द्वारा बि.रा.आ.बो की भूमि पर बहुमंजिली ईमारतों का निर्माण की स्वीकृति बि.रा.आ.बो से 'अनापत्ति प्रमाण पत्र' प्राप्त किये बिना ही दी गई ***(परिशिष्ट–2.7.15)***।

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टूबर 2014) में अ.न.आ. द्वारा जवाब दिया गया कि मामले की जाँच कर, तदनुरूप कार्रवाई की जायेगी।

2.7.5.3 अन्य मामले

- ***निर्माणाधीन भवनों का निरीक्षण नहीं किया जाना***

प.न.नि. के निबंधित वास्तुकारों द्वारा स्वीकृत 6796 प्लानों का आवश्यक निरीक्षण नहीं किया गया।

बिहार नगरपालिका अधिनियम 2007 के धारा 318 उपबंधित करता है कि प्रत्येक निबंधित वास्तुकार, जिसने भवन निर्माण योजना को स्वीकृत किया है उसके द्वारा स्वीकृत वैसे भवन निर्माण या स्थायी महत्व की संरचना का नियतकालिक निरीक्षण करेगा और यदि वह संतुष्ट है कि भवन निर्माण स्वीकृत योजना का उल्लंघन कर किया गया है, तो वह तुरंत ऐसे उल्लंघन को मुख्य नगरपालिका पदाधिकारी को प्रतिवेदित करेगा। राज्य सरकार द्वारा निर्माणाधीन भवनों के निरीक्षण हेतु विशिष्ट निर्देश भी निर्गत किये गये थे (जुलाई 2009) जिसमें यह अधिदेशाधीन था कि प्रमाणित वास्तुविदों द्वारा कार्य स्थल का निरीक्षण किया जाना था।

लेखापरीक्षा संवीक्षा में पाया गया कि जुलाई 2009 से दिसंबर 2013 की अवधि में निबंधित वास्तुविदों द्वारा स्वीकृत 6796 प्लानों में अपेक्षित निरीक्षण नहीं किया गया था। आवधिक निरीक्षण प्रतिवेदन नहीं रहने के कारण, प.न.नि. यह सुनिश्चित करने में विफल रहा कि वास्तुविदों द्वारा स्वीकृत प्लानों के अनुसार भवन निर्माण किए जा रहे थे।

- ***पूर्णता एवं अधिपत्य प्रमाण–पत्र***

भ.उ.वि. में उपबंधित है कि कार्य की समाप्ति पर, निबंधित तकनीकी व्यक्ति विहित प्रपत्र में भवन की पूर्णता की स्थिति की सूचना प्राधिकार को देगा तथा भौतिक रूप से निर्मित, पुनर्निर्मित अथवा परिवर्तित किसी भवन को पूर्ण अथवा आंशिक रूप से रहने के

लिए तब तक प्रयोग में नहीं लाया जा सकेगा जब तक कि इसका अधिपत्य प्रमाण–पत्र नगरपालिका प्राधिकारी (नगर आयुक्त) द्वारा निर्गत नहीं कर दिया जाता है तथा यह पुष्टि नहीं कर दी जाती है कि ऐसे भवन रहने के योग्य हैं (उप–विधि सं0 13.1)।

लेखापरीक्षा संविक्षा में पाया गया कि किसी भी मामले में तकनीकी कर्मियों द्वारा स्वीकृत प्लानों का न तो पूर्णता प्रमाण–पत्र जमा किया गया और न ही प.न.नि द्वारा अधिपत्य प्रमाण–पत्र निर्गत किया गया।

- ***अनाधिकृत वास्तुविदों द्वारा प्लानों की स्वीकृति***

भ.उ.वि. में उपबंधित है कि प्राधिकारी द्वारा योग्य तकनीकी कर्मी या समूह को वास्तुविद, अभियंता, टाउन प्लानर तथा ड्राफ्ट्समैन का लाईसेंस दिया जाएगा तथा लाईसेंस सिर्फ एक कैलेण्डर वर्ष के लिए वैध होगा और उसके उपरांत उसे प्रतिवर्ष पुर्ननवीकरण कराना होगा।

लेखापरीक्षा संविक्षा में पाया गया कि राज्य सरकार तथा प.न.नि. के अधिकार क्षेत्र के लिए वर्ष 2009 में क्रमशः 40 तथा 11 वास्तुविदों को भवनों के प्लानों को पारित करने के लिए निबंधित किया गया था। तथापि वर्ष 2010 से इन वास्तुविदों के लाईसेंस का नवीकरण नहीं किया गया था फिर भी उन्हें दिसम्बर 2013 तक नक्शा पारित करने की अनुमति दी गई ।

बहिर्गमन सम्मेलन (अक्टूबर 2014) में अ.न.आ. ने जवाब दिया गया कि मामले की जॉच कर तदनुरूप कार्रवाई की जायेगी।

अनुशंसाः प.न.नि. को विकास अनुज्ञा शुल्क तथा दाखिल खारिज शुल्क की वसूली सुनिश्चित करनी चाहिए तथा प्लानों की स्वीकृति के समय भवन उप विधियों का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

2.7.6. निष्कर्ष

- प.न.नि. के पास ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की पद्धति की पर्याप्त नहीं थी क्योंकि घर–घर से अपशिष्टों के संग्रहण, पृथक्करण तथा अपशिष्टों का पुर्नचक्रण नहीं किये जा रहे थे। प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित नहीं किया गया था तथा कूड़ों को अनाधिकृत गड्ढो में गिराया जा रहा था।

- ठो.अ.प्र. के तहत व्यय की अनुश्रवण अपर्याप्त थी क्योंकि लेखापरीक्षा में ईंधन विपत्रों तथा भाड़ा प्रभारों के अनियमित भुगतान के अनेक मामलें में पाये गये।

- प्लानों को स्वीकृत करते समय भवन उप–विधि का पालन नहीं किया गया था क्योंकि सार्वजनिक मार्गों की चौड़ाई का विचार किये बिना अग्राह्य सतह क्षेत्र अनुपात/बहु मंजिली इमारतों के लिए प्लानों को स्वीकृत किये गये थे।

- प.न.नि. द्वारा प्लानों की स्वीकृति देते समय विकास अनुज्ञा शुल्क तथा दाखिल खारिज शुल्क की वसूली नहीं की गई।

अध्याय-III

अनुपालन लेखापरीक्षा

अध्याय– III
अनुपालन लेखापरीक्षा

सरकार के विभागों, उनके क्षेत्र संरचनाओं के साथ–साथ स्वायत्त निकायों की अनुपालन लेखापरीक्षा में संसाधन प्रबंधन में कमियाँ एवं नियमितता, औचित्य और मितव्ययिता के मानकों के अनुपालन में विफलताओं के कई उदाहरण उजागर हुए। इन्हें अगामी कंडिकाओं में प्रक्षेत्र–वार प्रस्तुत किया गया है।

सामान्य प्रक्षेत्र

योजना एवं विकास विभाग

3.1 सोलर स्ट्रीट लाईट के अधिष्ठापन पर आधिक्य व्यय

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, बेगुसराय द्वारा अत्यधिक दर पर अभिकरणों को अविवेकपूर्ण कार्य आवंटन के फलस्वरूप ₹ 1.31 करोड़ का आधिक्य व्यय के साथ–साथ उस सीमा तक सरकार को हानि हुई।

बिहार वित्तीय (संशोधित) नियमावली (बि.वि.नि.) 2005 के नियम 126 के अनुसार प्रत्येक प्राधिकारी, जिन्हें सामानों के अधिप्राप्ति हेतु वित्तीय शक्तियाँ प्रदत्त है, का यह कर्त्तव्य एवं दायित्व होगा कि वह लोक अधिप्राप्ति के मामलों में दक्षता, मितव्ययिता तथा पारदर्शिता लाए तथा स्वयं को संतुष्ट करे कि चयनित प्रस्ताव का मूल्य अपेक्षित गुणवत्ता के प्रति औचित्यपूर्ण एवं अनुरूप है।

एमपीलैड्स[1] के अंतर्गत जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (जि0का0पदा0), बेगुसराय द्वारा क्रयित सोलर स्ट्रीट लाईट के अभिलेखों के नमूना जाँच (सितम्बर 2013) में पाया गया कि राज्य सरकार ने सोलर उपकरणों के क्रय हेतु बेल्ट्रॉन के स्थान पर ब्रेडा[2] को राज्य क्रय संस्थान (रा0क्र0सं0) के रूप में प्रतिस्थापित (सितम्बर 2012) किया। निदेशक, ब्रेडा ने भी जि.का.पदा., बेगुसराय को सौर उपकरणों का क्रय ब्रेडा प्राधिकृत लाइसेंस चैनल पार्टनर/शॉप्स[3] से ब्रेडा द्वारा निर्धारित दरों पर करने हेतु निदेश (अक्टूबर 2012) जारी किया। इसकी पुष्टि प्रधान सचिव, योजना एवं विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा भी (जून 2013) की गयी। आगे निदेशक, ब्रेडा ने निर्दिष्ट (जुलाई 2013) किया कि सोलर लाईट का क्रय और अधिष्ठापन निविदा के तहत किया जाय तथा मेर्सस अक्षय ऊर्जा शॉप से, जो कि छोटे पैमाने पर सौर उपकरणों की खरीद और मरम्मती का केन्द्र था, इसके क्रय को निषिद्ध किया। हाँलांकि ब्रेडा, ने नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के विनिर्देशनों के अनुरूप सोलर लाईट[4] के क्रय तथा अधिष्ठापन का दर ₹ 61,775 पर निर्धारित (सितम्बर 2013) किया।

लेखापरीक्षा के दौरान यह पाया गया कि उपरोक्त निदेशों के बावजूद जि0का0पदा0, बेगुसराय ने मेसर्स अक्षय उर्जा शॉप, बेगुसराय को ₹ 1.75 लाख[5] प्रति सोलर स्ट्रीट लाईट के उच्च दर पर 278 सोलर लाईट के प्रतिष्ठापन के लिये आदेश (सितम्बर–नवम्बर 2013) दिया। कुल निर्धारित मूल्य ₹ 4.87 करोड़ के विरूद्ध कुल ₹ 2.03 करोड़ की राशि का भुगतान किया गया। हाँलांकि 278 सोलर लाईट में से मात्र

---

1 *मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट लोकल एरिया डेवलपमेंट स्कीम।*
2 *बिहार रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी।*
3 *मेसर्स अक्षय ऊर्जा शॉप, बेगुसराय।*
4 *(11वाट × 4) आमर्स लाईट, लेड एसीड टयूबुलर फ्लडेड बैटरी के साथ।*
5 *एजेंसी के द्वारा दिया गया दर (जून 2013)।*

116 सोलर लाईट ही अधिष्ठापित (नवम्बर 2014) किए गए थे। इस प्रकार निविदा प्रक्रिया या ब्रेडा द्वारा निर्धारित दर (सितम्बर 2013) पर सोलर उपकरण क्रय नहीं किये जाने के फलस्वरूप ₹ 1.31 करोड़ का आधिक्य खर्च /भुगतान हुआ ***(परिशिष्ट 3.1)***।

इसे इंगित किये जाने पर विभाग ने जि.का.पदा., बेगुसराय के जवाब को अग्रसारित (अप्रैल 2014) किया। जि0कार्य0पदा0 ने बताया कि वित्त विभाग के संकल्प (सितम्बर 2012) तथा निदेशक ब्रेडा के पत्र (जुलाई 2012) के आधार पर, जिसमें मेसर्स अक्षय उर्जा शॉप, बेगुसराय, ब्रेडा को लाइसेंस/चैनल पार्टनर घोषित किया गया था, इसे सोलर स्ट्रीट लाईट के अधिष्ठापन का कार्य सौंपा गया था। विभाग का जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि न तो जि0का0पदा0, बेगुसराय ने सोलर लाईट उपकरण का क्रय तथा उनका अधिष्ठापन निविदा के प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर किया और न ही इसे ब्रेडा द्वारा निर्धारित दर पर ही किया गया।

इस प्रकार, जि0का0पदा0 बेगुसराय के द्वारा एजेंसी को अत्यधिक उच्च दर पर अविवेकपूर्ण कार्य आंवटन के फलस्वरूप ₹ 1.31 करोड़ का आधिक्य व्यय के साथ–साथ सरकार को उतनी ही राशि की हानि भी हुई।

मामला सरकार को सूचित किया गया (जून 2014); स्मार–पत्रों के बावजूद भी जवाब अप्राप्त थे (नवम्बर 2014)।

सामाजिक प्रक्षेत्र

स्वास्थ्य विभाग

3.2 कपटपूर्ण भुगतान

असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, किशनगंज द्वारा समुचित जाँच, मूल्यांकन तथा सतर्कता की कमी के कारण अस्तित्वविहीन अनुमंडलीय अस्पताल के वाह्य सेवा हेतु एक एजेंसी को ₹ 53.94 लाख का कपटपूर्ण भुगतान हुआ।

स्वास्थ्य विभाग ने बिहार सरकार (बि.स.) की अधिघोषणा (अप्रैल 2008 के साथ सह पठित जुलाई 2009) द्वारा 10 जिलों[6] के अनुमंडलीय अस्पताल को नई स्वीकृत क्षमता के साथ सदर अस्पताल में उत्क्रमित किया।

जिला स्वास्थ्य समिति (जि.स्वा.स.), किशनगंज के अभिलेखों के नमूना जाँच (नवम्बर–दिसम्बर 2013) ने उद्घाटित किया कि जि.स्वा.स., किशनगंज ने बाह्य–व्यवस्था अंतर्गत सभी अस्पतालों[7] में सेवाओं[8] हेतु निविदा आमंत्रित (जून 2009) किया। असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–सदस्य सचिव, जि.स्वा.स., किशनगंज ने सभी अस्पतालों में उपरोक्त सेवाओं के लिए तीन में से न्यूनतम निविदाकार अभिकरण (हेल्थ लाईन, पटना) के साथ एक एकरारनामा (जुलाई 2009) किया तथा वर्ष 2009–13 के दौरान सदर अस्पताल एवं अनुमंडलीय अस्पताल के लिए दोहरी क्षमता में ₹ 1.44 करोड़ की निकासी की। उत्क्रमण के बावजूद असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी (अ.श.चि–सह–मु.चि.पदा.) ने विपत्रों का पृथक्करण कर अगस्त 2009 से फरवरी 2013 के दौरान ***(परिशिष्ट 3.2)*** अभिकरण को असैनिक अनुमंडलीय अस्पताल, किशनगंज हेतु ₹ 53.94 लाख तथा सदर अस्पताल हेतु ₹ 90.09 लाख का भुगतान किया। चूँकि

---

[6] *अररिया, बाँका, बक्सर, जमुई, कैमूर, किशनगंज, लखीसराय, शेखपुरा, शिवहर तथा सुपौल*

[7] *सदर अस्पताल, अनुमंडलीय अस्पताल, सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पी.एच.सी.) तथा रेफरल अस्पताल छत्तरगाछ।*

[8] *सफाई, धुलाई, रसोई भंडार (रसोईघर), अस्पताल परिसर का रख–रखाव तथा गैर–सरकारी संगठनो द्वारा जेनरेटर सेवा।*

अनुमंडलीय अस्पताल, किशनगंज जुलाई 2009 से ही अस्तित्व में नहीं था और दो अस्पताल (सदर और अनुमंडलीय अस्पताल) किसी भी समय एक साथ कार्यरत नहीं थे, इसके परिणामस्वरूप अभिकरण को ₹ 53.94 लाख का कपटपूर्ण भुगतान हुआ।

इसे इंगित किये जाने पर, अ.श.चि.–सह–मु.चि.पदा., किशनगंज ने कहा (दिसम्बर 2013) कि एकरारनामा किए जाने तक दोनों इकाइयाँ अलग–अलग कार्यरत् थीं तथा एकरारनामा के आधार पर भुगतान किए गए थे। नये एकरारनामा में दोनों इकाईयों का विलय कर दिया गया था।

जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि विभाग द्वारा अनुमंडलीय अस्पताल को सदर अस्पताल में उत्क्रमित करने के बाद एजेंसी के साथ बाह्य–सेवाओं हेतु एकारारनामा किया गया था। इस प्रकार बाह्य एजेंसी के साथ एकारारनामा के निष्पादन की तिथि (जुलाई 2009) के दिन कभी भी दो अलग–अलग अस्पताल अस्तित्व में नहीं थे। सरकार द्वारा अस्पतालों को जारी (2007–10) किए गए आवंटन पत्र[9] भी इस तथ्य की पुष्टि करते थे। दो विभिन्न अस्पतालों को प्रदत्त सेवाओं के लिए एजेंसी के विभिन्न दावों का अ.श.चि.–सह–मु.चि. पदा., किशनगंज द्वारा बिना किसी उचित जाँच, मूल्यांकन तथा सतर्कता के स्वीकार किए जाने के कारण बाह्य एजेंसी को ₹ 53.94 लाख का कपटपूर्ण भुगतान हुआ।

इस मामले को सरकार को संदर्भित किया गया (जून 2014); स्मार–पत्रों के बावजूद भी जवाब प्रतीक्षित था (नवम्बर 2014)।

3.3 दवाओं के अनियमित क्रय पर अधिक भुगतान

राज्य स्वास्थ्य समिति के निर्धारित प्रक्रियाओं का उल्लंघन कर दवाओं के अनियमित क्रय के फलस्वरूप ₹ 1.41 करोड़ का अधिक भुगतान हुआ।

पूरे राज्य में सभी दवाओ की दर एवं गुणवत्ता में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए वित्त विभाग, बिहार सरकार ने राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार (रा0स्वा0स0बि0) को पूरे राज्य में दवा क्रय हेतु 'राज्य क्रय संगठन' (रा0क्र0सं0) के रूप में नामित (अप्रैल 2007) किया । रा0स्वा0स0बि0 ने राज्य के सभी जिलों में सितम्बर 2010 से मार्च 2014 के दौरान दवाओं की आपूर्त्ति हेतु विभिन्न अभिकरणों के साथ एकरारनामा (अगस्त 2010 तथा अक्टूबर 2012) किया। इन दवाओं की सूची सभी अस्पतालों एवं चिकित्सा महाविद्यालयों के अधीक्षकों तथा जिला स्वास्थ्य समितियों के असैनिक शल्य चिकित्सकों–सह–सदस्य सचिवों को वितरित किया गया था। एकरारनामाओं के अनुसार, संबंधित जिलों के संबंधित प्राधिकारियों को सीधे पटना में अभिकरण को आदेश उपस्थापित करना था एवं मदों की प्राप्ति होने पर भुगतान किया जाना था।

दो[10] असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारियों (अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0) के वर्ष 2010–11 से 2012–13 से संबंधित अभिलेखों के नमूना जाँच (मई 2013 और अगस्त 2013) में पाया गया कि 106 मामलों में, रा0स्वा0स0बि0 की अनुबंधित सूची में शामिल दवाओं, जिनका मूल्य ₹ 1.49 करोड़ था, का क्रय जिला क्रय समिति (जि0क्र0स0) की सिफारिश पर ₹ 2.90 करोड़ में स्थानिक क्रय किया गया। निर्धारित प्रक्रियाओं का उल्लंघन कर दवाओं का स्थानिक क्रय किये जाने के फलस्वरूप ₹ 1.41 करोड़ ***(परिशिष्ट 3.3)*** का अधिक भुगतान हुआ ।

इसे इंगित (मई 2013 तथा अगस्त 2013) करने पर अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, बाँका ने बताया कि अनुमोदित अभिकरणों द्वारा दवाओं की ससमय आपूर्त्ति नहीं किये जाने के

---

9 *स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार द्वारा मुख्य व्यय शीर्ष 2210 ; विपत्र कोड–N 2210011100013 के अधीन निधि आवंटन हेतु जारी पत्र।*

10 *अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, बाँका ; अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, आरा*

कारण, दवाओं का क्रय जि0क्र0स0 द्वारा अनुमोदित दर पर किया गया। बाद में, इस तथ्य को स्वीकार करते हुए (नवम्बर 2014) कि जरूरत की सभी दवाओं हेतु रा0स्वा0स0बि0 द्वारा प्राधिकृत अभिकरणों को क्रयादेश नहीं किया गया था, उन्होंने बताया कि 'कैश व कैरी' प्रक्रिया व्यवस्था के अंतर्गत अभिकरणों को अग्रिम भुगतान किये जाने के बाद ही दवाओं की आपूर्त्ति की जानी थी। यद्यपि वित्त विभाग का परिपत्र (अप्रैल 1998) अग्रिम की निकासी को निषिद्ध करता था। अतः दवाओं का क्रय केवल उन्हीं फर्मों से करना था जिन्होंने पहले दवाओं की आपूर्ति करने तथा कोषागार से विपत्रों के पारित होने के उपरांत भुगतान प्राप्त करने की रजामंदी दी थी। उन्होंने यह भी कहा कि जि0स्वा0स0 तथा असैनिक शल्य चिकित्सक कार्यालय–दोनों के नियंत्री पदाधिकारी होने के कारण दोनों कार्यालयों के बीच औपचारिक पत्राचार नहीं किया गया था। अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, आरा ने कहा (अगस्त 2013) कि स्वास्थ्य विभाग के मापदंड के अनुसार केवल उन्ही दवाओं का क्रय जि0क्र0स0 के अनुमोदित दर पर किया गया, जिनका दर रा0स्व0स0बि0 द्वारा निर्धारित नहीं किया गया था।

अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, बाँका का वित्त विभाग के परिपत्र (अप्रैल 1998) के उध्धरण के साथ जवाब इस प्रसंग में स्वीकार्य नहीं था क्योंकि दवाओं का क्रय निर्धारित 'कैश व कैरी' प्रक्रिया द्वारा संबंधित रा0स्वा0स0 द्वारा करना था तथा अनुमोदित आपूर्त्तिकर्त्ता को कोई भी अग्रिम नही दी जानी थी। संबंधित जि0स्वा0स0 द्वारा दवाओं की आपूर्त्ति के बाद अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0 को कोषागार से जि0स्वा0स0 के नाम से विपत्र की निकासी करनी थी। अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, आरा का जवाब भी स्वीकार्य नहीं था क्योंकि एक दवा[11] का स्थानिक स्तर पर क्रय, रा0स्वा0स0बि0 द्वारा अनुमोदित दर से अधिक दर पर किया गया था।

इस प्रकार, दवा क्रय के कुल 106 मामलों में रा.स्वा.स.बि. द्वारा अनुबंधित सूची में शामिल रहने के बावजूद भी निर्धारित प्रक्रियाओं का घोर उल्लघंन कर क्रय किया गया था। जि0क्र0स0 के सिफारिश पर दवाओं के अनियमित क्रय के फलस्वरूप ₹ 1.41 करोड़ का अधिक भुगतान किया गया।

मामला सरकार को संदर्भित (मई 2014) किया गया ; स्मार–पत्रों के बावजूद भी उनका उत्तर (नवम्बर 2014) अप्राप्त था।

3.4 दवाओं के क्रय में अनियमितताएँ

दवाओं के क्रय से संबंधित विहित नियमों तथा अनुदेशों के अनुपालन नहीं किए जाने एवं प्रतिबंधित दवाओं के अनियमित क्रय के कारण सरकार को ₹ 88.28 लाख की हानि हुई।

(अ) अनाधिकृत अग्रिम

स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण विभाग, बिहार सरकार ने जिलों में दवाओं के क्रय हेतु जिला स्वास्थ्य समिति (जि0स्वा0स0) को अधिप्राप्ति अभिकरण के रूप में नामित (जूलाई 2006) किया था। संबंधित जि0स्वा0स0 को अपने चिकित्सकीय आवश्यकताओं की अधिप्राप्ति राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार (रा0स्वा0स0बि0) द्वारा अनुमोदित वेंडरों से करनी थी।

रा0स्वा0स0बि0 के निबंधन एवं शर्त्तों के उपबंध 5.03 के अनुसार कम्पनियों द्वारा दवाओं की आपूर्त्ति के लिए, रा0स्वा0स0बि0 को विज्ञापित औषधीय–सूची के अनुसार औषधियों की दर संविदा को अंतिम रूप देना था। संबंधित जिलों के मेडिकल कॉलेजों एवं अस्पतालों के संबंधित अधीक्षकों/सिविल सर्जनों/रा0स्वा0स0/राज्य– स्तरीय सरकारी

[11] *एमपीसिलिन + क्लोक्सासिलिन 500 एम0जी0*

अस्पतालों/संस्थाओं द्वारा आपूर्त्तिकर्त्ता को सीधे क्रयादेश देना था। पूर्ण माँग–पत्र परिमाण, जिसके लिए प्रोफार्मा इन्वाईसों को जारी किया गया था, को 'कैश एवं कैरी' आधार पर कंपनियों के गोदामों–सह–भंडारों से एकत्रित किया जाना था एवं इसके लिए अग्रिम भुगतान का कोई प्रावधान नहीं था। इसके अलावा, रा0स्वा0स0बि0 के निबंधन एवं शर्त्तों का उपबंध 5.01 स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करता था कि प्रथम आपूर्त्ति को प्रथम आदेश की प्राप्ति के 45 दिनों के अंदर प्राप्त किया जाना चाहिए था तथा बाद की सभी आपूर्तियों को आदेश प्राप्ति के 20 दिनों के अंदर कर लिया जाना चाहिए था।

चार[12] जि.स्वा.स. के अभिलेखों के नमूना जाँच (जुलाई 2013 एवं फरवरी 2014) में यह उद्घाटित हुआ कि वर्ष 2010–2013 के दौरान विभिन्न फर्मों को दवाओं की खरीद के लिए ₹ 235.54 लाख का अग्रिम अनियमित रूप से प्रदान किया गया। इसके विरूद्ध संबंधित जि0स्वा0स0 द्वारा केवल ₹ 165.04 लाख कीमत की दवाओं का आपूर्त्ति/संग्रह/समायोजन किया गया। परिणामस्वरूप ₹ 70.50 लाख मूल्य की दवाओं की कम आपूर्त्ति हुयी, जो अगस्त 2014 तक पूरी नहीं की जा सकी थी ***(परिशिष्ट 3.4)***।

इसे इंगित किये जाने पर, असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी–सह सदस्य सचिव (अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0–सह–स0स0), जि.स्वा.स. बेतिया, सारण तथा मुजफ्फरपुर द्वारा बताया (अगस्त 2014) गया कि संबंधित फर्मों के द्वारा दवा की आपूर्त्ति नहीं की गयी और न ही राशि वापस की गयी जिसके लिए पत्र निर्गत किये गये थे/किये जा रहे थे। अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0–सह–स0स0, जि0स्वा0स0, पूर्णियाँ ने यह तथ्य भी स्वीकार किया (सितम्बर 2014) कि आपूर्त्तिकर्त्ता फर्मों के पास अवशेष राशि बची थी जिसे अन्य दवाओं की आपूर्त्ति के लिए भुगतान की जाने वाली राशि से समायोजित कर ली जाएगी।

इस प्रकार, संबंधित जि0स्वा0स0 के अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0–सह–स0स0 द्वारा सरकार के विहित निर्देशों का उल्लंघन कर आपूर्त्तिकर्त्ता को अग्रिम दिये जाने के फलस्वरूप ₹ 70.50 लाख की दवाओं की कम आपूर्ति की गई, साथ ही आपूर्तिकर्त्ता को अदेय वित्तीय लाभ दिया गया तथा उतनी ही राशि का सरकार को हानि हुई।

(ब) प्रतिबंधित दवाओं का क्रय

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (स्वा0 एवं परि0क0मंत्रा0) भारत सरकार ने लोकहित में गैटीफ्लोक्सासिन एवं टेगासेरोड नाम की दवाओं का उत्पादन, बिक्री एवं वितरण को प्रतिबंधित (मार्च 2011) कर दिया था तथा देश में लोकहित में इसके फॉर्मूलेशन पर रोक लगा दिया[13] था चूँकि इन दवाओं के प्रयोग से मानव–जाति को संभाव्य खतरा था जबकि इन दवाओं का सुरक्षित विकल्प मौजूद था।

हाँलांकि, असैनिक शल्य चिकित्सक (अ0श0चि0), बेतिया के अभिलेखों के नमूना जाँच (अगस्त 2013) में पाया गया कि असैनिक शल्य चिकित्सक ने स्थानीय आपूर्तिकर्त्ता[14] को नौ लाख गैटीफ्लोक्सासिन–200 एम0जी0 टेबलेट (27 एवं 28 मार्च 2011) आपूर्त्ति हेतु आदेश दिया तथा ₹ 17.78 लाख का भुगतान किया (मार्च 2011)। इन दवाओं की प्राप्ति कर भंडार में (अप्रैल 2011) दर्ज कर लिया गया जिसे बाद में औषधि निरीक्षक, बेतिया द्वारा जब्त (जून 2011) कर लिया गया जो कि फरवरी 2013 में कालातीत हो गया।

इसे इंगित किए जाने पर अ0श0चि0–सह–मु0चि0पदा0, बेतिया द्वारा स्वीकार किया गया (अगस्त 2013) कि प्रतिबंधित दवाओं का क्रय घोर अनियमित था जिसके लिए विभागीय जाँच आवश्यक थी। उन्होंने आगे बताया (अगस्त 2014) कि संबंधित फर्म ने राशि नहीं लौटाई थी जिसके लिए उसके विरूद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

---

12 *बेतिया, मुजफ्फरपुर, पूर्णियाँ और सारण (छपरा)*

13 *गजट अधिसूचना सं0. जी0एस0आर0 218 (ई.) दिनांक 16 मार्च 2011.*

14 *मेसर्स एस0एन0 सप्लायर एजेंसी, मोतिहारी।*

इस प्रकार दवाओं से संबंधित नियमों तथा निदेशों का अनुपालन नहीं किए जाने के फलस्वरूप तथा प्रतिबंधित दवाओं का अनियमित क्रय होने के कारण सरकार को ₹ 88.28 लाख की हानि हुई।

मामला सरकार को संदर्भित किया गया (जून 2014); स्मार–पत्र के बावजूद उनके उत्तर अप्राप्त थे (नवम्बर 2014)।

शिक्षा विभाग

3.5 सर्व शिक्षा अभियान निधि का गबन

सर्व शिक्षा अभियान के तहत निर्गत राशि को प्रधानाध्यापक से वापसी हेतु कार्यवाही शुरू करने में जिला कार्यक्रम पदाधिकारी की विफलता के कारण ₹ 20.11 लाख का गबन हुआ।

बिहार वित्तीय नियमावली 2005 का नियम 9 यह परिकल्पित करता है कि लोक निधि से खर्च करनेवाले या खर्च प्राधिकृत करनेवाले प्रत्येक सरकारी सेवक को चाहिये कि वह वित्तीय औचित्य के उच्च सिंद्धातों का पालन करे। आगे, बिहार बुनियादी विद्यालय शिक्षा समिति अधिनियम, 2011 के अनुसार विद्यालय शिक्षा समिति विकास निधि के खाते, जिनमें सभी वैध स्रोतों से प्राप्त रकम जमा की जानी थी, को संयुक्त रूप से स्कूल के सचिव एवं प्रधानाध्यापक/प्रधान शिक्षक द्वारा संचालित किया जाना था। इन निधियों से किये गये प्रत्येक निकासी को समिति की अगले बैठक में सत्यापित किया जाना चाहिए था, अन्यथा इन निधियों से किसी तरह की निकासी आगे नहीं की जा सकती थी।

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (जि.का.पदा.), सर्व शिक्षा अभियान, (स.शि.अभि.) कटिहार के अभिलेखों के नमूना जाँच में प्रकटित हुआ (दिसम्बर 2013) कि सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत वर्ष 2011–12 में उत्क्रमित मध्य विद्यालय पागलबाड़ी, मनिहारी, कटिहार के प्रधानाध्यापक को छः अतिरिक्त वर्ग–कक्षों (अ.व.क.) के निर्माण हेतु ₹ 20.06 लाख[15] निर्गत की गई थी।

हाँलांकि जि.का.पदा.,कटिहार ने विद्यालय शिक्षा समिति (वि.शि.स.) के बैंक खाते[16] में रकम जमा न करके प्रधानाध्यापक एवं सचिव, वि.शि.स. द्वारा स्कूल के नाम से संचालित नये (अक्टूबर 2011 से) संयुक्त खाता[17] में ₹ 20.06 लाख की रकम को स्थानांतरित कर दिया। उल्लेखनीय है कि पंजाब नेशनल बैंक, कटिहार के इस नये खाते का ब्यौरा तत्कालीन कार्यपालक अभियंता[18] द्वारा विद्यालयों की सूची एवं बैंक एडवाइस संचिका के साथ जि.का.पदा., कटिहार को उपलब्ध कराया गया था। जि.का.पदा., द्वारा न तो वि0शि0स0 के बैंक खाता की प्रतिवेदित सूची की जाँच पड़ताल की गयी और न ही इसे वि0शि0स0 द्वारा पूर्व में मूल रूप से प्रतिवेदित किये गये बैंक खाता की सूची, जो कि जि0 का0पदा0 के क्षेत्राधिकार में था, से मिलान किया गया। आगे यह भी पाया गया कि संयुक्त खाता तत्कालीन प्रभारी प्रधानाध्यापक द्वारा खोला गया था जो कि अपने खाते का स्वयं ही पहचानकर्त्ता था। हाँलांकि उनके बाद के प्रधानाध्यापक के कथनानुसार (जून 2014) अभिलेखों में इस कार्य के लिए कोई अधिकारिक अनुशंसा दर्ज नहीं थी। यहाँ तक कि प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी (प्र0शि0पदा0), मनिहारी, कटिहार ने भी कहा (जून 2014) कि वो भी ऐसे वि0शि0स0 के नये खाता के खोले जाने से अनभिज्ञ थे।

---

15 *बैंक ड्राफ्ट संख्या 819 पी. से ₹ 6,68,675 (14 नवम्बर 2011), स्थानांतरण द्वारा ₹ 13,37,350 (30 दिसम्बर 2011)।*

16 *उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक, मनिहारी, कटिहार के खाता संख्या 100770101000884.*

17 *पंजाब नेशनल बैंक, कटिहार, खाता संख्या 0282000100271775.*

18 *श्री अनिल कुमार।*

आगे, अभिलेखों के जाँच में यह प्रकटित हुआ (दिसम्बर 2013) कि प्रधानाध्यापक द्वारा अ0व0क0 के निर्माण हेतु कर्णांकित समस्त ₹ 20.06 लाख की राशि निकासी (नवम्बर 2011 एवं अक्टूबर 2012 के बीच) कर ली गयी थी। इस राशि को न तो विद्यालय निर्माण पर खर्च किया गया था और न ही लेखा–पुस्तों यथा रोकड़–बही, बैंक–विवरणी इत्यादि का संधारण ही किया गया था। इसकी पुष्टि लेखापरीक्षा तथा विभाग द्वारा आयोजित संयुक्त भौतिक सत्यापन के प्रतिवेदन में भी की गयी थी। यहाँ तक कि निकासित ₹ 4983[19] की कुल ब्याज राशि में से ₹ 478, तत्कालीन प्रधानाध्यापक द्वारा सेवानिवृत्ति (जूलाई 2012) के पश्चात् निकाला गया था। अन्य संयुक्त खाताधारक, जो कि वि0शि0स0 के सचिव (दिसम्बर 2013) थे, ने भी तत्कालीन प्रधानाध्यापक के साथ किसी भी संयुक्त निकासी करने से इनकार किया। यहाँ तक कि जिला शिक्षा पदाधिकारी (जि.शि.पदा.) द्वारा भी कहा गया (सितम्बर 2014) कि चूँकि बैंक खाता सिर्फ प्रधानाध्यापक द्वारा ही संचालित किया जा रहा था, अतः वि.शि.स. के सचिव के विरूद्ध कार्रवाई किया जाना औचित्यपूर्ण नहीं था।

इसे इंगित किये जाने पर (दिसम्बर 2013), जि0का0पदा0, कटिहार ने जवाब दिया (जनवरी 2014) कि एक प्राथमिकी दर्ज किया जाएगा एवं लेखापरीक्षा को सूचित किया जायेगा। बाद में प्र0शि0पदा0, मनिहारी, कटिहार ने कपटपूर्ण खाता खोल कर ₹ 20.06 लाख की निकासी किए जाने एवं इस राशि का गबन करने के विरूद्ध एक प्राथमिकी दर्ज (फरवरी 2014) किया। विद्यालय के दोषी प्रधानाध्यापक के विरूद्ध एक सर्टिफिकेट केस भी प्रारंभ (अगस्त 2014) किया गया। बिहार शिक्षा परियोजना के राज्य परियोजना निदेशक ने (नवम्बर 2014) यह स0शि0अ0 की निधि से ₹ 20.06 लाख के गबन के सुनिश्चित किया जो विभाग के कार्यपालक अभियंता तथा वरीय लेखापरीक्षक के एक अलग दल द्वारा किये गये अनुसंधान से प्रकटित हुआ। हाँलांकि यह जि0का0पदा0, कटिहार को उनके उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं करता जिसमें उन्हें किसी इंगित विद्यालय के भिन्न/नये वि0शि0स0 के बैंक खाता की जाँच करनी थी, और जिसमें निधि के स्थानांतरण के कारण गबन फलीभूत हुआ।

इस प्रकार, जि0का0पदा0, कटिहार द्वारा अनाधृकित वि0शि0स0 के खाता खोले जाने तथा उस खाते से प्रधानाध्यापक द्वारा कपटपूर्ण तरीके से निकासी की जाँच–पड़ताल में विफलता के परिणामस्वरूप ₹ 20.11 लाख का गबन हुआ।

मामला सरकार को संदर्भित (जूलाई 2014) किया गया; स्मार–पत्रों के बावजूद जवाब अप्राप्त था (नवम्बर 2014)।

[19] *8 मार्च 2012 को ₹ 4505 तथा 6 सितम्बर 2012 को ₹ 478 = कुल ₹ 4983*

लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग

3.6 सरकार को हानि

लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग द्वारा कुछ मामलों में संविदा में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के प्रत्यर्पण संबंधी विशिष्ट उपबंध सन्निविष्ट नहीं किए जाने तथा अन्य मामलों में इसका अनुसरण नहीं किए जाने के कारण जलापूर्त्ति परियोजना हेतु आपूर्त्तित पाईपों पर देय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के छूट का लाभ नहीं उठाया जा सका जिससे सरकार को ₹ 12.58 करोड़ की हानि हुयी।

भारत सरकार के परिपत्र/अधिसूचनाओं[20] के अनुसार अपने स्रोत से संयंत्र के लिए पानी के वितरण के लिए आवश्यक पाइप (उपचारित पानी के जलाशय सहित) और वहाँ से पहले भंडारण बिंदु तक तथा जलापूर्ति परियोजनाओं का अभिन्न हिस्सा होने वाले 20 सेमी से अधिक बाहरी व्यास के पाइपों (10 सेमी, दिसम्बर 2009 के प्रभाव से) को केंद्रीय उत्पाद शुल्क (कें.उ.शु.) के भुगतान से छूट दिया गया था।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क पर छूट का लाभ प्राप्त करने के लिए एक विशिष्ट उपबंध संविदा दस्तावेज में सन्निविष्ट किया जाना था और कार्यान्वयी अभिकरण को जल उपचार परियोजना के संबंध में केंद्रीय उत्पाद शुल्क पर विस्तारित छूट प्राप्त करना आवश्यक था और उसे संबंधित प्रमंडल में प्रत्यर्पित करना था। संविदा के तहत माल की आपूर्ति सहित एजेंसी को कार्यों के विभिन्न मदों पर प्रदान किया जा रहा दर प्रचलित अनुसूची पर आधारित था जिसमें, अन्यान्य सहित, जलापूर्ति परियोजनाओं में उपयोगार्थ केंद्रीय उत्पाद शुल्क भारित आपूर्त्तित मद भी शामिल थे।

आठ[21] लोक स्वास्थ्य (लो0स्वा0) प्रमंडल से संबंधित ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के 20 जलापूर्ति योजनाओं ***(परिशिष्ट 3.5)*** के नमूना जांच ने निम्नलिखित विसंगतियों को उद्घाटित कियाः–

(अ) निष्पादित संविदा में केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट उपबंध के असन्निविष्टि

(i) यह देखा गया कि संबंधित अभिकरणों के साथ तीन[22] लोक स्वास्थ्य प्रमंडलों ***(परिशिष्ट 3.6)*** द्वारा निष्पादित संविदाओं में केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट उपबंध के असन्निविष्टि के कारण उन एजेंसियों को विभिन्न श्रेणियों के पाईपों की आपूर्त्ति के विरूद्ध का ₹ 7.61 करोड़ के केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट के लाभ को धारित रखने की अनुमति दी गई।

(ii) दरभंगा प्रमंडल में केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट हेतु प्रमाण– पत्र निर्गत करने में प्रमंडल द्वारा विलंब किया गया जिससे दरभंगा जलापूर्ति योजना (II) में उपयोग किए गए पाइपों पर ₹ 0.55 करोड़ रुपये के केंद्रीय उत्पाद शुल्क का परिहार्य भुगतान हुआ।

(ब) संविदा दस्तावेज में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क छूट उपबंध का अनुपालन नहीं किया जाना

(i) पांच[23] लोक स्वास्थ्य प्रमंडलों के तहत 14 मामलों में ***(परिशिष्ट 3.7)*** हाँलांकि प्रमंडलों द्वारा एजेंसियों के साथ निष्पादित संविदा दस्तावेजों में केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट

---

[20] *सं0 659/50/2002– सी एक्स दिनांक 06 सितम्बर 2002, अधिसूचना सं0 6/2006 दिनांक 01 मार्च 2006 एवं 6/2007 दिनांक 01 मार्च 2007*

[21] *लोक स्वास्थ्य प्रमंडलः आरा, औरंगाबाद, दरभंगा, हाजीपुर, किशनगंज, पटना (पश्चिम), पूर्णियॉ, सासाराम*

[22] *लोक स्वास्थ्य प्रमंडल : दरभंगा, हाजीपुर, पटना (पश्चिम)*

[23] *लोक स्वास्थ्य प्रमंडल, आरा, औरंगाबाद, हाजीपुर, पूर्णिया तथा सासाराम*

उपबंध सन्निविष्ट किया गया था, परन्तु संबंधित कार्यपालक अभियंता केंद्रीय उत्पाद शुल्क उपबंध के अनुपालन को सुनिश्चित कराने में विफल रहे क्योंकि उन्होंने आपूर्ति किए गए पाइपों पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क को छूट का दावा करने के लिए आवश्यक प्रमाण–पत्र जारी करने के लिए कलेक्टर/जिला पदाधिकारी के पास आवेदन नहीं किया था। इसके परिणामस्वरूप संबंधित एजेंसियों द्वारा इनके प्रमंडलों को ₹ 1.23 करोड़ अप्रत्यर्पित रहे एवं उस सीमा तक सरकार को हानि हुई।

(ii) तीन[24] लोक स्वास्थ्य प्रमंडलों के तहत चार मामलों ***(परिशिष्ट 3.8)*** में संबंधित कार्यपालक अभियंताओं के अनुरोध पर संबंधित कलेक्टर/जिलाधिकारी द्वारा छूट प्रमाण पत्र विधिवत जारी किए गए थे। हाँलांकि संबंधित एजेंसियों द्वारा केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट का लाभ तत्संबंधी लोक स्वास्थ्य प्रमंडलों को प्रत्यर्पित नहीं किए जाने के कारण सरकार को ₹ 3.19 करोड़ की हानि हुयी।

लेखा परीक्षा में इसे इंगित किए जाने पर आठ में पांच[25] प्रमंडलों ने कहा कि मामलें को भविष्य में मार्गदर्शनार्थ स्मरण किया जाएगा। हॉलांकि, कार्यपालक अभियंता, लोक स्वास्थ्य प्रमंडल, पटना (पश्चिम), दरभंगा और हाजीपुर (दो में से एक मामले में) विभागीय मुख्यालय पर जिम्मेवारी स्थानांतरित करते हुए कहा कि ने निविदाओं को अंतिम रूप मुख्यालय स्तर पर दिया गया है हाँलांकि कार्यपालक अभियंता, लोक स्वास्थ्य प्रमंडल, हाजीपुर ने कहा (जुलाई 2014) कि चूंकि कार्य के तकनीकी स्वीकृति लागत में केंद्रीय उत्पाद शुल्क की कटौती पहले ही कर दी गयी थी, अतः एजेंसी द्वारा उत्पाद शुल्क छूट का लाभ उठाए जाने से सरकार को हानि नहीं थी। सरकार विदुपुर, हाजीपुर, सहदेईबुजुर्ग और वैशाली जिले के देसरी ब्लॉक के आर्सेनिक प्रभावित गांवों से संबंधित जलापूर्ति योजना के संदर्भ में बताया (सितम्बर 2014) कि निविदा राशि और तकनीकी स्वीकृति राशि में अंतर का मुख्य कारण निविदा राशि में विभिन्न व्यासों के पाइपों पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क की कटौती किया जाना था। इस तरह एजेंसियों द्वारा उत्पाद शुल्क में छूट का लाभ उठाये जाने से सरकार को हानि नहीं थी।

जहाँ कार्यपालक अभियंताओं का उत्तर स्वयं में संविदा दस्तावेज में केंद्रीय उत्पाद शुल्क छूट उपबंध की असन्निविष्टि एवं परिणामी सरकार को हानि की पुष्टि करता था, वहीं दूसरी ओर कार्यपालक अभियंता, लोक स्वास्थ्य प्रमंडल, हाजीपुर और सरकार का जवाब तथ्यात्मक रूप से गलत और अस्वीकार्य था क्योंकि तकनीकी स्वीकृत राशि (₹139.79 करोड) की तुलना में निविदा राशि (₹ 124.40 करोड़) में कमी का कारण सामग्रियों (पाइपों) के परिमाण में कमी की वजह से था न कि केंद्रीय उत्पाद शुल्क की कटौती के बाद पाइप की दरों में कमी की वजह से।

इस प्रकार, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग द्वारा कुछ मामलों में संविदा में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के प्रत्यर्पण संबंधी विशिष्ट उपबंध सन्निविष्ट नहीं किए जाने तथा अन्य मामलों में इसका अनुसरण नहीं किए जाने के कारण जलापूर्त्ति परियोजना हेतु आपूर्त्तित पाईपों पर देय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के छूट का लाभ नहीं उठाया जा सका जिससे सरकार को ₹ 12.58 करोड़ की हानि हुयी।

---

[24] *लोक स्वास्थ्य प्रमंडल, आरा, किशनगंज, पूर्णिया*

[25] *लोक स्वास्थ्य प्रमंडल, आरा, औरंगाबाद, किशनगंज, पूर्णिया और सासाराम*

नगर विकास एवं आवास विभाग

3.7 निष्क्रिय व्यय

बिहार राज्य जल पर्षद द्वारा जमीन की उपलब्धता सुनिश्चित किये बगैर जलापूर्त्ति कार्यों के कार्यान्वयन हेतु कास्ट–आयरन पाइपों के अविवेकपूर्ण अधिप्राप्ति के फलस्वरूप ₹ 3.03 करोड़ का निष्क्रिय व्यय हुआ।

बिहार लोक कार्य लेखा (बि.लो.का.ले.) संहिता में सन्निहित मंत्रिमंडल सचिवालय एवं समन्वय विभाग के संकल्प की कंडिका 7.5 सह–पठित कंडिका 4.5 (जुलाई 1986) के प्रावधानों के अनुसार, कार्याबंटन हेतु निविदा आमंत्रित करने से पूर्व परियोजना के लिए भूमि की उपलब्धता और निधियों का आवंटन सुनिश्चित किया जाना चाहिए तथा परियोजना में जहाँ भूमि की जरूरत हो, प्रथम चरण में भूमि अधिग्रहण हेतु प्राक्कलन तैयार कर स्वीकृती प्राप्त की जानी चाहिए।

बिहार राज्य जल पर्षद (बि0रा0ज0प0), जो कि नगर विकास एवं आवास विभाग (विभाग), बिहार सरकार (बि0स0)के अधीन है, के अभिलेखों के नमूना जाँच (अगस्त 2013) के क्रम में पाया गया कि विभाग द्वारा बारहवें वित्त आयोग (बा0वि0आ0) के मद से बि0रा0ज0प0 को पटना नगर निगम (प0न0नि0) के माध्यम से ₹ 51.66 करोड़ निर्गत (जुलाई 2006 से फरवरी 2010) किया गया जिसमें इन्द्रपुरी और पटेलनगर जलापूर्त्ति योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए क्रमशः ₹ 2.49 करोड़ और ₹ 2.83 करोड़ शामिल था। बि.रा.ज.प. द्वारा ₹ 3.32 करोड़ मूल्य की लागत का कुल 16,536 मीटर कास्ट–आयरन (का.आ.) पाईप की अधिप्राप्ति (फरवरी तथा मार्च 2009) की गई थी, जिसमें से 1,365.30 मीटर पाईप विभिन्न जलापूर्त्ति योजनाओं को स्थानांतरित कर दिया गया। योजनाओं के अंतर्गत पाईपों को बिछाने के लिए किये जाने वाले असैनिक कार्यों का संविदा (अप्रैल 2009), दो अभिकरणों को सितम्बर 2009 तक पूरा करने के लिए आवंटित किया गया था। चार साल से अधिक समय व्यतीत हो जाने के पश्चात मुख्य अभियंता, बि0रा0ज0प0, द्वारा असैनिक कार्य के कार्यान्वयन का संविदा रद्द (अगस्त 2013) कर दिया गया। असैनिक कार्य शुरू नहीं किया जा सका और ₹ 3.03 करोड़ मूल्य के 15170.70 मीटर[26] पाईप निष्क्रिय पड़े रह गए क्योंकि सरकार द्वारा विवादित/अतिक्रमित भूमि के आवंटन (अगस्त 2010 और नवंबर 2009) किए जाने के कारण इन्द्रपुरी और पटेलनगर जलापूर्त्ति योजनाओं का कार्य शुरू नहीं किया जा सका ***(परिशिष्ट 3.9)*** था।

इस प्रकार, बि.रा.ज.प. ने, बि.ला.का.ले. संहिता के प्रावधानों का उल्लंघन में निविदा प्रक्रिया शुरू करने से पहले, भूमि की उपलब्धता को सुनिश्चित नहीं किया गया। परिणामस्वरूप, जलापूर्त्ति योजनाएँ शुरू नहीं की जा सकी और ₹ 3.03 करोड़ मूल्य के खरीदे गए पाईप अनुपयोगित रह गए तथा उस सीमा तक निष्क्रिय व्यय हुआ।

इसे इंगित किए जाने पर प्रबंध निदेशक, बि0रा0ज0प0 ने लेखापरीक्षा के प्रेक्षण को स्वीकार किया तथा जवाब दिया (मार्च 2014) कि निविदा इस धारणा के साथ प्रकाशित की गई थी कि निविदा को अंतिम रूप देने तथा कार्य सौंपे जाने की अवधि के दौरान स्थल/जमीन को अंतिम रूप दे दिया जाएगा। लेकिन, सतत् प्रयासों के बावजूद भी विभाग या उनके स्थानीय निकायों द्वारा स्थल उपलब्ध नहीं कराया जा सका तथा कार्य शुरू नहीं हो सका। आगे, प्रबंध निदेशक द्वारा जवाब दिया गया (नवम्बर 2014) कि खरीदे गए अधिक पाईपों को अन्य योजनाओं में उपयोग किया जाएगा और पटेलनगर तथा इन्द्रपुरी जलापूर्त्ति योजनाओं में आनुपातिक निधियाँ जमा कर दी जाएगी।

जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि निविदा आमंत्रित करने से पूर्व बाधामुक्त भूमि की उपलब्धता परियोजना लागू करने के लिए आवश्यक थी जैसा कि बि.लो.का.ले. संहिता में

---

[26] *16536 मीटर – 1365.30 मीटर = 15170.70 मीटर।*

परिकल्पित था। परंतु बि0रा0ज0प0 के पास परियोजना में निविदा आमंत्रित करने की तारीख तक बाधामुक्त भूमि उपलब्ध नहीं थी।

इस प्रकार, बि.रा.ज.प. का कास्ट आयरन पाईपों की अधिप्राप्ति और योजना के लिए भूमि की उपलब्धता को सुनिश्चित किये बिना असैनिक कार्य के लिए निविदा को अंतिम रूप देने का निर्णय अविवेकपूर्ण था जिसके परिणामस्वरूप ₹ 3.03 करोड़ का निष्क्रिय व्यय हुआ। साथ ही, खुले में पड़े रहने के कारण प्राकृतिक प्रकोपों से पाईपों के क्षतिग्रस्त होने की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता था।

मामला सरकार को संदर्भित (जून 2014) किया गया; स्मार–पत्रों के बावजूद जवाब अप्राप्त था (नवम्बर 2014)।

आर्थिक प्रक्षेत्र

जल संसाधन विभाग

3.8 सरकारी राशि का दुर्विनियोजन

प्रमंडलीय पदाधिकारी (का.अभि.) की प्रक्रिया एवं प्रणाली के अनुपालन तथा कोषागार में तथाकथित प्रेषित राशि की जाँच में विफलता के परिणामस्वरूप ₹ 8.37 लाख के सरकारी राशि का दुर्विनियोजन हुआ।

बिहार लोक कार्य लेखा संहिता (बि.लो.का.ले.स.) के नियम 18 सह पठित नियम 21, 22 (II) 527 के अनुसार प्रमंडलीय पदाधिकारी, प्रमंडल के प्राथमिक संवितरण पदाधिकारी के हैसियत से पूरे प्रमंडल के लेन–देनों की वित्तीय नियमितता साथ–साथ किये गये लेन–देनों से संबंधित लेखाओं के सही संधारण के लिए उत्तरदायी होगें जो कि लागू नियमों के अनुकूल हो। वे अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन में एक प्रमंडलीय लेखाकार द्वारा सहायतित होंगे जो प्राथमिक लेखापरीक्षक के रूप में प्रारंभिक लेखाओं, अभिश्रवों इत्यादि के प्रारंभिक जाँच के साथ–ही–साथ समस्त प्रमंडलों के सभी लेन–देनों का सभी कोषागारों से मासिक समायोजन करने के भी उत्तरदायी होंगे।

कार्यालय, कार्यपालक अभियंता (का.अभि.), मुख्य कार्य प्रमंडल, वाल्मीकिनगर, पश्चिम चंपारण के अभिलेखों के नमूना जाँच (नवम्बर–दिसम्बर 2013) में प्रकटित हुआ कि जून 2010 से अक्टूबर 2013 के दौरान ₹ 10.45 लाख की राशि 15 चालानों के माध्यम से कोषागार में प्रेषित दर्शायी गई थी। यद्यपि कोषागार सत्यापन (बगहा कोषागार) के दौरान यह पाया गया कि आठ चालानों के माध्यम से मात्र ₹ 2.08 लाख ही कोषागार में प्रेषित की गई थी। शेष सात चालानों की कुल ₹ 8.37 लाख ***(परिशिष्ट 3.10)*** की राशि को न तो कोषागार में जमा किया गया था और न ही सरकारी खाता में भी जमा किया गया था। इसकी पुष्टि (दिसम्बर 2013) उप–कोषागार पदाधिकारी, बगहा तथा भारतीय स्टेट बैंक, (भा.स्टे.बैं.), बगहा शाखा द्वारा भी की गयी थी। लेखापरीक्षा अवलोकन की पुष्टि इस तथ्य से भी हुयी कि संशोधित प्रपत्र सं. 51[27], जो कि मार्च 2012 से फरवरी 2013 के बीच महालेखाकार (लेखा व हकदारी), बिहार को निर्गत थी, पर उप–कोषागार पदाधिकारी, बगहा तथा प्रमंडल के का.अभि. के जाली हस्ताक्षर थे जिसकी पुष्टि उन पदाधिकारियों द्वारा भी की गयी थी।

प्रमंडलीय पदाधिकारी (का0अभि0) तथा प्रमंडलीय लेखाकार की, बि0लो0का0ले0 संहिता में विहित, प्रक्रिया एवं प्रणाली के अनुपालन एवं कोषागार में कथित प्रेषित राशि के जाँच में विफलता के परिणामस्वरूप ₹ 8.37 लाख का दुर्विनियोजन हुआ।

---

[27] *कोषागारों के साथ मासिक समायोजन की सूची, प्रपत्र–51 (अनुसूची, XLV–प्रपत्र संख्या 162) (संचित कोषागार प्राप्तियाँ तथा कोषागार पदाधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित, निर्गमण प्रमाण–पत्र द्वारा समर्थित।*

इसे इंगित किये जाने पर का.अभि. ने लेखापरीक्षा अवलोकन को स्वीकार (दिसम्बर 2013) किया तथा कहा कि राशि को कोषागार में तत्कालीन खजांची द्वारा जमा नहीं किया था जिसे उच्च प्राधिकारी को कार्रवाई के लिए सूचित किया जायेगा। सरकार द्वारा भी लेखापरीक्षा अवलोकन के तथ्यों तथा आँकड़ों को स्वीकार (अगस्त 2014) किया गया तथा का.अभि. के जवाब को अग्रसारित (नवम्बर 2014) कर दिया जिसमें बताया गया (सितम्बर 2014) कि तत्कालीन खजांची के विरूद्ध ₹ 7,70,377 के दुर्विनियोजन के लिए प्राथमीकि दर्ज (सितम्बर 2014) की गयी थी, जबकि दोषी कर्मचारी के विरूद्ध दिसम्बर 2013 में पहले ही ₹ 66,343 के लिए प्राथमीकि दर्ज की जा चुकी थी।

3.9 रॉयल्टी की कम कटौती के कारण सरकार को हानि

बिहार लघु खनिज रियायती नियमों एवं संविदा की विशेष शर्त्तों का अनुपालन नहीं किये जाने के फलस्वरूप ₹ 12.28 करोड़ के रॉयल्टी की कम कटौती हुई और उस सीमा तक सरकार को हानि हुई।

बिहार लघु खनिज रियायती नियमावली (बि.ल.ख.रि.नि.), 1972 का नियम 26 (5) यह विहित करता है कि राज्य सरकार किसी लघु खनिज[28] का भुगतेय किराया/रॉयल्टी को घटा या बढ़ा सकती है जो अधिसूचना जारी होने की तिथि से प्रभावी होगा। आगे संविदा की विशेष शर्त्तें की धारा 5 यह विहित करता है कि संवेदकों के विपत्रों का भुगतान तभी होगा जब लघु खनिजों के रॉयल्टी के भुगतान का सफाया प्रमाण–पत्र, सक्षम प्राधिकारी से प्राप्त कर समर्पित किया जाए अन्यथा खनिज विभाग द्वारा स्वीकृत वर्त्तमान दर पर संवेदक के विपत्र से रॉयल्टी की कटौती कर ली जायेगी।

खनन् एवं खनिज विभाग, बिहार सरकार द्वारा जारी (जनवरी 2012) अधिसूचना के अनुसार मिट्टी की रॉयल्टी की दर को ₹ 15 प्रति घन मीटर से संशोधित कर ₹ 22 प्रति घन मीटर कर दिया गया था। संशोधित दर राजपत्र अधिसूचना जारी होने की तिथि से प्रभावी थी।

अभिलेखों के नमूना जाँच (अगस्त 2013 से जुलाई 2014) में प्रकटित हुआ कि तीन प्रमंडलो[29] के अंतर्गत सात एकरारनामों[30] में प्रमंडलों द्वारा मार्च 2012 से मार्च 2014 के दौरान प्रावधान के विरूद्ध तटबंध में 2,32,06,927.53 घन मीटर मिट्टी भराई के कार्य के विरूद्ध 1,75,45,475.00 घन मीटर मिट्टी भराई गई थी तथा रॉयल्टी की कटौती ₹ 22 प्रति घन मीटर के प्रयुक्त दर के बदले ₹ 15 प्रति घन मीटर की दर से की गयी थी। इसके परिणामस्वरूप ₹ 12.28 करोड़ रॉयल्टी की कम कटौती हुई जैसा कि ***(परिशिष्ट 3.11)*** में वर्णित है।

विभाग (सितम्बर 2014) ने लेखापरीक्षा प्रेक्षणों को स्वीकार किया तथा कहा कि संवेदकों से रॉयल्टी की अंतर राशि की वसूली की जायेगी।

इस प्रकार, बि.ल.ख.रि.नि. के प्रावधानों का अनुपालन न करने तथा संविदा की विशेष शर्त्तों के अनुसार कार्य संपादित होने के समय प्रचलित दर से रॉयल्टी की कटौती नहीं

---

28 *बाँध, सड़क, रेलवे तथा भवनों के निर्माण कार्य में भराई हेतु सामान्य मिट्टी या समतलीकरण उद्देश्य के लिए प्रयुक्त मिट्टी। बागमती प्रमंडल सं.1 सीतामढ़ी; सिंचाई प्रमंडल, भागलपुर तथा बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दरभंगा।*

29 *बागमती प्रमंडल सं.1 सीतामढ़ी; सिंचाई प्रमंडल, भागलपुर तथा बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दरभंगा।*

30 *बागमती प्रमंडल सं01, सीतामढ़ी के चार एकरारनामे (1मा0नि0द0/2012–13; 22मा0नि0द0/2012–13; 23मा0नि0द0/2012–13; 17मा0नि0द0/2010–11) सिंचाई प्रमंडल, भागलपुर के दो एकरारनामे (13मा0नि0द0/2011–12; 01मा0नि0द0/2012–13) तथा बा0नि0प्र0, दरभंगा का एक एकारारनामा (01मा0नि0द0/2012–13)।*

किये जाने के फलस्वरूप मार्च 2014 तक ₹ 12.28 करोड़ रॉयल्टी की कम कटौती हुई तथा उतनी ही राशि की सरकार को हानि भी हुई।

3.10 अधिक भुगतान

मानक निविदा दस्तावेज के प्रावधानों के विपरीत विभाग द्वारा मिट्टी के रॉयल्टी से संबंधित विपत्रों की गणना हेतु गलत सूत्र के अविवेकपूर्ण अंगीकरण तथा बगैर वित्त विभाग की स्वीकृति के फलस्वरूप ₹ 3.57 करोड़ का अधिक भुगतान हुआ और संवेदकों को अदेय वित्तीय लाभ हुआ।

मानक निविदा दस्तावेज (मा0नि0द0) के उपबंध 4 ए (संविदा की सामान्य शर्तें के खंड 3.3) के अनुसार, प्रतिशतता दर निविदा के मामलों में, किसी विशेष कारण से यदि संविदा यह प्रावधानित करती है कि क्रियान्वित कार्यों का भुगतान कार्य के स्वीकृत प्राक्कलन (अथवा दर–अनुसूची) में दर्ज दरों से निर्दिष्ट प्रतिशतता में कम या अधिक किया जाना है, तो इसे संविदा में स्पष्ट शब्दों में विहित किया जाना चाहिए कि कमी या बढ़ोतरी की, जो भी मामला हो, प्रतिशतता की गणना कार्य के विपत्रों के सकल, न कि शुद्ध राशि, पर होनी चाहिए तथा प्रतिशतता निर्धारण में इसे स्पष्ट रूप से ध्यान रखना चाहिए कि गणना तदनुरूप हो। आगे कार्यकारी व्यावसायी अधिनियम 1979 (16 जनवरी 1979) का नियम 35 यह विहित करता है कि वित्त विभाग से, उन सभी प्रस्तावों पर, जो कि राज्य के वित्त को प्रभावित करते हैं, आदेश निर्गत करने से पूर्व उचित रूप से सलाह ली जानी चाहिए।

चार प्रमंडलों[31] के अभिलेखों के नमूना जाँच (अगस्त 2013 – सितम्बर 2014) में प्रकटित हुआ कि वर्ष 2009–12 के दौरान अभिकरणों के साथ उनके तत्संबंधित कार्यपूर्णता तिथियों के विरूद्ध 'तटबंधों के उन्नयन एवं मजबूतीकरण तथा उनके विस्तार, नवीनीकरण एवं अनुरक्षण' कार्यों हेतु ₹190.48 करोड़ के 11 एकरारनामें, प्रत्येक परिमाण विपत्र (प.वि.) से 15 प्रतिशत कम पर, क्रियान्वित किए गए जैसा कि ***परिशिष्ट 3.12*** में वर्णित है।

आगे, अभिलेखों की संवीक्षा में प्रकटित हुआ कि संवेदक (सितम्बर 2014 तक) ₹ 185.49 करोड़ का कार्य संपादित कर चुका था जिसमें 1,57,92,153.11 घन मीटर का मिट्टी कार्य शामिल था। विपत्रों से मिट्टी कार्य के लिए ₹ 15 प्रति घन मीटर की दर से कटौती की गई रॉयल्टी की राशि ₹ 23.69 करोड़ थी। यद्यपि यह पाया गया कि उपबंध का उल्लघंन में, कर सकल मूल्य के किये गये कार्य में से रॉयल्टी की राशि को घटाने के बाद प्राप्त शुद्ध राशि में से, 15 प्रतिशत घटाने के बाद तथा रॉयल्टी की राशि को परिणामी मूल्य में पुनः जोड़कर गणना की गई थी। यद्यपि मा0नि0द0 के उपबंध 4 अ के अनुसार गणना सकल राशि में से परिणाम विपत्र (15 प्रतिशत) पर सहमत प्रतिशत दर को घटाने तथा तदनुपरांत रॉयल्टी की राशि घटाकर की जानी थी ***(परिशिष्ट 3.12)***। इस प्रकार, प्रमंडलों द्वारा त्रुटिपूर्ण गणना विधि अपनाने के फलस्वरूप संवेदकों को ₹ 3.57 करोड़ का अदेय वित्तीय लाभ हुआ।

जल संसाधन विभाग (ज0सं0वि0) ने जवाब (अगस्त 2014) दिया कि वित्त विभाग (वि0वि0) के सुझाव के अनुसार, पथ निर्माण विभाग (प0नि0वि0) से परामर्श मांगा गया था। चूँकि प0नि0वि0 द्वारा कोई परामर्श नहीं दिया गया, ज0सं0वि0 ने एक अधिसूचना (जून 2011) जारी किया। ज0सं0वि0 ने आगे कहा कि चूँकि रॉयल्टी को अतिरिक्त प्रभार एवं संवेदक के लाभ को जोड़ने के बाद जोड़ा जाता है, अतः संवेदक को भुगतान की जाने वाली राशि से उनके द्वारा दर–अनुसूची से अधिक/कम प्रतिशत के रूप में उद्धृत दर रॉयल्टी की राशि को शामिल कर प्रभावित नहीं किया जा सकता है। ज0सं0वि0 ने

---

[31] *बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल (बा.नि.प्र.), दरभंगा; जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराए; सिंचाई प्रमंडल, राघोपुर;बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल सं0 2, झंझारपुर।*

आगे कहा कि विपत्रों के भुगतान हेतु अपनायी गयी प्रक्रिया कार्य के दर–अनुसूची की सम्मति एवं मा0नि0द0 के शब्द एवं भावना के अनुरूप थी।

जवाब स्वीकार्य नहीं था चूँकि विपत्रों की गणना हेतु निर्गत पत्र मा0नि0द0 के उपबंध के अनुरूप नहीं था जो कि स्पष्ट शब्दों में उल्लेखित करता है कि सभी प्रतिशत बढ़ोतरी या घटोतरी की प्रतिशतता संपादित कार्य के विपत्रों के कुल सकल राशि, न कि शुद्ध राशि, पर तय की जायेगी। आगे राज्य के वित्त को प्रभावित करनेवाली एक अधिसूचना बिना वि0वि0 की सलाह से जारी की गई जो कि अनियमित था। यह भी उल्लेखनीय है कि प0नि0वि0 सहित सरकार के अन्य विभागों[32] द्वारा गणना हेतु अंगीकृत विधि लेखापरीक्षा प्रेक्षणों के अनुरूप था।

3.11 व्यर्थ व्यय

दो कटाव निरोधक कार्य, जिन पर ₹ 91.35 लाख का व्यय हुआ था, बाढ़ से नदी तटबंधों की रक्षा करने में विफल रहे जिसके परिणामस्वरूप उस सीमा तक व्यर्थ व्यय हुआ।

बाढ़ प्रबंधन नियमावली, 2003 की कंडिका 4.9 परिकल्पित करता था कि प्रत्येक वर्ष, क्षेत्रीय कार्यालय पूर्ववर्ती बाढ़ अवधि में नदी के व्यवहार एवं इस अवधि के दौरान प्राप्त अनुभव के आधार पर अगले बाढ़ मौसम से पूर्व बाढ़ सुरक्षा कार्यों की सूची तैयार करेंगे। इस उद्देश्य के लिए जल संसाधन विभाग (ज.सं.वि.) के प्रत्येक मुख्य अभियंता अपने क्षेत्राधिकार के बाढ़–ग्रस्त इलाकों के लिए कटाव–निरोधक समिति (क0नि0स0) का गठन करेंगे। क0नि0स0 की अनुशंसा के आधार पर क्षेत्रीय पदाधिकारी प्राक्कलन को तैयार कर राज्य तकनीकी सलाहकार समिति (रा0त0स0स0) के समक्ष उपस्थापित करेंगे। जल संसाधन विभाग के क्षेत्रीय पदाधिकारी, त0स0स0 द्वारा संशोधित योजनाओं को पुनः विभागीय योजना समीक्षा समिति (यो0स0स0) के समक्ष उपस्थापित करेंगे। यो0स0स0 अत्यावश्यक योजनाओं का प्राथमिकता के आधार पर चयन करेंगे।

कार्यपालक अभियंता, (का0अ0) सोन बाढ़ सुरक्षा प्रमंडल, बिहटा के अभिलेखों के नमूना जाँच (जनवरी 2013) में पाया गया कि प्रमंडल द्वारा रामनगर टोला, ग्राम–हल्दी छपरा, मनेर, जो कि गंगा नदी के दाहिने तटबंध पर अवस्थित है, के लिए कटाव निरोधक कार्य, जिसकी प्रशासनिक अनुमोदन (फरवरी 2011) ₹ 62.29 लाख एवं तकनीकी स्वीकृति (फरवरी 2011) ₹ 62.05 लाख थी, को (फरवरी 2011) एक एजेंसी[33] को ₹ 52.22 लाख में कार्य करने के लिए आवंटित किया गया जिसे मई 2011 तक पूरा किया जाना था। हाँलांकि यह पाया गया कि क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा कटाव निरोधक कार्य में बोल्डर का प्रयोग किए जाने के प्रस्ताव विपरीत विभाग ने त0स0स0 (जनवरी 2011) एवं यो0स0स0 (जनवरी 2011) की अनुशंसाओं पर परक्युपाइनों का कार्य कराया। इसको एजेंसी द्वारा आरंभ (मार्च 2011) कर समाप्त (जून 2011) कर लिया गया, जिसके लिए उसे ₹ 51.11 लाख का भुगतान किया गया, परंतु गंगा नदी की तीव्र जलधारा को उक्त कार्य झेल नहीं पाया तथा वर्ष 2011 की बाढ़ में 85 प्रतिशत परक्युपाईन नदी में बह गए।

संवीक्षा में आगे यह पाया गया कि क.नि.स. ने परक्युपाइन्स की विफलता के पूर्व अनुभव को देखते हुए बाढ़ 2012 के लिए सुरक्षात्मक कार्य की अनुशंसा (सितम्बर 2011) की। परंतु त.स.स. ने पुनः परक्युपाइन्स, जो कि झाँकी द्वारा भरा गया हो, के कार्य को अनुशंसित (अक्टूबर 2011) किया। जिसे यो0स0स0 द्वारा भी अनुशंसित (नवम्बर 2011) किया गया। इस कार्य को, जिसकी प्रशासनिक स्वीकृति (नवम्बर 2011) ₹ 55.40 लाख के लिए एवं तकनीकी अनुमोदन (नवम्बर 2011) ₹ 48.50 लाख की दी गई थी, प्रमंडल

---

[32] *भवन निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग, सड़क निर्माण विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग।*

[33] *श्री जितेन्द्र कुमार सिंह, सारण।*

द्वारा एक एजेंसी[34] को ₹ 40.81 लाख में आबंटित (जनवरी 2012) कर दिया गया। यह कार्य, जिसके क्रियान्वयन एवं पूर्णता (मई 2012) पर ₹ 40.24 लाख का व्यय हुआ, पुनः बाढ़ 2012 को झेल नहीं पाया। इस प्रकार वर्ष 2011 एवं 2012 में कटाव निरोधक कार्यों में कुल ₹ 91.35 लाख के व्यय के बावजूद विभाग रामनगर टोला में कटाव रोकने में विफल रहा।

तत्पश्चात, बाढ़ 2013 के पूर्व, त.स.स. ने पुनः परक्युपाईन, जो कि झांकी द्वारा भरा गया हो, के कार्य की अनुशंसा की (अक्टूबर 2012) जिसकी प्राक्कलित राशि ₹ 16.28 लाख थी। यो0स0स0 द्वारा अनुशंसित इस कार्य को ग्रामीणों के कठोर विरोध के कारण आरंभ नहीं किया जा सका।

विभाग ने जवाब में कहा (जुलाई 2014) कि बाढ़ 2011 के दौरान कार्यस्थल के समीप एक नए शोल (रेती टीला) में के निर्माण हो जाने के कारण नदी के बहाव की धारा बदल गई जिसकी वजह से कार्यस्थल पर भारी दबाव बना। इससे परक्युपाईन का विस्थापन और पलटना आरंभ हो गया। आगे 2012 में परक्युपाइन कार्य संतोषप्रद रहा।

जवाब स्वीकार्य नहीं थे क्योंकि विभाग ने पूर्व में दो बार कटाव निरोधक कार्यों में परक्युपाइनों उपयोग की विफलता के बावजूद सीख नहीं ली। तीसरी बार भी 2013 में कटाव निरोधक कार्य के लिए विभाग द्वारा समान विधि का अपनाया जाना यह परिलक्षित करता था कि विभाग तटबंध के करीब अवस्थित लोगों के जान– माल को जोखिम में डालने वाले कटाव को रोकने के प्रति गंभीर नहीं था।

पथ निर्माण विभाग

3.12 जोखिम एवं लागत राशि की अवसूली के कारण राजकीय राजकोष पर अतिरिक्त भार

विभाग द्वारा जोखिम एवं लागत उपबंध लागू किया गया परंतु अवशेष कार्य पूर्ण करने हेतु आवश्यक अंतर–राशि को वसूल करने में विफल रहा जिसके परिणामस्वरूप राजकीय राजकोष पर ₹ 2.18 करोड़ के अतिरिक्त भार का सृजन हुआ।

मानक निविदा दस्तावेज (मा0नि0द0) का उपबंध 14 यह विहित करता है कि किसी निविदा के निरस्त किये जाने की स्थिति में अवशेष कार्य को संवेदक के जोखिम एवं लागत पर पूरा किया जायेगा। कार्यों की पूर्णता के लिये किया गया अथवा किया जाने वाला अधिक व्यय अथवा सरकार को हुयी आधिक्य हानि/क्षति की वसूली, संविदा के प्रावधानों के अनुसार संवेदक के किसी भी प्रकार की देय राशियों से अथवा स्वयं संवेदक से की जायेगी और मा0नि0द0 का उपबंध 3 यह विहित करता है कि संविदा के निरसन के उपरांत पेशगी जमा राशि, सुरक्षित जमा एवं निष्पादन गारंटी की राशियाँ जब्त कर ली जायेगी।

आगे, मा0नि0द0 के खंड–I, संवेदक को निर्देश का, उपबंध 4.5 (अ) यह विहित करता है कि संविदा में सफल होने के लिये किसी भी निविदादाता को उसके द्वारा विगत पाँच वर्षों में संविदा की प्राक्कलित राशि के परिणाम का कम–से–कम 50 प्रतिशत निर्माण कार्य, जिसके लिए निविदा आमंत्रित की गयी है, को संतोषप्रद रूप से पूर्ण किया जाना चाहिए। उपबंध 4.3 (ब) के अनुसार संवेदक को पिछले पाँच सालों में प्रत्येक साल में संपादित किये गये निर्माण कार्यों का मौद्रिक लागत समर्पित करना था।

कार्यपालक अभियंता (का.अभि.) पथ निर्माण प्रमंडल (प.नि.प्र.), गोपालगंज के अभिलेखों के नमूना जाँच (सितम्बर 2013) से प्रकट हुआ कि गोपालगंज जिला में मीरगंज–

[34] *श्री चन्देश्वर राय, पटना।*

भागीपट्टी– समौर पथ के 28 से 38 कि.मी. में चौड़ीकरण और मजबूतीकरण के साथ में अपवहन तथा पुलिया निर्माण का कार्य का विभाग द्वारा प्रशासनिक अनुमोदन (अगस्त 2007) ₹ 8.16 करोड़ का तथा तकनीकी स्वीकृति (नवम्बर 2007) ₹ 8.01 करोड़ की इस कार्य को एकल निविदा के आधार पर एक संवेदक[35] को ₹ 8.45 करोड़ पर सौंपा गया (अप्रैल 2008) चूंकि विभागीय निविदा समिति द्वारा मात्र एक ही निविदाकार सफल घोषित किया गया था।

कार्य की पूर्णता अवधि 12 माह थी (मार्च 2009)। यद्यपि यह पाया गया कि मा0नि0द0 के उपबंध 4.3 (ब.) एवं 4.5 (अ) की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरे किये बिना एजेंसी को कार्य आवंटित किया गया था। निविदादाता ने पाँच वर्षों के मापदंड के विरूद्ध सिर्फ वर्ष 2005–06 तथा वर्ष 2006–07 के दौरान का निष्पादित कार्यों का मूल्य समर्पित किया। निष्पादित कार्यों की कुल मौद्रिक लागत वर्ष 2005–06 एवं वर्ष 2006–07 में क्रमशः ₹ 54.56 लाख तथा ₹ 1.34 करोड़ थी जो कि आवश्यक अर्हता मूल्य ₹ 4.05 करोड़ (₹ 8.10 करोड़ का 50 प्रतिशत) से काफी कम थी। उपरोक्त विसंगतियों के बावजूद संवेदक को कार्य आबंटित किया गया।

संवीक्षा ने आगे प्रकट हुआ कि संवेदक उपरोक्त कार्य करने में विफल रहा तथा कार्य मात्र 24 प्रतिशत ही सम्पादित कर सका। का.अभि., प.नि.प्र. ने भी संवेदक को कार्य में प्रगति लाने को निर्देश (जुलाई और सितम्बर 2009) जारी किया। लेकिन संवेदक ने उपरोक्त निर्देशों का ध्यान नहीं दिया। विभाग ने कार्य की सुस्त एवं मंद प्रगति के कारण एवं ₹ 2.01 करोड़ के कार्य के संपादन के उपरांत मा0नि0द0 के उपबंध 14 के तहत जोखिम एवं लागत लागू करते हुए संविदा को निरस्त करने का निर्णय (दिसम्बर 2009) लिया। आगे, विभाग ने शेष कार्य को बिहार राज्य पुल निर्माण निगम प्राइवेट लिमिटेड, (बि.आर.पी.एन.एन.एल.), पटना से कराने का निर्णय (मार्च 2010) लिया। बी.आर.पी.एन.एन. एल. ने ₹ 6.44 करोड़ के शेष कार्य को संपादित करने हेतु मेसर्स वैभव कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के साथ ₹ 8.49 करोड़ का नया एकरारनामा (सितम्बर 2010) में किया। कार्य ₹ 8.49 करोड़ में पूर्ण किया गया जिसके परिणामस्वरूप ₹ 2.18 करोड़ की अतिरिक्त लागत आई ***(परिशिष्ट 3.13)***।

इसे इंगित किये जाने पर का. अभि., प.नि.प्र. द्वारा यह बताया (सितम्बर 2013) गया कि निविदा का निष्पादन विभागीय निविदा समिति द्वारा किया गया था। अभियंता प्रमुख–सह–अतिरिक्त आयुक्त–सह–विशेष सचिव, प.नि.वि. बिहार सरकार द्वारा यह बताया (नवम्बर 2014) गया कि ₹ 2.18 की शेष जोखिम एवं लागत की राशि की वसूली की जा रही है।

3.13 निष्क्रिय संयत्र एवं उपकरण पर निष्फल व्यय

उपयोगिता को सुनिश्चित किये बिना विभाग द्वारा संयत्रों और उपकरणों की खरीद के अविवेकपूर्ण निर्णय के कारण निष्क्रिय संयत्रों पर ₹ 1.34 करोड़ राशि का निष्फल व्यय हुआ।

राज्य में सड़कों की लंबाई की तुलना में तप्त मिश्रण संयंत्रों (त0मि0सं0) की कम संख्या[36] तथा सड़क के किनारों की ऊँचाई से जलजमाव में बढ़ोतरी के कारण सड़क की आयु बढ़ाने के लिये किनारों का कटाव तथा ड्रेसिंग की आवश्यकता के मद्देनजर पथ निर्माण विभाग (प0नि0वि0) के योजना प्राधिकरण समिति[37] द्वारा दो त0मि0सं0 तथा दो वेट मिक्स

---

35 *मेसर्स रविन्द्र कुमार दुबे, सिवान।*

36 *कुल संख्या–13 (10 राज्य स्वामित्व के अधीन तथा तीन केन्द्र–स्वामित्व के अधीन)।*

37 *आयुक्त–सह–सचिव, पथ निर्माण विभाग, बिहार; अतिरिक्त वित्त आयुक्त, बिहार, सचिव, योजना एवं विकास विभाग, बिहार; विकास आयुक्त, बिहार से निर्मित।*

मैकाडम प्लांट (वे.मि.मै.प्ला.) के क्रय हेतु ₹ 10.84 करोड़ की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान (अक्टूबर 2006) की गयी।

राष्ट्रीय उच्च पथ (यांत्रिकी) योजना प्रमंडल, शेखपुरा, पटना के अभिलेखों की संवीक्षा में उद्घटित (नवम्बर 2013) हुआ कि मुख्य अभियंता (यांत्रिकी), प.नि.वि., बिहार पटना द्वारा त.मि.सं. और वे0मि0मै0प्ला0 दोनों का आपूर्त्ति आदेश (जुलाई 2008 और मार्च 2007) दिया गया।

संवीक्षा से निम्नलिखित तथ्य उद्घाटित हुए :–

- बाटा मोड़, मोकामा में अवस्थित ₹ 39 लाख की लागत से खरीदा (अगस्त 2008) गया त0मि0सं0, प्रमंडल में कार्य/सामाग्री उपलब्ध नहीं होने के कारण अधिष्ठापित नहीं किया जा सका था। इसलिए संयंत्र को कार्यपालक अभियंता (यां0), यांत्रिकी प्रमंडल, प0नि0वि0, भागलपुर को मार्च 2013 में स्थानांतरित कर दिया गया तथा जून 2014 में इसे अधिष्ठापित किया गया। हाँलांकि, त0मि0सं0 की गारंटी सीमा समाप्त (फरवरी 2010) हो गई थी तथा संयत्र पूर्ण रूपेण छः वर्षों तक निष्क्रिय पड़ा रहा।
- त0मि0सं0, का अधिष्ठापन गायघाट, पटना में जून 2009 में हुआ। एजेंसी को कुल ₹ 39 लाख की पूर्ण राशि का भुगतान (दिसम्बर 2008) कर दिया गया था। हाँलांकि, वर्ष 2009–13 के दौरान इसकी उपयोगिता उसकी पूरी क्षमता का (एक साल में 55000 मे0टन) 0.68 प्रतिशत (2009–10) से 23 प्रतिशत (सितम्बर 2013) तक विस्तारित थी। इसके अलावा, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद (बि0रा0प्र0नि0प0) द्वारा निर्धारित निःस्सरण मानक का अनुपालन नहीं होने के कारण बि0रा0प्र0नि0प0 द्वारा त.मि.सं. के परिचालन को रोक (सितम्बर 2013) दिया गया।
- प्रमंडल में कार्य/सामग्री की अनुपलब्धता के कारण अक्टूबर 2008 में बिना लोड टेस्ट के वे0मि0मै0प्लां0, गायघाट की अधिष्ठापना की गयी और वह तभी से निष्क्रिय पड़ा रहा। इसकी भी गारंटी अवधि समाप्त (अक्टूबर 2009) हो गयी थी और अगस्त 2012 में एजेंसी को ₹ 27.82 लाख का पूर्ण भुगतान कर दिया गया था।
- मार्च 2010 में बिना लोड टेस्ट के बैजनाथपुर, सहरसा अवस्थित वे0मि0मै0प्ला0, अधिष्ठापन किया गया और प्रमंडल में कार्य की अनुपलब्धता के कारण यह तब से निष्क्रिय पड़ा रहा। अगस्त 2012 में एजेंसी को भी ₹ 27.82 लाख की राशि का कुल भुगतान कर दिया गया।

अभियंता प्रमुख सह–अपर आयुक्त–सह– विशेष सचिव, प0नि0वि0, बिहार ने जवाब में कहा (नवम्बर 2013) कि आवश्यकता पूर्ति हेतु उपकरण की खरीद की गयी थी और उन्हें अधिष्ठापित करने का अंतिम निर्णय विभाग द्वारा लिया गया। आगे कहा गया कि (नवम्बर 2014) संवेदक के पास अपना खुद का संयत्र रहने के कारण विभागीय संयत्रों का उपयोग मानक क्षमता के अनुरूप नहीं किया जा सका। अब इसकी उपयोगिता को सुनिश्चित करने के लिये कदम उठाये गये हैं।

इस प्रकार, त0मि0सं0/वे0मि0मै0प्ला0 का क्रय संयत्रों की कमी को पूरा करने और पथों की आयु बढ़ाने के लिये किया गया था, जो छः सालों तक निष्क्रिय/अनुपयोगित पड़ा रहा। मशीनों के उपयोग को सुनिश्चित किये बगैर योजना प्राधिकरण समिति द्वारा अविवेकपूर्ण निर्णय लिए जाने के फलस्वरूप ₹ 1.34 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ।

उद्योग विभाग

3.14 जोखिम एवं लागत राशि आरोपित नहीं करने के कारण अतिरिक्त दायित्व का सृजन

आधारभूत संरचना विकास प्राधिकरण, पटना द्वारा जोखिम एवं लागत उपबंध को लागू करने में विफल रहने के परिणामस्वरूप राज्य के राजकोष पर ₹ 2.22 करोड़ का अतिरिक्त भार पड़ा।

पथ निर्माण विभाग, बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित मानक निविदा दस्तावेज (मा.नि.द.) का उपबंध 14 यह विहित करता है कि यदि संवेदक कार्य के प्रति लापरवाही का दोषी पाया जाता है तो सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुबंध रद्द कर दिया जायेगा तथा अपूर्ण कार्य संवेदक के जोखिम एवं लागत से पूर्ण की जायेगी। कार्यों की पूर्णता में सरकार द्वारा किया गया अथवा किया जानेवाला अतिरिक्त व्यय अथवा सरकार को अत्यधिक हानि या क्षति की वसूली, संविदा के प्रावधानों के अनुसार संवेदक के किसी भी प्रकार की देय राशियों से अथवा स्वयं संवेदक से की जायेगी।

आधारभूत संरचना विकास प्राधिकरण (आ0सं0वि0प्रा0), पटना के अभिलेखों के नमूना जाँच (अक्टूबर 2013) के दौरान ज्ञात हुआ कि चंडी स्थित नालंदा अभियंत्रण महाविद्यालय के प्राचार्य आवास तथा लड़कों तथा लड़कियों के छात्रावास के निर्माण कार्य हेतु राज्य सरकार द्वारा ₹ 39.84 करोड़ का प्रशासनिक अनुमोदन (जून 2008) एवं ₹ 29.34 करोड़ की तकनीकी स्वीकृती (सितम्बर 2010) दी गई जिसे संशोधित कर ₹ 31.13 करोड़ (अक्टूबर 2011) कर दिया गया। कार्य के क्रियान्वयन के लिए आ0सं0वि0प्रा0 को कार्यकारी अभिकरण बनाया गया। आ0सं0वि0प्रा0 ने मेसर्स आई0वी0आर0सी0एल0 इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं प्रोजेक्टस लिमिटेड के साथ ₹ 31.66 करोड़ का एकरारनामा किया (अक्टूबर 2010) जिसके अनुसार कार्य को जून 2012 तक पूरा कर लिया जाना था।

संवीक्षा से आगे पता चला कि स्मार–पत्रों के बावजूद (जनवरी 2011 से अगस्त 2011) संवेदक ससमय कार्य पूर्ण करने में विफल रहा। आ0सं0वि0प्रा0, पटना ने कार्यों की मंद एवं धीमी प्रगति तथा कार्यों को पूरा करने में संवेदक की लापरवाही के कारण ₹ 1.15 करोड़ राशि के कार्य किए जाने के बाद संविदा को निरस्त करने का निर्णय (सितम्बर 2011) लिया तथा ₹ 72.50 लाख[38] की सुरक्षित जमा राशि को जब्त कर लिया। जबकि आ0सं0वि0प्रा0, पटना ने जोखिम एवं लागत उपबंध नहीं लगाया जैसाकि मा0नि0सं0 के उपबंध 14 में अपेक्षित था तथा नवंबर 2011 में शेष बचे ₹ 30.51 करोड़ के कार्य के क्रियान्वयन के लिए नया एकरारनामा (दिसंबर 2011) दूसरे संवेदक के साथ ₹ 33.46 करोड़ में किया। इस प्रकार जोखिम एवं लागत उपबंध के लागू करने में आ0सं0वि0प्रा0 की विफलता के कारण राजकीय राजकोष पर ₹ 2.22 करोड़[39] मूल्य का अतिरिक्त दायित्व भारित हुआ।

इसे इंगित किये जाने पर (अक्टूबर 2013), आ0सं0वि0प्रा0, पटना के मुख्य सलाहकार ने कहा कि कार्यों की धीमी प्रगति के कारण ₹ 72.50 लाख की सुरक्षा जमा राशि को जब्त करने के बाद अनुबंध रद्द कर दिया गया था तथा भविष्य में लेखापरीक्षा अवलोकन को ध्यान रखा जाएगा परंतु संवेदक के विरूद्ध जोखिम एवं लागत उपबंध आरोपित नहीं किए जाने का कारण स्पष्ट नहीं किया।

---

38 *अग्रधन राशि:- ₹ 63,50,000 + सुरक्षित जमा राशि ₹ 9,00,619 = ₹ 7250619 अर्थात ₹ 72.50 लाख।*

39 *₹ 33.46 करोड़ – ₹ 30.51 करोड़ – ₹ 0.73 करोड = ₹ 2.22 करोड़*

मुख्य सलाहकार, आ0सं0वि0प्रा0, पटना का जवाब स्वीकार्य नहीं था क्योंकि कार्य को पूर्ण करने में भारी लापरवाही के लिए आ0सं0वि0प्रा0 द्वारा संवेदक के विरूद्ध जोखिम एवं लागत उपबंध आरोपित किया जाना चाहिए था जिसके परिणामस्वरूप राजकीय राजकोष पर अधिक भार पड़ा। इसके अलावा, नालंदा अभियंत्रण महाविद्यालय, चंडी के विद्यार्थी भी सुविधाओं से वंचित रहे।

मामला सरकार को प्रतिवेदित किया गया (मई 2014), स्मार–पत्रों के बावजूद उनका उत्तर अप्राप्त था (नवम्बर 2014)।

पटना (प्रवीण कुमार सिंह)

दिनांकः **महालेखाकर (लेखापरीक्षा), बिहार**

प्रतिहस्ताक्षरित

नई दिल्ली (शशि कान्त शर्मा)

दिनांकः **भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक**

परिशिष्ट

परिशिष्ट-1.1
(संदर्भः कंडिका–1.7 पृष्ठ–4)

लंबित निरीक्षण प्रतिवेदनों/कंडिकाओं को दर्शाती विवरणी

(₹ करोड़ में)

	सामान्य प्रक्षेत्र			सामाजिक प्रक्षेत्र			आर्थिक प्रक्षेत्र		
वर्ष	नि.प्र. की सं.	कंडिकाओं की सं.	राशि	नि.प्र. की सं.	कंडिकाओं की सं.	राशि	नि.प्र. की सं.	कंडिकाओं की सं.	राशि
2006-07	120	631	744.72	396	2636	18565.00	297	1551	1407.88
2007-08	86	417	248.85	358	2207	4543.67	255	1216	8583.21
2008-09	126	425	590.27	464	3019	3758.75	342	1935	2791.53
2009-10	91	389	369.99	556	3156	6263.36	359	1887	2827.88
2010-11	86	321	554.24	493	2676	8004.63	262	1326	4951.91
2011-12	3	15	10.12	83	576	7140.34	83	545	12005.94
2012-13	51	428	3024.72	458	2941	40650.00	98	714	7355.16
2013-14	98	766	942.56	139	934	8660.45	72	474	7505.18
कुल	**661**	**3392**	**6485.47**	**2947**	**18145**	**97586.20**	**1768**	**9648**	**47428.69**

(स्रोतः इस कार्यालय के विभिन्न प्रक्षेत्रों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन)

परिशष्ट-1.2

(संदर्भः कंडिका–1.7 पृष्ठ–4)

लंबित निरीक्षण प्रतिवेदनों के कंडिकाओं का विभिन्न प्रकारों के अनियमिताओं को दर्शाती विवरणी

वर्ष	नि.प्र. की संख्या	लेखापरीक्षा में पाए गए धोखाधड़ी/दुर्विनियोजन/गबन/हानि	लेखापरीक्षा में पाए गए वसूली एवं अधिक भुगतान	संविदात्मक दायित्वों का ह्रास एवं संवेदकों को अनुचित लाभ	परिहार्य/अधिकाई व्यय	व्यर्थ/निरर्थक व्यय	सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के बिना किए गए व्यय	एक योजना से दूसरे या एक शीर्ष से दूसरे में निधियों का विचलन	निधियों के व्ययगत होने से बचने के लिए वित्तीय वर्ष के अंत में निधियों का एक साथ आहरण	प्रतिबंध वस्तुओं या सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के बिना विशेष प्रकृति की वस्तुओं पर व्यय	निधियों के व्ययगत होने से बचने के लिए वास्तविक जरूरत से अधिक भंडार/गोदाम का क्रय	धन का निष्क्रिय निवेश/निष्क्रिय स्थापना/निधियों का अवरोधन	निष्क्रिय कर्मचारियों को मजदूरी का भुगतान	उपकरणों की अधिष्ठापना में देरी/निष्क्रिय उपकरण और तत्संबंधी परिणाम	उद्देश्यों की गैर उपलब्धि/निष्फल व्यय	विविध अवलोकन	कुल कंडिकाएँ
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**
2006-07	813	129	432	119	133	245	15	188	7	7	23	260	33	11	201	3015	4818
2007-08	699	82	257	50	72	209	43	136	4	14	20	189	38	6	182	2538	3840
2008-09	932	119	333	108	87	323	38	222	3	4	12	338	17	5	218	3552	5379
2009-10	1006	155	303	171	143	315	48	234	3	3	1	300	28	21	314	3393	5432
2010-11	841	57	333	66	87	226	23	165	1	6	17	258	22	20	252	2790	4323
2011-12	169	10	62	51	20	53	7	26	2	0	4	71	5	2	78	745	1136
2012-13	607	21	214	88	214	193	53	145	9	32	9	322	28	39	237	2479	4083
2013-14	309	8	103	59	44	133	40	46	2	12	5	172	9	11	103	1427	2174
कुल	**5376**	**581**	**2037**	**712**	**800**	**1697**	**267**	**1162**	**31**	**78**	**91**	**1910**	**180**	**115**	**1585**	**19939**	**31185**

(स्रोतः इस कार्यालय के विभिन्न प्रक्षेत्रों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन)

परिशिष्ट-1.3

(संदर्भः कंडिका–1.11 पृष्ठ–6)

राज्य विधानमंडल में स्वायत्त निकायों के पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की प्रस्तुतीकरण की स्थिति को दर्शाती विवरणी

क्रम सं.	स्वायत्त निकायों के नाम	लेखापरीक्षा सौपें जाने की स्थिति	लेखापरीक्षा के लिए लेखों का प्रस्तुतिकरण		पृथक लेखापरीक्षा का प्रचालन		विधानमंडल में प्रस्तुत करने की तिथि	टिप्पणी
			लेखों का वर्ष	दिनांक	लेखों का वर्ष	दिनांक		
1	बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, पटना	स्थाई	2011-12	17/8/2012	2011-12	20/12/2012	विभाग के द्वारा सूचित नहीं	-
			2012-13	2/8/2014	2012-13	प्रक्रिया अंतर्गत	-	
2	बिहार राज्य आवास बोर्ड	2003-04 तक	2004-05 से 2008-09	22/4/2013	2004-05 से 2008-09	27/8/2014	विभाग के द्वारा सूचित नहीं	शहरी विकास एवं आवास विभाग, बिहार सरकार के द्वारा निर्गत सहमति पत्र के आधार पर वर्ष 2004–05 से वर्ष 2008–09 की अवधि का लेखापरीक्षा हुआ और पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन निर्गत किए गए।
3	बिहार राज्य खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, पटना	2009-10 तक	2009-10	12/9/2013	2009-10	21/4/2014	विभाग के द्वारा सूचित नहीं	-
4	राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर	2011-12 तक	2010-11	30/3/2012	2010-11	11/11/2014	विभाग के द्वारा सूचित नहीं	-
			2011-12	24/10/2013	2011-12	प्रक्रिया अंतर्गत	-	

(स्रोतः इस कर्यालय के विभिन्न प्रक्षेत्रों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन)

परिशिष्ट 2.1.1

(संदर्भ : कंडिका 2.1.7; पृष्ठ–12)

ब्याज की हानि दर्शाने वाली विवरणी

(राशि ₹ में)

वर्ष	अवधि (दिन)	ब्याज दर प्रति वर्ष* (प्रतिशत में)	वर्ष के दौरान न्यूनतम शेष	ब्याज की राशि
2009-10	1/4/2009 से 12/4/2009 (12)	5.25	6369129.51	10993.29
	13/4/2009 से 3/5/2009 (21)	5		18322.15
	4/5/2009 से 17/5/2009 (14)	4.75		11604.03
	18/5/2009 से 14/6/2009 (28)	4.25		20765.11
	15/6/2009 से 4/10/2009 (112)	4		78174.52
	5/10/2009 से 8/11/2009 (35)	3.75		22902.69
	9/11/2009 से 31/10/2010 (143)	3.5		87335.60
	उप योग			**250097.39**
2010-11	1/4/2010 से 16/8/2010 (138)	3.5	10253860.44	135688.07
	17/8/2010 से 6/12/2010 (112)	4		125855.60
	7/12/2010 से 31/3/2011 (115)	5.5		177686.76
	उप योग			**439230.43**
2011-12	1/4/2011 से 11/5/2011(41)	5.5	8983617.13	55501.52
	12/5/2011 से 10/7/2011 (60)	6.25		92297.44
	11/7/2011 से 27/3/2012 (260)	7		447950.22
	28/3/2012 से 31/3/2012 (04)	8		7876.05
	उप योग			**603625.23**
2012-13	1/4/2012 से 23/4/2012 (23)	8	33258084.02	167657.19
	24/4/2012 से 7/6/2012 (45)	7.25		297272.60
	8/6/2012 से 6/9/2012 (91)	7		580421.90
	7/9/2012 से 31/3/2013 (206)	6.5		1220070.53
	उप योग			**2265422.22**
2013-14	1/4/2013 से 18/9/2013 (171)	6.5	46808271.77	1425408.06
	19/9/2013 से 31/3/2014 (194)	7.5		1865918.78
	उप योग			**3291326.84**
	सकल योग			**6849702.11 or say ₹ 68.50 lakh**

**90 दिनों की अवधि की सावधि जमा के लिए*

(स्रोत : बी.एस.पी.सी.बी. द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.1.2

(संदर्भ : कंडिका 2.1.8.1; पृष्ठ–13)

जल खपत के प्रतिवेदनों के विलम्ब से प्रस्तुत करने की विवरणी

क्रम सं0	इकाई का नाम	अवधि	रिटर्न की सं0	देय तिथि पर प्रस्तुत रिटर्न की सं0	देय तिथि के बाद प्रस्तुत रिटर्न की सं0		विलम्ब (महीनों मे)	निर्गत किए गए नोटिसों की सं0
					1 से 30 दिन तक	30 दिन से अधिक		
1	नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन, (एनटीपीसी) कहलगॉव	4/2009 से 03/2013	48	शून्य	46	2	1	शून्य
2	कल्याणपुर सीमेंट लिमिटेड, रोहतास	9/2010 से 3/2014	43	शून्य	43	0	0	शून्य
3	हिन्दुस्तान कोका कोला बेवरेज प्राइवेट लिमिटेड, पटना	4/2009 से 11/2012	44	9	35	0	1	शून्य
4	यूनाइटेड स्प्रिट्स लिमिटेड, हाथीदह	4/2009 से 3/2014	59	6	26	27	1 से 2	शून्य
5	कॉटी थर्मल पावर स्टेशन, मुजफ्फरपुर	4/2009 से 7/2013	52	शून्य	13	39	1 से 10	शून्य
6	बरौनी थर्मल पावर स्टेशन	4/2009 से 3/2014	57	शून्य	52	5	1 से 3	4
7	इंडियन ऑयल कारपोरेशन, बेगुसराय	8/2010 से 1/2014	42	शून्य	40	2	3 से 4	2
8	पटना डेयरी प्रोजेक्ट, पटना	10/2012 से 3/2014	18	17	1	0	0	शून्य
	कुल		**363**	**32**	**256**	**75**	**1 to 10**	**6**

(स्रोत : बी.एस.पी.सी.बी. द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.1.3

(संदर्भ : कंडिका 2.1.8.1; पृष्ठ–13)

जल उपकर के निर्धारण मे विलम्ब की विवरणी

क्रम सं0	इकाई का नाम	निर्धारण की अवधि	रिटर्न की सं0	30 दिनो के अन्दर निर्धारण की सं0	30 दिनो के बाद निर्धारण की सं0	विलम्ब (महीनों मे)
1	नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन, (एनटीपीसी) कहलगॉव	4/2009 से 3/2013	48	29	19	1 से 2
2	कल्याणपुर सीमेंट लिमिटेड,	9/2010 से 3/2014	43	22	21	1 से 4
3	हिन्दुस्तान कोका कोला बेवरेज प्राइवेट लिमिटेड, पटना	4/2009 से 11/2012	44	18	26	1 से 2
4	यूनाइटेड स्प्रिट्स लिमिटेड, हाथीदह	4/2009 से 3/2014	59	37	22	1 से 3
5	कॉटी थर्मल पावर स्टेशन, मुजफ्फरपुर	4/2009 से 7/2013	52	35	17	1 से 7
6	बरौनी थर्मल पावर स्टेशन	4/2009 से 3/2014	57	27	30	1 से 7
7	इंडियन ऑयल कारपोरेशन, बेगुंसराय	8/2010 से 1/2014	42	17	25	1 से 3
8	पटना डेयरी प्रोजेक्ट, पटना	10/2012 से 3/2014	18	7	11	1 से 3
	कुल		**363**	**192**	**171**	**1 से 7**

(स्रोत : बीएसपीसीबी द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.1.4

(संदर्भ : कंडिका 2.1.8.2; पृष्ठ-13)

जल उपकर की बकाए की वसूली नहीं किए जाने की विवरणी

(₹ *लाख में*)

क्रम सं0	नगर निगम का नाम	2009 तक निर्धारण की गयी राशि	जल उपकर की आकलित राशि, वर्ष के लिए					2009-14 की कुल राशि	मार्च **2014** तक कुल राशि
			2009-10	**2010-11**	**2011-12**	**2012-13**	**2013-14**		
1.	आरा	2.31	1.16	1.16	1.16	1.16	1.16	5.80	8.11
2.	बेगुसराय	0.00	0.00	0.00	1.10	1.10	1.10	3.30	3.30
3.	भागलपुर	8.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.02
4.	दरभंगा	4.87	0.83	0.83	0.83	0.83	0.83	4.15	9.02
5.	गया	25.75	2.02	2.02	2.02	2.02	2.02	10.10	35.85
6.	कटिहार	2.10	1.05	1.05	1.05	1.05	1.05	5.25	7.35
7.	मुंगेर	15.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	15.68
8.	मुजफ्फरपुर	33.85	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	33.85
9.	नालंदा	0.00	0.00	0.00	1.29	1.29	1.29	3.87	3.87
10.	पटना	598.11	28.64	28.65	28.73	28.65	28.65	143.32	741.43
11.	पूर्णिया	0.00	0.00	0.00	1.22	1.22	1.22	3.66	3.66
कुल		**690.69**	**33.70**	**33.71**	**37.40**	**37.32**	**37.32**	**179.45**	**870.14**

(स्रोत : बी.एस.पी.सी.बी. द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.1.5

(संदर्भ : कंडिका 2.1.9.2; पृष्ठ-14)

सहमति निर्गत करने मे विलम्ब की विवरणी

क्रम सं0	उद्योगों का नाम	मामलों की संख्या	आवेदन की तिथि	जल / वायु अधिनियम	सहमति निर्गत करने की तिथि	सहमति निर्गत करने मे लिया गया वास्तविक समय
1.	मे0 लक्ष्मी केमिकल्स, फतुहा, पटना	1.	9/11/2011	वायु	4/5/2012	05 महीने 25 दिन
		2.	16/2/2012	वायु	2/5/2013	14 महीने 16 दिन
2	मे0 चितवन ब्लेंडर्स एण्ड बोटलर्स प्रा0 लि0, दानापुर, पटना	3.	29/11/2008	जल	24/11/2009	11 महीने 26 दिन
		4.	29/12/2008	वायु	24/11/2009	10 महीने 26 दिन
		5.	31/12/2009	वायु	23/6/2010	05 महीने 24 दिन
3	मे0 सेन्टफ सेफ्टी ग्लास इंडस्ट्री प्रा0 लि0, पटना	6.	26/9/2008	वायु	8/5/2009	07 महीने 13 दिन
		7.	9/9/2011	वायु	2/7/2012	09 महीने 24 दिन
		8.	27/7/2012	वायु	29/11/2012	04 महीने 03 दिन
		9.	9/9/2011	जल	2/7/2012	09 महीने 24 दिन
		10.	27/7/2012	जल	29/11/2012	04 महीने 03 दिन
4	मे0 राठी लैबोरेटरीज (हिन्दुस्तान) प्रा0 लि0, पटना	11.	29/6/2009	जल	18/12/2009	05 महीने 20 दिन
		12.	1/8/2011	जल	15/3/2012	07 महीने 15 दिन
		13.	29/6/2009	वायु	18/12/2009	05 महीने 20 दिन
		14.	1/8/2011	वायु	15/3/2012	07 महीने 15 दिन
5	मे0 बिहार बोन कशर, इब्राहिमपुर, पटना	15.	3/1/2012	वायु	19/6/2012	05 महीने 17 दिन
6	मे0 उमंग स्टील प्रा0 लि0, पटना	16.	2/3/2009	वायु	4/9/2009	06 महीने 03 दिन
		17.	27/2/2010	वायु	3/12/2010	09 महीने 07 दिन
		18.	2/3/2009	जल	4/9/2009	06 महीने 03 दिन
		19.	27/2/2010	जल	3/12/2010	09 महीने 07 दिन
7	मे0 हिन्दुस्तान कृषि रसायन सेकण्ड फेज, पटना	20.	9/7/2009	वायु	11/12/2009	05 महीने 03 दिन
8	मे0 राहुल ट्रेडर्स, दाउद नगर, औरंगाबाद	21.	18/3/2010	वायु	31/8/2010	05 महीने 14 दिन
		22.	11/4/2011	वायु	10/10/2011	06 महीने
		23.	11/4/2013	वायु	29/8/2013	04 महीने 19 दिन
9	मे0 पाइनेक्स स्टील इंडस्ट्रीज प्रा0 लि0, पटना	24.	27/2/2009	जल	27/8/2009	06 महीने 01 दिन
		25.	15/2/2010	जल	20/9/2010	07 महीने 06 दिन
		26.	6/2/2013	जल	5/8/2013	06 महीने
		27.	27/2/2009	वायु	27/8/2009	06 महीने 01 दिन

क्रम सं0	उद्योगों का नाम	मामलों की संख्या	आवेदन की तिथि	जल / वायु अधिनियम	सहमति निर्गत करने की तिथि	सहमति निर्गत करने मे लिया गया वास्तविक समय
		28.	15/2/2010	वायु	20/9/2010	07 महीने 06 दिन
		29.	2/12/2011	वायु	1/8/2012	08 महीने
		30.	6/2/2013	वायु	5/8/2013	06 महीने
10	मे0 शिव डोमेस्टिक कोक (प्रा0) लि0, पटना	31.	18/11/2008	वायु	7/4/2009	04 महीने 21 दिन
		32.	25/3/2009	वायु	3/5/2010	13 महीने 09 दिन
		33.	17/1/2013	वायु	6/11/2013	09 महीने 21 दिन
11	मे0 इंडियन रेलवे कैटरिंग एण्ड टूरिज्म कारपोरेशन लि0, पटना	34.	23/5/2008	वायु	6/2/2009	08 महीने 15 दिन
		35.	8/7/2011	वायु	17/1/2012	06 महीने 10 दिन
		36.	16/8/2012	वायु	7/2/2014	17 महीने 23 दिन
12	मे0 धीरेन्द्र स्टोन वर्क्स , रोहतास	37.	5/6/2009	वायु	27/11/2009	05 महीने 23 दिन
13	मे0 बाबा भोले स्टोन चिप्स, रोहतास	38.	30/12/2008	वायु	16/6/2009	05 महीने 18 दिन
14	मे0 रैम्की इंफ्रास्ट्रक्चर लि0, नालंदा	39.	9/4/2013	वायु	3/12/2013	07 महीने 25 दिन
15	मे0 विवेक स्टोन वर्क्स, रूद्रपुरा, पटना	40.	26/12/2008	वायु	13/5/2009	04 महीने 18 दिन
		41.	7/3/2011	वायु	18/10/2011	07 महीने 12 दिन
16	मे0 हेबे इस्पात, पटना	42.	15/4/2009	जल	18/8/2009	04 महीने 04 दिन
		43.	26/3/2009	वायु	18/8/2009	04 महीने 24 दिन
		44.	8/1/2010	वायु	27/8/2010	07 महीने 20 दिन
		45.	27/2/2013	वायु	14/8/2013	05 महीने 19 दिन
17	मे0 वी0के0 मार्का ईट उद्योग, चपरंग, कैमुर	46.	15/3/2010	वायु	31/1/2011	10 महीने 16 दिन
18	मे0 वी0के0 ईट उद्योग, पंजरांव, कैमुर	47.	16/3/2010	वायु	18/10/2010	07 महीने 03 दिन
		48.	2/2/2012	वायु	4/7/2012	05 महीने 03 दिन
		49.	23/1/2013	वायु	29/8/2013	07 महीने 07 दिन
19	मे0 रैम्की इंफ्रास्ट्रक्चर लि0, बेली रोड, पटना	50.	9/4/2013	वायु	31/12/2013	08 महीने 23 दिन

परिशिष्ट 2.1.6

(संदर्भ : कंडिका 2.1.12.1; पृष्ठ-20)

वर्ष 2009–14 के दौरान राज्य के नगरपालिका प्राधिकरण द्वारा अनुपालन मानदंडों के पालन की स्थिति की विवरणी

वर्ष	स्थानीय निकायों की सं0	एम.एस.डब्ल्यू. का संग्रहण		एम.एस.डब्ल्यू. का पृथक्करण		एम.एस.डब्ल्यू. का भंडारण		एम.एस.डब्ल्यू. का प्रसंस्करण		एम.एस.डब्ल्यू. का निपटान		नियमानुसार निपटान के लिए स्थल की पहचान
		नगरपालिका प्राधिकरणों की सं0		नगरपालिका प्राधिकरणों की सं0		नगरपालिका प्राधिकरणों की सं0		नगरपालिका प्राधिकरणों की सं0		नगरपालिका प्राधिकरणों की सं0		
		हाँ	नही	हाँ	नही	हाँ	हाँ	नही	हाँ	नही	हाँ	
2009-10	122	55	67	0	122	0	122	0	122	0	122	2
2010-11	140	55	85	0	140	0	140	0	140	0	140	2
2011-12	140	55	85	0	140	0	140	0	140	0	140	3
2012-13	140	अनुप लब्ध	अनुप लब्ध	0	140	0	140	0	140	0	140	1
2013-14	140	अनुप लब्ध	अनुप लब्ध	0	140	0	140	0	140	0	140	1

(हाँ: मानदंड का अनुपालन किया, नही: मानदंड का अनुपालन नहीं किया)

(स्रोत : बी.एस.पी.सी.बी. द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.1.7

(संदर्भ : कंडिका 2.1.15.2; पृष्ठ-24)

केन्द्रीय प्रयोगशाला, पटना मे उपलब्ध उपकरणों की सूची दर्शाती हुई विवरणी

क्रम सं0	उपकरणों / यंत्रों की सूची	स्थिति
1.	एनालिटिकल बैलेंस	परिचालन में
2.	एटॉमिक एबजारप्शन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर	चालू नहीं
3.	ऑटोक्लाव	परिचालन मे
4.	बैक्टेरियोलोजिकल इंक्यूबेटर	परिचालन मे
5.	बीओडी इंक्यूबेटर	परिचालन मे
6.	सीओ एनालाइजर	परिचालन होने वाला
7.	सीओडी डाइजेशन अपरैटस	परिचालन में
8.	कोल्ड रूम	परिचालन में
9.	प्रिंटर सहित कम्प्यूटर	परिचालन में
10.	कंडक्टिविटी मीटर	परिचालन में
11.	फ्लेम फोटोमीटर	परिचालन में
12.	जी सी–एम एस	परिचालन होने वाला
13.	ग्लास डिस्टीलेशन एसेंबली	परिचालन में
14.	हॉट एयर ओवन	परिचालन में
15.	मैग्नेटिक स्टीरर	परिचालन में
16.	माइक्रोवेव डाइजेस्टर	परिचालन में
17.	मफल फरनेस	परिचालन में
18.	नॉयज लेवल मीटर	परिचालन में
19.	ओजोन एनालाइजर	परिचालन होने वाला
20.	पी एम $_{2.5}$ मोनिटर	परिचालन होने वाला
21.	रेफ्रीजरेटर	परिचालन में
22.	रेसपाइरेबल डस्ट सैम्पलर	परिचालन में
23.	स्पेक्ट्रोफोटोमीटर	परिचालन में
24.	टीओसी एनालाइजर	परिचालन होने वाला
25.	टरबीडीटी मीटर	चालू नहीं
26.	वाटर बाथ	परिचालन में
27.	विंड मोनिटर	परिचालन होने वाला

(स्रोत : बी.एस.पी.सी.बी. द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.1.8

(संदर्भ : कंडिका 2.1.15.2; पृष्ठ-24)

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के अन्तर्गत पर्यावरणीय प्रयोगशालाओं की मान्यता हेतु दिशानिर्देशों के परिशिष्ट–बी के अनुसार जल/अपशिष्ट जल के विश्लेषण के लिए आवश्यक उपकरणों की सूची

कम सं0	उपकरणो की सूची	उपलब्धता (हाँ/नहीं)
1.	आइस बॉक्स	नहीं
2.	फिलट्रेशन असेंबली	नहीं
3.	हीटिंग मेंटल	नहीं
4.	स्टॉप वाच	नहीं
5.	हॉट एयर ओवन	हाँ
6.	हॉट प्लेट	नहीं
7.	मफल फरनेस	हाँ
8.	स्टैण्डर्ड वेट	नहीं
9.	वाटर बाथ	हाँ
10.	थर्मोमीटर	नहीं
11.	रेफ्रीजरेटर बिग साइज	हाँ
12.	आटोक्लाव	हाँ
13.	बाटम सैम्पलर	नहीं
14.	बीओडी इन्क्यूबेटर	हाँ
15.	सेन्ट्रीफ्युग	नहीं
16.	एक्वैरियम फॉर बायोएशे टेस्ट	नहीं
17.	सीओडी डाइजेस्टर विथ एल्यूमिनीयम हीटिंग ब्लॉक्स	हाँ
18.	कोलोनी काउन्टर	नहीं
19.	डेप्थ सैम्प्लर	नहीं
20.	डाईजेस्टर विद कन्डेन्सर	नहीं
21.	डाईजेशन चैम्बर	नहीं
22.	डिजोल्वड ऑक्सीजन सैम्प्लर	नहीं
23.	फ्लोक्यूलेटर (जार टेस्टिंग अपरैट्स)	नहीं
24.	फ्लो मीटर	नहीं
25.	इन्क्यूबेटर फॉर बैक्टीरिअलाजिकल टेस्ट	नहीं
26.	लैमीनर फ्लो	नहीं
27.	मैग्नेटिंग स्टेरर विद हॉट प्लेट	हाँ
28.	मैकेनिकल शेकर	नहीं
29.	मइक्रोवेव डाइजेस्टर	हाँ
30.	टीकेएन एनालाइजर सेमी ऑटोमेटिक विद एल्युमिनीयम	नहीं
31.	अल्ट्रोसोनिक वाटर बाथ	नहीं
32.	वैक्यूम पम्प	नहीं
33.	वाटर प्यूरीफिकेशन/ डिस्टीलेशन एसेम्बली	नहीं
34.	एकमेन ड्रेज	नहीं
35.	वाटर सैम्पलर	नहीं
36.	वॉयल एण्ड ग्रीज सैम्पलर	नहीं
37.	वाटर टेस्टिंग किट	नहीं
38.	क्लोरोस्कोप फॉर रेसिडूअल क्लोरिन	नहीं

(स्रोतः सी.पी.सी.बी. का दिशानिर्देश)

दिशानिर्देशों के परिशिष्ट–डी (ए) के अनुसार जल/अपशिष्ट जल के विश्लेषण के लिए आवश्यक यंत्रों की सूची

क्रम सं0	यंत्रों की सूची	उपलब्धता (हाँ/नही)
1.	एनालिटीकल बैलेंस	हाँ
2.	कन्डक्टिविटी मीटर	हाँ
3.	डीजोल्वड ऑक्सीजन मीटर	नहीं
4.	पीएच मीटर विद कम्बाइंड ग्लास इलेक्ट्रोड	नहीं
5.	टरबीडीटी मीटर	हाँ (चालू नहीं)
6.	अल्फा/बेटा रेडियोएक्टिविटी काउंटर	नहीं
7.	एटामिक एब्जारप्शन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर (फ्लेम) विद कैथोड लैम्प्स	हाँ (चालू नहीं)
8.	एटामिक एब्जारप्शन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर विद ग्रेफाइट फरनेस एंड हाईड्रायड जेनरेशन सिस्टम	नहीं
9.	आरगेनिक हैलोजेन एनालाईजर (एओएक्स/टीओएक्स)	नहीं
10.	बाइनोकुलर माइक्रोस्कोप	नहीं
11.	फ्लेम फोटोमीटर	हाँ
12.	गैस क्रोमैटोग्राफ	नहीं
13.	गैस क्रोमैटोग्राफ विद मास स्पेक्ट्रोमीटर (जीसी–एमएस)	हाँ
14.	हाई प्रेशर लिक्विड क्रोमैटोग्राफ	नहीं
15.	आयन क्रोमैटोग्राफ	नहीं
16.	इन्डक्टिवली कपल्ड प्लाज्मा (आईसीपी) स्पेक्ट्रोमीटर	नहीं
17.	मरकरी एनालाइजर डिजिटल	नहीं
18.	पोर्टेबल एनालाइजर किट (डीओ, पीएच, टेम्प. कन्ड.)	नहीं
19.	प्रेसिजन बैलेन्स वेईग 1 एमजी तक (जल/वायु)	नहीं
20.	रोटेरी इवापोरेटर	नहीं
21.	स्पेक्ट्रोफोटोमीटर (विजिबल) या अल्ट्रावॉयलेट तथा विजिबल	हाँ
22.	स्पेशीफिक ऑयन मीटर	नहीं
23.	स्टीरियो माइक्रोस्कोप	नहीं
24.	टोटल ऑरगैनिक कार्बन एनालाइजर	हॉ (परिचालन होने वाला)

(स्रोतः सी.पी.सी.बी. का दिशानिर्देश)

दिशानिर्देशों के परिशिष्ट–डी(बी) के अनुसार परिसंकटमय अपशिष्ट विश्लेषण के लिए आवश्यक विशिष्ट उपकरणों/यंत्रों की सूची

क्रम सं0	उपकरणों/यंत्रों की सूची	उपलब्धता (हाँ/नही)
1.	बाम्ब क्लोरीमीटर	नहीं
2.	एलीमेन्टल एनालाइजर	नहीं
3.	फ्लैश प्वाईंट एपरैट्स	नहीं
4.	माइश्चर कंटेंट मीटर	नहीं
5.	रोटेरी इवापोरेटर	नहीं
6.	टॉक्सीसिटी कैरेक्टिरिस्टिक लीचिंग प्रोसेड्योर एक्सट्रैक्टर	नहीं
7.	टॉक्सिक गैस एनालाइजर	नहीं
8.	एक्स–रे फ्लोरेसेन्स (एक्स0आर0एफ0) स्पेक्ट्रोमीटर	नहीं
9.	जीरो हेड स्पेश एक्सट्रैक्टर (जेड.एच.ई.)	नहीं

(स्रोतः सी.पी.सी.बी. का दिशानिर्देश)

दिशानिर्देशों के परिशिष्ट–जी के अनुसार वायु विश्लेषण के लिए आवश्यक उपकरणों/यंत्रों की विवरणी

कम सं0	उपकरणों/यंत्रों की सूची	उपलब्धता (हाँ/नही)
1.	बी.टी.एक्स. एनालाइजर (पीआईडी/एफआईडी डिटेक्टर)	नहीं
2.	बी.टी.एक्स. कैलिब्रेटर	नहीं
3.	चारकोल टयूब्स	नहीं
4.	सीओ एनालाइजर (नॉन डिस्पेन्सिव इन्फ्रारेड प्रिसिंपल)	हॉ
5.	डिटेक्टर ट्यूब्स विद पम्प ऑफ डिफरेंट पौल्यूटेंट्स	नहीं
6.	डस्ट एनालाइजर (बेटा एटेनुएशन/टीओईएन)	नहीं
7.	एक्जास्ट सीओ/एचसी एनालाइजर	नहीं
8.	फ्लू गैस एनालाइजर	नहीं
9.	गैस कोमैटोग्राफ विद एयर सैम्पलिंग पोर्ट, एफआईडी एंड पीएफपीडी डिटेक्टर्स	नहीं
10.	हैंडी सैम्प्लर फॉर गैसियस मोनिटरिंग	नहीं
11.	हाई वॉल्यूम सैम्प्लर विद फ्लो कट्रोलर (4)	नहीं
12.	लो फ्लो पम्प	नहीं
13.	मीटिरियोलॉजिकल सेंसर्स विद मास्ट (डब्ल्यूएस, डब्ल्यूडी, टेम्प., ह्यूमिडिटी)	नहीं
14.	माइक्रो बैलेंस (रिडीबलिटी 1 माइक्रोग्राम)	नहीं
15.	मल्टी कैलिब्रेशन सिस्टम	नहीं
16.	मल्टी चैनल रेकार्डर	नहीं
17.	मल्टी कैलिब्रेशन किट (पोर्टेबल)	नहीं
18.	नॉयज लेवल मीटर	हॉ
19.	एनओ–एनओ2–नोक्स एनालाइजर (कैमेल्यूमेनेसेन्स बेस्ड)	नहीं
20.	ओजोन एनालाइजर (अल्ट्रावॉयलेट)	हॉ (परिचालन होने वाला)
21.	परमिएशन ट्यूब्स फॉर कैलिब्रेशन	नहीं
22.	आरएसपीएम सैम्पलर विद फ्लो कन्ट्रोल्र/ब्रश लेस मोटर. कैलिब्रेशन किट	हॉ
23.	स्मोक डेन्सिटी मीटर	नहीं
24.	एसओ एनालाइजर (पल्स्ड फ्लोरेसेन्स बेस्ड)	नहीं
25.	सोप बबल मीटर	नहीं
26.	स्टैक मोनिटरिंग किट विद हाई टेम्प0 प्रोब्स	नहीं
27.	टोडलर बैग्स	नहीं
28.	वेट गैस मीटर	नहीं

(स्रोतः सी.पी.सी.बी. का दिशानिर्देश)

परिशिष्ट 2.1.9

(संदर्भ : कंडिका 2.1.17; पृष्ठ-25)

बी.एस.पी.सी.बी. के स्वीकृत बल एवं कार्यरत बल की स्थिति

क्रम सं0	पद का नाम	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति
1.	अध्यक्ष	1	1	0
2.	सदस्य सचिव	1	1	0
3.	वरीय पर्यावरण अभियंता	1	0	1
4.	पर्यावरण अभियंता	3	0	3
5.	सहायक पर्यावरण अभियंता	16	6	10
6.	कनीय पर्यावरण अभियंता	18	5	13
7.	उप–विश्लेषक	1	0	1
8.	प्रशासनिक पदाधिकारी	1	0	1
9.	प्रशाखा पदाधिकारी	2	0	2
10.	वरीय विधि पदाधिकारी	1	1	0
11.	जन–सम्पर्क पदाधिकारी	1	0	1
12.	बजट सह लेखा पदाधिकारी	1	0	1
13.	वैज्ञानिक	2	2	0
14.	लेखापाल	2	1	1
15.	लेखा लिपिक	3	3	0
16.	स्टेनो–।।	9	2	7
17.	प्रारूपक	1	0	1
18.	ट्रेसर	1	1	0
19.	लिपिक–सह–टंकक तथा दिनचर्या लिपिक	5	0	5
20.	निम्न वर्गीय लिपिक	8	0	8
21.	उच्च वर्गीय लिपिक	5	5	0
22.	आदेशपाल एवं रात्रि प्रहरी	22	22	0
23.	सहायक वैज्ञानिक पदाधिकारी (ए0एस0ओ0)	9	3	6
24.	कनीय वैज्ञानिक सहायक (जे0एस0ए0)	7	0	7
25.	प्रयोगशाला सहायक	6	1	5
26.	सहायक	17	4	13
27.	नमूना संग्राहक	14	2	12
28.	इलेक्ट्रीशियन–कम–ऑपरेटर	1	0	1
29.	इन्सट्रूमेन्ट मैकेनिक	1	1	0
30.	शोध सहायक	3	3	0
31.	चालक	7	7	0
32.	वैज्ञानिक सहायक	1	1	0
33.	लैब अटेण्डेंट	1	1	0
34.	स्वागती	1	0	1
35.	क्षेत्रीय सहायक–सह–तकनीशियन	18	0	18
36.	स्वीपर	1	0	1
37.	डाटा–इन्ट्री ऑपरेटर	1	0	1
	कुल	**193**	**73**	**120**

(स्त्रोत : बी.एस.पी.सी.बी. द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना)

परिशिष्ट 2.2.1

(संदर्भ : कंडिका 2.2.6.2; पृष्ठ–30)

वर्ष 2011–14 के दौरान अधिक आयु की बालिकाओं को टीएचआर दिए जाने से संबंधित विवरणी

क्रम संख्या	जिला का नाम	ब.वि.प. पदाधिकारी का नाम	अधिक–आयु की बालिकाओं की संख्या
1	औरंगाबाद	1. औरंगाबाद	21
		2. दाउदनगर	14
		3. हंसपुरा	18
		4. मदनपुर	14
		5. रफीगंज	27
2	गया	6. बाराचट्टी	9
		7. बेलागंज	3
		8. डोभी	15
		9. गया ग्रामीण	13
		10. गया सदर	4
		11. टीकारी	15
3	कटिहार	12. बरारी	5
		13. कदवॉ	14
		14. कोढ़ा	12
		15. मनिहारी	16
		16. प्राणपुर	36
4	किशनगंज	17. बहादुरगंज	35
		18. दिग्घलबैंक	4
		19. किशनगंज सदर	18
5	सीतामढ़ी	20. बाजपट्टी	13
		21. बेलसंड	17
		22. डुमरा ग्रामीण	6
		23. डुमरा सदर	4
		24. नानपुर	14
		25. पुपरी	20
		26. रून्नीसैदपुर	29
6	पश्चिम चम्पारण	27. बैरिया	56
		28. चनपटिया	55
		29. मझौलिया	13
		30. नरकटियागंज	45
		31. योगपट्टी	6
योग			**571**

(स्रोतः संबंधित बा.वि.प. पदाधिकारियों से प्राप्त सूचना)

परिशिष्ट 2.2.2

(संदर्भ : कंडिका 2.2.6.2; पृष्ठ–30)

वर्ष 2011–14 के दौरान 11 से 14 वर्ष के आयुवर्ग की विद्यालय जानेवाली बालिकाओं को टीएचआर दिए जाने सें संबंधित विवरणी

क्र.सं.	जिला का नाम	बा.वि.प.पदाधिकारी का नाम	11 से 14 वर्ष के आयुवर्ग की विद्यालय जानेवाली बालिकाओं की संख्या
1	औरंगाबाद	1. दाउदनगर	7
		2. रफीगंज	11
2	कटिहार	3. बरारी	3
		4. कदवॉ	3
3	किशनगंज	5. बहादुरगंज	3
		6. दिग्घल बैंक	4
4	सीतामढी	7. बेलसंड	3
		8. रून्नीसैदपुर	7
5	पश्चिम चम्पारण	9. बैरिया	11
योग		9	52

(स्रोतः संबंधित बा.वि.प. पदाधिकारियों से प्राप्त सूचना)

परिशिष्ट 2.2.3

(संदर्भ : कंडिका 2.2.7; पृष्ठ–32)

वर्ष 2013–14 के दौरान बा.वि.प.पदाधिकारियों को आवश्यकता से अधिक निधि का आवंटन

(राशि ₹ में)

क्र.सं.	जिला	बा.वि.प. पदाधिकारियों का नाम	निधि की आवश्यकता		आवंटन	अधिक आवंटन	व्यपगत
			लाभार्थियों की संख्या	निधि की आवश्यकता (लाभार्थी की संख्या X 125 X 12)			
1	सीतामढी	1. परिहार	9225	13837500	20293756	6456256	8523136
		2. सोनबरसा	8372	12558000	13840511	1282511	6603496
		3. डुमरा ग्रामीण	8370	12555000	25142769	12587769	8173125
		4. पुपरी	5364	8046000	10147261	2101261	3789511
2	औरंगाबाद	5. कुटुम्बा	9717	14575500	14886832	311332	1532640
3	कटिहार	6. कदवॉ	13867	20800500	21430174	629674	9010174
4	गया	7. अतरी	2905	4357500	4971046	613546	3983046
		8. परैया	5088	7632000	9446503	1814503	4512628
5	पश्चिम चम्पारण	9. सिकटा	6322	9483000	12562939	3079939	1746639
		10. बेतिया	6965	10447500	11318358	870858	7286358
योग				**114292500**	**144040149**	**29747649**	**55160753**

परिशिष्ट–2.3.1

(संदर्भ : कंडिका –2.3.2 पृष्ठ–42)

बिहार के संग्रहालयों की सूची की विवरणी

क्रम संख्या	संग्रहालय का नाम
1.	बाबू कुंअर सिंह स्मृति संग्रहालय, जगदीशपुर
2.	बेगुसराय संग्रहालय, बेगुसराय
3.	बेतिया संग्रहालय, बेंतिया
4.	भागलपुर संग्रहालय, भागलपुर
5.	बिहारशरीफ संग्रहालय, बिहारशरीफ
6.	चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा
7.	चन्द्रशेखर सिंह संग्रहालय, जमुई
8.	छपरा संग्रहालय छपरा
9.	दीपनारायण सिंह संग्रहालय, हाजीपुर
10.	गांधी संग्रहालय, भीतिहरवा
11.	गया संग्रहालय, गया
12.	जननायक कर्पूरी ठाकूर स्मृति संग्रहालय, पटना
13.	लक्खीसराय संग्रहालय, लक्खीसराय
14.	मिथिला ललित संग्रहालय, सौराठ ; मधुबनी
15.	एम0एल0सिंह संग्रहालय, दरभंगाा
16.	नरदः संग्रहालय, नवादा
17.	पटना संग्रहालय, पटना
18.	रामचन्द्र शाही संग्रहालय, मुजफ्फरपुर
19	सिताराम उपाध्याय संग्रहालय, बक्सर

परिशिष्ट–2.3.2

(संदर्भ : कंडिका–2.3.5 पृष्ठ–43)

संरक्षित स्मारकों एवं पुरातात्विक स्थलों की विवरणी (नमूना जाँचित)

क्रम संख्या	स्मारकों / पुरातात्विक स्थलों के नाम	जिला का नाम
01	गोलघर	पटना
02	अगम कुंआ, गुलजार बाग, पटना सिटी	पटना
03	बेगु हजाम की मस्जिद, गुलजारबाग, पटना सिटी	पटना
04	जैन मंदिर, कमलदह, गुलजारबाग, पटना सिटी	पटना
05	दोरूखी प्रतिमा, कंकडबाग पटना	पटना
06	छोटी पटनदेवी, पटना सिटी	पटना
07	खेरी पुरातात्विक स्थल, शाहकुंड	भागलपुर
08	महम्मुद शाह का मकबरा, कहलगांव	भागलपुर
09	चौसा गढ, नसरतपुर	बक्सर
10	रामशिला पर्वत, गया	गया
11	प्रेतशीला पर्वत, चमडी, चिरैयारोड, बहादुर बिगहा	गया
12	विष्णु पद मंदिर, गया	गया
13	ब्रह्मयोनि पहाड, गया	गया
14	चिरांद	सारण
15	अपसढगढ तथा वाराह प्रतिमा	नवादा
16	पार्वती पहाड़ी	नवादा
17	अहिल्या स्थान	दरभंगा
18	तेल्हारा, एकंगरसराय	नालंदा

(स्रोत : पुरातत्व निदेशालय द्वारा उपलब्ध करायी गई जानकारी)

परिशिष्ट –2.3.3

(संदर्भ : कंडिका – 2.3.6 पृष्ठ–44)

वर्ष 2009–14 के दौरान बजट प्रावधान, व्यय एवं बचत की विवरणी

(राशि ₹ करोड में)

पुरातत्व निदेशालय											
वर्ष	बजट प्रावधान			व्यय			बचत			बचत का प्रतिशत	
	गैर योजना	योजना	कुल	गैर योजना	योजना	कुल	गैर योजना	योजना	कुल	गैर योजना	योजना
2009–10	1.35	0.50	1.85	0.90	0.26	1.16	0.45	0.24	0.69	33	48
2010–11	1.32	3.60	4.92	1.10	3.10	4.20	0.22	0.50	0.72	17	14
2011–12	1.33	3.10	4.43	1.05	2.43	3.48	0.28	0.67	0.95	21	22
2012–13	1.71	4.00	5.71	1.31	2.93	4.24	0.40	1.07	1.47	23	27
2013–14	1.74	8.00	9.74	1.20	5.05	6.25	0.54	2.95	3.49	31	37
कुल	**7.45**	**19.20**	**26.65**	**5.56**	**13.77**	**19.33**	**1.89**	**5.43**	**7.32**	**25**	**28**
संग्रहालय निदेशालय											
2009–10	5.90	1.00	6.90	4.83	0.96	5.79	1.07	0.04	1.11	18	04
2010–11	6.28	2.20	8.48	4.75	0.65	5.40	1.53	1.55	3.08	24	70
2011–12	7.24	5.65	12.89	5.90	4.30	10.20	1.34	1.35	2.68	19	24
2012–13	8.54	13.35	21.89	6.33	11.68	18.01	2.21	1.67	3.88	26	13
2013–14	9.52	18.00	27.52	6.12	16.11	22.23	3.40	1.89	5.29	36	11
कुल	**37.48**	**40.20**	**77.68**	**27.93**	**33.70**	**61.63**	**9.55**	**6.50**	**16.05**	**25**	**16**

(स्रोत : निदेशालयों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी/विवरणी)

परिशिष्ट –2.3.4

(संदर्भ : कंडिका – 2.3.6 पृष्ठ–44)

वर्ष 2009–14 के दौरान प्रत्यार्पित एवं व्यपगत राशि की विवरणी

(राशि ₹ लाख में)

पुरातत्व निदेशालय			
वर्ष	प्रत्यार्पण की तिथि	राशि का प्रत्यार्पण	व्यपगत राशि
2009–10	–	0	69.18
2010–11	–	0	72.43
2011–12	31 मार्च 2012	87.17	7.39
2012–13	31 मार्च 2013	146.99	0.21
2013–14	31 मार्च 2014	348.03	0.17
संग्रहालय निदेशालय			
2009–10		0	110.93
2010–11		0	308.36
2011–12	31 मार्च 2012	152.03	116.42
2012–13	31 मार्च 2013	387.05	0.79
2013–14	31 मार्च 2014	527.89	1.00
कुल		**1649.16**	**686.88**

(स्रोत : संबंधित निदेशालयों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी)

परिशिष्ट–2.3.5

(संदर्भ : कंडिका – 2.3.7.2 पृष्ठ – 47)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इन्कार किये गये उत्खनन प्रस्तावों की सूची

क्रम संख्या	वर्ष	प्रस्ताव की विवरणी	लाइसेंस इनकार करने का कारण
01	2009–10	(1) हरिहर नाथ मंदिर, सोनपुर (सारण) में पुरातात्विक उत्खनन	विगत वर्ष का प्रतिवेदन प्रेषित नहीं किया गया था।
02	2010–11	(1) चिरांद (सारण) में पुरातात्विक उत्खनन	उद्देश्य स्पष्ट नहीं था, यह एक केन्द्रीय सुरक्षित क्षेत्र था, उत्खनक एक सेवा निवृत व्यक्ति थे एवं उनका बायोडाटा प्रेषित नहीं किया गया था।
		(2) चौसा (बक्सर) में पुरातात्विक उत्खनन	पुरावशेषों के संरक्षण के संबंध में स्पष्टीकरण उपलब्ध नहीं कराया गया था, लक्ष्य एवं उद्देश्य स्पष्ट नहीं था।
		(3) सिकलीगढ (पूर्णिया) में पुरातात्विक उत्खनन	निदेशक के प्रस्ताव की अर्हता को पूरा नहीं किया गया।
03	2011–12	(1) सिकलीगढ (पूर्णिया) में पुरातात्विक उत्खनन	पुरावशेषों के संरक्षण के संबंध में स्पष्टीकरण उपलब्ध नहीं कराया गया था।
		(2) कुटुंबा (औरंगाबाद) में पुरातात्विक उत्खनन	पुरावशेषों के संरक्षण के संबंध में स्पष्टीकरण उपलब्ध नहीं कराया गया था।

(स्रोत : पुरातत्व निदेशालय द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी)

परिशिष्ट –2.3.6

(संदर्भ : कंडिका –2.3.8 पृष्ठ – 47)

संरक्षित स्मारकों एवं पुरातात्विक स्थलों की सूची की विवरणी

क्रम संख्या	स्मारकों / पुरातात्विक स्थलों के नाम	जिला का नाम
01	गोलघर	पटना
02	अगम कुंआ, गुलजार बाग पटना सिटी	पटना
03	बेगु हजाम की मस्जिद, गुलजारबाग, पटना सिटी	पटना
04	जैन मंदिर, कमलदह, गुलजारबाग, पटना सिटी	पटना
05	दोरूखी प्रतिमा, कंकडबाग पटना	पटना
06	छोटी पटनदेवी, पटना सिटी	पटना
07	अलावल खॉ का मकबरा, सासाराम	सासाराम, रोहतास
08	सूर्य मंदिर, खनदाहा महवारा महर्षि, सहरसा	सहरसा
09	कटरा गढ	मुजफफरपुर
10	नेपाली मंदिर, हाजीपुर	वैशाली
11	खेरी पुरातात्विक स्थल, शाहकुंड	भागलपुर
12	महम्मुद शाह का मकबरा, कहलगांव	भागलपुर
13	जलालगढ किला, कसबा	पूर्णिया
14	आरा हाउस, महाराजा कॉलेज हाता	आरा
15	चौसा गढ, नसरतपुर	बक्सर
16	दाउद खां का किला, दाउद नगर, औरंगाबाद	औरंगाबाद
17	रामशिला पर्वत गया	गया
18	प्रेतशीला पर्वत, चमडी, चिरैयारोड, बहादुर बिगहा	गया
19	विष्णु पद मंदिर, गया	गया
20	ब्रह्मयोनि पहाड, गया	गया
21	हजारीमल धर्मशाला, बेतिया	पश्चिम चम्पारण
22	मिरा बिगहा	जहानाबाद
23	वीर कुंअर सिंह जन्मस्थली	भोजपुर
24	जामी मस्जिद, पत्थर की मस्जिद, हाजीपुर	वैशाली

25	मसाही, कैमूर	कैमूर
26	मूंगेर किला	मूंगेर
27	चिरांद	सारण
28	ताराडिह, मस्तीपुर, बोधगया	गया
29	निशान सिंह साहिद स्मारक स्थल और कब्रिस्तान, सासाराम	रोहतास
30	अपसढगढ तथा बाराह प्रतिमा	नवादा
31	पार्वती पहाडी	नवादा
32	जार्ज आरवेल की जन्मस्थली	मोतीहारी
33	टेकारी किला	गया
34	अहिल्या स्थान	दरभंगा
35	सोफा मंदिर, गौनहा	पश्चिम चम्पारण
36	तेल्हारा, एकंगरसराय	नालंदा

(स्रोत : संबंधित निदेशालयों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी)

परिशिष्ट –2.3.7
(संदर्भ : कंडिका –2.3.10 पृष्ठ – 50)
स्वीकृत पद एवं कार्यरत बल की सूची की विवरणी

क्रम संख्या	पद	31 अक्टूबर 2014 को स्वीकृत पद	31 अक्टूबर 2014 को कार्यरत बल	रिक्ति	रिक्ति का प्रतिशतता
		पुरातत्व निदेशालय			
01	निदेशक	1	0	1	100
02	अन्वेषण एवं उत्खनन पदाधिकारी	1	1	0	0
03	संरक्षण पदाधिकारी	1	0	1	100
04	सहाय निदेशक (संरक्षण)	1	0	1	100
05	सहायक अभियंता	1	1	0	0
06	वरीय तकनीकी सहायक	5	2	3	60
07	कनीय अभियंता	1	1	0	0
08	वरीय प्रारूपक	1	0	1	100
09	प्रारूपक सह सर्वेक्षक	4	0	4	100
10	रसायन सहायक	1	0	1	100
11	फोटोग्राफर	1	0	1	100
12	अन्य	37	19	18	49
	कुल	**55**	**24**	**31**	**56**
		निदेशालय संग्रहालय			
01	निदेशक	1	–	1	100
02	सहायक निदेशक	1	0	1	100
03	क्षेत्रीय उप निदेशक	1	0	1	100
04	संग्रहालयाध्यक्ष	20	7	13	65
05	रसायनज्ञ	1	0	1	100
06	सुरक्षा अधिकारी	1	0	1	100
07	दीर्घा सहायक	16	8	8	50
08	वरीय रसायन सहायक/रसायन सहायक	5	2	3	60
09	फोटोग्राफर	3	1	2	67
10	अन्य	185	89	96	52
	कुल	**234**	**107**	**127**	**54**

(स्रोत : संबंधित निदेशालयों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी)

परिशिष्ट –2.3.8

(संदर्भ : कंडिका –2.3.11.1 पृष्ठ – 51)

पुरातत्व पंजी में छूटे हुए जानकारियों की सूची की विवरणी

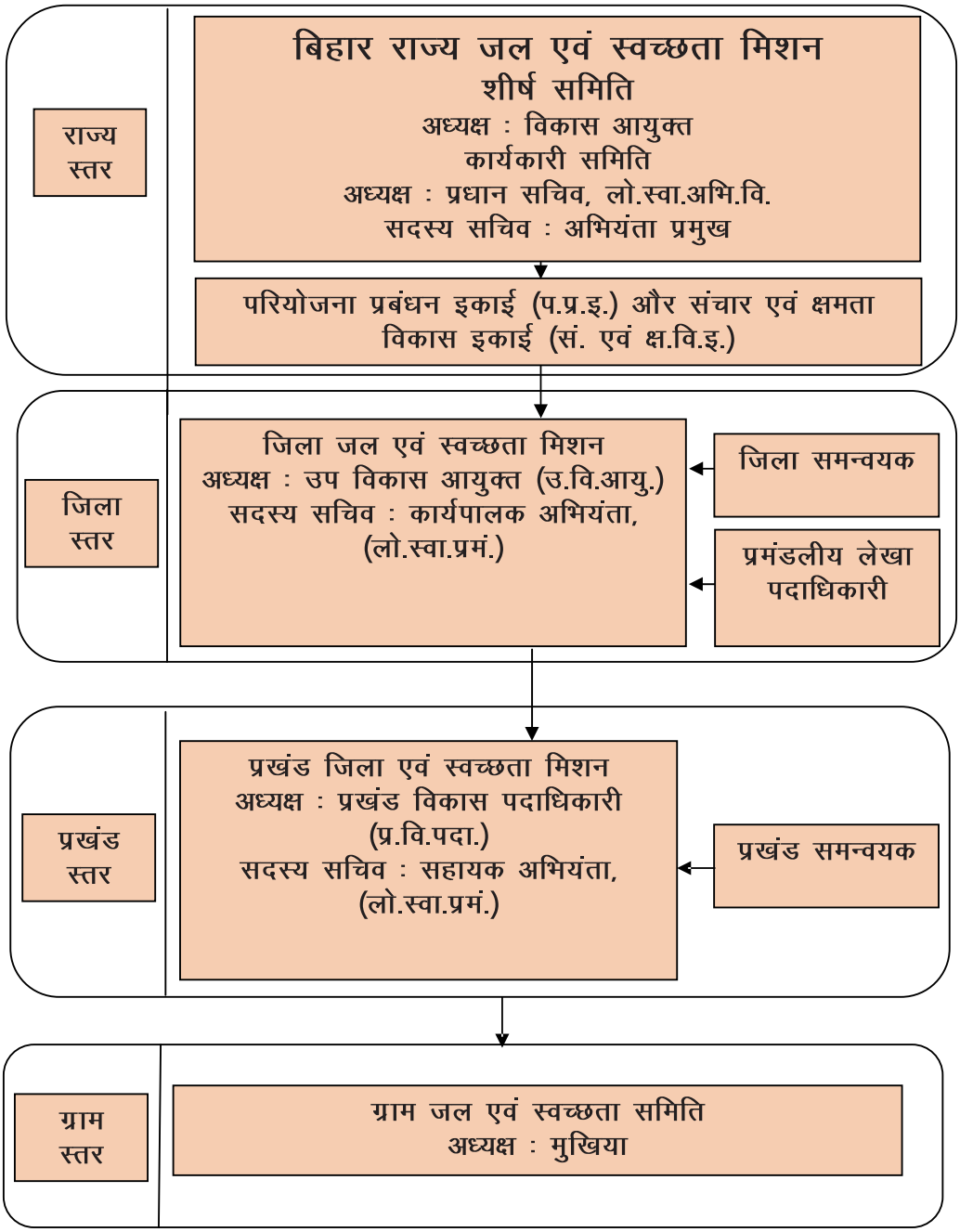
क्रम संख्या	संग्रहालय का नाम	पुरावशेषों की संख्या	संबंधित अवधि (पंजी में दर्ज नहीं)	प्राप्ति का स्थान (पंजी में दर्ज नहीं)	दाता का नाम (पंजी में दर्ज नहीं)	प्राप्ति की तिथि (पंजी में दर्ज नहीं)	माप (पंजी में दर्ज नहीं)	कहां रखा गया (पंजी में दर्ज नहीं)
01	सिताराम उपाध्याय संग्रहालय, बक्सर	814	814	252	314	167	339	–
02	रामचन्द्र शाही संग्रहालय मुजफफरपुर	14617	–	940	–	–	–	940
03	भागलपुर संग्रहालय, भागलपुर	740	370	370	370	370	370	370
04	चन्द्रशेखरसिंह संग्रहालय, जमूई	178	–	–	178	–	–	178
05	नारदः संग्रहालय, नवादा	2032	360	1068	–	–	–	–
06	गया संग्रहालय, गया	2067	1214	830	1201	324	–	–

(स्रोत : संबंधित संग्रहालयों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी)

परिशिष्ट 2.4.1

(संदर्भ : कंडिका 2.4.2; पृष्ठ–54)

सं.स्व.अभि / नि.भा.अभि. के कार्यान्वयन की संगठनात्मक संरचना



(स्रोत : बि.रा.ज. एवं स्व.मिशन द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.2

(*संदर्भ : कंडिका 2.4.6.1; पृष्ठ–56*)

31 मार्च 2014 के अनुसार स्वीकृत बल और कार्यरत मानवबल की स्थिति

एस. डब्ल्यू.एस. एम.	पद का नाम	स्वीकृत बल	कार्यरत बल	रिक्ति	रिक्ति का प्रतिशत
पी.एम.यू.	निदेशक	1	1	0	
	सहायक निदेशक	2	0	2	
	कनीय अभियंता	3	1	2	
	कार्यालय सहायक	2	1	1	
	क्षमता निर्माण सलाहकार	1	0	1	
	सू.शि. एवं संचार सलाहकार	1	0	1	
	एस.एस.एच.ई. सलाहकार	1	0	1	
	लेखाकार–सह–खजांची	1	1	0	
	डाटा एंट्री ऑपरेटर	2	1	1	
सी.सी.डी.यू.	निदेशक	1	1	0	
	मा.सं.वि. सलाहकार	1	1	0	
	संचार सलाहकार	1	1	0	
	समाजिक मोबेलाइजेशन	1	0	1	
	डाटा एंट्री ऑपरेटर	2	1	1	
	कुल योग	**20**	**9**	**11**	**55**
नमूना जाँन्चित 13 जिलों के डी.डब्ल्यू.एस.सी					
	सू.शि. एवं संचार सलाहकार	13	0	13	
	एम.आई.एस. सलाहकार	13	0	13	
	मनव संसाधन विकास सलाहकार	13	0	13	
	हाइड्रो भू-विज्ञानी सलाहकार	13	0	13	
	स्वच्छता एवं स्वास्थ्य विज्ञान सलाहकार	13	0	13	
	जिला समन्वयक	13	9	4	
	प्रखंड समन्वयक	204	136	68	
	क्लस्टर समन्वयक	481	0	481	
	कुल योग	**763**	**145**	**618**	**81**

(स्रोत : बि.रा.ज. एवं स्व. स. और जि.ज.एवं स्व.स. उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.3

(संदर्भ : कंडिका 2.4.6.4; पृष्ठ–58)

ए.पी.एल. और बी.पी.एल. परिवारों के लक्ष्य और उपलब्धि दर्शाने वाली विवरणी

ए.पी.एल.									
क्रम सं.	जिला का नाम	2011-12		2012-13			2013-14		
		लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	पिछले वर्ष की उपलब्धि के विरुद्ध लक्ष्य का प्रतिशत	लक्ष्य	उपलब्धि	पिछले वर्ष की उपलब्धि के विरुद्ध लक्ष्य का प्रतिशत
1	भोजपुर	8815	6089 (69)	13000	8280 (64)	213	12498	1434 (11)	151
2	दरभंगा	24600	7078 (29)	16500	12082 (73)	233	1850	0 (0)	15
3	कटिहार	11838	762 (6)	12900	9474 (73)	1693	15000	2736 (18)	158
4	गया	8316	7909 (95)	15000	5749 (38)	190	11494	1621 (14)	200
5	मुंगेर	3953	509 (13)	6000	1091 (18)	1179	6000	143 (2)	550
6	मुजफ्फरपुर	46891	6878 (15)	25104	3678 (15)	365	26532	148 (1)	721
7	नवादा	5485	2726 (50)	6300	1051 (17)	231	10000	1130 (11)	951
8	पटना	15525	5231 (34)	12000	8291 (69)	229	16380	6066 (37)	198
9	सहरसा	12036	2316 (19)	8900	1400 (16)	384	10000	1247 (12)	714
10	सीतामढ़ी	25000	2594 (10)	11400	4535 (40)	439	12095	1725 (14)	267
11	पश्चिमी चंपारण	11600	2058 (18)	11600	8004 (69)	564	13000	5745 (44)	162
	सीमा					**190 से 1693**			**15 से 951**

बी.पी.एल.									
क्रम सं0	जिला कानाम	2011-12		2012-13			2013-14		
		लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	पिछले वर्ष की उपलब्धि के विरुद्ध लक्ष्य का प्रतिशत	लक्ष्य	उपलब्धि	पिछले वर्ष की उपलब्धि के विरुद्ध लक्ष्य का प्रतिशत
1	भोजपुर	20379	13477 (66)	22500	12792 (57)	167	21200	1299 (6)	166
2	दरभंगा	52776	32000 (61)	44000	22583 (51)	138	35000	2255 (6)	155
3	कटिहार	20924	6395 (31)	23000	19123 (83)	360	25000	4177 (17)	131
4	गया	39503	17095 (43)	30000	9915 (33)	175	28616	4670 (16)	289
5	मुंगेर	12233	1859 (15)	15000	4762 (32)	807	12000	1710 (14)	252
6	मुजफ्फरपुर	16374	21699 (133)	23394	11128 (48)	108	11673	1145 (10)	105
7	नवादा	22516	16730 (74)	22500	4164 (19)	134	20300	2250 (11)	488
8	पटना	18626	13613 (73)	30000	17973 (60)	220	21355	7450 (35)	119
9	सहरसा	7744	10491 (135)	13800	11424 (83)	132	14000	972 (7)	123
10	सीतामढ़ी	65000	3691 (6)	29000	9153 (32)	786	27745	7706 (28)	303
11	पश्चिमी चंपारण	28100	6528 (23)	28100	17691 (63)	430	26000	12803 (49)	147
	सीमा					**108 से 807**			**105 से 488**

कोष्ठक में आंकड़े प्रतिशत को इंगित करता है।

(स्रोतः जि.ज. एवं स्व.स. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.4

(संदर्भ : कंडिका 2.4.7; पृष्ठ–59)

तेरह नमूना जाँचित जिलों में सं.स्व.अभि/नि.भा.अभि. में प्रारंभिक शेष, विमुक्त राशि, कुल उपलब्ध राशि, व्यय और अव्ययित शेष

(₹ लाख में)

जिला का नाम	वर्ष	प्रारंभिक शेष	विमुक्त राशि	कुल उपलब्ध राशि	व्यय	व्यय का प्रतिशत	अव्ययित शेष
भोजपुर	2010-11	812.60	243.16	1055.76	659.79	62	395.97
	2011-12	395.97	478.89	874.86	612.10	70	262.76
	2012-13	262.76	1297.36	1560.11	890.43	57	669.68
	2013-14	669.68	295.44	965.12	252.37	26	712.75
	योग		**2314.85**		**2414.69**		
दरभगा	2010-11	476.60	258.04	734.64	650.69	89	83.95
	2011-12	83.95	1831.69	1915.64	1053.26	55	862.38
	2012-13	862.38	3072.88	3935.26	1031.02	26	2904.24
	2013-14	2904.24	90.00	2994.24	878.80	29	2115.44
	योग		**5252.61**		**3613.77**		
गया	2010-11	888.77	1656.21	2544.98	1138.73	45	1406.25
	2011-12	1406.25	219.79	1626.04	360.46	22	1265.58
	2012-13	1265.58	2552.30	3817.88	248.59	7	3569.29
	2013-14	3569.29	455.82	4025.11	315.52	8	3709.59
	योग		**4884.12**		**2063.30**		
कैमूर	2010-11	79.37	473.64	553.01	168.60	30	384.41
	2011-12	391.49	274.62	666.11	423.88	63	252.23
	2012-13	258.20	620.86	879.06	381.07	43	497.99
	2013-14	519.03	213.22	732.25	294.10	40	438.15
	योग		**1582.34**		**1267.65**		
कटिहार	2010-11	125.57	235.77	361.34	152.99	42	208.35
	2011-12	208.35	1420.68	1629.03	1000.54	61	628.49
	2012-13	628.49	2052.44	2680.93	920.02	34	1760.91
	2013-14	1760.91	879.99	2640.90	419.96	16	2220.94
	योग		**4588.88**		**2493.51**		
मुंगेर	2010-11	433.36	98.66	532.02	83.84	16	448.18
	2011-12	448.18	7.86	456.04	274.96	60	181.08
	2012-13	181.08	941.07	1122.15	212.32	19	909.83
	2013-14	909.83	225.25	1135.08	167.25	15	967.83
	योग		**1272.84**		**738.37**		
मुजफ्फरपुर	2010-11	362.09	566.87	928.96	623.18	67	305.78
	2011-12	305.78	1277.32	1583.10	1411.66	89	171.44
	2012-13	171.44	2069.50	2240.94	898.36	40	1342.58
	2013-14	1342.57	441.70	1784.27	64.05	4	1720.22
	योग		**4355.39**		**2997.25**		
नवादा	2010-11	638.25	125.00	763.25	484.75	64	278.50
	2011-12	296.99	623.02	920.01	379.56	41	540.45
	2012-13	558.91	1414.36	1973.27	161.51	8	1811.76
	2013-14	1856.63	357.69	2214.32	1580.86	71	633.46
	योग		**2520.07**		**2606.68**		

जिला का नाम	वर्ष	प्रारंभिक शेष	विमुक्त राशि	कुल उपलब्ध राशि	व्यय	व्यय का प्रतिशत	अव्ययित शेष
पटना	2010-11	714.78	865.12	1579.90	479.80	30	1100.10
	2011-12	1127.07	1415.39	2542.46	647.63	25	1894.83
	2012-13	1950.03	2778.40	4728.43	1191.43	25	3537.00
	2013-14	3653.20	475.89	4129.09	1335.95	32	2793.14
	योग		**5534.80**		**3654.81**		
पूर्णियाँ	2010-11	4.24	1138.69	1142.93	876.75	77	266.18
	2011-12	276.34	1008.62	1284.96	889.79	69	395.17
	2012-13	407.13	1981.29	2388.42	1257.09	53	1131.33
	2013-14	1155.68	498.75	1654.43	647.10	39	1007.33
	योग		**4627.35**		**3670.73**		
सहरसा	2010-11	303.55	472.71	776.26	774.70	100	1.56
	2011-12	10.51	641.32	651.83	428.16	66	223.67
	2012-13	227.11	1090.24	1317.35	595.96	45	721.39
	2013-14	740.80	241.34	982.14	511.19	52	470.95
	योग		**2445.61**		**2310.01**		
सीतामढ़ी	2010-11	710.67	150.38	861.05	250.84	29	610.21
	2011-12	610.21	144.78	754.99	1069.07	142	-314.08
	2012-13	-314.08	1786.07	1471.99	1460.28	99	11.71
	2013-14	11.72	825.43	837.15	819.63	98	17.52
	योग		**2906.66**		**3599.82**		
पश्चमी चंपारण	2010-11	393.04	1218.69	1611.73	620.02	38	991.71
	2011-12	1003.87	735.34	1739.21	741.64	43	997.57
	2012-13	1033.02	1594.90	2627.92	1329.32	51	1298.60
	2013-14	1356.49	298.66	1655.15	1444.71	87	210.44
	योग		**3847.59**		**4135.69**		
सकल योग					**35566.28**		

(स्रोतः जी.ज. एवं. स्व.स. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.5

(संदर्भ : कंडिका 2.4.7; पृष्ठ–59)

वर्ष 2010–14 के दौरान आवश्यक राज्यांश और विमुक्त की गई राशि की विवरणी

(₹लाख में)

वर्ष	आवश्यक राज्यांश		कम (-) / अधिक (+) विमुक्त
	अपेक्षित	विमुक्त	
2010-11	78.25	69.51	(-) 8.74
2011-12	60.98	74.81	(+)13.83
2012-13	80.00	58.71	(-) 21.29
2013-14	121.43	102.73	(-) 18.70
कुल	**340.66**	**305.76**	**(-) 34.90**

(स्रोत : बि.रा.ज. एवं स्व.मिशन द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.6

(संदर्भ : कंडिका 2.4.9.1; पृष्ठ–61)

मार्च 2014 तक ग्राम पंचायतों का निर्मल स्थिति का विवरण

जिला का नाम	जी.पी. की कुल संख्या	संतृप्तिकरण दृष्टिकोण से चिन्हित जी.पी. कीसंख्या	शत प्रतिशत पाईप जलापूर्ति से आच्छादित जी.पी. की संख्या	संतृप्तिकरण दृष्टिकोण के लिए चयनित जी.पी. की संख्या जहाँ शत प्रतिशत पाईप जलापूर्ति उपलब्ध था	मार्च 2014 तक निर्मल स्थिति प्राप्त जी.पी. की संख्या
भोजपुर	228	0	193	0	6
दरभंगा	324	20	0	0	0
गया	332	0	224	0	8
कटिहार	238	15	16	0	0
कैमूर	149	15	147	2	2
मुंगेर	101	0	101	0	0
मुजफ्फरपुर	385	21	387	0	34
नवादा	187	26	39	4	1
पटना	327	23	0	0	11
पश्चिमी चंपारण	315	46	203	0	3
पूर्णियाँ	251	30	14	0	0
सहरसा	153	15	0	0	5
सीतामढ़ी	273	17	1	0	3
कुल	**3263**	**228**	**1325**	**6**	**73**

(स्रोतः जि.ज. एवं स्व.स. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.7

(संदर्भ : कंडिका 2.4.9.4; पृष्ठ–62)

नमूना जाँचित जिलों में मार्च 2014 तक सामुदायिक स्वच्छता परिसर की स्थिति

क्रम सं0	जिला	परियोजना लक्ष्य	2010-14 के दौरान निर्माण	मार्च 2014 तक संच्यात्मक निर्माण	कुल व्यय (₹ लाख में)
1	भोजपुर	50	0	0	0
2	दरभंगा	50	05	05	0.94
3	गया	50	0	0	0
4	कैमूर	50	0	21	10.70
5	कटिहार	52	40	41	32.60
6	मुंगेर	50	00	04	2.25
7	मुजफ्फरपुर	101	02	53	10.89
8	नवादा	50	09	09	2.74
9	पटना	50	13	15	25.98
10	पूर्णियाँ	50	09	09	2.40
11	सहरसा	50	09	09	9.95
12	सीतामढ़ी	50	180	180	342.92
13	पश्चिमी चंपारण	50	0	0	0
	कुल	**703**	**267**	**346**	**441.37**

(स्रोतः जि.ज. एवं स्व.स. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

परिशिष्ट 2.4.8

(संदर्भ : कंडिका 2.4.10; पृष्ठ–65)

सू.शि. एवं. संचार गतिविधियों का लक्ष्य और उपलब्धि दर्शाने वाली विवरणी

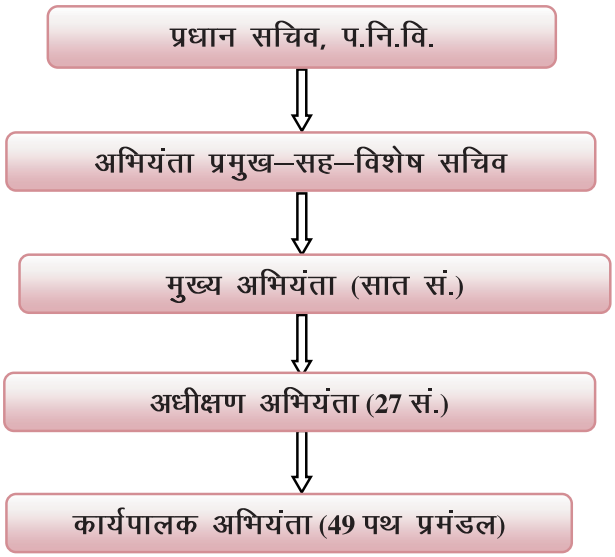
क्रम सं0	सू.शि. एवं. संचार गतिविधियां	कुल		
		लक्ष्य	उपलब्धि	प्रतिशत
1	होर्डिंग और बैनर	66437	62975	95
2	पिक्चर फ्रेम	14137	13069	92
3	दीवार लेखन	204525	182057	89
4	सू.शि. एवं संचार सामग्री का वितरण	222555	169461	76
5	जागरूकता सह उद्घाटन कार्यशाला	155	80	52
6	नुक्कड़ नाटक	1271	570	45
7	समूह की बैठकें	8356	1813	22
8	स्कूल रैली	26344	4802	18
9	नुक्कड़ नाटक	12185	2027	17
10	प्रदर्शनी	538	82	15
11	ऑडियो विजुअल प्रचार	6892	834	12
12	अंतर व्यक्तिगत संचार	6076	716	12
13	टी वी स्पॉट	2585	258	10
14	गीत और नाटक की गतिविधियाँ	8090	688	9
15	मेलों का आयोजन	2512	99	4
16	अन्य (निर्दिष्ट) राज मिस्त्री प्रशिक्षण	12792	423	3
17	सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन	38890	621	2
18	रेडियो स्पॉट	257	3	1

(स्रोतः जि.ज. एवं स्व.स. द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना)

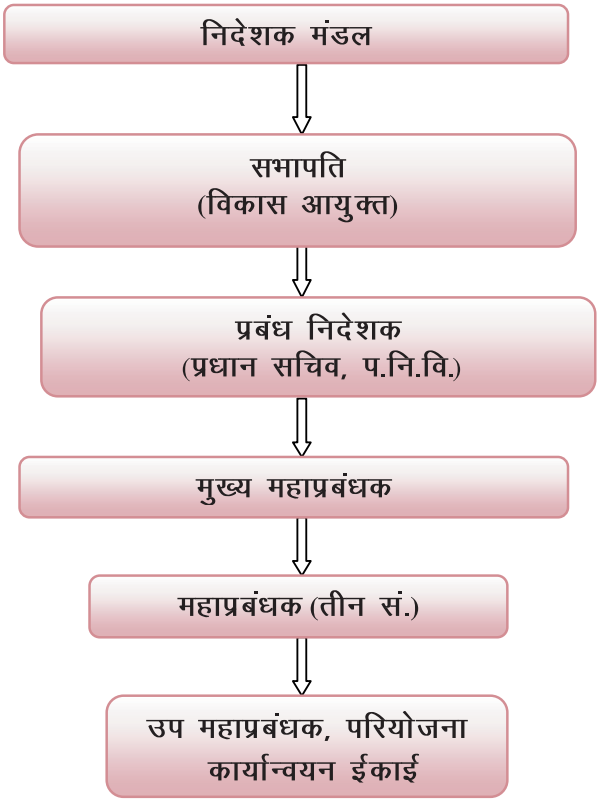
परिशिष्ट 2.5.1

(*संदर्भ* : *कंडिका* 2.5.2; पृष्ठ–70)

पथ निर्माण विभाग (प.नि.वि.) का संगठनात्मक ढाँचा



वि.रा.प.वि.नि. का संगठनात्मक ढाँचा



परिशिष्ट–2.6.1

(संदर्भः कंडिका–2.6.4 पृष्ठ–87)

राज्य में पुलिस जिलों के नामों को दर्शाती विवरणी

1.	अररिया
2.	अरवल
3.	औरंगाबाद
4.	बगहा
5.	बाँका
6.	बेगूसराय
7.	बेतिया
8.	भभुआ
9.	भागलपुर
10.	भोजपुर
11.	बक्सर
12.	दरभंगा
13.	गया
14.	गोपालगंज
15.	जमुई
16.	जहानाबाद
17.	कटिहार
18.	खगड़िया
19.	किशनगंज
20.	लक्खीसराय
21.	मधेपुरा
22.	मधुबनी

23.	मोतिहारी
24.	मुगेंर
25.	मुजफ्फरपुर
26.	नालन्दा
27.	नवगछिया
28.	नवादा
29.	पटना
30.	पूर्णियाँ
31.	रेल जमालपुर
32.	रेल कटिहार
33.	रेल मुजफ्फरपुर
34.	रेल पटना
35.	रोहतास
36.	सहरसा
37.	समस्तीपुर
38.	सारण
39.	शेखपुरा
40.	शिवहर
41.	सीतामढ़ी
42.	सीवान
43.	सुपौल
44.	वैशाली

(स्रोतः गृह विभाग के द्वारा प्राप्त सूचना)

परिशिष्ट–2.6.2
(संदर्भः कंडिका–2.6.4 पृष्ठ–87)
सीसीटीएनएस परियोजना के पूरा होने का समय को प्रदर्शित करती विवरणी

अनुबंध पर हस्ताक्षर होने की तिथि (टी = 17 अक्टूबर 2012)

क्र. सं.	क्रियान्वित किये जाने वाले कार्य	समय सीमा (सप्ताह में)	सितम्बर 2014 तक स्थिति
1.	150 पायलट साईटों पर साईट तैयारी	9 जनवरी 2013 (टी + 12 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
2.	हार्डवेयर वितरण	6 फरवरी 2013 (टी + 16 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
3.	कास का अनुकूलन	6 मार्च 2013 (टी + 20 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
4.	डाटा डिजिटाईजेशन और माईग्रेसन	20 मार्च 2013 (टी + 22 सप्ताह) (पायलट जिले में) 5 नवम्बर 2013 (टी + 55 सप्ताह) (राज्य भर में)	पूरा नहीं किया गया
5.	क्षमता संवर्धन (प्रशिक्षण)	6 मार्च 2013 (टी + 20 सप्ताह) (पायलट जिले में) 5 नवम्बर 2013 (टी + 55 सप्ताह) (राज्य भर में)	01 सितम्बर 2014 तक 35878 में से 10456 पुलिस कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।
6.	पायलट गो–लाईव	7 अप्रैल 2013 (टी + 25 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
7.	राज्य भर में रौल आउट (1326 सीसीटीएनएस साईटस)	5 नवम्बर 2013 (टी + 55 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
8.	डीसी और डीआरसी में बुनियादी सुविधाओं का निर्माण		
	डीसी और डीआरसी के लिए बुनियादी आईटी ढ़ाचें की प्राप्ति	12 दिसम्बर 2012 (टी + 8 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
	डीसी और डीआरसी में आवश्यक सिस्टम सॉफ्टवेयर के साथ बुनियादी आईटी ढ़ाचें की स्थापना	26 दिसम्बर 2012 (टी + 10 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
	डीसी और डीआरसी में बुनियादी आईटी ढ़ाचें की स्थापना और परिचालन	09 जनवरी 2013 (टी + 12 सप्ताह)	पूरा नहीं किया गया
9.	कनेक्टिविटी	10 फरवरी 2013	नवम्बर 2014 तक 1046 परिसरों (1234 साइट्स) में से 743 परिसरों में ही नेटवर्क कनेक्टीविटी था जबकि पिंग रिपोर्ट मात्र 514 परिसरों में था।

(स्रोतः– विभाग के अभिलेख)

परिशिष्ट–2.7.1

(संदर्भ : कंडिका 2.7.1; पृष्ठ 95)

नगरपालिका का मूल कार्य प्रत्येक नगरपालिका स्वयं अथवा किसी एजेंसी के माध्यम से निम्नलिखित मूल नगर सेवाएं उपलब्ध करायेगी

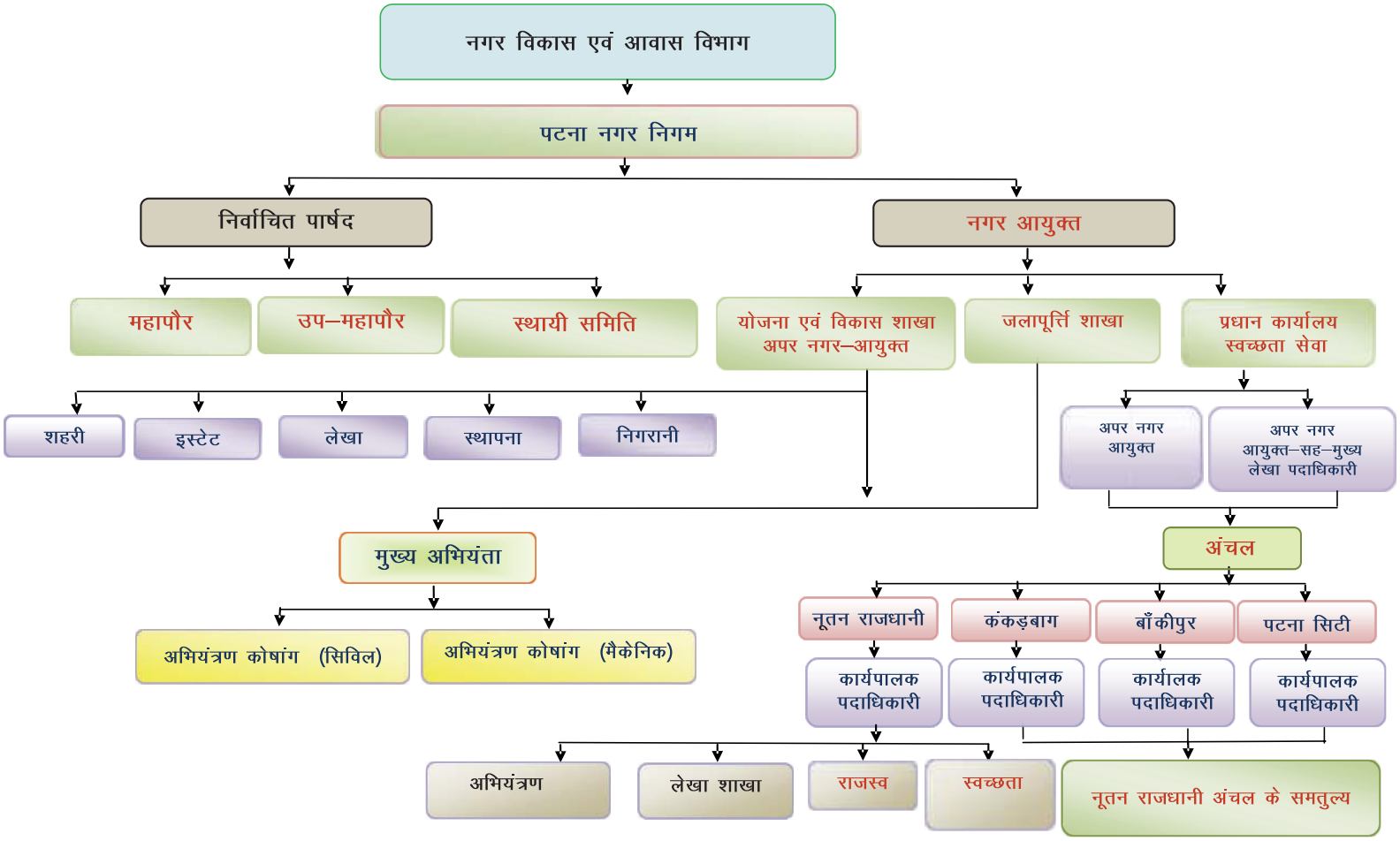
क्रम सं0	नगरपालिका का मूल कार्य
1	घरेलू, औद्योगिक और वाणिज्यिक प्रयोजनार्थ जलापूर्ति
2	जल निकास एवं मल निकास
3	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन
4	विकास एवं सामाजिक न्याय, योजनाओं को बनाना
5	संचार पद्धति, सड़कों, फुटपाथों, पैदल यात्री उपपथों, यांत्रियों एवं मालों के लिए परिवहन टर्मिनलों, पुलों, उपरिपुलों, उपमार्गों, घाटों और अन्तर्देशीय जल परिवहन पद्धति का निर्माण एवं अनुरक्षण
6	यातायात अभियंत्रण सहित परिवहन प्रणाली, मार्ग सज्जा, मार्ग प्रकाश, पार्किंग क्षेत्र एवं बस ठहराव
7	सड़कों पर तथा अन्यत्र वृक्षारोपण एवं उनकी देखभाल सहित सामुदायिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की सुरक्षा
8	बाजार एवं कसाइखाना (बूचड़खाना)
9	शैक्षिक, खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यकलापों को प्रोत्साहन
10	सुरूचिपूर्ण पर्यावरण
11	आधारभूत सरंचना की योजना तैयार करना, इसका संचालन, अनुरक्षण या प्रबंध करना

(स्रोतः बिहार नगरपालिका अधिनियम, 2007 के तहत उपबंधित)

परिशिष्ट–2.7.2

(संदर्भ : कंडिका 2.7.2; पृष्ठ 95)

पटना नगर निगम का संगठनात्मक ढाँचा



(स्रातः प.न.नि. बुकलेट)

परिशिष्ट–2.7.3

(संदर्भ : कंडिका 2.7.3; पृष्ठ 95)

पटना नगर निगम में संधारित नहीं किये गये अभिलेखों/दस्तावेजों को दर्शाती विवरणी

क्रम संख्या	अभिलेखो/दस्तावेजों का नाम	नियम जिसके अंतर्गत अभिलेख संधारित करना था
1	अनुदान पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम–14 अ
2	वार्शिक लेखा	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम–82 तथा 83 (प्रपत्र– XIX)
3	परिसम्पत्ति पंजी	बिहार नगरपालिका अधिनियम, 2007 की धारा 105
4	मोबाईल टावर से संबंधित माँग एवं वसूली पंजी	–
5	होल्डिंग करों का माँग एवं संग्रहण पंजी	–
6	कार्य पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 126 (प्रपत्र– XL)
7	लेखापाल रोकड़बही	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 63 (प्रपत्र– XI)
8	विज्ञापन का माँग एवं संग्रहण पंजी	–
9	ऋण पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 88 (प्रपत्र– XXI)
10	ऋण विनियोग पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 89 (प्रपत्र– XXI अ)
11	मदवार व्यय का वार्षिक सार	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 67 (प्रपत्र– XIII)
12	निबंधित वास्तुविदों की पंजी	बिहार नगरपालिका अधिनियम, 2007 का नियम 322
13	चल सम्पतियों का पंजी/ भंडार लेखा	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 के नियम 127 (प्रपत्र– XLI)
14	बैंक खाताओं से संबंधित पंजी	–
15	केस पंजी	–
16	वित्तीय विवरण	बिहार नगरपालिका अधिनियम, 2007 का नियम 88
17	तुलन पत्र	बिहार नगरपालिका अधिनियम, 2007 का नियम 89
18	सेवानिवृत्त/मृत कर्मियों के दावे से संबंधित पंजी	–
19	सैरात पंजी	–
20	रोकड़पाल रोकड़बही	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 15 (प्रपत्र– III)
21	सहायक रोकड़बही	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 19 ब (प्रपत्र– XI अ)
22	मदवार आय का वार्षिक सार	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 67 (प्रपत्र– XII)
23	अग्रिम पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 74 (प्रपत्र– XV)
24	सामंजन पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 70 (प्रपत्र– XIV)
25	जमा पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 79 (प्रपत्र– XVI)
26	प्राप्तियों का त्रैमासिक तथा वार्षिक पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 82 (प्रपत्र– XVII)
27	व्ययों का त्रैमासिक तथा वार्षिक पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 83 (प्रपत्र– XVIII)
28	लेखापरीक्षा पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 85 (प्रपत्र– XIX अ)
29	सरकारी प्रतिभूतियों की पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 87 (प्रपत्र– XVII)
30	भूमियों की पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 100 (प्रपत्र– XXIX अ)
31	किराया पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 103 (प्रपत्र– XXX)
32	सुरक्षित जमा पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 110 (प्रपत्र– XXXअ)
33	लीजधारियों की पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 110 (प्रपत्र– XXXब)
34	दैनिक संग्रह पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 110 (प्रपत्र– XXXस)
35	बकाया सूची	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 110 (प्रपत्र– XXXद)
36	गड्ढा केन्द्र पर संधारित किये जाने वाले कूड़ा पंजी	–
37	ह्रास निधि पंजी	बिहार नगरपालिका लेखा नियमावली, 1928 का नियम 134 (प्रपत्र –XLV)

परिशिष्ट– 2.7.4

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.1;पृष्ठ–96)

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन निधि से विचलन को दर्शाती विवरणी

अवधि	फोगिंग के लिए उपयोग						प्रशासनिक व्ययों के रूप में उपयोग				
	एच एस डी (लीटर)	प्रति लिटर दर (₹)	कुल भुगतान (₹)	एम एस (लीटर)	दर प्रति लिटर (₹)	कुल भुगतान (₹)	एम आयल	वाहन सं.	ईंधन की मात्रा (लिटर)		कुल भुगतान (₹)
									एच एस डी	एम एस	
अक्टूबर 2010	0	0	0	0	0	0	0	कार्यपालक पदाधिकारी के वाहन को आपूर्ति की गई ईंधन	0	0	15245
जनवरी एवं फरवरी 2011	0	0	0	0	0	0	0		0	0	31371
01.12.2011 से 25.12.2011	4500	43.31	194895	625	71.21	44506	0	0	0	0	0
26.12.2011 से 25.01.2012	5580	43.31	241670	775	71.21	55188	0	BLB-2786	0	110	7833
26.01.2012 से 25.02.2012	5580	43.31	241670	775	71.21	55188	0		0	122	8688
26.03.2012 से 25.04.2012 नूतन राजधानी अंचल	5400	43.31	233874	750	68.09	51068	1 लीटर @226= 226	0	0	0	0
26.03.2012 से 25.04.2012 पटना सिटी अंचल	1620	43.31	70162	225	68.09	15320	0	0	0	0	0
26.04.2012 से 25.05.2012	5580	43.31	241670	776	68.09	52838	0	0	0	0	0
26.05.2012 से 25.06.2012	6240	43.31	270254	800	68.09	54472	0	BR01PC-5329	40	0	1732
26.06.12 से 25.07.12	5400	43.31	233874	750	73.82	55365	0		200	0	8662
26.07.2012 से 25.08.2012	5400	45.10	243540	750	73.82	55365	0				
26.08.2012 से 25.09.2012	5400	45.10	243540	750	73.82	55365	0		200	0	9020
26.04.12 से 25.05.12	0	43.31	0	0	0	0	0	BR01AP-2485	170	0	7363
26.08.2012 से 25.09.2012	0	45.10	0	0	0	0	0		160	0	7216
26.09.2012 से 25.10.2012	4060	50.15	203609	655	71.94	47121	0		140	0	7021
26.10.2012 से 25.11.2012 नूतन राजधानी अंचल	6120	50.33	308020	850	72.24	61404	0	0	0	0	0
26.10.2012 से 25.11.2012 पटना सिटी अंचल	540	50.33	27178	75	72.24	5418	0	0	0	0	0

	फोगिंग के लिए उपयोग						प्रशासनिक व्ययों के रूप में उपयोग				
अवधि	एच एस डी (लीटर)	प्रति लिटर दर (₹)	कुल भुगतान (₹)	एम एस (लीटर)	दर प्रति लिटर (₹)	कुल भुगतान (₹)	एम आयल	वाहन सं.	ईंधन की मात्रा (लिटर)		कुल भुगतान (₹)
									एच एस डी	एम एस	
26.11.2012 से 25.12.2012	10530	50.33	529975	1350	71.94	97119	0	0	0	0	0
26.12.2012 से 25.01.2013	7020	50.33	353317	975	71.94	70142	0	0	0	0	0
26.01.2013 से 25.02.2013	5580	52.21	291332	775	75.52	58528	0	0	0	0	0
26.02.2013 से 25.03.2013	6140	52.21	320569	858	75.52	64796	0	0	0	0	0
26.03.2013 से 25.04.2013	5523	52.74	291283	799	75.52	60340	0	0	0	0	0
26.04.2013 से 25.05.2013	5850	52.74	308529	836	75.52	63135	0	0	0	0	0
26.05.2013 से 25.06.2013	5625	54.80	308250	785	72.36	56803	0	0	0	0	0
26.06.2013 से 25.07.2013	450	54.08	24336	0	0	0	0	0	0	0	0
26.07.2013 से 25.08.2013	480	54.48	26150	0	0	0	0	0	0	0	0
26.08.2013 से 25.09.2013	465	55.06	25603	0	0	0	0	0	0	0	0
26.09.2013 से 25.10.2013	450	55.64	25038	0	0	0	0	0	0	0	0
भुगतान	**109533**		**5258338**	**14934**		**1079481**	**226**		**910**	**232**	**104151**

कुल योगः ₹ **5258338** + ₹ **1079481** + ₹ **104151** + ₹ **226** = ₹ **6442196** या ₹ **64.42** लाख

नोटः– एच.एस.डी–हाई स्पीड डीजल, एम.एसः– मोटर स्प्रिट

परिशिष्ट–2.7.5

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5; पृष्ठ– 99)

एक ही अवधि में एक ही चालकों द्वारा विभिन्न अंचलों में दो वाहनों के परिचालन से संबंधित विवरणी

क्रम0 सं0	चालक का नाम	अंचल का नाम व वाहन सं0	वाहन परिचालन की तिथि	अवधि अथवा एक दिन में वाहन द्वारा तय की गई दुरी	वाहनों का भाड़ा	वाहनों को आपूर्ति की गई ईंधन का प्रति लिटर मूल्य ₹ में	सफाई निरीक्षक का नाम जिसने लॉगबुक पर प्रतिहस्ताक्षर किया
1.	श्री अमिताभ	कंकड़बाग पोकलेन–210	26/10/2012	6:00 (पूर्वाहन) से 2:00 (अपराहन)	12728	@ ₹1591 प्रति घंटा	सफाई निरीक्षक तथा कनीय अभियंता द्वारा हस्ताक्षरित
		कंकड़बाग पोकलेन–200	26/10/2012	6:00 (पूर्वाहन) से 2:00 (अपराहन)	12728	@ ₹1591 प्रति घंटा	सफाई निरीक्षक तथा कनीय अभियंता द्वारा हस्ताक्षरित
2.	श्री कन्हैया	नुतन राजधानी अंचल व टीपर सं. JH09F/7096	26/10/2012 से 01/11/2012, 03/11/2012, 05/11//2012 से 10/11/2012	दिन एवं रात्रि पाली	25200	47310 (940)	श्री अमित कुमार
		नुतन राजधानी अंचल व टीपर सं. JH09D/9996	26/10/2012 से 01/11/2012, 03/11/2012, 05/11/12 से 10/11/2012	दिन एवं रात्रि पाली	25200	47310 (940)	श्री अमित कुमार
3.	श्री संतोश	नुतन राजधानी अंचल व कम्पैक्टर सं0 BHR1GTR/ 8116	28/10/2012	440 किमी	प.न.नि. का वाहन	2768 (55)	दो से तीन सफाई निरीक्षकों द्वारा हस्ताक्षरित
			31/10/2012	440 किमी		2768 (55)	
			1/11/2012	440 किमी		2768 (55)	
			4/11/2012	440 किमी		2768 (55)	
			8/11/2012	440 किमी		2768 (55)	
			13/11/2012	440 किमी		2768 (55)	
		नुतन राजधानी अंचल व कम्पैक्टर सं0 BHR1GTR/ 8119	28/10/2012	680 किमी	प.न.नि. का वाहन	4278 (85)	दो से तीन सफाई निरीक्षकों द्वारा हस्ताक्षरित
			31/10/2012	680 किमी		4278 (85)	
			1/11/2012	680 किमी		4278 (85)	
			4/11/2012	680 किमी		4278 (85)	
			8/11/2012	680 किमी		4278 (85)	
			13/11/2012	680 किमी		4278 (85)	
कुल					**37928**	**63918**	

महा योग = ₹ 37928 + ₹ 63918 = ₹ 101846 या ₹ 1.02 लाख

परिशिष्ट– 2.7.6 अ

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5; पृष्ठ– 99)

ईंधन आपूर्त्ति की गई वाहनों की विवरणी जो न तो प.न.नि. के स्वयं के वाहन थे और न ही भाड़े पर रखे गये थे

क्रम सं0	वाहन सं0	अवधि	एच एस डी		कुल राशि (₹)
			दर (₹)	मात्रा	
1	BHR1G-8113	1/12/2011 से 25/12/2011	43.31	1730	74926
		26/02/2012 से 25/03/2012	43.31	2570	111307
2	BR24A- 6256	26/03/2012 से 25/04/2012	43.31	245	10611
3	BR1K- 1448	26/03/2012 से 25/04/2012	43.31	310	13426
4	BR1KH- 98	26/03/2012 से 25/04/2012	43.31	310	13426
5	HR26Q-9512	26/04/2012 से 25/05/2012	43.31	230	9961
6	BR014A-4697	26/04/2012 से 25/05/2012	43.31	10	433
7	JHAP-9959	26/07/2012 से 25/08/2012	45.10	1615	72837
8	BR010-16AR	26/08/2012 से 25/09/2012	45.10	40	1804
9	BR1AE-5938	26/10/2012 से 25/11/2012	50.33	150	7550
10	BR01GA-1217	26/10/2012 से 25/11/2012	50.33	250	12583
11	NL02AG-4869	26/10/2012 से 25/11/2012	50.33	150	7550
12	BR1P-1549	26/11/2012 से 25/12/2012	50.33	230	11576
		26/12/2012 से 25/01/2013	50.33	315	15854
		26/01/2013 से 25/02/2013	52.21	300	15663
		26/02/2013 से 25/03/2013	52.21	280	14619
13	BR01GB-1554	26/12/2012 से 25/01/2013	50.33	315	15854
14	BR014-1876	26/03/2013 से 25/04/2013	52.74	290	15295
		26/04/2013 से 25/05/2013	52.74	290	15295
		26/05/2013 से 25/06/2013	54.80	270	14796
15	BR01K-5329	26/03/2013 से 25/04/2013	52.74	180	9493
16	BRO1GC-2746	26/10/2013 से 25/11/2013	56.41	750	42308
17	BR31B-5636	26/07/2013 से 25/08/2013	54.08	70	3786
		26/08/2013 से 25/09/2013	55.06	80	4405
		26/09/2013 से 25/10/2013	55.64	210	11684
18	PB-4D 2610	26/06/2013 से 25/07/2013	54.08	270	14602
		26/08/2013 से 25/09/2013	55.06	300	16518
		26/11/2013 से 25/12/2013	57.41	290	16649
19	PBG-4D 2610	26/10/2013 से 25/11/2013	56.41	280	15795
			कुल	**12330**	**590606**

परिशिष्ट– 2.7.6 ब

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5;पृष्ठ–99)

पटना नगर निगम (नूतन राजधानी अंचल) द्वारा उपलब्ध कराये गये वाहनों के निबंधन संख्या को दर्शाती विवरणी

क्रम सं0	वाहन सं0
1.	HR 26-9513
2.	BR-14A-4697
3.	BR-01GD-1549
4.	BR01-1692
5.	BR0P-1549

परिशिष्ट–2.7.7
(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5; पृष्ठ–99)

पटना नगर निगम द्वारा बगैर नियुक्त किये वाहनों/लोर्डस का भाड़ा/ईंधन प्रभारों के भुगतान को दर्शाती विवरणी (नू.रा.अं.)

क्रम सं0	वाहन सं0	ईंधन की मात्रा (लिटर में)	ईंधन का दर प्रति लिटर (₹)	ईंधन/भाड़ा प्रभार की कुल राशि (₹)
1.	HR63-5006	750	50.33	37747.50
2.	BR01GA-4827	270	50.33	13589.10
3.	BR25A-7666	750	50.33	37747.50
4.	BR25A-7669	750	50.33	37747.50
5.	BR01GA-4823	750	50.33	37747.50
6.	NL0LGB-4869	750	50.33	37747.50
आपत्ति सं – 251 दिनांक– 08.04.2013 के अनुसार ईंधन प्रभार की कुल राशि				40860
			कुल ईंधन प्रभार	**243186.60**
आपत्ति सं – 251 दिनांक– 08.04.2013 के अनुसार भाड़ा प्रभार की कुल राशि				169494
			कुल	**412680.60 या ₹4.13 लाख**

परिशिष्ट–2.7.8

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5; पृष्ठ–99)

प.न.नि.(नूतन राजधानी अंचल) में ईंधन खपत के विरूद्ध अधिक भुगतान की विवरणी

क्रम सं0	वाहन सं0	अवधि	लॉग बुक के अनुसार आपूर्ति की गई डीजल (लीटर में)	नाला उड़ाही के विपत्र तथा ठो.अ.प्र. के व्ययों विवरणी के अनुसार डीजल की मात्रा जिसके लिए पेट्रोल पम्प को भुगतान किया गया	डीजल की अधिक मात्रा जिसके लिए भुगतान किया गया	डीजल की प्रति लीटर दर (₹)	अधिक भुगतान की राशि (₹)
1.	CUJT/ 8734	26/05/2012 से 25/06/2012	205 (27/05/2012 से 26/06/2012)	3325	3120	43.31	135127.20
		26/06/2012 से 25/07/2012	1265 (01/07/2012 से 25/07/2012)	2800	1535	43.31	66480.85
2.	JH09D/9996	26/04/2012 से 25/05/2012	1000	1120	120	43.31	5197.20
		26/05/2012 से 24/06/2012	1220	1340	120	43.31	5197.20
		26/06/2012 से 24/07/2012	1180	1360	180	43.31	7795.80
3.	JH05Y/0457	05/05/2012 से 25/05/2012	750	800	50	43.31	2165.50
		26/05/2012 से 25/06/2012	1140	1260	120	43.31	5197.20
		26/06/2012 से 25/07/2012	1200	1300	100	43.31	4331
4.	BR2F/9952	26/04/2012 से 25/05/202	850	1050	200	43.31	8662
		26/05/2012 से 24/06/2012	1190	1300	110	43.31	4764.10
5.	JH09E/0038	26/04/2012 से 24/05/2012	960	1040	80	43.31	3464.80
		26/05/2012 से 23/06/2012	1200	1490	290	43.31	12559.90
		26/06/2012 से 25/07/2012	1240	1640	400	43.31	17324.00
6.	JH11C/1815	26/05/2012 से 25/06/2012	710	1510	800	43.31	34648.00
		26/06/2012 से 25/07/2012	400	2000	1600	43.31	69296
7.	JH09F/7096	27/04/2012 से 25/05/2012	990	1280	290	43.31	12559.90
		26/05/2012 से 24/06/2012	670	1450	780	43.31	33781.80
		25/06/2012 से 19/07/2012	580	1560	980	43.31	42443.80
8.	BR1GTR/8117	26/05/2012 से 25/06/2012	2170	3545	1375	43.31	59551.25
9.	BR1GTR/8119	26/08/2012 से 25/09/2012	2435	3345	910	45.10	41041
10.	JCB/1380785	26/12/2012 से 25/01/2013	200	1400	1200	50.33	60396
11.	BR01GA/7038	26/12/2012 से 25/01/13	0	100	100	50.33	5033
12.	BR01G/2157	26/12/2012 से 25/01/2013	0	100	100	50.33	5033
कुल			**21555**	**36115**	**14560**		**642050.50**

परिशिष्ट– 2.7.9

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5; पृष्ठ–99)

प.न.नि.(नूतन राजधानी अंचल) में एक ही वाहनों के लिए अलग अलग क्रम सं. वाले समान विपत्रों पर दोहरे भुगतान को दर्शाती विवरणी

क्रम सं0	विपत्र की अवधि	वाहन सं0	व्यय का क्रम सं0 (ईंधन का विवरण)	डीजल की मात्रा जिसका भुगतान (लीटर में)	प्रति लीटर डीजल की दर (₹)	समान वाहन में डीजल की अधिक भुगतान (₹)
1	26.04.2012 से 5.05.2012	CH0T 3540	46	960		
			75	2300	43.31	99613
2	26.08.2012 से 5.09.2012	CUJT 8731	41	2420		
			70	2420	45.10	109142
3	26.09.2012 से 25.10.2012	CUJT 8731	41	2120		
			70	2120	50.15	106318
4	26.09.2012 से 25.10.2012	JH11C 1815	49	1800		
			81	1520	50.15	76228
5	26.10.2012 से 25.11.2012	JH09F 7096	45	1660		
			80	800	50.33	40264
					कुल	**431565 या ₹ 4.32 लाख**

परिशिष्ट– 2.7.10

(संदर्भः कंडिका–2.7.4.5; पृष्ठ–100)

वाहनों की विवरणी जिसे अधिक ईंधन की आपूर्ति की गयी

क्रम सं.	वाहन सं. जिसे ईंधन की आपूर्ति की गयी
1.	JD31SV-7328
2.	BR01GA-8004
3.	MPB-1172
4.	MPB-1173
5.	MPB-1178
6.	CUJT-8731
7.	CUJT-8734
8.	CHOT-3540
9.	JH09F-7096
10.	JH11C-1815
11.	JH09D-9996

क्रम सं.	वाहन सं. जिसे ईंधन की आपूर्ति की गयी
12.	JH09E-0038
13.	BHR1GTR-8116
14.	BHR1GTR-8118
15.	BHR1GTR-8119
16.	BHR1GTR-8117
17.	BR01CA-3660
18.	JH05Y-0457
19.	BR2F-9952
20.	BHR1G-8113
21.	JHAP 9959

परिशिष्ट–2.7.11
(संदर्भः कंडिका–2.7.5.1; पृष्ठ–101)

प.क्षे.वि.प्र. के लीज भूखण्डों को डेवलपर्स को बिक्री किये जाने के कारण दाखिल खारिज शुल्क की हानि को दर्शाती विवरणी

क्रम सं0	पी.एम. सी. सं0	प्लान केस सं0	प्लॉट सं0	वास्तुविदों का नाम	आवंटी का नाम	आवंटन की तिथि	आवंटन की तिथि को अधिमूल्य का भुगतान	विकास अनुबंध के अनुसार प्लॉट का विक्रय मूल्य	दाखिल खारिज शुल्क की उगाही नही (विक्रय मूल्य का 50 प्रतिशत – भुगतान की गई अधिमूल्य)
1	1629 / 11	CKA/प.न.नि./राजेन्द्र नगर/PRN/ G+6/52/2011	69A & 70 A	श्री मनोज कुमार	श्री गोरखनाथ सिंह व श्रीमति झलेश्वरी देवी	4.2.63	14395 और 35358	18472648	9186571
2	654 / 12	P/ राजेन्द्र नगर /PRN-6/15465/22/R-6-03/28-3.12	83 A	श्री नीरज शौनिक	श्री सिन्हेश्वर सहाय	23.1. 1960	12200	5687500	2831550
3	343 / 12	30897/34/2009/R/3/188/11/2/2012/पटना	L 3/7	श्री सचिदानंद	श्री नसीमा हुसैन	30.7.69	उपलब्ध नहीं	4000000	2000000
4	1123 / 12	AK/EXT/REV/G+4 /RES/PAT-23/13.6.12	105B	श्री आलोक कुमार	श्रीमति चुन्नी रानी देवी	3.8.1959	9401	5220000	2600599
5	847 / 10	13699/38/R-04-15/30.6.10/ प.न.नि.	49 /C	श्री सुनील कुमार	श्री परमानंद प्रसाद	.	उपलब्ध नहीं	2378000	1189000
6	87 / 10	25514/06/R-05-07/29.01.10	142 A	श्री अमित कुमार	श्री श्याम बिहारी मिश्रा	7.6.90	उपलब्ध नहीं	5115000	2557500
						कुल			**20365220**

परिशिष्ट– 2.7.12

(संदर्भः कंडिका–2.7.5.2; पृष्ठ–102)

वास्तुविदों द्वारा स्वीकार्य सीमा से अधिक स्वीकृत सतह क्षेत्रफल अनुपात को दर्शाती विवरणी

(क्षेत्रफल वर्ग मी. में)

क्रम सं0	पी0एम0सी0 सं0	प्लान केश सं0	वास्तुविद का नाम	आवेदक का नाम	भूखण्ड क्षेत्रफल (वर्ग मी0)	भूखण्ड का शुद्ध क्षेत्रफल (वर्ग मी0)	निर्मित क्षेत्रफल (वर्ग मी0)	अनुमत्य सतह क्षेत्रफल अनुपात	स्वीकृत सतह क्षेत्रफल अनुपात
1	1303 / 11	प.न.नि. –CP /ढ़कनपुरा/c-0117KMH/29/08/2011	श्री प्रदीप कुमार सिन्हा	श्री गोपाल प्रसाद अग्रवाल	496.74	474.5	1255.18	2.50	2.526
2	2103 / 11	P/PRN-(G+5)/गरभुचक/113-2011	श्री अवधेश प्रसाद	श्री अलख चौहान व श्रीमति मनोरमा देवी	1164.58	1164.5	3139.39	3.00	2.696
3	1416 / 12	Ak/Rev+Prop/Res/G+5/Pat-60	श्री आलोक कुमार	अग्रणी होम्स प्रा0 लि0	2404.17	2404.17	6616.02	2.50	2.752
4	926 / 11	प.न.नि./राजापुर (R)5-213/10	श्री रमण कुमार	शबनम कुमारी	316.222	316.222	874.94	2.50	2.767
5	1133 / 11	प.न.नि./शेखपुरा(R) 6-240/11 (संशोधित)	श्री रमण कुमार	श्रीमति शकुंतला देवी	529.13	529.13	1407.28	2.50	2.660
6	1253 / 12	प.न.नि./ खजपुरा (R-B+G+4)121/2012	श्री फेराज अहमद	श्री सुभाश कुमार	759.49	728.63	1983.96	2.50	2.612
7	802 / 11	P/ राजेन्द्र नगर /16909/40/R-06-13/11	श्री विश्णु कुमार चौधरी	श्री वरूण कुमार दास व तरूण कुमार दास	552.97	547.52	1490.16	2.50	2.695
8	801 / 11	P/ राजेन्द्र नगर /16909 /40/R-06-12/10.6.11	श्री विश्णु कुमार चौधरी	श्री संजीन कुमार सरन व श्रीमति अनामिका सरन	595.26	593.67	1662.84	2.50	2.793
9	1422 / 12	Ak/Rev/Comm/B+G+4/Pat-64	श्री आलोक कुमार	श्री श्याम सुंदर चिरानिया व अन्य	1241.752	1241.752	3623.234	2.50	2.918
10	976 / 11	EXT+PROP/RES/G+5/PAT-170/1813	––	श्रीमति चंद्रमनी देवी		1969.117	5713.14	2.50	2.901
11	901 / 11	P/मैनपुरा-PRN-6-25/11, vide-P/ मैनपुरा /PRN-5-387/08	श्री संजीव कुमार सुमन	श्रीमति सुधा सिन्हा	590.562	590.562	1761.65	2.50	2.980

12	868 / 11	CKA/प.न.नि. मौजा सलामपुर/G+5/REV/62/2011	श्री मनोज कुमार	प्रारूप टेक्नोक्राफ्ट प्रा0 लि0	628	566.65	1640.56	2.50	2.612
13	1852 / 11	PAT/441/3514	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री कामता प्रसाद सिंह	495.78	495.74	1391.3	2.50	2.806
5	1332 / 11	PAT-307/2746(पटना न.नि.)	श्री राकेष कुमार रंजन	श्रीमति कैलाष रानी व अन्य	364.95	364.95	982.17	2.50	2.690
15	1888 / 11	P/PRN-G+5/ शेखपुरा /104-2011	श्री अवघेष प्रसाद	श्रीमति अनिर देवी व श्री उपेन्द्र शर्मा	450.7	450.60	1224.85	2.50	2.718
16	2087 / 11	ABP/EXT/RES/B+G+4/PAT-505/4021	श्री राकेष कुमार रंजन	श्रीमति शारदा देवी	444.84	444.84	1309.17	2.50	2.943
17	1929 / 12	AK/EXT/RES/G+5/PAT/180	श्री आलोक कुमार	मे0 शतसाईं आवास प्रा0 लि0	901.01	901.01	2514.87	2.50	2.791

परिशिष्ट–2.7.13

(संदर्भः कंडिका–2.7.5.2; पृष्ठ–102)

वास्तुविदों द्वारा भवन के निर्माण के लिए स्वीकृत प्लानों की विवरणी जहाँ सड़क की चौड़ाई स्वीकार्य सीमा से कम थी

क्रम सं0	पी0एम0सी0 सं0	प्लान केश सं0	वास्तुविद का नाम	आवेदक का नाम	भवन की उँचाई (मी0 में)	सड़क की चौड़ाई (मी0 में)
1	2103 / 11	P/PRN-(G+5)/ गरभुचक/113-2011	श्री अवधेश प्रसाद	श्री अलख चौहान, श्रीमति मनोरमा देवी व विकास गौरव	16.65	6.1
2	1924 / 11	प.न.नि.-CP-खजपुरा-0139KMD/24/11/2011	–	न्यूटन कंसट्रक्शन, डायरेक्टर, श्री अजय कुमार	16.65	6.1
3	1158 / 11	30897/34/2009/R/135/22/07/2011/पटना	–	श्री संतोष कुमार	15.91	6.1
4	1422 / 12	AK/Rev/Comm/B+G+4/Pat-64	श्री आलोक कुमार	श्री श्याम सुंदर चिरानिया व अन्य	15.9	6.1
5	718 / 11	P.M.C.-CP-098KBN/24/05/2011	श्री प्रदीप कुमार सिन्हा	श्री इरफान रहमान व डॉ जस्मुर रहमान	18.12	6.1
6	1159 / 11	30897/34/2009/R/5/136/22/7/2011/पटना	–	श्री संतोष कुमार सिंह	19.34	6.1
7	1071 / 11	प.न.नि.-CP-R नगर-0110/KMA/30/7/2011	श्री प्रदीप कुमार सिन्हा	श्रीमति अंजु देवी	18.97	6.1
8	976 / 11	EXT+PROP/RES/G+5/PAT-170/1813	–	श्रीमति चन्द्रमुनी देवी व अन्य	18	6.1
9	868 / 11	CKA/ प.न.नि. मौजा-सलेमपुर/PRN/G+5/REV/62/2011	श्री मनोज कुमार	मे0 प्रारूप टेक्नोक्राफ्ट प्रा0 लि0	17.72	7.66
10	1888 / 11	P/PRN-G+5/शेखपुरा/104-2011	श्री अवधेश प्रसाद	श्रीमति अनिर देवी व श्री उपेन्द्र शर्मा	17.2	6.1
11	947 / 12	P/सलेमपुर डुमरा/PRN-5/15465/22/RS-05/21.05.12	श्री प्रदीप कुमार सिन्हा	मो0 चॉद व श्री असरफ इमाम	15.4	6.0
12	901 / 11	P/मैनपुरा / PRN-6-25/11,	श्री संजीव कुमार सुमन	श्रीमति सुधा सिन्हा	18	6.1
13	2034 / 11	प.न.नि.-CP/ मैनपुरा /0143KMH/14/12/11	श्री अरूण कुमार	श्री कश्यप कुमार व श्री अमित कुमार सिंह	18.14	6.1
14	622 / 11	A/आरा/PCN-7/43/10	श्री आर वाई अग्रवाल	एमबीसन होम (प्रा0) लि0 श्री राकेश अग्रवाल व दिलीप कुमार मित्ता	17.81	6.1

15	2022 / 11	प.न.नि./राजापुर(R)5-608/11	श्री रमण कुमार	श्री संजय कुमार, श्री पंकज कुमार व श्री निर्भय कुमार	14.99	4.99
16	1250 / 12	प.न.नि./खाजपुरा(R-B+G+4)122/2012	मो0 फेराज अहमद	श्री सचिन चन्द्रा	16.5	4.01
17	1927 / 12	AK/Rev+Ext/Res/G+5/PAT-179	श्री आलोक कुमार	आर0बी0भी व जॉनसन रेसीडेंसी	18.16	6.1
18	1928 / 12	AK/Rev/Res/G+5/PAT-183	श्री आलोक कुमार	मे0 जय महादेव कंस्ट्रक्शन	18	6.1
19	525 / 12	प.न.नि.-बेउर (R)3-02/12	श्री रमण कुमार	श्री सतिश कुमार पान्डेय	11.4	3.65
20	1791 / 12	P/सैदपुर/PRN-6/15465/22/R6-25/19.10.12	श्री नीरज शौनिक	मे0 साई कृपा रियलेटर प्रा0 लि0	18.52	6.75
21	1850 / 11	FF/ABP/PROP/RES/B+G+3 /PAT/444/3554	श्री राकेश कुमार रंजन	श्रीमति राजकुमारी प्रसाद	11.4	4.11
22	1839 / 11	FF/ABP/Ext/Res/G+5/PAT-397-3356	श्री राकेश कुमार रंजन	श्रीमति उषा लाल व अन्य	18	9.15
23	1069 / 11	प.न.नि.-CP-मैनपुरा-0108KBY/29-07-2011	श्री नीरज शौनिक	श्री बालाजी स्टील कॉ0 प्रा0 लि0	42.41	9.75
24	1303 / 11	प.न.नि.- CP ढ़कनपुरा /C-0117/ KMH/29-08-11	श्री नीरज शौनिक	श्री गोपाल प्रसाद अग्रवाल व अन्य	17.53	11.7
25	1024 / 11	FF/ABP/EXT/RES/G+5/PAT-174/1895	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री नागेन्द्र कुमार, पिताः– स्व0 दामोदर प्रसाद	20.94	5.57

परिशिष्ट– 2.7.14

(संदर्भः कंडिका–2.7.5.2; पृष्ठ–102)

आवश्यक सेट बैक छोड़े बिना भवन प्लानों की दी गई स्वीकृति को दर्शाती विवरणी

क्रम सं0	पी0एम0सी0 सं0	प्लान केश सं0	भवन उप–विधि के अनुसार				वास्तुविद द्वारा स्वीकृत				विचलन			
			सामने (मी0 में)	पीछे (मी0 में)	बायें (मी0 में)	दायें (मी0 में)	सामने (मी0 में)	पीछे (मी0 में)	बायें (मी0 में)	दायें (मी0 में)	सामने (मी0 में)	पीछे (मी0 में)	बायें (मी0 में)	दायें (मी0 में)
1	716/11	उ.न.	4	4	2	2	3.05	3.05	2	2	0.95	0.95	0	0
2	839/011	FF/REC/PAT/120/1361	3	3	निर्माण की अनुमति नहीं	निर्माण की अनुमति नहीं	3	1.5	0	0	0	1.5	0	0
3	1089/12	13699/38/R-5-10/28-5-2012	4	4	2	2	3.5	3	2	0	0.5	1	0	0
4	645/11	प.न.नि./कुम्हरार-(c) 6-151/11	8	5	3	3	8.59	4.5	5.64	2.82	0	0.5	0	0.18
5	1159/11	30897/34/2009/R/5/136/22/7/2011/PATNA	6.5	4	3.5	3.5	3	3.09	2.75	2.52	3.5	0.91	0.75	0.98
6	1144/11	उ.न.	4	4	2	2	3.5	2.74	1.5	1.5	0.5	1.26	0.5	0.5
7	868/11	CKA/ प.न.नि. मौजा सलेमपुर/G+5/REV/62/2011	6.5	4	3.5	3.5	3.01	2.77	1.58	1.89	3.49	1.23	1.92	1.61
8	1888/11	CP/PRN- G+5/शेखपुरा/104-2011	6.5	4	3	3	4.02	3.2	1.6	1.6	2.48	0.8	1.4	1.4
9	1332/11	EXT/RES/G+3/PAT-307/2746	4	4	2	2	3.15	1.65	1.75	1.6	0.85	2.35	0.25	0.4
10	2087/11	ABP/EXT/RES/ B+G+4/ PAT/505/4021	4	4	2	2	3	2.6	1.6	1.6	1	1.4	0.4	0.4
11	478/12	प.न.नि./राजापुर(R)/5-174/12 (संशोधित)	3	2.5	2	2	2.005	1.50	1	1.00	0.995	1	1	1
12	1605/11	प.न.नि./पृथ्वीपुर (R)5-452/11	4	4	1.5	1.5	3	3	1.5	1.5	1	1	0	0
13	1361/12	प.न.नि./राजेन्द्र नगर/5/PRN/20/2012	4	4	2	2	6.10	4.01	1.52	1.5	0	0	0.48	0.5
14	1024/11	FF/ABP/EXT/RES/G+5/PAT-174/1895	6	3	3	3	3.09	2.8	1.81	1.81	2.91	0.2	1.19	1.19
15	1852/11	FF/REC/PAT/441/3514	6.5	4	3	3	4	4	2.5	2.5	2.5	0	0.5	0.5

परिशिष्ट– 2.7.15

(संदर्भः कंडिका–2.7.5.2; पृष्ठ–102)

बिहार आवास बोर्ड की अनुमति के बिना इसके पट्टे की भूखण्डों पर पारित की गई प्लानों को दर्शाती विवरणी

क्रम सं0	पी0एम0सी0 सं0	प्लान केस सं0	वास्तुविदों का नाम	भूस्वामी का नाम	प्लॉट सं0	प्लॉन स्वीकृति की तिथि
1	207 / 12	प.न.नि./ श्री कृष्णा नगर /(r)5-75-12	श्री रमण कुमार	श्रीमति मीना सहाय	LH/29	27/01/2012
2	849 / 12	प.न.नि./श्री कृष्णा नगर(R)3-2013/11	श्री रमण कुमार	श्रीमति प्रतिमा देवी व श्रीमति अर्चना देवी	LIG-108	31/05/2012
3	176 / 12	CKA/ प.न.नि. /PRN/G+2/113/2012	श्री मनोज कुमार	श्रीमति अनामिका कुमारी	MIG-353	18/01/2012
4	1200 / 11	FF/ABP/EXT/RES/G+4/PAT/211/2265	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री यादवेन्दु राय	LH/121	25/07/2011
5	उपलब्ध नहीं	FF/ABP/PROP/RES/G+2/PAT-348/1462	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री गोखलेश कुमार और श्री संजय कुमार शर्मा	LIG-113	19/01/2011
6	1927 / 11	प.न.नि./ बहादुरपुर/(R) 5/ 568/11	श्री रमण कुमार	श्रीमति अंजु सिन्हा	4H/36	26/11/2011
7	401 / 11	P/ बहादुरपुर/R-3-87/11	श्री रमण कुमार	श्री राकेश कुमार	2M/103	25/03/2011
8	418 / 11	P/ प.न.नि./ बहादुरपुर/R-3-86/11	श्री रमण कुमार	श्रीमति निर्मला देवी	8L/101	25/03/2011
9	599 / 11	बहादुरपुर/30897/34/09/R-3-95/11	श्री सचिदानंद	श्रीमति किशोरी देवी	8L/158	29/04/2011
10	600 / 11	P/ बहादुरपुर/PRN-3-12/79/11	श्री अरूण कुमार	श्रीमति जुली देवी	8E/111	27/04/2011
11	618 / 11	P/ बहादुरपुर/R-2-147/11	श्री रमण कुमार	श्रीमति अंजली सिंह	8L/168	29/04/2011
12	676 / 11	P/ बहादुरपुर/R-2-164/11	श्री रमण कुमार	श्रीमति वेसना कुमारी	8L/145	11/05/2011
13	839 / 11	P/बहादुरपुर/FF/ABP/PROP/RES-G+3/PAT-120/1361/11	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री अनिल कुमार गुप्ता	8L-60	11/05/2011
14	1341 / 11	प.न.नि./ बहादुरपुर /R-3-392/11	श्री रमण कुमार	श्री कृष्णा नंदन प्रसाद	6H/29	06/09/2011
15	1655 / 11	प.न.नि./ बहादुरपुर/C-5-487/11	श्री रमण कुमार	श्री राम देव यादव व अन्य	3RC/37	19/10/2011
16	1826 / 11	P/बहादुरपुर/Exit/RES+Com/G+3/PAT-385/3342/11	श्री राकेश कुमार रंजन	श्रीमति डॉ मृदुला कुमारी व अन्य	3/RC-41,	14/10/2011
17	287 / 12	प.न.नि./ बहादुरपुर/R-4-103/12	श्री रमण कुमार	श्री जगदीश प्रसाद	3RC-18	04/02/2012
18	398 / 12	P/ बहादुरपुर/PRN-3-186/12	श्री जीवछ कुमार	श्रीमति हरि राज देवी	2M-73	22अ02/2012
19	1733 / 12	प.न.नि.-CP/बहादुरपुर हाउसिंग/PRN-3-0212/8.10.12	श्री प्रदीप कुमार सिंह	श्री रंजीत कुमार व श्रीमति प्रभा देवी	RCD/137	08/10/2012
20	946 / 11	P/ लोहिया नगर / प.न.नि./RES-4-67/11	श्री पंकज सिन्हा	श्री मुकेश कुमार सिन्हा	B/88	04/07/2011
21	1245 / 11	P/ लोहिया नगर /RES/G+2/PAT-149-1674/11	श्री राकेश कुमार रंजन	श्रीमति नविता श्रीवास्तव	U/473	12/06/2011
22	2019 / 11	P/लोहिया नगर /R-3-157/11	श्री राम यतन प्रसाद	श्रीमति मंजु सिन्हा	146, M.I.G.	15/12/2011
23	910 / 10	P/दीघा/PRN-3-1546/22/R3-23/10	श्री नीरज शौनिक L No. – 22/09	श्रीमति चांदनी डी क्रुज	L/179	24/07/2010
24	745 / 11	P/एस.के.नगर /RES-3-22/11	मो0 फेराज अहमद	श्री नृपेन्द्र नारायण	LH/100	–

25	849 / 11	P/ श्री कृष्णा नगर/R-3-213/11	श्री रमण कुमार	श्रीमति अर्चना कुमारी	LH/108	31/05/2011
26	956 / 11	P/श्री कृष्णा पुरी/R-4-264/11	श्री रमण कुमार	श्री उमेश प्रसाद सिन्हा	LH/19	07/07/2011
27	1138 / 11	P/एस.के.पुरी/RES-4-43/11	मो0 मंजूर आलम	मो0 कमरूल होडा	LH/32	25/07/2011
28	1721 / 11	P/धनौट/RES-G+2/PAT-370/3186/11	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री संजय कुमार सिन्हा	LH/92	01/10/2011
29	1969 / 11	प.न.नि./एस.के.नगर/R-4-581/11	श्री रमण कुमार	श्री अजय कुमार सिंह, श्री अजित कुमार सिंह और श्री अनिल कुमार सिंह	LH/34	03/12/2011
30	2036 / 11	P/एस.के.पुरी /RES-G+3/PAT-480/3818/11	श्री राकेश कुमार रंजन	श्री संजय कुमार सिन्हा व अन्य	LH/149	24/11/2011

परिशिष्ट 3.1

(संदर्भ: कंडिका- 3.1; पृष्ठ–106)

आवंटित कार्य, संपादित तथा उनके विरूद्ध किया गया आधिक्य खर्च की दिखाती विस्तृत विवरणी (नवम्बर 2014 तक)

(₹ करोड़ में)

क्रम संख्या	अभिकरण का नाम	आवंटित कार्यों की संख्या	₹ 1,75,100 प्रति इकाई की दर से कार्य के लिए कुल कीमत आवंटित	पूर्ण कार्यों की संख्या	पूर्ण कार्यों के विरूद्ध अभिकरणों को भुगतान ₹ 1,75,100 की प्रति इकाई की दर से	स्वीकृत राशि	अधिक व्यय
						अगस्त 2013 के बाद आवंटित कार्य के लिए ₹ 61,775 की प्रति इकाई की दर से ब्रेडा की दर	
1	मे0 अक्षय उर्जा शॉप, बेगुसराय	278	4.87	116	2.03	0.72	1.31

परिशिष्ट 3.2

(संदर्भ: कंडिका-3.2; पृष्ठ-106)

सदर/अनुमंडलीय अस्पताल के विपत्र–वार भुगतान को दर्शाती विवरणी

महीना/वर्ष	सदर अस्पताल की विपत्र संख्या	सदर अस्पताल को भुगतान (राशि ₹ मे)	विपत्र संख्या	अनुमंडलीय अस्पताल के कार्य का भुगतान (राशि ₹ मे)
अगस्त 2009	106/09-10	192040.00	106/09-10	112372.00
सितम्बर 2009	109/09-10	208420.00	109/09-10	128604.77
अक्टूबर 2009	138/09-10	211306.00	138/09-10	126793.00
नवम्बर 2009	159/09-10	216652.00	159/09-10	128023.00
दिसम्बर 2009	183/09-10	212493.00	190/09-10	127317.00
जनवरी 2010	216/09-10	215475.00	216/09-10	127498.00
फरवरी 2010	269/09-10	218859.00	269/09-10	127782.00
मार्च 2010	13/10-11	215838.00	13/10-11	127679.00
अप्रैल 2010	13/10-11	212905.00	13/10-11	128023.00
मई 2010	31/10-11	210762.00	31/10-11	121697.00
जून 2010	59/10-11	213655.00	59/10-11	126712.00
जुलाई 2010	74/10-11	210581.00	74/10-11	127136.00
अगस्त 2010	114/10-11	203873.00	114/10-11	122966.00
सितम्बर 2010	136/10-11	207660.00	136/10-11	125026.00
अक्टूबर 2010	165/10-11	213255.00	165/10-11	126954.00
नवम्बर 2010	194/10-11	210095.00	194/10-11	122965.00
दिसम्बर 2010	223/10-11	211668.00	223/10-11	122422.00
जनवरी 2011	254/10-11	211487.00	254/10-11	126229.00
फरवरी 2011	279/10-11	196982.00	279/10-11	124771.00
मार्च 2011	22/11-12	202060.00	22/11-12	125141.00
अप्रैल 2011	40/11-12	204475.00	40/11-12	127461.00
मई 2011	57/11-12	200610.00	57/11-12	127317.00
जून 2011	71/11-12	208035.00	93/11-12	126337.00
जुलाई 2011	150/11-12	213662.00	150/11-12	128587.00
अगस्त 2011	150/11-12	214569.00	150/11-12	128587.00
सितम्बर 2011	150/11-12	214591.00	150/11-12	127836.00
अक्टूबर 2011	173/11-12	212575.00	173/11-12	127498.00
नवम्बर 2011	208/11-12	212156.00	208/11-12	126899.00
दिसम्बर 2011	208/11-12	216019.00	208/11-12	128405.00
जनवरी 2012	234/11-12	214206.00	234/11-12	128042.00

महीना / वर्ष	सदर अस्पताल की विपत्र संख्या	सदर अस्पताल को भुगतान (राशि ₹ मे)	विपत्र संख्या	अनुमंडलीय अस्पताल के कार्य का भुगतान (राशि ₹ मे)
फरवरी 2012	256/11-12	217524.00	281/11-12	128585.00
मार्च 2012	07/12-13	218195.00	07/12-13	128586.00
अप्रैल 2012	20/12-13	218715.00	20/12-13	128585.00
मई 2012	43/12-13	218739.00	43/12-13	128586.00
जून 2012	65/12-13	210804.00	65/12-13	128585.00
जून 2012	36/12-13	7721.00	-	-
जुलाई 2012	36/12-13	218739.00	36/12-13	128586.00
अगस्त 2012	36/12-13	218739.00	36/12-13	128586.00
सितम्बर 2012	53/12-13	218713.00	53,64/12-13	128585.00
अक्टूबर 2012	64/12-13	218920.00	64/12-13	128586.00
नवम्बर 2012	64/12-13	218525.00	64/12-13	128585.00
दिसम्बर 2012	71/12-13	217832.00	71/12-13	128586.00
जनवरी 2013	79/12-13	218195.00	79/12-13	128586.00
फरवरी 2013	95/12-13	81485.00	95/12-13	68300.00
कुल		**9009810.00**		**5394406.77**

परिशिष्ट 3.3

(संदर्भः कंडिका-3.3; पृष्ठ–107)

दवाओं के स्थानीय क्रय पर आपूर्तिकर्त्ता को अधिक भुगतान को दर्शाती विवरणी

(₹ करोड़ में)

क्रम संख्या	कार्यालय का नाम	दवाओं की संख्या	स्थानीय क्रय की राशि	रा.स्वा.स.बि. दर के अनुसार कुल राशि	अधिक भुगतान
1.	अ.श.चि.–सह–मु. चि.पदा., बाँका	105	2.66	1.35	1.31
2.	अ.श.चि.–सह–मु. चि.पदा., आरा	1	0.24	0.14	0.10
	योग	**106**	**2.90**	**1.49**	**1.41**

परिशिष्ट 3.4

(संदर्भ कंडिका –3.4; पृष्ठ–109)

फर्मो को दिए गए अग्रिम राशि तथा इसके विरूद्ध आपूर्ति /समायोजन का दर्शाती विस्तृत विवरणी

(राशि ₹ में)

क्र: स0	जि0स्वा0स0 का नाम	फर्मो का नाम	अग्रिम की तिथि	अग्रिम की राशि	फर्मों द्वारा आपूर्तित दवाओं का मूल्य	समायोजित राशि	अधिशेष राशि
1	मुजफ्फरपुर	मेसर्स रिसभ एसोसियेटस, पटना	20/9/2010	251948	248549	0	3399
		मेसर्स लवोरेट फार्मास्यिूटिकल्स इंडिया लि0, पटना	30/3/2012	181498	76277	0	105221
		मेसर्स विंग फार्मास्यिूटिकल्स प्रा0 लि0	30/3/2012	335253	149893	0	185360
		मेसर्स चंदन फार्मा, पटना	30/3/2012	176723	41620	0	135103
		मेसर्स ब्रावन लेबोरेट्रिरिज लि0, पटना	5/4/2012	855670	833677	0	21993
		मेसर्स स्कॉट–इडिल फार्मासिया लि0, पटना	5/4/2012	1169735	64834	0	1104901
		कुल		**2970827**	**1414850**	**0**	**1555977**
2	सारण / छपरा	मेसर्स मैकमिलन लाइफ साइंस प्रा0 लि0, पटना	16/11/2011	184600	0	0	184600
		कुल		**184600**	**0**	**0**	**184600**
3	बेतिया	मेसर्स चंदन फर्मा, पटना	20/12/2010	788840	338336	0	450504
		मेसर्स श्री इंटरप्राईजेज, पटना	20/12/2010	1319501	1298901	0	20600
		मेसर्स रस्टो फार्मास्यिूटिकल्स, मुजफ्फरपुर	20/12/2010	1968200	1365458	0	602742
		मेसर्स रस्टो फार्मास्यिूटिकल्स, मुजफ्फरपुर	8/4/2011	197600	82992	0	114608
		मेसर्स वेनस लाईफ साइंस प्रा0 लि0, पटना	20/12/2010	629800	324386	0	305414
		मेसर्स वेनस लाईफ साइंस प्रा0 लि0, पटना	-	794488	598338	0	196150
		मेसर्स मेडिक्योर, पटना	20/12/2010	662050	423476	0	238574
		मेसर्स यूनिक्योर(इंडिया), प्रा0लि0, पटना	8/4/2011	322712	248872	0	73840
		मेसर्स ब्राउन लैब लि0, पटना	8/4/2011	766370	155970	0	610400

		मेसर्स विनस मेडिसिन प्रा0 लि0, पटना	8/4/2011	166400	20160	0	146240
		मेसर्स अरविन्द रिमेडिज लि0	8/4/2011	741426	522018	0	219408
		मेसर्स तिरूपति डिसट्रिवियूटरस, मुजफ्फरपुर	8/4/2011	1629160	707732	0	921428
		मेसर्स जय मॉता दी इंटरप्राईजेज	12/9/2011	120000	72000	0	48000
		मेसर्स ट्रॉक फार्मास्यिूटिकल्स	19/11/2012	823162	479714	0	343448
		मेसर्स ट्रॉक फार्मास्यिूटिकल्स	26/3/2013	7423514	7019491	0	404023
		मेसर्स मैकमिलन लाईफ साइंस, पटना	26/3/2013	666667	109047	0	557620
		कुल		**19019890**	**13766891**	**0**	**5252999**
4	पूर्णियाँ	मेसर्स स्कॉट इदिल फार्मेसिया लि0, पटना	26/12/2012	122552	65562	0	56990
		मेसर्स नेक्सस लाईफ साइंस (इंडिया) प्रा0 लि0, पटना	5/6/2013	257143	238095	19048	0
		मेसर्स विनस लाईफ साइंस प्रा0 लि0, पटना	9/2/2013	279714	83067	196647	0
		मेसर्स मैकमिलन लाईफ साइंस प्रा0 लि0, पटना	9/2/2013	719714	283524	436190	0
		कुल		**1379123**	**670248**	**651885**	**56990**
		सकल योग		**23554440**	**15851989**	**651885**	**7050566**

परिशिष्ट 3.5

(संदर्भ कंडिका-3.6; पृष्ठ–112)

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों मे जल आपूर्ति योजनाओं का विस्तृत विवरण को दर्शाती विवरणी

(₹ लाख में)

क्रं: स0	योजना का नाम	एकरारनामा सं0 / वर्ष	कार्य समाप्ति की तिथि	अभिकरण का नाम	आकलित लागत	एकरारित मूल्य	कुल किये गए कार्यों का मूल्य	अभियुक्ति
1	ग्रामीण जल आपूर्ति योजना (ग्रा0ज0आ0यो0) चेनारी, सासाराम	19F2/2010-11	20/12/2011	जय प्रकाश शुक्ला	266.48	290.47	187.04	कार्य प्रगति में है।
2	ग्रा0ज0आ0यो0 मालवार, सासाराम	13F2/2010-11	25/8/2011	मृत्युंजय कुमार सिंह	111.07	121.07	102.22	कार्य प्रगति में है।
3	ग्रा0ज0आ0यो0 राजपुर, सासाराम	15F2/2010-11	26/11/2011	विजय कुमार सिंह	182.91	199.37	178.57	कार्य प्रगति में है।
4	ग्रा0ज0आ0यो0 दरिहत, सासाराम	14F2/2010-11	25/8/2011	मतेश्वरी कंशट्रक्सन	121.44	132.37	72	कार्य रदद् किया गया।
5	ग्रा0ज0आ0यो0 पारसाथुआ, सासाराम	5F2/2010-11	21/7/2011	अलोक कुमार	159.65	174.02	159.65	**पूर्ण कार्य**
6	ग्रा0ज0आ0यो0 राजपुर चोर, सासाराम	10F2/2010-11	22/8/2011	संजय कुमार सिंह	90.76	99.15	85.52	**पूर्ण कार्य**
7	ग्रा0ज0आ0यो0, तेलाथुआ, सासाराम	16F2/2010-11	2/12/2011	आलोक कुमार	147.96	161.60	152.73	**पूर्ण कार्य**
8	ग्रा0ज0आ0यो0, वारून, औरंगाबाद	3F2/2009-10	28/7/2010	विजय कुमार सिंह	98.03	106.78	97.31	**पूर्ण कार्य**
9	ग्रा0ज0आ0यो0 तरार, औरंगाबाद	7F2/2010-11	14/2/2012	रोविन कुमार	69.77	76.05	67.10	कार्य प्रगति में है।
10	ग्रा0ज0आ0य वारीसावन, आरा	10F2/2010-11	27/7/2012	रितेश कुमार जयशवाल	112.49	122.88	110.45	कार्य प्रगति में है।
11	आरा नगर जल आपूर्ति योजना, आरा	T1/2006-07	29/5/2008	जे0 पि0 इंटरप्राईजेज	602.17	656.60	655.71	**पूर्ण कार्य**

क्रं: स0	योजना का नाम	एकरारनामा सं0/वर्ष	कार्य समाप्ति की तिथि	अभिकरण का नाम	आकलित लागत	एकरारित मूल्य	कुल किये गए कार्या का मूल्य	अभियुक्ति
12	बहुग्राम जल आपूर्ति योजना, मोजमपुर, आरा,	T3/2006-07	30/7/2009	मेसर्स आइ.बी. आर.सी. एल. इन्फ्रास्ट्रक्चर एण्ड प्रोजेक्ट लि0, हैदराबाद	5177.71	5177.71	5088.02	कार्य अपूर्ण/अभिकरण को बहिस्कृत किया गया
13	हाजीपुर शहरी जल आपूर्ति योजना, हाजीपुर	1H/2008-09	22/1/2010	मेसर्स जे0पी0 इन्टरप्राईजेज	1060.61	1247.26	1255.47	**कार्य अपूर्ण**
14	पूर्णियॉ शहरी जल आपूर्ति योजना फेज– 1, पूर्णियॉ	19F2/2006-07	8/8/2008	मेसर्स एसके बिल्डर्स	619.04	637.61	608.15	**पूर्ण कार्य**
15	पूर्णियॉ शहरी जल आपूर्ति योजना फेज– 2, पूर्णियॉ	29F2/2006-07	8/9/2008	मेसर्स एसके बिल्डर्स	778.00	816.70	725.61	**पूर्ण कार्य**
16	बहुग्राम जल आपूर्ति योजना, बिदुपुर, हाजीपुर,	01/SBD/2009-10	20/11/2011	मेसर्स आइ.वी. आर.सी.एल. इन्फ्रास्ट्रक्चर एण्ड प्रोजेक्ट लि0, हैदराबाद मेसर्स किर्लोसकर ब्रर्दस लि0	12440.14	13650.00	11550.04	कार्य प्रगति में
17	शहरी जल आपूर्ति योजना फेज–II, दरभंगा	02/SBD/2010-11	11/4/2011		1887.68	2284.09	1801.89	कार्य प्रगति में
18	बहुग्राम जल आपूर्ति योजना, मनेर, पटना पश्चिम	5F/SBD 2009-10	20/5/2011	मेसर्स आइ.वी. आर.सी.एल. इन्फ्रास्ट्रक्चर एण्ड प्रोजेक्ट लि0, हैदराबाद	5677.14	6200.00	4442.03	कार्य प्रगति में

क्रं: स0	योजना का नाम	एकरारनामा सं0 / वर्ष	कार्य समाप्ति की तिथि	एजेंसी का नाम	आकलित लागत	एकरारनामा कल्प	कुल किये गए कार्या का मूल्य	अभियुक्तिॉ
19	पेय जल आपूर्ति योजना, की वृद्धि दानापुर, पश्चिम पटना	01/SBD/2010-11	25/3/2011	मेसर्स जे0पी0 इन्टरप्राईजेज	617.20	754.77	531.13	कार्य प्रगति में
20	किशनगंज शहरी जलापूर्ति योजना , किशनगंज	2/SBD/2008-09	13/1/2010	मेसर्स आइ.वी. आर.सी.एल. इन्फ्रास्ट्रक्चर एण्ड प्रोजेक्ट लि0, हैदराबाद	2388.86	2982.27	2937.16	कार्य प्रगति में

परिशिष्ट 3.6

(संदर्भः कंडिका -3.6; पृष्ठ–112)

उत्पाद शुल्क से विमुक्ति हेतु अधिकृत अभिकरणों द्वारा उत्पाद शुल्क की वापसी राशि की विस्तृत विवरणी

(राशि ₹ में)

क्रं: स0	योजना/ प्रमंडल का नाम	पाईप की विशिष्टियाँ (व्यास मि0मि0 में)	आपूर्ति की अवधि	पाईप आपूर्ति की मात्रा (मीटर में)	दर /मीटर (एस. ओ. आर के अनुसार)	पाईप की कुल लागत	उत्पाद शुल्क की दर (प्रतिशत में)	प्रत्यर्पणीय उत्पाद शुल्क की राशि
1	2	3	4	5	6	7 (5 ×6)	8	9
1	बहुग्रामीण जल आपुर्ति योजना विदुपुर हाजीपुर	DIK9-1000	2009-10	7533.00	15515.52	116878412.20	8.24	9630781.00
		DIK9-900		8234.00	12989.87	106958589.60		8813388.00
		DIK9-800		8749.00	10737.63	93943524.87		7740946.00
		DIK9-700		4319.50	9305.57	40195409.62		3312102.00
		DIK9-500		11718.00	5485.27	64276393.86		5296375.00
		DIK9-400		48098.00	3600.44	173173963.10		14269535.00
		DIK9--300		7998.00	2424.40	19390351.20		1597765.00
		MS-500		2426.96	3200.00	7766272.00	10.3	799926.00
					कुल	**622582916.45**		**51460818.00**
2	शहरी जल आपूर्ति योजना फेज– II, दरभंगा	CI-100	2/7/2010	44316.00	713.49	31619022.84	10.30	3256759.35
		CI-150	1/7/2010	18752.00	1142.41	21422472.32		2206514.65
		CI-200	31/7/2010	8055.00	1754.55	14132900.25		1455688.73
		CI-250	25/7/2010	4753.00	2363.92	11235711.76		1157278.31
		CI-300	16/7/2010	1620.00	3049.73	4940562.60		508877.95
		CI-350	14/7/2010	1225.00	3839.84	4703804.00		484491.81
		CI-400	13/7/2010	960.00	4674.22	4487251.20		462186.87
					कुल	**92541724.97**		**9531797.67**
3	बहुग्रामीण जल आपूर्ति योजना, मनेर, पटना पश्चिम	DIK9-200	31/08/2009 to 26/2/2010	1087.00	1227.00	1333749.00	8.24	109901.00
		DIK9-250		497.00	1694.51	842171.00		69395.00
		DIK9-300		2850.00	2146.83	6118465.00		504161.00
		DIK9-350		20394.00	2697.18	55006289.00		4532518.00
		DIK9-400		20000.00	3297.80	65956000.00		5434774.00
		DIK9500		528.00	4531.38	2392569.00		197148.00
		DIK9-200	13/3/2010 to 6/10/2010	14913.00	1227.00	18298251.00	10.3	1884720.00
		DIK9-300		150.00	2146.83	322025.00		33169.00
		DIK9-350		15606.00	2697.18	42092191.00		4335496.00
		DIK9-500		132.00	4531.38	598142.00		61609.00
		DIK9-600		498.00	6011.34	2993647.00		308346.00
					कुल	**195953499.00**		**17471237.00**
4	पेयजल आपूर्ति योजना का वृद्धि दानापुर, पटना पश्चिम	CI-100	14/6/2010 to 20/6/2011	2510.00	782.85	1964954.00	10.3	202390.00
		CI-150		2592.30	1164.50	3018733.00		310930.00
		CI-200		2064.16	1715.30	3540654.00		364687.00
		CI-250		2465.00	2306.90	5686509.00		585710.00

		CI-300		1040.00	2976.70	3095768.00		318864.00
		CI-250	1/10/2013	1095.00	2306.90	2526056.00	12	303127.00
		CI-300		1708.62	2976.70	5086049.00		610320.00
		CI-350		1077.16	3752.75	4042312.00		485077.00
		कुल				**28961035.00**		**3181105.00**
सकल कुल								**81644957.67**

** एकारनामा में प्रमण्डल द्वारा उ0शु0 वापसी का उपबंध उल्लेखित नहीं किया गया जिसकी वजह से ऐजेंसी उ0शु0 को बैंक ड्राफ्ट के द्वारा संबन्धित प्रमंडल में जमा करने मे विफल रहा।*

परिशिष्ट 3.7

(संदर्भः कंडिका-3.6; पृष्ठ–112)

उ0शु0 मुक्त अधिकृत एजेंसी द्वारा उ0शु0 वापसी राशि की दर्शाती विस्तृत विवरणी

(राशि ₹ में)

क्रं: स0	योजना/प्रमंडल का नाम	पाईप की विशिष्टियाँ (व्यास मी0मी0 में)	आपूर्ति की तिथि	आपूर्तित पाईप की मात्रा (मी0 में)	दर/मीटर (एस.ओ.आर के अनुसार)	पाईप की कुल लागत	उत्पाद शुल्क की दर	उत्पाद शुल्क प्रत्यर्पणीय की राशि
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	ग्रा0ज0आ0यो0 चेनारी, सासाराम	CI-100	10/2/2011	2,250.00	939.40	2113650.00	10.30	217705.95
		CI-100	17/12/2011	1,100.00	939.40	1033340.00		106434.02
		CI-150	10/2/2011	1,883.50	1397.40	2632002.90		271096.30
		CI-150	17/12/2011	1,461.50	1397.40	2042300.10		210356.91
		CI-200	17/12/2011	199.00	2058.40	409621.60		42191.02
		CI-300	10/2/2011	132.00	3572.00	471504.00		48564.91
		CI-300	17/12/2011	460.00	3572.00	1643120.00		169241.36
					कुल	**10345538.60**		**1065590.48**
2	ग्रा0ज0आ0यो0 मलबर, सासाराम	CI-100	22/3/2011	1661.28	939.40	1560606.00	10.30	160742.42
		CI-100	28/3/2011	606.72	939.40	569953.00		58705.16
		CI-150	22/3/2011	3180.00	1397.40	4443732.00		457704.40
		CI-200	28/3/2011	33.00	2058.40	67927.00		6996.48
					कुल	**6642218.00**		**684147.00**
3	ग्रा0ज0आ0यो0 राजपुर, सासाराम	CI-100	20/12/2010	4,000.00	939.40	3757600.00	10.30	387032.80
		CI-100	10/3/2011	2,484.69	939.40	2334117.79		240414.13
		CI-150	19/3/2011	1,575.00	1397.40	2200905.00		226693.22
		CI-200	10/3/2011	250.00	2058.40	514600.00		53003.80
		CI-250	10/3/2011	35.00	2768.30	96890.50		9979.72
		CI-250	19/3/2011	1,200.00	2768.30	3321960.00		342161.88
					कुल	**12226074.00**		**1259285.55**

क्रं: स0	योजना/प्रमंडल का नाम	पाईप की विशिष्टियाँ (व्यास मी0मी0 में)	आपूर्ति की तिथि	आपूर्तित पाईप की मात्रा (मी0 में)	दर/मीटर (एस.ओ.आर के अनुसार)	पाईप की कुल लागत	उत्पाद शुल्क की दर	उत्पाद शुल्क प्रत्यर्पणीय की राशि
4	ग्रा0ज0आ0यो0 डारीहाट, **सासाराम**	CI-100	9/6/2011	1680.00	939.40	1578192.00	10.30	162553.78
		CI-150	28/12/2011	450.00	1397.40	628830.00		64769.49
		CI-200	28/12/2011	620.00	2058.40	1276208.00		131449.42
					कुल	**3483230.00**		**358772.00**
5	ग्रा0ज0आ0यो0 परसाथुआ**, सासाराम**	CI-100	6/9/2010 to 17/9/2010, 15/12/2010	2150.00	939.40	2019710.00	10.30	208030.13
		CI-150		3180.00	1397.40	4443732.00		457704.40
		CI-200		510.00	2058.40	1049784.00		108127.75
		CI-250		25.00	2768.30	69207.50		7128.37
					कुल	**7582433.50**		**780990.00**
6	ग्रा0ज0आ0यो0 राजपुर चोर**, सासाराम**	CI-100	29/12/2010	100.00	939.40	93940.00	10.30	9675.82
		CI-150		1720.00	1397.40	2403528.00		247563.38
		CI-200		45.00	2058.40	92628.00		9540.68
					कुल	**2590096.00**		**266779.89**
7	ग्रा0ज0आ0यो0 तिलाउथु**, सासाराम**	CI-100	14/12/2010, 12/6/2011, 25/9/2011	2720.00	939.40	2555168.00	10.30	263182.00
		CI-150		543.00	1397.40	758788.20		78155.00
		CI-200		80.00	2058.40	164672.00		16961.00
		CI-250		70.00	2768.30	193781.00		19959.00
					कुल	**3672409.20**		**378257.00**
8	ग्रा0ज0आ0यो0 बरूण **औरंगाबाद**	CI-100	10/6/2011	320.00	782.85	250512.00	10.30	25803.00
		CI-150	10/6/2011	332.00	1164.50	386614.00	10.30	39821.00
		CI-200	17/11/2009	160.00	1715.30	274448.00	8.24	22615.00
		CI-200	26/3/2010	180.00	1715.30	308754.00	10.30	31802.00
		CI-200	4/6/2010	180.00	1715.30	308754.00	10.30	31802.00
		CI-200	10/6/2011	188.50	1715.30	323334.05	10.30	33303.00
					कुल	**1852416.05**		**185146.00**

क्रं: स0	योजना/प्रमंडल का नाम	पाईप की विशिष्टियाँ (व्यास मी0मी0 में)	आपूर्ति की तिथि	आपूर्तित पाईप की मात्रा (मी0 में)	दर/मीटर (एस.ओ.आर के अनुसार)	पाईप की कुल लागत	उत्पाद शुल्क की दर	उत्पाद शुल्क प्रत्यर्पणीय की राशि
9	ग्रा0ज0आ0यो0 तरार औरंगाबाद	CI-100	8/6/2011	460.00	939.40	432124.00	10.30	44509.00
		CI-150	8/6/2011	616.00	1397.40	860798.40		88662.00
		CI-200	8/6/2011	60.00	2058.40	123504.00		12721.00
					कुल	**1416426.00**		**145892.00**
10	ग्रा0ज0आ0यो0 बारीसाबन आरा	CI-100	28/6/2011	195.00	939.40	183183.00		18867.85
		CI-150	28/6/2011	2032.00	1397.40	2839516.80		292470.23
		CI-200	28/6/2011	25.00	2058.40	51460.00	10.30	5300.38
					कुल	**3074159.80**		**316638.46**
11	आरा जलापूर्ति योजना, आरा	CI-300	9/3/2007, 28/3/2007, 25/6/2007, 15/9/2007	365.00	2415.00	881475.00	16.48	145267.00
		CI-250		2862.50	1872.50	5360031.25		883333.00
		CI-200		6537.50	1392.00	9100200.00		1499713.00
					कुल	**15341706.25**		**2528313.00**
12	हाजीपुर शहरी जलापूर्ति योजना, हाजीपुर	CI-450	26/12/2008	30.00	-	0.00	10.30	0.00
		CI-350	26/12/2008	22.00	4415.00	97130.00	10.30	10004.00
		CI-350	6/1/2009	8.00	4415.00	35320.00	10.30	3638.00
		CI-300	26/12/2008	310.00	3502.00	1085620.00	10.30	111819.00
		CI-300	6/1/2009	31.00	3502.00	108562.00	10.30	11182.00
		CI-300	26/3/2009	469.00	3502.00	1642438.00	8.24	135337.00
		CI-250	6/1/2009	402.00	2714.00	1091028.00	10.30	112376.00
		CI-250	7/3/2009	500.50	2714.00	1358357.00	8.24	111929.00
		CI-250	26/3/2009	3668.00	2714.00	9954952.00	8.24	820288.00
		CI-200	6/1/2009	1101.50	2018.00	2222827.00	10.30	228951.00
		CI-200	7/3/2009	1908.50	2018.00	3851353.00	8.24	317351.00
		CI-200	26/3/2009	2505.00	2018.00	5055090.00	8.24	416539.00
					कुल	**26502677.00**		**2279414.00**

क्रं: स0	योजना/प्रमंडल का नाम	पाईप की विशिष्टियाँ (व्यास मी0मी0 में)	आपूर्ति की तिथि	आपूर्तित पाईप की मात्रा (मी0 में)	दर/मीटर (एस.ओ.आर के अनुसार)	पाईप की कुल लागत	उत्पाद शुल्क की दर	उत्पाद शुल्क प्रत्यर्पणीय की राशि
13	शहरी जल आपूर्ति योजना फेज– **I,** पूर्णिया	CI-100	3/3/2010	6434.50	635.00	4085907.50	10.30	420848.47
		CI-100	2/2/2010	2702.00	635.00	1715770.00	8.24	141379.45
		CI-100	20/3/2012	177.84	635.00	112928.00	12.36	13957.95
		CI-100	9/5/2012	3000.00	635.00	1905000.00	12.36	235458.00
					कुल	**7819605.50**		**811643.00**
14	पूर्णिया शहरी जल आपूर्ति योजना फेज– **II,** पूर्णिया	CI-100	4/1/2010	500.00	635.00	317500.00	8.24	26162.00
		CI-100	6/3/2010	4182.50	635.00	2655888.00	10.30	273556.41
		CI-100	29/3/2010	6556.94	635.00	4163657.00	10.30	428856.67
		CI-100	29/3/2012	2445.98	635.00	1553197.00	12.36	191975.19
		CI-100	29/5/2012	3247.18	635.00	2061959.00	12.36	254858.00
		CI-150	29/5/2012	423.50	945.00	400208.00	12.36	49465.65
					कुल	**11152409**		**1224873.92**
							सकल योग	***12285742.00***

**एकारारनामा में प्रमंडल द्वारा उ0शु0 वापसी का उपबंध उल्लेखित किया गया परंतु कार्यपालक अभियंता ने पाईप की खरीद पर उ0शु0 मुक्त करने हेतु जिला मजिस्ट्रेट/समाहर्त्ता को आवेदित नहीं किया।*

परिशिष्ट 3.8

(संदर्भः कंडिका -3.6; पृष्ठ–113)

उ0शु0 मुक्त अधिकृत एजेंसी द्वारा उ0शु0 की प्रत्यर्पनीय राशि को दर्शाती विस्तृत विवरणी

(राशि ₹ में)

क्रं: स0	योजना/प्रमंडल का नाम	पाईप की विशिष्टियाँ (व्यास मी0मी0 में)	आपूर्ति की तिथि	आपूर्तित पाईप की मात्रा (मी0 में)	दर/मीटर (एस.ओ.आर के अनुसार)	पाईप की कूल लागत	उत्पाद शुल्क की दर	उत्पाद शुल्क प्रत्यर्पणीय की राशि
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**
1	बहुग्राम जलापूर्ति योजना, मौजमपुर, आरा	DIK9-400	15/03/2007 to 08/02/2008	19775.00	3297.80	65213995.00	16.48	10747266.00
		DIK9-350		10000.00	2697.18	26971800.00		4444953.00
		DIK9-300		10000.00	2146.83	21468300.00		3537976.00
		DIK7-400		1400.00	2846.45	3985030.00		656733.00
		DIK7-350		3300.00	2158.00	7121400.00		1173607.00
		DIK7-300		3999.50	1710.00	6839145.00		1127091.00
		DIK7-250		5017.00	1340.00	6722780.00		1107914.00
		DIK7-200		6000.00	1026.00	6156000.00		1014509.00
					कुल	**144478450.00**		**23810049.00**
2	पूर्णिया शहरी जलापूर्ति योजना, फेज–**I**	CI-250	26/10/2007	1454.50	1872.50	2723551.25	16.48	448841.25
		CI-300	26/10/2007	441.00	2415.00	1065015.00	16.48	175514.47
		CI-350	26/10/2007	400.00	3045.00	1218000.00	16.48	200726.40
		CI-400	26/10/2007	100.00	3083.16	308316.00	16.48	50810.48
		CI-200	3/1/2010	357.50	1392.00	497640.00	8.24	41005.54
		CI-200	27/1/2011	350.00	1392.00	487200.00	10.30	50181.60
					कुल	**6299722.25**		**967079.00**
3	पूर्णिया शहरी जलापूर्ति योजना, फेज–**II**, पूर्णिया	CI-200	4/1/2010	142.50	1392.00	198360.00	8.24	16344.86
		CI-200	6/3/2010	352.00	1392.00	489984.00	10.30	50468.35
		CI-200	29/3/2010	100.00	1392.00	139200.00	10.30	14337.60

		CI-200	8/11/2010	500.00	1392.00	696000.00	10.30	71688.00
		CI-200	29/1/2011	350.00	1392.00	487200.00	10.30	50181.00
		CI-200	28/2/2011	750.00	1392.00	1044000.00	10.30	107532.00
		CI-250	8/11/2010	148.50	1872.50	278066.00	10.30	28640.00
		CI-400	20/11/2007	28.00	3083.16	86328.00	16.48	14226.93
					कुल	**3419138.00**		**353418.74**
4	किशनगंज शहरी जलापूर्ति योजना, किशनगंज	CI-200	13/11/2008	6731.00	1928.60	12981407.00		1871919.00
		CI-250		1950.00	2608.50	5086575.00		733484.00
		CI-300		1323.50	3379.74	4473086.00	14.42	645019.00
		CI-350		937.00	5509.59	5162486.00		744430.00
		CI-400		597.00	6756.48	4033619.00		581648.00
		CI-200	19/11/2009	1683.00	1925.60	3245834.00	8.24	267457.00
		CI-250		250.00	2608.50	652125.00		53735.00
		CI-200	2/2/2011	100.00	1928.60	192860.00		19865.00
		CI-250		4184.00	2608.50	10913964.00	10.30	1124138.00
		CI-300		1941.50	3379.74	6561765.00		675862.00
		CI-400		88.00	6756.48	594570.00		61241.00
					कुल	**53898291.00**		**6778798.00**
					सकल योग			**31909346.00**

**एकारनामा में प्रमंडल द्वारा उ0शु0 वापसी का उपबंध उल्लेखित किया गया और संबंधित मजिस्ट्रेट/समाहर्त्ता द्वारा पाईप की खरीद के लिए छूट प्रमाण–प्रत्र निर्गत किया गया था लेकिन एजेंसी उ0शु0 राशि को बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रमंडल में जमा नहीं किया।*

परिशिष्ट 3.9

(संदर्भः कंडिका -3.7; पृष्ठ–114)

उपयोगित तथा अनउपयोगित कास्ट आयरन पाईपों पर हुए व्यय को दर्शाती विवरणी

क्र0 सं0	आपूर्तिकर्ता का नाम	सी0आई0 पाईपों का व्यास (मी0मी0 में)	क्रय किए गए सी0आई0 पाईपों (मी0मी0 में)	सी0आई0 पाईप की दर (राशि ₹/मी0 में)	कुल व्यय (₹ में)	दूसरे जलापूर्ति योजना में स्थानान्तरित सी0आई0 पाईप (मी0 में)	अनुपयोगित सी0आई0 पाईप	अनुपयोगित सी0आई0 पाईपों का मूल्य (₹ में)
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6 (4x5)**	**7**	**8(6-7)**	**9 (8x5)**
1.	इलेक्ट्रो स्टील कास्टींग लि0	150	9473	1505 (सभी कर सहित)	1,42,56,865.00	877.40	8595.60	1,29,36,378.00
2.	आई0डी0सी0ओ0एल कलिंगा आईरन वर्क्स लि0	200	3977	2132.70 + 4 प्रतिशत भैट	88,21,018.00	184.60	3792.40	84,11,574.00
		250	2005	2868.27 + 4 प्रतिशत भैट	59,80,917.00	शून्य	2005.00	59,80,917.00
3.	कपिलांश धत्तू उद्योग प्रा0लि0	300	1081	3850 (सभी कर सहित)	41,61,850.00	303.30	777.70	29,94,145.00
कुल			**16536**		**3,32,20,650.00**	**1365.30**	**15170.70**	**3,03,23,014.00**

परिशिष्ट 3.10

(संदर्भः कंडिका-3.8; पृष्ठ-115)

चलानों को दर्शाती विस्तृत विवरणी

(राशि ₹ में)

क्र0 सं0	रोकड़ बही के द्वारा कोषागार में प्रेषित राशि			कोषागार में वास्तविक प्रेषित राशि			अप्रेषित राशि/दुर्विनियोजन की राशि
	अभि0 सं0	दिनांक	राशि	कोषागार चलान सं0	दिनांक	राशि	
1	-	30/6/2010	25067.00	7	30/06/10	25067.00	शून्य
2	-	31/7/2010	8292.00	8	31/07/10	8292.00	शून्य
3	-	31/12/2010	41927.00	7	31/12/10	41927.00	शून्य
4	-	31/1/2011	58287.00	17	31/01/11	58287.00	शून्य
5	-	31/3/2011	18723.00	41	30/03/11	18723.00	शून्य
6	-	29/4/2011	19110.00	4	29/04/11	19110.00	शून्य
7	2	14/11/2011	165262.00	शून्य	शून्य	शून्य	165262.00
8	26	31/3/2012	67686.00	शून्य	शून्य	शून्य	67686.00
9	29	31/3/2012	36549.00	शून्य	शून्य	शून्य	36549.00
10	6	31/5/2012	163292.00	शून्य	शून्य	शून्य	163292.00
11	3	30/8/2012	258800.00	शून्य	शून्य	शून्य	258800.00
12	3	30/11/2012	78788.00	शून्य	शून्य	शून्य	78788.00
13	20	30/3/2013	66343.00	शून्य	शून्य	शून्य	66343.00
14	-	27/9/2013	23881.00	9	27/09/13	23881.00	शून्य
15	-	10/10/2013	13115.00	11	30/10/13	13115.00	शून्य
कुल			**1045122.00**			**208402.00**	**836720.00**

परिशिष्ट 3.11

(संदर्भः कंडिका-3.9; पृष्ठ–116)

रॉयल्टी की कम कटौती को दर्शाती विवरणी

क्रम सं0	एकरारनामा संख्या/ एकरारनामा का दिनांक	कार्य का नाम	सौपित मात्रा (घन मी0 में)	क्रियान्वित मात्रा (घन मी0 में)	मापी पुस्त सं0	विपत्र सं0 एवं दिनांक	विद्यमान रॉयल्टी दर	लागू रॉयल्टी दर	दर में अंतर	रॉयल्टी की कम कटौती (5X10) (राशि ₹ में)
							(₹/घन मी0 में)			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	1/ एस0बी0डी 2012-13 दिनांक 15/5/12 बागमती प्रमंडल सं01, सीतामढ़ी	किमी 0.00 से 43.60 के बीच अधवरा बाएँ बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और संरचना का मरम्मत/निर्माण सहित किमी 0.00 से 44.00 के बीच अधवरा दाएँ बाँध एवं ढोला बागमती प्रमंडल सं01, सीतामढ़ी (एन0आई0टी0 सं0 01/2011–12) (समूह सं0 3)	1439148 1129480 1079361 **3647989**	1439148.00 1120817.85 843983.37 **3403949.23**	1790	14वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	23827644.61
2.	22/एस0बी0डी0 2012-13 दिनांक 12/1/2013 बागमती प्रमंडल सं01, सीतामढ़ी	बागमती तटबंध के बायीं ओर रामपुर कंठगाँव के पास किमी 3.590 से 4.450 के बीच के कटाव निरोधक का कार्य (एन0आई0टी0 सं0 01/2012–13) (समूह सं0 3)	1440.00 77247.00 **78687.00**	1260.00 94346.00 **95606.00**		5वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	669242.00

3.	23 /एस0बी0डी 2012-13 दिनांक 2/1/2013 बागमती प्रमंडल सं01, सीतामढ़ी	बागमती तटबंध के बायीं ओर 3.590 से 4.450 किमी के बीच में गाँव की ओर से तटबंध चैनलों में मिट्टी भराई का कार्य (एन0आई0टी0 सं0 01/2012–13)	137719.58	132167.02	1826	6वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	925169.21
4	17 /एस0बी0डी 2010-11 दिनांक 9/3/11 बागमती प्रमंडल सं01, सीतामढ़ी	झीम नदी के साथ बाँध का निर्माण (बायीं बाँध किमी 21.60 + बाँकें नदी किमी 2 दायीं बाँध किमी 20.88) और जमुरा (बायीं बाँध किमी 4.11, दायीं बाँध किमी 5.18) अधवरा समूह (एन0आई0टी0 सं0 03/2010–11)	1008699.00 1008699.00 821232.00 **2838630.00**	302184.06 302184.06 259014.91 50969.00 **914352.03** Date of compaction 31.03.2012	1842	3वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	6400464.42
5	1/एस0बी0डी /12-13 दिनांक 15/5/2012 बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दरभंगा	किमी 44.00 से 90.50 के बीच खिरोई बाएँ बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और खिरोई दाएँ बाँध का किमी 44.00 से 91.50 के बीच संरचना के निर्माण एवं ढ़ाला सहित	1163835.00 1551780.00 1939725.00 3103560.00 **7758900.00**	6296989.00	2718	19वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	44078923.00

6	13 एस0बी0डी /2011-12 दिनांक 24/3/2012 सिंचाई प्रमंडल, भागलपुर	ओरहनी जलाशय योजना के अंतर्गत नहर का पूर्नस्थापन कार्य एजेंन्सी– मे0 हरदेव कन्सट्रक्शन लि0 देवघर, झारखंड	724069.55 401875,65 **1125945.23**	1124610.57	2902	8वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	7872273.99
7	01 एस0बी0डी /2012-13 दिनांक 30/5/2012 सिंचाई प्रमंडल, भागलपुर	चंदन पुरैनी चंदन नदी के दानों बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण (किमी 37.980 से 66.41) अंधेरी नदी, खलखलिया नदी और चंदन मुख्य नदी का प्रवेश द्वारा एवं निकाश द्वारा का नवनीकरण सहित एजेंन्सी– गणेश राम ढ़ोकनिया, बाँका	1904764.18 3047622.69 2666669.85 **7619056.72**	5577801.12	2957	5वें लेखा विपत्र तक	15.00	22.00	7.00	39044607.84
	सकल योग		**23206927.53**	**17545475.00**						**122818325.70**

परिशिष्ट 3.12

(संदर्भः कंडिका-3.10; पृष्ठ-117)

म0नि0द0 एकरारनामा में गलत विधि से शुद्ध कार्य मूल्यों के संगणन के कारण अधिक्य व्यय को दर्शाती विवरणी

क्र0 सं0	कार्य / प्रमंडल का नाम	एजेंन्सी का नाम / एकरारनामा सं0 और दिनांक	कार्य समाप्ति की निर्धारित तिथि	एकरारनामा राशि (बी0ओ0क्यू0 से 15 प्रतिशत कम) (₹करोड़ में)	क्रियान्वित मिट्टी कार्य की मात्रा (घन मी0 में)	किए गए कार्य का कुल मूल्य (₹करोड़ में)	रॉयल्टी की राशि कॉलम 5x@₹15 (₹करोड़ में)	वास्तविक भुगतान (₹करोड़ में)	स्वीकृत भुगतान (₹करोड़ में) कॉलम 6 का 15 प्रतिशत कम	अधिक राशि (₹करोड़ में)
1	**2**	**3**		**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10 (8-9)**
1	खिरोची तटबंध के बायीं व दायीं ओर का उन्नयन एवं मजबूतीकरण के कार्य के साथ संरचना एवं ढ़ाला का निर्माण / **बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दरभंगा**	• जि0एस0जी0ओ0 इनफ्रास्ट्रकचर लि0 चंढ़ीगढ़ • 1 एस0बी0डी /2012-13 दिनांक 23/5/2012	June 2013	104.46	6249753.00	92.32	9.37	79.88	78.47	1.41
2	जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण के साथ विशुनपुर से हिलसा, नूरसराय रोड तक शांसी नदी के गाद सफाई का कार्य / **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• वारिस बुल्डिकोन(इंडिया) प्र0लि0, लखीबीघा • 4 एस0बी0डी/2008-09 3/2/2009	30/6/2009	3.45	607093.92	3.95	0.91	3.49	3.36	0.13

3	नोनाई नदी के पंचमुहा पूल से टेक्का गाँव के बीच जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण का कार्य, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• कुमार कंन्सट0 एवं कं0, श्रीमोर, राँची • 5 एस0बी0डी/2008-09 3/2/2009	30/6/2009	2.39	425285.26	2.80	0.64	2.48	2.38	0.10
4	जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और लोहंड़ा से ढ़कापार तक खोनर नदी के रेत उन्मुखीकरण का कार्य, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• मे0 जार कंन्स0 प्र0लि0, कालिस्थान, बेगमपुर, पटना़ • 6 एस0बी0डी/2008-09 14/2/2009	30/6/2009	2.81	346493.00	2.84	0.52	2.49	2.41	0.08
5	दोनो जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और भाटबीघा से यंसवंतपुर तक दोनार नदी के रेत उन्मुखीकरण का कार्य, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• मे0 सुरेन्द्र प्रसाद एवं कं0, नवादा • 8 एस0बी0डी/2008-09 20/2/2009	30/6/2009	5.49	1020093.60	6.43	1.53	5.69	5.46	0.23
6	दोनो जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और पैमर कोलहुआ से परवलपुर तक नदी के रेत उन्मुखीकरण, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• मे0 देवेन्द्र सिंह एवं कं0, नवादा • 10 एस0बी0डी/2008-09 9/3/2009	30/6/2009	6.40	1066839.65	6.81	1.60	6.03	5.79	0.24

7	दोनो जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और भुतही नदी का मनदाक्षा से खालीमचक तक के रेत उन्मुखीकरण, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• मे0 देवेन्द्र सिंह एवं कं0, नवादा • 12 एस0बी0डी/2008-09 20/3/2009	30/6/2009	4.33	526320.95	4.86	0.79	4.25	4.13	0.12
8	सुर नदी के साथ जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और लोहाण्डा से अंसारी गाँव तक के धारा के साथ रेत उन्मुखीकरण, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• न्यू नालंदा ट्यूबवेल बोरिंग एवं इंन्जि0 वर्क्स, बिहारशरीफ, नालंदा • 1 एस0बी0डी/2009-10 3/2/2010	2/8/2010	1.82	133488.23	2.07	0.20	1.79	1.76	0.03
9	सिरनवा वियर के दायीं एफलक्स जमींदारी बाँध का उन्नयन एवं मजबूतीकरण और भाटबीघा से यंसवंतपुर तक दोनार नदी के रेत उन्मुखीकरण, **जलपथ प्रमंडल, एकंगरसराय**	• राम सुघर कंन्स0 प्र0लि0, बिहारशरीफ • 2/2010-11 30/7/2010	31/1/2011	1.76	243549.30	1.95	0.37	1.71	1.65	0.06
10	पूर्वी कोशी नहर का ई0आर0एम0 कार्य, **सिंचाई प्रमंडल, राघोपुर, सुपौल**	• आई0भी0आर0सी0एल0 इनफ्रास्ट्रकचर प्रोजेक्ट लि0, हैदराबाद • 5एस0बी0डी/2009-10 23/3/2010	31/3/2012	23.83	3353109.49	25.72	5.03	22.62	21.86	0.76

11	किमी 0.00 से 11.62 किमी तक कमला बलान बाँयीं बाँध के उपरी सतह पर और 0.00 से 91.50 किमी कलमा बलान बाँध के दायीं ओर ईंट सोंलींग **बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल सं.2, झंझारपुर**	• जि0एस0सी0ओ0 इनफ्रास्ट्रकचर लि0 चंड़ीगढ़ • 1 म0नि0द/11-12, 6/3/2012	31/3/2012	33.74	1820126.71	35.74	2.73	30.79	30.38	0.41
		कुल		**190.48**	**15792153.11**	**185.49**	**23.69**	**161.22**	**157.65**	**3.57**

परिशिष्ट 3.13

(संदर्भः कंडिका-3.12; पृष्ठ–120)

अतिरिक्त दायित्व के सृजन को दर्शाती विवरणी

(₹ करोड़ में)

संक्षिप्त	राशि
मे0 रविन्द्र कुमार दुबे के साथ प्रथम एकरारनामा	8.45
क्रियान्वयन के बाद रद्द किये गये कार्य के मूल्य को घटाना	(-) 2.01
शेष कार्य की लागत	**6.44**
कम मूल्य की राशि का अधिक भुगतान	(-) 0.10
घटोतरी या मात्रा को सिमित करने के बाद शेष कार्य का मूल्य	**6.34**
शेष कार्य के लिए बि0रा0पु0नि0नि0लि0 के द्वारा संवेदक के साथ एकरारनामा	8.49
दूसरी एकरारनामा के लिए संवेदक को अंतिम भुगतान	8.89
शेष कार्य में अधिक भुगतान का व्यय (जोखिम एवं लागत का मूल्य)	**2.55**
जब्त की गई अग्रधन जमा राशि	(-) 0.17
जब्त की गई सुरक्षा जमा राशि	(-) 0.16
पूर्व अधिरोपित दण्ड की राशि	(-) 0.04
शुद्ध दायित्व	**2.18**

© भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक
www.saiindia.gov.in